राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 1] बारहवीं विधान सभा के पहले सत्र का आठवां दिवस [संख्या : 6

गुरु वार;

22 जनवरी, 2004

राजस्थान विधान सभा की बैठक

11.00 बजे विधान सभा भवन,

जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

श्री अध्यक्ष : श्री रमेश खींची।

विधान सभा क्षेत्र कठूमर में प्राथमिक विद्यालय

32. श्री रमेश खींची (कठूमर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि सरकार द्वारा प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को क्रमोन्नत करने की कोई योजना बनाई गई है? यदि हां, तो क्या? विवरण सदन की मेज पर रखें।

(2) सरकार द्वारा इस वर्ष उक्त योजना के तहत कितने विद्यालयों को क्रमोन्नत कर दिया जाएगा?

(3) क्या सरकार द्वारा उक्त योजना के तहत इस वर्ष राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ती पाठशालाओं को प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत करने की सरकारी योजना है? यदि हां, तो कब तक?

(4) क्या यह सही है कि छात्राओं हेतु अलग से प्राथमिक विद्यालय खोले जाने हेतु सरकार द्वारा कोई नीति बनाई गई है? यदि हां, तो क्या?

(5) क्या यह सही है कि सरकार की राज्य में एक किलोमीटर की परिधि में प्राथमिक विद्यालय खोलने की योजना है? यदि हां, तो विधान सभा क्षेत्र कठूमर में उक्त विद्यालय कब तक खोल दिये जाएंगे?

शिक्षा मंत्री (श्री घनश्याम तिवाड़ी): (1) जी हां। सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा स्वीकृत कार्य योजना के अनुसार वर्ष 2003-04 में 1144 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत करने की योजना है। क्रमोन्नति की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। 400 उच्च प्राथमिक विद्यालयों तथा 200 माध्यमिक विद्यालयों... (व्यवधान) इसमें संशोधन कर लें। 400 माध्यमिक विद्यालयों तथा 200 उच्च माध्यमिक विद्यालयों को क्रमोन्नत करने हेतु वर्ष 2004-2005 की बी.एफ.सी. में वांछित बजट प्रावधान करवाया गया है। तदनुसार विद्यालय क्रमोन्नत किये जाएंगे।

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

(2) प्रश्नोत्तर के भाग संख्या (1) के अनुसार।

(3) जी हां। सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा वर्ष 2003-2004 के लिए स्वीकृत कार्य योजना के अनुसार 2317 राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ती पाठशालाओं को राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में परिवर्तित किया जाएगा। कार्यवाही प्रक्रियाधीन है।

(4) जी हां।

(5) राज्य सरकार की वर्तमान नीति के अन्तर्गत राज्य में एक किलोमीटर की परिधि में प्राथमिक शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। अगर कहीं एक किलोमीटर की परिधि में प्राथमिक शिक्षा की सुविधा नहीं है तो प्राथमिक विद्यालय खोल दिया जाएगा।

श्री रमेश खींची : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्रीजी से जानना चाहूंगा कि जो 1144 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में, 400 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालयों में और 200 माध्यमिक विद्यालयों को सीनियर माध्यमिक विद्यालयों में आप क्रमोन्नत करेंगे, उनका आधार क्या है? नार्म्स क्या बनाये हैं, वह बता दें?

दूसरा, आपने भाग संख्या (3) में बताया है कि 2317 राजीव गांधी पाठशालाओं को राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में परिवर्तित करेंगे, तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से जानना चाहूंगा कि क्या इन राजीव गांधी पाठशालाओं का नाम चेंज करेंगे, परिवर्तित करेंगे? राजीव गांधी का नाम परिवर्तन करेंगे, यह मैं आपसे जानना चाहता हूं?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात साफ कहना चाहता हूं कि राज्य सरकार की राजीवजी के प्रति कोई अश्रद्धा की भावना नहीं है, हम उनका सम्मान करते हैं। भारत के प्रधानमंत्री थे, भारत रत्न की उनको उपाधि दी गई थी, इसलिए राज्य सरकार की कोई मंशा नहीं है। हम तो वही रीत निभाएंगे इस बार तो, जो आपने डाली है। जो कागज-कलम बी. डी. कल्ला साहब ने लिखे हुए हैं क्रमोन्नत करने के लिए राजीव गांधी पाठशालाओं के लिए, उसमें उसी रीत को निभाएंगे ताकि आपकी और हमारी प्रीत बनी रहे, नम्बर एक। अगली बार तो हमारी रीत आ जाएगी, इस बार तो आपकी ही चलाएंगे।

नम्बर दो, जैसा आपने कहा है, प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में, उच्च प्राथमिक को माध्यमिक विद्यालय में और माध्यमिक को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नति के बारे में जो प्रावधान करना है, हमारी पार्टी की स्पष्ट नीति है कि हम जो भी करेंगे,

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

नीति निर्धारित करके करेंगे। इसमें हमने जो महत्वपूर्ण बात की है वह महत्वपूर्ण बात यह है कि जहां लड़कियों की संख्या ज्यादा होगी, उसको प्राथमिकता दी जाएगी क्रमोन्नति करने में, यह साफ–साफ शब्दों में बात है। इसलिए कोई राजनैतिक भेदभाव या आप लोगों ने किया, उस प्रकार हम नहीं करेंगे, वह आप अपने मन से विचार निकाल दो, हां।

श्री रमेश खींची : पार्टी की नीति नहीं, आप सरकार की नीति बता दें। आप स्पष्ट कर दें कि सरकार की नीति क्या है?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मैं सरकार की नीति ही बता रहा हूं। माननीय रमेश खींची साहब, सरकार की नीति यह है कि जिन विद्यालयों में लड़कियों की संख्या अधिक है, उनको प्राथमिकता क्रमोन्नति में दी जाएगी।

श्री रमेश खींची : क्या बालिका शिक्षा के लिए आप कोई प्राथमिकता नहीं दे रहे हैं, जो आपने कहा है जी नहीं?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अभी मैंने कहा कि बालिका शिक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं। यह भी तय किया है कि राजस्थान भर में जो बालिका विद्यालय हैं, उनमें कहीं पर बाथरूम की व्यवस्था नहीं है. उन सब स्थानों पर वह व्यवस्था भी की जाएगी, प्राथमिकता उन्हीं को दी जाएगी।

आपका दूसरा खण्ड है, प्राथमिक विद्यालय खोलने में क्या बालिकाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। तो मैं कह रहा हूं कि प्राथमिक विद्यालय जहां भी आप कहेंगे, 15 विद्यार्थी जहां पढ़ने को मिलेंगे, एक किलोमीटर की परिधि में जहां पर विद्यालय नहीं होगा, वहां विद्यालय खोल देंगे, इसलिए बालक और बालिका के साथ भेदभाव करने का सवाल ही नहीं उठता है और इसलिए मैंने "जी नहीं" कहा है।

श्री दुर्गाप्रसाद (गंगापुर) : मैडम, अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने बताया है कि 400 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालय बनाया जाएगा, क्रमोन्नत किया जाएगा, विधान सभा क्षेत्र 200 हैं तो कोई भेदभाव तो नहीं बरता जाएगा? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप तो बैठकर बोल रहे हैं।

श्री दुर्गाप्रसाद : इस हिसाब से एक विधान सभा क्षेत्र में दो विद्यालय क्रमोन्नत होंगे। उसी प्रकार से एक विधान सभा क्षेत्र में एक माध्यमिक विद्यालय क्रमोन्नत होगा तो पहले...(व्यवधान) यह बात जरूरी है, भेदभाव तो नहीं बरता जाएगा? यह मेरा प्रश्न है, यह क्या बात हुई? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : जो आपने किया, वही हम करेंगे।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने पूछा है, मैं साफ कहना चाहूंगा, मैंने बिलकुल साफ कहा है, पहली बात तो मैंने यह कही है, सरकार की प्राथमिकता है कि जहां लड़कियों की संख्या ज्यादा होगी, छात्रों से अधिक होगी, उसकी प्रायोरिटी है। उस प्रायोरिटी में एक विधान सभा क्षेत्र में तीन भी आ सकती हैं, चार भी आ सकती हैं, नम्बर एक।

नम्बर दो, मैं कह रहा हूं, आपकी नीति थी भेदभाव की, मैंने पहला वाक्य कहा कि भेदभाव की कोई नीति नहीं है। इस बार की रीत तो जो आपने डाली है, वही निभाउंगा ताकि आपकी और मेरी प्रीत बनी रहे।

श्री अमराराम (धोद) : इनकी तो भेदभाव की थी, इसलिए आप भी वही निभाओगे?

श्री बृजकिशोर शर्मा (जयपुर ग्रामीण): अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्रीजी से पूछना चाहूंगा कि एक विधान सभा क्षेत्र में कम से कम कितने स्कूल क्रमोन्नत किये जाएंगे, यह तो आप स्पष्ट करें। (व्यवधान) यह ठेके की बात नहीं है, यह प्रिंसिपल का सवाल है। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़) : अध्यक्ष महोदय, जिस प्रकार से आदरणीय मुख्य मंत्रीजी की मंशा है कि गांवों में और खास तौर से अल्पसंख्यकों अनुसूचित जाति, जनजाति के बच्चे शिक्षा के प्रति आगे बढ़ें और अल्पसंख्यकों के छात्र–छात्राएं मेन स्ट्रीम में, मुख्य धारा में जुड़ें, क्या सरकार कोई ऐसा प्रावधान रखती है कि जहां अल्पसंख्यक छात्र–छात्राएं हों वहां पर विशेष तौर से स्कूल खोलने का ध्यान रखेगी, ताकि ये लोग...एक मिनट, शांत तो रहना सीखिये...ताकि ये लोग इन स्कूलों में आकर मुख्य धारा में जुड़ने की कोशिश करें, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, माननीय जुबेर खान ने एक बहुत बढ़िया प्रश्न पूछा है। राज्य सरकार छह से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं का, किसी भी समुदाय या वर्ग के हों, चाइल्ड ट्रैकिंग सिस्टम बना रही है। इसके अन्तर्गत जयपुर के सचिवालय में भी और जयपुर के शिक्षा सचिव के पास भी बैठे–बैठे, एक करोड़ 10 लाख से अधिक बालक बालिकाएं हैं, वे कब कक्षा में भर्ती हुए, इस समय कहां पढ़ रहे हैं, कितना उनका ड्राप आउट है, किस प्रकार से उनको करना है, इसकी पूरी व्यवस्था कम्प्यूटराइज्ड हर जगह करना चाहते हैं, इसलिए कोई भेदभाव नहीं है। अल्पसंख्यक हो, बहुसंख्यक हो, अ.जा., ज.जा. हो, ओ.बी.सी. हो, सारे विद्यार्थी, हम चाहते हैं कि किसी प्रकार से ड्राप आउट नहीं

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

हो और वे मुख्य धारा में रहें, इसकी व्यवस्था हो।

दूसरी बात, आपने पूछी है कि विद्यालयों की क्रमोन्नति का मापदण्ड क्या है। मैंने पहले कहा, पहला मापदण्ड तो है कि लड़कियों की संख्या ज्यादा जहां होगी वहां। मैं आपको इतना ही आश्वस्त कर सकता हूं कि लड़कियों की संख्या ज्यादा होने पर कोई भेदभाव बरतने की राज्य सरकार की बिलकुल मंशा नहीं है। लड़कियां तो सब जगह हैं, बिलकुल नहीं है, बिलकुल नहीं करेंगे। गांव की संख्या, क्षेत्र की मांग, विद्यालय में कुल छात्रा संख्या, विद्यालय में अंतिम कक्षा की विद्यार्थी संख्या व फीडर विद्यालयों को, पास–पास जो विद्यालय हैं उनको ध्यान में रखते हुए, इन सब बातों को ध्यान में रख कर विद्यालयों का क्रमोन्नयन होगा। मैं आपको पुनः विश्वास दिलाता हूं कि इस समय महिला शिक्षा पर ध्यान देकर जो राष्ट्रीय औसत से हमारा कम है, हमारी प्रथम प्राथमिकता है, व माननीय मुख्य मंत्रीजी ने भी कहा है. कि लड़कियों की स्कूल खोलने में अगर इन चार सौ से भी एक्सेस करना पड़े, अधिक करना पड़े तो वह भी करने के लिए राज्य सरकार तैयार है, हर कीमत पर हम करेंगे। इसलिए किसी भी प्रकार की इसमें सदन को चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

श्री कालूलाल गुर्जर (माण्डल) : अध्यक्ष महोदय, एक मेरा प्रश्न है माननीय मंत्रीजी से कि जहां–जहां साक्षरता प्रेरक स्कूल चल रहे हैं, जहां दो घंटे तक उनको साक्षर किया जाता है और कुछ लोगों को पढ़ाया जाता है, क्या उनको आप स्कूलें मानेंगे? या वहां पर विद्यालय खोलेंगे जहां साक्षरता प्रेरक स्कूल पूरे जो चल रहे हैं? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : जवाब तो आने दीजिये आप लोग। (व्यवधान)

श्री मंगला राम गोदारा (डूंगरगढ़): अध्यक्ष महोदय, मेरे विधान सभा क्षेत्र में कई स्कूल भवन बने हुए हैं...

श्री घनश्याम तिवाड़ी : बता रहा हूं।

श्री मंगला राम गोदारा : उनमें क्या टीचर लगाएंगे?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : देखिये, ये राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ती पाठशालाएं हैं और ये इसलिए बनाई गई थी कि शिक्षा के लिए सहज पहुंच हो। इन सारे विद्यालयों को अगले तीन, मैं तो कोशिश कर रहा हूं, इस साल तो करीब तीन हजार कर रहे हैं, पच्चीस सौ करीब, अगले साल कम से कम दस हजार से ज्यादा ये जो विद्यालय हैं इनको प्राथमिक विद्यालयों में बदल दिया जाए और उसके अगले साल जो बाकी बचे हुए हैं उन सारे के सारे तेईस हजार के तेईस हजार को प्राथमिक विद्यालय में हम बदल दें

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

ताकि गांव की शिक्षा बहुत बढ़िया हो सके। यह सरकार का दृढ़ निश्चय है इसलिए वह आपका प्रश्न उसी में समाहित है। (व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर : मंत्री महोदय, साक्षरता प्रेरक जो चल रहे हैं उनको भी विद्यालय में क्रमोन्नत करेंगे क्या?

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना) : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक प्रश्न है। शिक्षा मंत्रीजी से मेरा एक प्रश्न है।

श्री कालूलाल गुर्जर : अध्यक्ष महोदय, साक्षरता प्रेरक काम कर रहे हैं वहां विद्यालय खोलेंगे या वही काम करेंगे, यह बताएं मंत्री महोदय?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : वहां भी खोलेंगे। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं जिसका नाम पुकारूं वह प्रश्न पूछे, आप एक साथ खड़े हो जाते हैं।

श्री अमराराम (धोद) : नाम पुकारें, अध्यक्ष महोदय।

श्री अध्यक्ष : अमरारामजी।

श्री अमराराम (धोद) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बिराज जाएं, इनके बाद में पूछें।

श्री अमराराम (धोद) : मंत्री महोदय, जिस पूरे पंचायत समिति क्षेत्र में बालिका शिक्षा की उच्च माध्यमिक विद्यालय नहीं है, क्या इसे आप मापदण्ड में रखेंगे कि 237 जो पंचायत समितियां हैं ग्रामीण क्षेत्र की, उनमें जहां बालिकाओं की शिक्षा के लिए एक भी उच्च माध्यमिक विद्यालय नहीं है, क्या वहां उच्च माध्यमिक विद्यालय खोलने की प्राथमिकता रखेंगे?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : देखिये, माननीय अमरारामजी, राजस्थान में 237 में से 34 पंचायत समिति हैडक्वार्टर ऐसे हैं जहां पर बालिकाओं की सैकण्डरी स्कूल नहीं है और दस में सीनियर सैकण्डरी नहीं है, ऐसे केन्द्र हैं राजस्थान में राज्य सरकार की पहली प्राथमिकता होगी कि हर पंचायत समिति हैडक्वार्टर पर या जो बड़ा स्थान है वहां पर इस प्रकार का लड़कियों के लिए केन्द्र हो जाए। यह हमारी मंशा है क्योंकि अभी तक 34 और 10 बचे हुए हैं।

श्री भंवरलाल राजपुरोहित (मकराना): माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है, राजस्थान में मकराना विधान सभा क्षेत्र...(व्यवधान)

श्री टीकम चन्द कान्त : माननीय अध्यक्ष महोदय, पैराटीचर्स का पूछना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री भंवरलाल राजपुरोहित।

श्री भंवरलाल राजपुरोहित : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा नम्र निवेदन है कि राजस्थान में मकराना भी एक क्षेत्र है, उसका एक अंग है, राजस्थान में नागौर जिले में मकराना में सबसे कम स्कूलें हैं और अध्यक्ष महोदय, पहली सरकार की कोई नालायकी, नाराजगी की वजह से कम खोली गई हैं। (व्यवधान) मैं संशोधन करता हूं। तो मैं निवेदन करूंगा मंत्री महोदय से कि क्या उस असंतुलन को भी ठीक करेंगे?

श्री टीकम चन्द कान्त : अध्यक्ष महोदय, राजीव गांधी पाठशालाओं के अन्दर जो शिक्षक लगे हुए हैं, जो पैराटीचर्स कहलाते हैं, जब नियमित होंगी राजीव गांधी पाठशालाएं उसके साथ ही उसको नियमित करोगे या फिर और कोई क्राइटेरिया है?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, मकराना से आने वाले माननीय सदस्य ने जो पूछा कि उनके यहां संख्या कम है, मैं उनको आश्वस्त करता हूं कि इतने सालों में वहां कमी रही तो आपको इस साल पूर्ति करके बराबर करने की कोशिश करेंगे, एक। श्री टीकम चन्दजी कान्त ने कहा है, माननीय अध्यक्ष महोदय, वैसे प्रश्न अलग से है लेकिन कल मैंने जैसे कहा, पिछली सरकार ने एक वेकेन्सी निकालकर इसको भरने की कोशिश की थी, रिजर्वेशन किया था उस पर राजस्थान उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश आगा हुआ है, जब तक उसका निस्तारण नहीं होता तब तक इस सम्बन्ध में मैं कुछ कहने में असमर्थ हूं।

श्री अध्यक्ष : नैक्स्ट क्वेश्चन। श्री बाबूलाल नागर।

अनुसूचित जाति/जनजाति के विद्यार्थियों को देय छात्रवृत्ति

33. श्री बाबूलाल नागर (दूदू) : क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्र/छात्राओं को कक्षा 6 से 10 तक कितने रुपये प्रति माह छात्रवृत्ति मिलती है?

(2) क्या यह सही है कि शुल्क वृद्धि व बढ़ी हुई महंगाई के अनुसार पिछले 15 वर्षों में अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों को दी जाने वाली प्रति माह छात्रवृत्ति की राशि में बढ़ोतरी की गई है? यदि हां, तो प्रति वर्ष कितनी व नहीं, तो क्यों? क्या सरकार छात्रवृत्ति की राशि में वृद्धि करने का विचार रखती है?

(3) क्या यह सही है कि कक्षा 9 से प्रत्येक विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा को आवश्यक विषय के रूप में रखा गया है? यदि हां, तो क्या अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों को शिक्षा के प्रति आकर्षित करने के लिए कम्प्यूटर शिक्षा निःशुल्क देने का कोई प्रावधान है? यदि नहीं, तो क्यों?

समाज कल्याण मंत्री (श्री मदन दिलावर): (1) अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्र–छात्राओं का कक्षा 6 से 10 तक निम्न दरों से छात्रवृत्ति देय है: कक्षा 6 से 8–छात्र को 15/– प्रति माह, छात्राओं को 20/– प्रति माह कक्षा 9 से 10–छात्र को 30/– प्रति माह, छात्राओं को 40/– प्रति माह।

(2) जी नहीं। यह पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर द्वारा संचालित की जाती है। छात्रवृत्ति की दरों में वृद्धि किये जाने का प्रस्ताव माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर के स्तर पर विचाराधीन है।

(3) निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर से प्राप्त सूचना के अनुसार माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय जिनमें विद्युत कनेक्शन एवं कक्षा 9 से 12 तक की कुल विद्यार्थी संख्या 50 या इससे अधिक है, ऐसे विद्यालयों में स्व वित्त पोषित आधार पर कम्प्यूटर शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर एवं निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर के माध्यम से क्रमशः वर्ष 2001–2002 एवं वर्ष 2003–2004 से प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया है। इस निर्णय के तहत सभी जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा निविदाएं आमंत्रित की जाकर जिलों के उक्त श्रेणी के विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा लागू की गई है। इस प्रकार कक्षा 9 से 12 तक अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों को कम्प्यूटर शिक्षा अभी निःशुल्क देने का कोई प्रावधान नहीं है।

श्री बाबूलाल नागर : अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय ने यह बताया कि 6 से 8 तक पन्द्रह रुपये छात्र के और छात्राओं के बीस रुपये हैं। अध्यक्ष महोदय, पिछले पन्द्रह साल से चाहे किसी भी पार्टी की सरकार रही हो, अनुसूचित जाति, जनजाति के विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की, एक तरफ हम अनुसूचित जाति, जनजाति को बढ़ावा देने की बात करते हैं, कोई इनकी छात्रवृत्ति की राशि नहीं बढ़ाई गई, निश्चित रूप से चिंता की बात है। मैं चाहूंगा कि क्या यह सरकार छात्रवृत्ति बढ़ाने की मंशा रखती है?

दूसरा, अध्यक्ष महोदय, समाज कल्याण विभाग द्वारा अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों के लिए पूर्व मैट्रिक विशेष छात्रवृत्ति योजना में छात्रवृत्ति दी जाती है, उसके लिए परीक्षा आयोजित की जाती है। 23.2.2003 को यह परीक्षा आयोजित की गई, यह तो सीधा समाज कल्याण से सम्बन्धित मामला है।

श्री अध्यक्ष : आप प्रश्न पूछिये, प्रश्न के रूप में पूछिये।

श्री बाबूलाल नागर : प्रश्न पूछ रहा हूं आपसे। यह सीधा समाज कल्याण से सम्बन्धित मामला है, क्या 23.2.2003 को आयोजित परीक्षा की तारीख के बाद

(श्री बाबूलाल नागर)

क्या पूरे राजस्थान में इस योजना में एक भी विद्यार्थी को कोई लाभ दिया गया है? तीसरा, अध्यक्ष महोदय...

श्री अध्यक्ष : वह भूल जाएंगे, इतनी बातों का तो जवाब आने दीजिये।

श्री बाबूलाल नागर : एक प्रश्न और छोटा-सा, अध्यक्ष महोदय। अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों को उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति जैसे दी जाती है उनमें उन विद्यार्थियों का प्रवेश शुल्क जो लगता है वह प्रवेश शुल्क भी लौटा दिया जाता है छात्रवृत्ति के साथ लेकिन पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति के साथ प्रवेश शुल्क नहीं लौटाया जाता है। क्या सरकार यह मंशा रखती है कि जो एस.सी.एस.टी. के छात्रों की फीस लगती है या विकास शुल्क के नाम पर इनसे लेते हैं, क्या यह छात्रवृत्ति के साथ लौटाने का मन रखते हैं?

श्री मदन दिलावर : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने पहला प्रश्न किया है कि क्या सरकार छात्रवृत्ति बढ़ाने की मंशा रखती है। पन्द्रह वर्षों से निरन्तर यही छात्रवृत्ति चलती आ रही है, पूर्ववर्ती सरकार ने यह छात्रवृत्ति नहीं बढ़ाई। प्रस्ताव...(व्यवधान)

श्री रमेश खींची (कठूमर) : आप भाषण क्यों दिलवा रहे हैं, साहब, जवाब दिलवा दो खाली।

श्री मदन दिलावर : आप सुन तो लें। नहीं बढ़ाया। मेरी बात सुनें।

श्री रमेश खींची : भाषण क्यों दिलवा रहे हैं, जवाब दिलवा दें जवाब, खाली। (व्यवधान)...बढाना चाहते हैं या नहीं चाहते हैं, जवाब दिलवा दो।

श्री अध्यक्ष : आप सुनिये तो सही।

एक माननीय सदस्य : आपकी भी सरकार थी न पांच साल पहले।

श्री मदन दिलावर : आप सुनिये। सुनिये तो सही। हमारी सरकार ने पहले भी (व्यवधान)

श्री रमेश खींची : हम तो खाली जवाब चाहते हैं कि आप छात्रवृत्ति दिलवाना चाहते हैं कि नहीं?

एक माननीय सदस्य : आपने क्या किया, अभी सुनने की आदत डालो। पहले जवाब सुन लें।

श्री मदन दिलावर : माननीय अध्यक्ष महोदय, जो वर्तमान में छात्रवृत्ति चल रही है यह भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने बढ़ायी थी, मैं यह कहना चाह रहा था। मैं यह निवेदन करना चाह रहा हूं कि यह प्रकरण अभी शिक्षा विभाग के विचाराधीन है और इस पर वित्त विभाग और शिक्षा विभाग मिल कर विचार कर रहे हैं।

दूसरा प्रश्न है, इनकी 23.3.2003 को परीक्षा का आयोजन किया गया था। विशेष

(श्री मदन दिलावर)

विद्यालयों में उनकी परीक्षा आयोजित करके जो अच्छे विद्यालय हैं उनमें पढ़ने के लिए बालकों को भेजते हैं। मुझे बहुत कष्ट है इस बात का कि जो पिछली सरकार थी उसने अपने बजट भाषण में ताबड़–तोड़ घोषणाएं कर दीं और इतनी संख्या बढ़ा दी कि वो जो कर नहीं सकते थे। चूंकि चुनाव नजदीक थे, चुनाव नजदीक होने के कारण उन्होंने देखा कि कैसे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जाति के बालकों को, उनके अभिभावकों को या जनता को बेवकूफ बनाया जा सकता है और बजट भाषण में घोषणा कर दी। लेकिन...

श्री अध्यक्ष : मंत्रीजी, आप प्रश्न का जवाब दें।

श्री बाबूलाल नागर : अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री महोदय से जो प्रश्न का उत्तर चाहा था, न तो पहले का उत्तर मिला और दूसरे का भी आपने...(व्यवधान)

श्री मदन दिलावर : मेरी बात पूरी सुन लें।

श्री सी. डी. देवल : अध्यक्ष महोदय, ये तो भाषण दे रहे हैं, जवाब नहीं दे रहे हैं। इनसे आप जवाब दिलवाएं भाषण नहीं दिलवाएं।

श्री मदन दिलावर : मेरी बात पूरी सुन लें। परीक्षा आयोजित की गयी, श्रीमान्।

श्री खुशवीर सिंह (खारची) : माननीय अध्यक्ष महोदय, हमें भाषण नहीं सुनना है, जवाब चाहिए प्रश्न का।

श्री सी. डी. देवल : आज तक आप घोषणाएं करते रहे हो, नयी घोषणाएं क्या हो गयीं?

श्री मदन दिलावर : आप मेरी बात सुनिये।

श्री अध्यक्ष : आपको जवाब सुनना है कि नहीं?

श्री सी. डी. देवल : आप जवाब दीजिये, भाषण से कोई मतलब नहीं है। (व्यवधान)

श्री अशोक (खण्डार) : धर्मपालजी से जवाब दिलवा दो, हम तो संतुष्ट हो जाएंगे, क्योंकि बार–बार जवाब वो ही दे रहे हैं, मंत्री महोदय तो दे नहीं रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : आप जवाब सुनना चाहते हैं कि नहीं?

श्री सी. डी. देवल : आप केवल आलोचना करना चाहते हो, यह उचित नहीं है।

श्री मदन दिलावर : कोई आलोचना नहीं है, यह तथ्यात्मक बात है। (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल : आपकी सरकार 8 साल रही, आपने क्यों नहीं बढ़ायी? हमारी सरकार की बात करते हो, ताबड़–तोड़ घोषणाएं आपने नहीं की क्या? आपके

(श्री सी. डी. देवल)

भाषण में घोषणा की है, आपका जो घोषणा पत्र है उसमें आपकी घोषणाएं हैं।

श्री अध्यक्ष : भाषण नहीं।

श्री सी. डी. देवल : कौनसी पार्टी ऐसी है जो घोषणाएं नहीं करती है? यह कह रहे हैं कि क्या जरूरत थी, आपने ताबड़-तोड़ घोषणा कर दी।

श्री अध्यक्ष : आप चाहे जब खड़े हो जाते हैं, कभी नसीहत देते हैं मंत्री को और कभी कुछ और करते हैं। हां, मंत्रीजी, कृपया जवाब दीजिये।

श्री मदन दिलावर : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि...

श्री बाबूलाल नागर : अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय से पहले ही प्रश्न का जवाब नहीं दिया कि 15 साल तक छात्रवृत्ति नहीं बढ़ायी...

श्री अध्यक्ष : हां, नहीं बढ़ायी, दे दिया उन्होंने।

श्री बाबूलाल नागर : क्या यह सरकार बढ़ा रही है? और बढ़ा रही है तो कितनी बढ़ा रही है? सटीक भाषा में उत्तर दें कि हम इतने रुपये बढ़ा रहे हैं।

श्री मदन दिलावर : आप पूरा जवाब ले लें। माननीय अध्यक्ष महोदय, जो मैं निवेदन कर रहा था

श्री अध्यक्ष : मंत्रीजी, आप प्रश्न का जवाब दीजिये।

श्री मदन दिलावर : मैं प्रश्न का जवाब दे रहा हूं। उसके कारण से प्राब्लम आयी थी। जो उस समय बजट के प्रावधान थे उस हिसाब से हमने कट आफ क्रमांक कर दिये हैं, मैरिट बना रहे हैं। उसके आधार पर शिक्षा विभाग यह भी करने वाला है और शिक्षा विभाग तुरन्त रिजल्ट भी घोषित करने वाला है।

उसका दूसरा पार्ट है आवासीय विद्यालय आवासीय विद्यालयों में भी हम इस प्रकार की परीक्षा लेते हैं और उसका रिजल्ट घोषित करते हैं। हमने कट आफ मार्क्स तय कर दिये और उसे आधार पर शीघ्र ही परीक्षा परिणाम की घोषणा हो रही है। अगला आने वाला जो शिक्षा सत्र है उसमें ऐसी परीक्षा में सफल होने वाले सभी बालकों को आवासीय विद्यालयों में प्रवेश दे दिया जाएगा।

श्री बाबूलाल नागर : मैं सत्र 2003 की बात कर रहा हूं। 2003 सत्र की आपने परीक्षा आयोजित की है?

श्री मदन दिलावर : इसी की बात कर रहा हूं। अभी कौन सा सत्र है, बच्चे कौनसे विद्यालय में पढ़ रहे हैं? आपको पता है क्या, कहां-कहां से राजस्थान भर के आवासीय विद्यालय में बच्चे आते हैं? (व्यवधान)

श्री बाबूलाल नागर : इस सत्र में जिन लोगों ने परीक्षा दी है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप उनका जवाब सुनना चाहते हैं या नहीं?

श्री मदन दिलावर : उनको डिस्टर्ब करना बहुत मुश्किल है। ये इनके किए हुए पाप मेरे ऊपर थोपना चाहते हैं, माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री अध्यक्ष : अब आप यह भाषा न बोलें।

श्री मदन दिलावर : जहां तक इन्होंने तीसरा प्रश्न किया है कि पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति और उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति में यह अन्तर है कि उसमें तो परीक्षा शुल्क फर्स्ट बार जमा होता है, एडमिशन फीस जिसको कहते हैं उसको लौटा देते हैं, लेकिन इसमें नहीं लौटाते, इस प्रकरण के बारे में हम विचार करेंगे कि क्या कर सकते हैं। इस प्रकार का अभी तक कोई भी प्रकरण हमारे पास विचाराधीन नहीं है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही) : माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रश्न के भाग–3 में माननीय मंत्री महोदय ने उत्तर दिया है कि कम्प्यूटर शिक्षा नि:शुल्क उपलब्ध कराने का कोई प्रावधान नहीं है। मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में क्रमांक 23 शिक्षा के अन्तर्गत यह लिखा है कि सरकार द्वारा कम्प्यूटर शिक्षा मुफ्त उपलब्ध करायी जाएगी। मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं कि क्या सरकार कम्प्यूटर शिक्षा मुफ्त उपलब्ध कराने के बारे में कोई प्रावधान करने जा रही है? या राजस्थान की जनता से किए हुए अपने इस वादे से मुंह फेरने जा रही है?

श्री कालूलाल गुर्जर : पांच साल में हो जाएगा।

श्री संयम लोढ़ा : टोकिये मत, जवाब देने दीजिये।

श्री मदन दिलावर : यह शिक्षा विभाग से सम्बन्धित मामला है, माननीय शिक्षा मंत्रीजी यहां बिराजे हैं, जब इस पर विचार होगा तो अपनी बात वो कहेंगे।

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न है। श्री लक्ष्मीनारायण दवे।

श्री संयम लोढ़ा : अलग से कैसे है, अध्यक्षजी, जवाब दिया है इन्होंने।

श्री अध्यक्ष : आज सारे प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हैं और मैं चाहूंगी कि सारे प्रश्नों का उत्तर दिलवाया जाए। श्री लक्ष्मीनारायण दवे।

पूर्व अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विरुद्ध जांच

34. श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सोजत): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) गत पांच वर्षों में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष के विरुद्ध गबन, घोटाले एवं अनियमितताओं के कौन-कौन से व कितने मामले विचाराधीन हैं?

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

(2) क्या सरकार उक्त के विरुद्ध कार्यवाही करने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक और नहीं, तो क्यों?

शिक्षा मंत्री (श्री घनश्याम तिवाड़ी): (1) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष के विरुद्ध अपने पद के दुरुपयोग करके अनुचित तरीके से परीक्षार्थियों के परीक्षा केन्द्र बदलने सम्बन्धी... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : सुनिये। जवाब सुनिये।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : 4 परीक्षार्थियों के प्रकरण लोकायुक्त सचिवालय से भी प्राप्त हुए हैं, जिनका प्रत्युत्तर राज्य सरकार के विचाराधीन है।

इसके अतिरिक्त प्राथमिक जांच संख्या 47/01 श्री पी. सी. व्यास व सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विरुद्ध दूरस्थ शिक्षा के छपाई के पेपर से सम्बन्धित दर्ज है एवं 34/02 विरुद्ध श्री पी.सी. व्यास, अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का कम्प्यूटर के ठेके से सम्बन्धित प्रकरण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, अजमेर में दर्ज है जो वर्तमान में जांचाधीन है।

(2) परीक्षण के उपरान्त एवं भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार कार्यवाही की जानी सम्भव होगी।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : माननीय अध्यक्ष महोदय, लोकायुक्त सचिवालय के द्वारा जो जानकारी शिक्षा विभाग को मिली है, मैं जानकारी चाहूंगा कि शिक्षा विभाग ने जो शिकायत प्राप्त हुई है। उसके बारे में कोई मुकदमा पंजीबद्ध किया या नहीं? और नहीं किया तो क्यों?

दूसरा, माननीय अध्यक्ष महोदय, यह ऐसा भ्रष्टाचार का मामला है जिसमें छात्रों के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ किया गया। यह कम्प्यूटर ठेके का भ्रष्टाचार का मामला है, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं शिक्षा मंत्री महोदय से जानकारी चाहूंगा कि कम्प्यूटर शिक्षा के मामले में माननीय शिक्षा मंत्रीजी और राज्य सरकार इसके बारे में क्या करने जा रही है? और, माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा तीसरा प्रश्न है कि भ्रष्टाचार का मामला माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष के विरुद्ध जो पंजीबद्ध हुआ है वो किन धाराओं में पंजीबद्ध हुआ है और शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष के खिलाफ राजस्थान भ्रष्टाचार निरोधक विभाग द्वारा कार्यवाही कर उन्हें गिरफ्तार क्यों नहीं किया गया?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, एक बात बिलकुल स्पष्ट है कि अपने यहां पर जो प्रक्रिया चलती है वो नियम कानून-कायदे के अन्तर्गत चलती है, चाहे कांग्रेस पार्टी के समय का कोई मामला हो. चाहे भारतीय जनता पार्टी का। श्री पी. सी. व्यास के खिलाफ कांग्रेस पार्टी के समय ही, सरकार है चाहे वो

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

बीजेपी की हो या कांग्रेस की हो, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अन्तर्गत मामला दर्ज है। लोकायुक्त के यहां उनके खिलाफ जांच चल रही है चार मामलों में। राज्य सरकार से, शिक्षा विभाग से लोकायुक्त ने रिपोर्ट मांगी है। मैंने माननीय सदस्य को बताया है कि लोकायुक्त को हम एक रिपोर्ट बनाकर भेज रहे हैं, इस पर लोकायुक्त कार्यवाही करेगा। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो जो जांच कर रहा है उसमें प्रिलिमिनरी इंक्वायरी चल रही है, वो इंक्वायरी रिपोर्ट आने पर हम इनके खिलाफ कार्यवाही करेंगे। श्री व्यास ने अपने पद् से इस्तीफा दे दिया है जो हमने स्वीकार कर लिया है।

मैं एक बात और कहना चाहूंगा, जो माननीय सदस्य ने दूसरा मामला उठाया है, एक मामला तो है जिसमें बोर्ड के परीक्षा केन्द्र उन्होंने बदले थे। एक लड़के जो उनका सम्बन्धी था उसके लिए एक स्कूल में एक ही उन्होंने अलग से परीक्षा का सेंटर खोलकर उसकी परीक्षा करा दी। एक ही लड़का है वह उनका भतीजा है।

श्री अध्यक्ष : यह मामला पूर्व में आ चुका है, विधान सभा में आ चुका है यह मामला।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : आज भी है। मैं कह रहा हूं, उसकी जांच चल रही है, जांच होने पर उस पर कार्यवाही की जाएगी। दूसरा जो महत्वपूर्ण मामला है वह है ठेके से सम्बन्धित, कम्प्यूटर के ठेके में भ्रष्टाचार हुआ है। इस मामले में स्वयं भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी अशोक गहलोत ने लिखा है कि इस मामले में गड़बड़ है। इसलिए मैं कह रहा हूं कि इस मामले में निश्चित रूप से भ्रष्टाचार हुआ है और वह भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के यहां पर विचाराधीन है। इसमें जो महत्वपूर्ण मामला है, जो माननीय सदस्य ने कहा है वह है कम्प्यूटर शिक्षा राजस्थान के विद्यार्थियों के साथ बहुत बड़ा अन्याय इस कम्प्यूटर शिक्षा में हुआ है। अध्यक्ष महोदय, पहले 624 विद्यालयों में प्रारम्भ की गई। उसके बाद सारे सैकण्डरी, सीनियर सैकण्डरी में किया गया। करीब करीब 90 परसेंट ठेका कम्प्यूकॉम को दे दिया गया और बोर्ड और सैकण्डरी एजुकेशन, राजस्थान को नॉडल एजेंसी बना दिया गया। अध्यक्ष महोदय, सबलैटिंग का, फ्रेंचाइज का इसमें कोई प्रावधान नहीं था, एम.ओ.यू. में उसका उल्लंघन करके इस प्रकार की व्यवस्था की गई।

श्री अध्यक्ष : माननीय मंत्रीजी, भ्रष्टाचार निरोधक विभाग इसकी जांच कर रहा है इसलिए आपके लिये ज्यादा विस्तृत जानकारी देना आवश्यक नहीं है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : कम्प्यूटर शिक्षा के बारे में कुछ तथ्य लाना बहुत जरूरी है, वह मैं ला रहा हूं। मैं यह

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

कह रहा हूं कि उसमें उन्होंने तीन काम किये। राजस्थान में जगह जगह आज आंदोलन हो रहा है। पहला काम यह किया कि कम्प्यूटर लगाने थे वे लगाये नहीं, फीस वसूल कर ली गई। दूसरा काम यह हुआ, यह कहा कि जहां बिजली है, जहां बिजली आती है उन स्कूलों में ही फीस ली जाए और वहीं कम्प्यूटर लगाये जाएं। उन स्कूलों से फीस वसूल कर ली गई जहां बिजली ही नहीं आती। इस प्रकार से सारे राजस्थान के अभिभावक और विद्यार्थी इससे परेशान है। इसलिए राज्य सरकार ने इसमें कुछ निर्णय किये हैं। पहला निर्णय यह किया है राज्य सरकार ने, मैं आदेश दे रहा हूं कि राजस्थान भर में जिन विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा की फीस वसूल हो रही है उसको तुरन्त बन्द किया जाता है, आज से कोई फीस नहीं ली जाएगी।

श्री अध्यक्ष : यह प्रश्न से सम्बन्धित बात नहीं है, आपको देने की आवश्यकता नहीं है। प्रश्न में जो पूछा गया है आप उतना ही जवाब दें।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : प्रश्न से सम्बन्धित ही है। अध्यक्ष महोदय, सचिव स्तर पर समिति नियुक्त की गई है इस मामले में। इन्होंने पूछा है कि सरकार क्या कर रही है। सचिव स्तर पर समिति नियुक्त की गई है जिसमें शासन सचिव, विशिष्ट शासन सचिव, उप सचिव वित्त, उप सचिव शिक्षा, उप सचिव विधि, ये जांच करेंगे और जांच करने के बाद एक तारीख तक रिपोर्ट देंगे। उस रिपोर्ट के बाद राज्य सरकार कम्प्यूटर शिक्षा के बारे में नये सत्र से अपनी नीति का ऐलान करेगी। छात्रों से फ्रेंचाइजी का जो मुकदमे में आया है, इन्होंने यह किया कि सबलैटिंग कर दिया, सबलैटिंग से पैसा ले लिया...

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, यह मामला सारा भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के विचाराधीन है तो फिर आप यह जवाब क्यों दे रहे हैं?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सारा नहीं है।

श्री अध्यक्ष : जो जानकारी आपसे मांगी गई है वही आप दीजिए।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर) : अध्यक्ष महोदय, मुझे तो ऐसा लग रहा है कि यह मैच फिक्सिंग है। यह सवाल और जवाब मैच फिक्सिंग है इनकी।

श्री धर्मपाल चौधरी : यह मैच फिक्सिंग नहीं है, ये आपकी परतें हैं पांच साल की। (व्यवधान) पांच साल में कम्प्यूटर शिक्षा के नाम पर राजस्थान में जो लूट हुई है, यह भ्रष्टाचार का मामला है। (व्यवधान) कम्प्यूटर शिक्षा के नाम पर जो लूट मची, जो आपने पैसा लूटा है, उसके बारे में बता रहे हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : आपके काले कारनामे खुल रहे हैं। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद : इससे जांच प्रभावित होगी।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : सुनो, माहिरजी, आपके काले कारनामे खुलने जा रहे हैं।

मोहम्मद माहिर आजाद : माननीय मंत्रीजी जो जवाब दे रहे हैं इससे जांच प्रभावित होगी। आप जो जवाब देना चाहते हैं वह बात सही है, लेकिन यह फिक्सिंग नहीं चलेगी यहां पर।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आपने जो भ्रष्टाचार मचाया है इस प्रदेश में, आपके काले कारनामे सुनो अब।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : कम्प्यूटर शिक्षा के मामले में छात्रों के साथ आपने जो अत्याचार किया...(व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र गोयल : अध्यक्ष महोदय, जब मंत्री महोदय स्वयं जानते हैं कि यह भ्रष्टाचार हुआ है और यह कह रहे हैं भ्रष्टाचार विभाग में...

श्री अध्यक्ष : नहीं, पहले आप मेरा निवेदन सुनिए। माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें। माननीय सदस्य, पहले आप मुझे सुनिए। माननीय मंत्रीजी, मैं आपको यह निवेदन कर रही हूं कि जो बात आपसे पूछी नहीं गई है उसके बारे में आपको बताने की आवश्यकता भी नहीं है, जवाब देने की आवश्यकता नहीं है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अध्यक्ष महोदय, पूरक प्रश्न आपने अलाउ किया और पूरक प्रश्न के लिये मुझे जो बताना था मैंने बताया। अगर प्रतिपक्ष के माननीय विधायक चाहते हैं कि राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी लुटते रहें, ऐसा राज्य सरकार नहीं चाहती। राज्य सरकार चाहती है कि राजस्थान के विद्यार्थियों के साथ जो अन्याय हुआ है उसका न्याय किया जाए और यह सरकार न्याय करेगी। जिन्होंने भ्रष्टाचार किया है, गलत पेमेंट किया है उनके खिलाफ हर हालत में कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

श्री अध्यक्ष : नैक्स्ट क्वेश्चन, श्री बहादुर सिंह गोदारा। (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी : अध्यक्ष महोदय, मैंने तीनों प्रश्नों में तीन बार आपसे परमिशन मांगी है और आपने तीनों बार मुझे बोलने की परमिशन नहीं दी।

श्री अमराराम (धोद) **:** मंत्रीजी, कम से कम यह तो बता दें, जहां फीस वसूल करने की बात कर रहे हो, फीस तो जुलाई में वसूल हो गई, आप तो यह कहिए कि जिन सैकण्डरी और सीनियर सैकण्डरी स्कूलों में आज तक कम्प्यूटर नहीं लगा उनकी फीस 31 जनवरी तक वापस लौटा दी जाए। (व्यवधान) फीस तो वसूल हो गई जुलाई में। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : श्री बहादुर सिंह गोदारा।

श्री धर्मपाल चौधरी : जिन स्कूलों में बिजली थी ही नहीं और वहां पर कम्प्यूटर का पैसा ले लिया, उनका पैसा कब तक वापस मिलेगा?

श्री श्रवण कुमार : यह कम्प्यूटर का विषय नहीं है, भ्रष्टाचार का विषय है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप अपना स्थान ग्रहण करें। माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : 40 लाख रुपये का भ्रष्टाचार शिक्षा विभाग में हुआ है। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : मंत्री महोदय, आपसे निवेदन है कि वास्तव में भ्रष्टाचार के विरुद्ध कार्यवाही करेंगे आप।

श्री सी. डी. देवल : मंत्री महोदय, क्या यह पी. सी. व्यास ही है, इसके अलावा सैक्रेटरी एजुकेशन वगैरह अधिकारी नहीं हैं क्या इसमें? उनको भी आप लपेटे में लीजिए, उनकी भी जांच करवाइए। आखिर कौन कौन लोग इस भ्रष्टाचार में शामिल हैं?

एक माननीय सदस्य : पी. सी. व्यास का मामला आपको क्यों दु:ख रहा है?

श्री सी. डी. देवल :...हटाने से क्या काम चलेगा? जो सैक्रेटरी वगैरह शामिल हैं आप उनको भी इसमें शामिल कीजिए, उनके खिलाफ भी कार्यवाही कीजिए।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण कीजिए।

वृद्ध एवं असहाय व्यक्तियों को पेंशन

35. श्री बहादुर सिंह गोदारा (नोहर): क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(1) क्या सरकार वृद्ध किसानों/ मजदूरों एवं नि:शक्त व विधवाओं को सरकारी कर्मचारियों की तरह वृद्धावस्था पेंशन देने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक, व नहीं तो क्यों?

(2) क्या सरकार अपाहिजों/चलने फिरने एवं काम करने में असमर्थ लोगों को पेंशन या अन्य सहायता देकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करेगी? यदि हां, तो कब तक व नहीं, तो क्यों?

समाज कल्याण मंत्री (श्री मदन दिलावर) : (1) राज्य सरकार द्वारा पात्रता रखने वाले सभी वर्गों (जिनमें किसान व मजदूर भी शामिल हैं) के निराश्रित वृद्धों, नि:शक्तों एवं विधवाओं को आवेदन करने पर पेंशन स्वीकृत की जाती है। पेंशन का भुगतान सरकारी कर्मचारियों की तरह ही निर्धारित दरों पर मासिक आधार पर किया जाता है।

(2) राज्य सरकार द्वारा नियमानुसार पात्रता रखने वाले गरीब, निराश्रित, नि:शक्तों को आवेदन करने पर पेंशन स्वीकृत की

(श्री मदन दिलावर)

जाती है। अन्य सहायताओं के रूप में अपाहिजों, चलने-फिरने एवं काम करने में असमर्थ लोगों को विभाग द्वारा निम्नानुसार सहायता देकर भी आत्मनिर्भर बनाया जाता है:-

1. निःशक्त व्यक्तियों को स्वरोजगार शुरू करने हेतु रुपये 2000/- तक की आर्थिक सहायता तथा शारीरिक कमी को पूर्ण करने हेतु कृत्रिम अंग/उपकरण उपलब्ध करवाये जाते हैं।

2. पोलियोग्रस्त विकलांगों का पोलियो करैक्शन आपरेशन निःशुल्क करवाकर उन्हें चलने-फिरने में सक्षम बनाया जाता है।

3. अध्ययनरत निःशक्त छात्रों को छात्रवृत्ति उपलब्ध करवायी जाती है।

4. निःशक्तों के शिक्षण प्रशिक्षण हेतु स्वयंसेवी संगठनों द्वारा संचालित आवासीय एवं गैर आवासीय संस्थाओं के संचालन हेतु नियमानुसार अनुदान उपलब्ध करवाया जाता है।

5. निःशक्तों को राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसों में रियायती/ निःशुल्क यात्रा की सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है।

6. मुख्य मंत्री रोजगार योजनान्तर्गत आबंटित कियोस्क में से 10 प्रतिशत का आबंटन निःशक्तों को निःशुल्क किया जाता है।

7. निःशक्त दम्पत्तियों को विवाह पर सुखद दाम्पत्य जीवन की शुरूआत करने हेतु रुपये 20,000/- प्रति दम्पति सहायता उपलब्ध करवायी जाती है।

श्री बहादुर सिंह गोदारा : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं, मैंने सवाल यह किया है कि निराश्रित, निःशक्त, वृद्धों एवं विकलांगों को पेंशन किस तरह दी जाती है, तो इसमें पात्रता का सवाल कहां आता है? ये पात्र हैं तभी तो इनके लिये कहा जाता है। इसलिए आपका पात्रता से क्या अभिप्राय है? दूसरा मेरा सवाल यह है कि आपको जिनको इक्विपमेंट दे दिये क्या उनको भी पेंशन दी जाएगी या नहीं दी जाएगी?

श्री मदन दिलावर : अध्यक्ष महोदय, सबकी पात्रता तय की हुई है। जैसे विकलांग है, तो 8 वर्ष की उम्र से ज्यादा है ऐसे सभी विकलांगों को जिनके पिता की आय न्यूनतम है या परिवार में कोई कमाने वाला नहीं है...

श्री बहादुर सिंह गोदारा : न्यूनतम से मतलब?

श्री मदन दिलावर : आप सुनो तो सही। (व्यवधान) बता रहा हूं। (व्यवधान) आप सुनो तो सही। उनके परिवार की आय एक हजार रुपये से कम है तो...

एक माननीय सदस्य : आय बताएं न न्यूनतम। (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर : आय कह रहा हूं। आयु पहले बतायी, अब आय बता रहा हूं। (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : दो हजार वार्षिक है या दो हजार महीने की न्यूनतम है। (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर : आप मेरी बात तो सुन लें। यह मैं केवल विकलांगों के लिये बता रहा हूं। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : मंत्री महोदय, आप पहले जानकारी प्राप्त कर लें, आप आयु से आय पर आ गये। (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर : अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि 8 वर्ष की आयु से अधिक हो और आय एक हजार रुपये मासिक से कम हो, ऐसे सब परिवारों के लोगों को पेंशन देते हैं। विकलांग पेंशन के बारे में मैंने बताया है। अब यह जानना चाह रहे हैं वृद्धावस्था या विधवा–अवस्था के बारे में। जो माननीय सदस्य कह रहे थे वह वृद्धावस्था और विधवाओं पर लागू होता है। इसकी पात्रता है 58 वर्ष की आयु का पुरुष या 55 वर्ष की आयु की महिला या किसी भी आयु की विधवा जो निराश्रित हो, एक। दूसरा है राजस्थान का निवासी तथा आवेदन की तिथि को कम से कम 3 वर्ष से राजस्थान में रह रहा हो। (व्यवधान)

श्री रामसिंह विश्नोई : यह लिखा हुआ है इसमें, है इसमें।

श्री मदन दिलावर : है। है तो फिर क्यों पूछ रहे हो, पढ़ क्यों नहीं लिया?

श्री रामसिंह विश्नोई : यह हमको मालूम है, पूरे राजस्थान को मालूम है।

श्री मदन दिलावर : फिर क्यों पूछ रहे हो मेरे से। जो पूछ रहे हो, वही बताऊंगा मैं। (व्यवधान) माननीय सदस्यों को पता नहीं है, आपको तो पता है। आप बहुत सीनियर मैम्बर हैं।

श्री अध्यक्ष : आप तो मंत्रिमण्डल में रहे हुए हैं। (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर : अब पति–पत्नी, पुत्र, दत्तक, पौत्र 20 वर्ष या इससे अधिक आयु के न हों, ऐसे सदस्य स्वयं कमाने में असमर्थ हों, बी.पी.एल. परिवार के 65 वर्ष से अधिक के पुरुष या महिला को उपरोक्त में से किसी भी बात के होते हुए भी पेंशन देय है। यानि जो बी.पी.एल. परिवार है उसमें हम फिर ये सारी शर्तें नहीं रखते हैं। उसमें जो विधवा और वृद्ध हैं सबको पेंशन देते हैं।

श्री अध्यक्ष : आपने अभी तो 58 और 55 बताया और अब खुद 65 बता रहे हैं। ठीक तो करो थोड़ा। (व्यवधान)

श्री मदन दिलावर : मेरा निवेदन सुनें। मैंने यह कहा है कि यह तो है सामान्य... (व्यवधान) आप सुनें। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप शांत रहिये। आप जवाब देने दीजिए उन्हें।

श्री मदन दिलावर : मैंने यह निवेदन किया है, विधवा के लिये तो 18 साल से बड़ी को भी हम दे देते हैं। उसमें उनका यह प्रावधान है, जो मैंने कहा है। वृद्धों के लिये 58 साल की आयु तक तो मैंने नार्म्स बताये थे चार, ये लागू हैं, लेकिन ज्योंही 65 वर्ष का वह वृद्ध हो जाता है फिर सारे नार्म्स समाप्त होकर वह बी.पी.एल. परिवार का हो, जो आइडेंटिफाई किये हुए हैं, सबकी सूची बनी हुई है उस सूची में जिनके नाम हैं, ऐसे सब परिवारों के ऊपर यह लागू होता है, सब परिवारों के वृद्धों को हम पेंशन देते हैं। और जो पेंशन देते हैं, वह दर है...(व्यवधान) आप सुनें तो सही। दर है–58 वर्ष से अधिक, किन्तु 65 वर्ष की आयु के पुरुष को, सौ रुपये प्रति माह 55 वर्ष से अधिक आयु की महिला, किसी भी आयु की विधवा हो, उसको 2 सौ रुपये प्रति माह। 65 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष को दो सौ रुपये प्रति माह। लेकिन संयुक्त पेंशन है, पति–पत्नी दोनों की, तो 3 सौ रुपये प्रति माह देते हैं। (व्यवधान)

श्री हेमराज : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक सवाल है, सारे राजस्थान में पिछले सालों में कई वृद्धावस्था, विकलांग पेंशन बन्द हुई...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : राजस्थान में इस समय ऐसे कितने लोग होंगे जिनको आप दे रहे हैं? (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पेंशन की रकम बहुत ही कम है और इतना पैसा तो आने–जाने में, वह तहसील मुख्यालय पर जाएगी तो, खर्च हो जाता है। (व्यवधान) मेरा विनम्र शब्दों में निवेदन है कि पेंशन उसको घर बैठे मिले। जो पेंशन बीच में बन्द कर दी उनको भी वापस घर बैठे मिले। नहीं तो ये डेढ़–दो सौ रुपये तो आने–जाने में ही खर्च हो जाते हैं। इसकी सुचारू रूप से व्यवस्था कराएं। यह पेंशन कम है, इस पेंशन को बढ़ाया जाए और घर बैठे मनीआर्डर मिले। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : इस समय राजस्थान में ऐसे कितने लोग हैं जो पेंशन प्राप्त कर रहे हैं? (व्यवधान)

श्री हेमराज : सारे राजस्थान में विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन बंद हो गयी थी...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : नैक्स्ट क्वेश्चन, श्री जुबेर खान। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान : प्रश्न संख्या–36।.

श्री हेमराज : जिनके पी.पी.ओ. जारी हो गये।

एक माननीय सदस्य : वह पेंशन रैगुलर मिल रही है या नहीं मिल रही है?

श्री अध्यक्ष : नैक्स्ट क्वेश्चन पुकार लिया गया। (व्यवधान) आप बिराजिये।

श्री मदन दिलावर : अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बिराजिये। मंत्रीजी, बिराजिये आप, आपने दे दिया जवाब। नैक्स्ट क्वेश्चन, श्री जुबेर खान। (व्यवधान) देखिये, आगे बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, आप समझ नहीं रहे हैं, जवाब आने दीजिए उनका।

अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को प्रोत्साहन

36. श्री जुबेर खान (रामगढ़) : क्या युवा एवं खेलकूद मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि राज्य के अनेकों खिलाड़ी विभिन्न खेलों में अन्तरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त कर चुके हैं? यदि हां, तो खिलाड़ियों की सूची मय खेल/प्रतियोगिता के सदन की मेज पर रखें।

(2) क्या सरकार ने उक्त खिलाड़ियों को किसी प्रकार की राजकीय सुविधाएं/पुरस्कार प्रदान किये हैं? यदि हां, तो सूची मय दी गयी सुविधा/पुरस्कार के सदन की मेज पर रखें।

(3) क्या सरकार द्वारा इन खिलाड़ियों को पुरस्कृत करने के लिये नियम बनाये गये हैं? यदि हां, तो क्या, और नहीं, तो क्यों?

(4) क्या सरकार अब इन खिलाड़ियों को अन्य राज्यों की भांति पुरस्कार/सुविधाएं देने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप जवाब दीजिए। खेल मंत्रीजी, जवाब दीजिए। (व्यवधान)

युवा एवं खेलकूद मंत्री (श्री यूनुस खान) : (1) जी हां। अन्तरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त खिलाड़ियों की सूची परिशिष्ट "1" पर उपलब्ध है। (व्यवधान)

श्री रामचन्द्र सराधना : माननीय अध्यक्षजी, मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं, जो असहाय हैं, खाट पर पड़े हुए हैं, उनको पेंशन नहीं मिल रही है। ट्रैजरी में उनको बुला रहे हैं, वे खाट पर डालकर लाएंगे क्या? (व्यवधान) उसका सर्टिफिकेट कौन देगा? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बिराजिये, मैंने अगला क्वेश्चन पुकार लिया। (व्यवधान) अगला क्वेश्चन पुकार लिया। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : मंत्री महोदय दुबारा से बोले, सुनाई नहीं दिया। (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल : असहाय हैं उनको पेंशन नहीं मिल रही है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आगे भी बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। (व्यवधान)

श्री खुशवीर सिंह : जो अक्षम हैं, यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है. असक्षम, असहाय लोगों की बात है, वृद्धों की बात

(श्री खुशवीर सिंह)

है इससे महत्वपूर्ण कोई मुद्दा नहीं हो सकता है, इसलिये इसके ऊपर पहले विचार किया जाए। (व्यवधान)

श्री रामचन्द्र सराधना : वे कहीं आ नहीं सकते, जा नहीं सकते। (व्यवधान) ये सवाल तो यूं ही चलते रहेंगे। (व्यवधान) लेकिन आप इनको कहे, वृद्ध लोगों की पेंशन बंद है। जिन वृद्धों को बच्चों ने छोड़ रखा है उनको भी ये पेंशन नहीं देते हैं, उनको दी जाए। (व्यवधान)

श्री युनूस खान : (2) जी हां। खिलाड़ियों को राजकीय सुविधा प्रदान की गई सूची परिशिष्ट "2" पर उपलब्ध है। खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार की सूची परिशिष्ट "3" पर उपलब्ध है।

एक माननीय सदस्य : पेंशन की प्रक्रिया बड़ी जटिल है।

श्री युनूस खान : (3) जी हां। खिलाड़ियों को पुरस्कृत करने के लिये निम्न नियम बने हुए हैं। (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : हमें सुनायी नहीं दिया इसलिये दुबारा से सुनाया जाए।

श्री युनूस खान : (1) जी हां। अन्तरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त खिलाड़ियों की सूची परिशिष्ट "1" पर उपलब्ध है।

(2) जी हां। खिलाड़ियों को राजकीय सुविधा प्रदान की गई सूची परिशिष्ट "2" पर उपलब्ध है।

खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार की सूची परिशिष्ट "3" पर उपलब्ध है।

(3) जी हां। खिलाड़ियों को पुरस्कृत करने के लिये निम्न नियम बनाये हुए हैं:–

1. राजस्थान खेल अनुदान नियम, 1986
2. खेल रत्न पुरस्कार नियम, 1995
3. महाराणा प्रताप पुरस्कार नियम
4. सरकारी नौकरी में 2 प्रतिशत आरक्षण

उपरोक्त नियमों की प्रतियां परिशिष्ट "4", "5", व "6" पर उपलब्ध हैं।

(4) राजस्थान सरकार द्वारा प्रश्न के भाग–3 के उत्तर में वर्णित नियमों में ही फिलहाल पुरस्कार/सुविधाएं देने का प्रावधान है।

(सूचियां विधान सभा पुस्तकालय में रखी गयीं)

श्री जुबेर खान : माननीय अध्यक्ष महोदय, एक तो सभी माननीय सदस्यों से निवेदन है कि इसमें राजनीति नहीं करें, क्योंकि जो राजस्थान का गौरव बढ़ाते हैं, ऐसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों से जुड़ा हुआ यह सवाल है। आपने जो उत्तर दिया है, 1952 से प्रतियोगिताएं चालू

(श्री जुबेर खान)

हुई हैं, 50 साल से ऊपर हो गये, आपने सिर्फ 13 को तो भूमि आबंटित की है और 35 को नकद राशि दी है। आज जब यह खेल का युग काफी अग्रणी हो गया है तो मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि जो राजस्थान के होनहार खिलाड़ियों ने ओलम्पिक में हमारे प्रान्त का नाम कमाया है, एशियाड में कमाया है, कामनवैल्थ में कमाया है या अन्य अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कमाया है, क्या देश के अन्य राज्यों की भांति आप भी उनको निःशुल्क आवास या शहरों में प्लाट देने की व्यवस्था करने जा रहे हैं या नहीं करने जा रहे हैं?

मेरा दूसरा सवाल है कि नियम पुराने बने हुए हैं, चाहे सरकार कोई भी रही हो, अब मौजूदा परिस्थितियों में क्या राज्य सरकार इन होनहार खिलाड़ियों के लिये अन्य राज्यों की भांति यहां भी कोई नीति बनाने का विचार रखती है?

श्री युनूस खान : 13 खिलाड़ियों को तो सुविधाएं दी गयीं हैं। ओलम्पिक में राजस्थान से भाग तो लिया लेकिन आज तक कोई मैडल लेकर नहीं आया। एशियाड में बोलते हैं, एशियन गेम्स भी बोलते हैं, एशियाड के नाम से जो हुए हैं उनमें 19 प्रतिभागियों ने पदक प्राप्त किये हैं और हमारे एशियन गम्स में 13 ने प्राप्त किये हैं, कुल 32 लोगों ने इस तरीके के पदक प्राप्त किये हैं। इन खिलाड़ियों को माननीय सदस्य ने जो पूछा है उसके मुताबिक हमारी जो सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो ये नियम बने हुए हैं उन्हीं में दे रहे हैं। इन्दिरा गांधी नहर परियोजना में उपनिवेशन में उनको जमीन आरक्षित दर पर अलाट की गयी है। इसके अलावा अन्य राज्यों की हमने सूची मंगवायी है। जो सुविधाएं अन्य राज्यों में मिल रही हैं, उनमें विशेष तौर से दक्षिण भारत के राज्य हैं, हमने उनके यहां मिलने वाली सुविधाएं मांगी है। सरकार का सोच है कि अगर सम्भव हुआ तो इस तरह से करेंगे।

दूसरा सवाल उनकी नीति के बारे में था। सरकार नयी खेल नीति बना रही है, मैं सभी सम्माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि जो खेल में रुचि रखते हैं, उनके कोई सुझाव हों तो व्यक्तिगत मिलकर भी दे सकते हैं और लिखित में भी दे सकते हैं, जिससे हमारी नयी खेल नीति में उसको शामिल किया जा सके।

श्री जुबेर खान : माननीय अध्यक्ष महोदय. इसमें आपने जो सूची दी है, उसके मुताबिक सिर्फ 35 लोगों को अभी तक आपने नकद और 13 को भूमि आबंटित की है। बाकी जो लिस्ट में लोग बचे हुए हैं, इनको देने का क्या आपका विचार है, क्योंकि ये भी क्वालीफाई करते

(श्री जुबेर खान)

हैं? क्या इनको जमीन या नकद राशि दी जाएगी, जो बचे हुए हैं इस लिस्ट के मुताबिक?

श्री युनूस खान : अध्यक्ष महोदय, हम सूची का सारा मिलान कर लेंगे और मिलान करने के पश्चात् जो सरकार के प्रावधान हैं, उनके अनुसार अगर उनका कोई आवेदन आएगा तो निश्चित रूप से कोई भी सहायता उपलब्ध होगी सरकारी नियमों में, वह दी जाएगी।

श्री अध्यक्ष : श्री रामसिंह विश्नोई। आपका हैडिंग तो कुछ है और नीचे कुछ है।

श्री रामसिंह विश्नोई : क्या?

श्री अध्यक्ष : आपने जो प्रश्न पूछा है, जवाब तो आ चुका है उसका।

श्री रामसिंह विश्नोई : यह हैडिंग तो इन्होंने लिखा है, मैंने नहीं लिखा है।

श्री अध्यक्ष : हैडिंग तो कुछ है, नीचे कुछ है।

श्री रामसिंह विश्नोई : हैडिंग इन्होंने लिखा है, मैंने नहीं लिखा है।

श्री प्रद्युम्न सिंह : अध्यक्ष महोदय, हैडिंग तो यहां तैयार होता है, हमारा कोई लेना-देना नहीं है। (व्यवधान)

भवनविहीन राजीव गांधी पाठशालाएं

37. श्री रामसिंह विश्नोई (लूणी) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) प्रदेश में उच्च माध्यमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों के कितने पद रिक्त हैं? सरकार इन पदों को भरने हेतु क्या कदम उठा रही है?

(2) जिन पाठशालाओं में प्रधानाध्यापकों व विषय विशेषज्ञ अध्यापक नहीं हैं, उनमें अब कब तक लगा दिये जाएंगे?

(3) क्या सरकार स्वीकृत राजीव गांधी पाठशालाएं जो तीन-चार वर्षों से चल रही हैं एवं जिनमें बच्चों की संख्या भी पर्याप्त है तथा जो भवन के बिना ही चल रही हैं, में भवन बनवाने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक, व नहीं तो क्यों?

शिक्षा मंत्री (श्री घनश्याम तिवाड़ी): माननीय अध्यक्ष महोदय, यह उत्तर मैं पढूं इसके पहले कहना चाहूंगा कि इसमें कुछ गलती है, जिसको मैं सुधार रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : दीजिए जवाब, मंत्रीजी।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : (1) प्रदेश में माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों की स्थिति इस प्रकार से है:-

रिक्त पद जो मुझे दिये हैं वे गलत दिये हैं। पहले मैंने बताया था कि कुल 37 हजार पद रिक्त हैं उनमें से 27 हजार पद प्राथमिक में है और 11 हजार उच्च माध्यमिक में हैं, जो इस हिसाब से इसमें संशोधित कर लीजिए।

व्याख्याता के रिक्त पदों की पूर्ति हेतु राजस्थान लोक सेवा आयोग को अर्थनाएं भिजवाई जा रही हैं तथा विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक आयोजित करवाई जानी प्रस्तावित है। द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी अध्यापकों के पद माननीय न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश हटाये जाने पर भरा जाना सम्भव हो सकेगा।

(2) जिन विद्यालयों में प्रधानाध्यापक तथा विषय अध्यापक नहीं हैं उनमें राजस्थान लोक सेवा आयोग तथा विभागीय पदोन्नति समिति से चयनित आशार्थी उपलब्ध करवाये जाने पर भरा जाना सम्भव हो सकेगा।

(3) राजीव गांधी पाठशालाओं के भवनों के निर्माण, विकास विभाग, डी.पी.ई.पी. तथा राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं में उपलब्ध वित्तीय प्रावधानान्तर्गत करवाये जा रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य को निवेदन करना चाहूंगा कि छह हजार के करीब विद्यालयों में भवन नहीं हैं, हमने यह निश्चय किया है कि 2004 की समाप्ति तक राजस्थान में एक भी विद्यालय ऐसा नहीं रहेगा, प्राथमिक का, जो भवनविहीन हो। इस वित्तीय वर्ष में हम निश्चित रूप से बना देंगे। यह भी है परन्तु कि रामसिंहजी जो कहेंगे उसको पहले बना देंगे।

श्री अध्यक्ष : यह पूरा जवाब आ गया न, आपको संतुष्ट हो जाना चाहिए।

श्री रामसिंह विश्नोई : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय ने जो 37 हजार पद रिक्त बताये हैं वे हमारे कार्यकाल से ही चल रहे हैं और आपने स्टे वगैरह करवा दिया कोर्ट से तो... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : इसका श्रेय तो आपको ही जा रहा है।

श्री रामसिंह विश्नोई : मैं यह पूछ रहा था कि...

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : आपके कार्यकाल से नहीं चल रहे हैं? आपने नेग्लिजेंसी की, आपने भरे नहीं इसलिए चल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री रामसिंह विश्नोई : नहीं, नहीं, हमारे कार्यकाल से ही चल रहे हैं, मैंने कहा है।

श्री अध्यक्ष : बैठिये, बैठिये।

श्री रामसिंह विश्नोई : आप सुनते ही नहीं हो, प्रताप सिंहजी, मैंने कहा है कि हमारे कार्यकाल से ही चल रहा है। आप लोगों ने यह कोर्ट से स्टे करवा रखा है, मैंने यह भी कहा है। मेरा मतलब यह था। यह बात सही है कि एकदम तो हो नहीं सकते, भरे नहीं जा सकते लेकिन आपने दस दिन में, पचास दिन में, सौ दिन में, यह जो बीमारी पैदा की है, इस प्रदेश के अन्दर उत्सुकता पैदा की है, उससे हमारी अपेक्षाएं बढ़ी हैं।

एक माननीय सदस्य : रोक तो आपने लगा दी।

श्री रामसिंह विश्नोई : और मैंने भी सोचा कि शायद आप ये पद 15–20 दिनों में ही भरने जा रहे हैं। तो क्या 100 दिन के भीतर-भीतर ये 37 हजार पद, प्लस और भी जो आप महसूस करते हैं, राजस्थान में जहां पर भी शालाएं हैं, वहां पद चाहे विषयवार हों या जहां बच्चों की संख्या हो पर दूरस्थ इलाके हों, भरने का आपका इरादा है या नहीं, एक तो यह?

दूसरा, अध्यक्ष महोदय, बहुत ही महत्वपूर्ण मामला है। शहरों के अन्दर बच्चों की संख्या के अनुपात में अध्यापक ज्यादा लगे हुए हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में, जो गांव शहर के पास आये हुए हैं या जो सड़क से लगे हुए हैं, उनको छोड़कर जो भी गांव दूर हैं, बड़े गांव भी हैं, वहां मात्र दो अध्यापक लगे हुए हैं। हमारे लाख प्रयास करने के बाद भी हम उस स्थिति को सुधार नहीं सके। क्या आप उस स्थिति को...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (टौंक) : प्रयास किया था क्या आपने?

श्री अध्यक्ष : बीच में नहीं बोले।

श्री रामसिंह विश्नोई : आप सुनो पहले। आप पढ़े-लिखे तो हो नहीं। आप बैठ जाइये।

श्री अध्यक्ष : टौंक से आने वाले माननीय सदस्य, आवश्यक नहीं है आपका खड़ा होना।

श्री महावीर प्रसाद जैन : प्रयास किया था क्या?

श्री रामसिंह विश्नोई : हां, तो बता रहा हूं न मैं।

श्री महावीर प्रसाद जैन : अध्यक्ष महोदय, तबादला उद्योग के अन्दर सब अध्यापकों को, सबको शहरों में लाये और कह रहे हैं कि हमने प्रयास किया, यह बिलकुल असत्य बात है। (व्यवधान)

श्री रामसिंह विश्नोई : मैं बता रहा हूं।

श्री बन्ने सिंह राठौड़ : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पूछना चाहता हूं कि आपने अथक प्रयास किये तो क्या किये?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपको खड़े होने की आवश्यकता नहीं है।

श्री बन्ने सिंह राठौड़ : अभी पद भरे जा रहे हैं, उनके बारे में तो आप पूछते हो, परन्तु आपने पांच वर्षों में कितने पद भरे, यह कृपया बताएं? (व्यवधान)

श्री बंशीलाल खटीक : पांच वर्षों में कुछ कर नहीं सके और अब यहां प्रश्न पूछ रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : टौंक से आने वाले माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, आपको खड़े होने की क्या आवश्यकता थी? मंत्रीजी जवाब देंगे, आप क्यों खड़े हो जाते हैं? आप उनसे पूछिये। पूछा नहीं क्या आपने अब तक?

श्री रामसिंह विश्नोई : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पूछना चाहता हूं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : तो पूछ तो लिया आपने। आपने बीमारी का इलाज पूछ लिया।

श्री रामसिंह विश्नोई : क्या पूछ लिया, साहब, मैंने? मैं यह पूछ रहा था कि ग्रामीण क्षेत्रों के अन्दर बच्चों के अनुपात में जो अध्यापक कम लगे हुए हैं, क्या सबसे पहले वहां पर अध्यापक लगाएंगे? ग्रामीण क्षेत्र जो शहर से लगे हुए नहीं हैं, जो सड़क के किनारे पर नहीं हैं, क्या वहां पर आप अध्यापक पहले लगाने की चेष्टा करेंगे? (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : माननीय अध्यक्ष महोदय, तीन प्रश्न माननीय सदस्य ने पूछे हैं।

श्री अध्यक्ष : श्री प्रद्युम्न सिंह।

श्री जीतमल खांट : बीमारी से क्या तात्पर्य है?

श्री अध्यक्ष : बीमारी इनको तो है नहीं। इनको थी बीमारी। यह कह रहे हैं न बीमारी, बीमारी इनको बता रहे हैं। (व्यवधान)

श्री रामसिंह विश्नोई : क्या?

श्री अध्यक्ष : बीमारी बता रहे हैं न आप? (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, टीचर्स के रिक्रूटमेंट में जो सबसे बड़ी प्राब्लम आती है वह कोर्ट के स्टे आर्डर की है। (व्यवधान) एक मिनट। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं...

श्री अध्यक्ष : क्या बोल रहे हैं आप?

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से, आपकी इजाजत से, पूर्ववर्ती वित्त मंत्री महोदय से एक सवाल पूछना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : आप क्यों खड़े हो गये? आप किसलिये खड़े हुए हैं? मैंने प्रद्युम्न सिंह को अलाउ किया है। अनुमति दी

(श्री अध्यक्ष)

है प्रद्युम्न सिंह को। आपको नहीं दी है मैंने अनुमति, आप स्थान ग्रहण कर लीजिए।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : अध्यक्ष महोदय, आपकी इजाजत से।

श्री अध्यक्ष : आप स्थान ग्रहण करें। स्थान ग्रहण करिये।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मैं पूर्व वित्त मंत्रीजी से...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : देखिये, यह गलत तरीका है आपका। आप रोजाना इस तरह से करेंगे तो यह ठीक बात नहीं होगी। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गढ़ा : अध्यक्ष महोदय, एक सवाल पूछना चाहता हूं- पूर्व वित्त मंत्रीजी से।

श्री अध्यक्ष : नहीं, नहीं वे पूछ रहे हैं न। प्रद्युम्न सिंहजी पूछ रहे हैं न।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : आपकी इजाजत से।

श्री अध्यक्ष : प्रद्युम्न सिंहजी पूछ रहे हैं।

श्री प्रद्युम्न सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो...

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : अध्यक्ष महोदय, सरकार के फायदे की बात है, लाखों रुपये के फायदे की बात है। सरकार के फायदे की बात है, रोज करोड़ों रुपये का चूना लग रहा है उसकी बात है। अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से पूर्व वित्त मंत्रीजी से मैं पूछना चाहता हूं कि भिवाड़ी के पास में से...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : अगला प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण था, उसे आने देते आप।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : चैक पोस्ट को खतम क्यों किया? मैं पूछना चाहता हूं कि उस चैक पोस्ट से रोजाना 60-70 लोहे के ट्रक निकलते हैं, इस चैक पोस्ट को...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, मैं आपको इतनी लिबर्टी नहीं दूंगी। आपको समझना चाहिए कि प्रद्युम्न सिंहजी जब खड़े थे, मैंने नाम पुकार लिया, वे प्रश्न पूछ रहे थे. आप बीच में क्यों खड़े हुए? यह गलत बात है, यह गलत तरीका है।

श्री प्रद्युम्न सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय से पूछ रहा हूं कि टीचर्स के रिक्रूटमेंट में सबसे बड़ी बाधा जो आ रही है, कोर्ट के स्टे आर्डर की है। आपकी स्वयं की जानकारी के अन्दर है कि अगस्त-सितम्बर के महीने के अन्दर करीब 9-10 हजार टीचर्स के रिक्रूटमेंट की बात चली थी...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : जोर से बोलिये आप।

श्री प्रद्युम्न सिंह : अब मेरी बोलने की आवाज है उतनी ही तो बोलूंगा। बाकी तेज तो बोलने से रहा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यहां तो बड़ा जोर-जोर से बोलते थे आप, अब क्या बात हो गयी? बोलिये जोर से।

श्री महावीर प्रसाद जैन : यहां इनको शर्म आ रही है। बड़ा शर्मीला स्वभाव है।

श्री प्रद्युम्न सिंह : कोशिश कर रहा हूं, या तो इसमें खराबी है कुछ, मुझे ऐसा लगता है। (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : आपके गले में ही खराबी हो गयी, गले में। (व्यवधान)

(12.00 बजे)

श्री अध्यक्ष : स्थान बदल लीजिये। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, इनमें भी कोई भेदभाव है क्या? यह भी ज्यादा बंद रहते हैं। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह : मुझे ऐसा लगता है कि प्रतिपक्ष के जो माइक हैं ये ज्यादा इफैक्टिव नहीं है। मुझे ऐसा आभास हो रहा है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : वॉल्यूम बढ़ाने के लिये कहूंगी। (व्यवधान) हां, ठीक है, अब आई है आवाज। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह : इसको आप और दिखवा लें तो आपकी कृपा होगी। आप कृपया सचिव महोदय को निर्देश देवे कि यहां चैक-अप करा ले।

मैं आपसे पूछ रहा था, माननीय मंत्री महोदय, चाहे सैकण्ड ग्रेड टीचर्स का मामला हो, फर्स्ट ग्रेड टीचर्स का मामला हो, यहां तक कि पब्लिक सर्विस कमीशन के अन्दर जो रिक्वीजिशन पूर्व में भेजे गये थे उनके अन्दर भी साल-साल भर, छह-छह महीने स्टे रहे इसलिए रिक्रूटमेंट नहीं हो सका। इसी प्रकार सैकिण्ड ग्रेड के जो रिक्रूटमेंट निकले...(व्यवधान) जल्दी इनका डिस्पोजल हो।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न पूछिये न आप। प्रश्न पूछिये। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह : मैं यही तो पूछ रहा हूं आपसे। मैंने पूर्व में कहा कि ये जल्दी वेकेट हों, इसके लिये सरकार क्या इफैक्टिव कार्यवाही करने जा रही है, कृपया इसके ऊपर अगर आप कुछ प्रकाश डाल सके। और साथ में, स्टे आर्डर के तहत कितने समय से कितने अध्यापकों के ऊपर, रिक्रूटमेंट के ऊपर वैन लगा हुआ है. अगर इसकी आप जानकारी दे सके तो मुनासिब रहेगा।

श्री अध्यक्ष : वैसे तो प्रश्नकाल समाप्त हो गया लेकिन आप चाहे तो जवाब दे दीजिये।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : यह तो गलत परम्परा हो जाएगी। साढ़े बारह तक चलेगा यह तो। आप देख लीजिये।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं संक्षेप में दो बात कह कर समाप्त कर रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : मंत्रीजी को अपर्चुनिटी मिलनी चाहिये जवाब देने की, इसलिए मैं कह रही हूं। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : पहली बात यह है कि जो माननीय रामसिंहजी ने कहा है यह सही है कि ग्रामीण क्षेत्र और शहरी क्षेत्र में अध्यापक के रेशो में बड़ा फर्क है। शहरी क्षेत्र के बाद भी ग्रामीण क्षेत्र में जो सड़कों पर विद्यालय है उनमें ज्यादा हैं। राज्य सरकार पहली प्राथमिकता देगी कि जिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्थान खाली हैं पहले वे भरे जाएंगे। नम्बर-2, माननीय प्रद्युम्न सिंहजी ने कहा, वास्तव में थर्ड ग्रेड, सैकण्ड ग्रेड टीचर्स, दोनों पर स्टे है। शारीरिक टीचर्स पर भी स्टे है। 12 महीने पहले लोक सेवा आयोग को अभ्यर्थनाएं भेजी गयी थीं, वे भी अभी तक पूरी नहीं हुई हैं, उन पर भी कार्यवाही जारी है। राज्य सरकार इस बात पर गम्भीरता से विचार कर रही है कि एक ऐसी प्रक्रिया निकाली जाए जिससे शिक्षकों की पारदर्शितापूर्ण और डायरेक्ट भर्ती हो और जिसमें न्यायालयों का हस्तक्षेप कम से कम हो। पहला प्रयत्न है कि 9 फरवरी को तारीख है, हमने एक महाविवक्ता की उसमें कमेटी बनायी है कि जल्दी से जल्दी स्टे वेकेट हो। अगर उसमें कुछ विलम्ब होता है तो राज्य सरकार नई प्रक्रिया तय करके इस प्रकार की प्रक्रिया करेगी कि जिसमें स्टे स्वतः निरस्त हो जाएंगे। एक नई प्रक्रिया के अन्दर नये शिक्षा सत्र से पहले हम इन विद्यालयों में शिक्षकों की भर्ती कर सकें, यह हम करना चाहते हैं।

माननीय रामसिंहजी ने 100 दिन की बात कही, 100 दिन का तो मैंने इसलिए कहा कि 10 का और 30 का सवाल नहीं है, क्रिकेट में तो लगते हैं चौके-छक्के और जनता जब लगाती है 100 का लगाती है, 156 से 100 ला दिया, इसलिये हमने 100 को याद करके 100 दिन का किया कि हमारा 100 बना रहे, इसलिए 100 दिन की कार्य योजना बनाई धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : प्रश्नकाल समाप्त हुआ।

(शेष तारांकित प्रश्नोत्तर के लिए कृपया परिशिष्ट-1 देखें)

अतारांकित प्रश्नोत्तर

राज्य में पैराटीचर्स की स्थायी नियुक्ति

66. डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) पैराटीचर्स को स्थायी करने हेतु सरकार की क्या योजना है?

(2) क्या सरकार शिक्षा कर्मियों को स्थाई अध्यापक बनाने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक और नहीं, तो क्यों?

उत्तर

(1) राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ती पाठशाला में कार्यरत पैराटीचर्स/शिक्षा सहयोगियों को तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर नियुक्ति करने हेतु राज्य सरकार द्वारा राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के नियम 266 में संशोधन करके यह प्रावधान किया गया है कि तृतीय श्रेणी अध्यापकों के पदों में से 75% पद ऐसे पैराटीचर्स/शिक्षा सहयोगियों से भरे जायेंगे जो तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद हेतु निर्धारित आवश्यक शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक योग्यताएं रखते हैं तथा जिन्हें पैराटीचर के रूप में लगातार चार वर्ष कार्य करने का अनुभव हो इसी आधार पर राज्य सरकार द्वारा तृतीय श्रेणी अध्यापक के 7000 पदों को भरने हेतु नियुक्ति प्रक्रिया प्रारम्भ की गई थी, परन्तु माननीय उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्ति प्रक्रिया पर स्टे लगा दिया गया। स्टे खारिज होने अथवा माननीय उच्च न्यायालय का निर्णय होने पर ही प्रकरण में आगामी कार्यवाही किया जाना सम्भव होगा।

(2) जी नहीं। शिक्षाकर्मी, शिक्षाकर्मी परियोजना में परियोजना के मानदण्डों के अनुसार लगाए गए हैं परियोजना की अवधि जून, 2005 तक बढ़ाने का प्रकरण विचाराधीन है।

सादुल पुष्करणा सीनियर माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर के कर्मियों का वेतन भुगतान

67. डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(1) क्या यह सही है कि सादुल पुष्करणा सीनियर माध्यमिक विद्यालय बीकानेर के अध्यापकों को गत 27 माह से वेतन का भुगतान नहीं हो रहा है? यदि हां, तो उक्त शाला के अध्यापकों व स्टाफ को कब तक वेतन भुगतान के आदेश जारी कर दिये जायेंगे?

(2) क्या सरकार उक्त संस्थान के कर्मचारियों को इतने लम्बे समय तक वेतन नहीं देने के लिये शिक्षा विभाग से सम्बन्धित अधिकारियों का दायित्व निर्धारित करने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक?

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

(3) क्या यह सही है कि इस सम्बन्ध में माननीय न्यायालय ने विभाग को समुचित निर्देश जारी किये हैं? यदि हां, तो न्यायालय के निर्देशों/निर्णय की प्रति सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

(1) जी हां। सार्दुल पुष्करणा सीनियर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों/स्टाफ को अगस्त, 2001 से वेतन का भुगतान संस्था द्वारा नहीं किया जा रहा हैं, और ना ही संस्था द्वारा पूर्व भुगतान पश्चात् अनुदान की मांग प्रस्तुत की गई है। अनुदान की मांग प्रस्तुत करने पर ही अनुदान स्वीकृत किया जा सकेगा।

(2) जी नहीं। क्योंकि संस्था द्वारा अनुदान मांग पत्र ही विभाग को प्रस्तुत नहीं किया गया है, अत: इस हेतु विभाग के किसी अधिकारी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।

(3) जी नहीं।

राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल जयपुर द्वारा मुद्रण कार्य

68. श्री भंवरलाल शर्मा (सरदारशहर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद्, जयपुर और राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर द्वारा आफसैट का कार्य राजस्थान की विभिन्न फर्मों/संस्थाओं द्वारा करवाया जा रहा है? यदि नहीं, तो राजस्थान के बाहर की किन-किन फर्मों से आफसैट का कार्य कराया जा रहा है?

(2) क्या यह सही है कि राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद् जयपुर द्वारा कक्षा एक से पांच तक की पाठ्य पुस्तकों की खरीद हेतु निविदाएं आमंत्रित की गई थी? यदि हां, तो कब और इसमें किस-किस फर्म ने भाग लिया? उनकी रेट क्या थी? बैंक गारंटी कितनी थी व निविदा की शर्तें क्या थी? विवरण सदन की मेज पर रखें।

(3) क्या यह सही है कि उक्त टेण्डर में आमंत्रित फर्मों द्वारा दी गई न्यूनतम दर वाली फर्म को कार्यादेश नहीं दिया गया? यदि हां, तो क्यों? क्या राजस्थान से बाहर की फर्म का टेण्डर अधिक दर होने के बावजूद भी स्वीकार किया गया है? यदि हां, तो क्यों?

(4) क्या यह सही है कि राजस्थान के बाहर की फर्म द्वारा कार्यादेश जारी होने के बाद तीन माह तक सप्लाई नहीं दी गई? यदि हां, तो क्यों? क्या सप्लाई नियम अवधि में नहीं होने से सरकार को नुकसान हुआ है? यदि हां, तो कितना? क्या सरकार उक्त फर्म के खिलाफ कोई कार्यवाही करने का विचार रखती है, यदि हां, तो कब तक?

(श्री भंवरलाल शर्मा)

(5) क्या सरकार राजस्थान स्थित आफसैट प्रिंटिग फर्मों को प्रोत्साहन देने हेतु राजस्थान में ही आफसैट का कार्य करवाने का विचार रखती है? यदि नहीं, तो क्यों?

उत्तर

(1) जी नहीं। राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल निविदा के माध्यम से मुद्रण की दरें आमंत्रित कर न्यूनतम दर के आधार पर राजस्थान व राजस्थान के बाहर स्थित मुद्रकों से मुद्रण करा रहा है। वर्ष 2004 में जिन मुद्रकों द्वारा मुद्रण कार्य किया जा रहा है उनकी सूची परिशिष्ट "क" संलग्न है। राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद्, द्वारा आफसैट प्रिंटिंग का श्वेत श्याम एवं रंगीन मुद्रण के वर्ष 2003-04 के कार्य हेतु दो फर्मों से न्यूनतम निविदा दरों पर अनुबन्ध किया हुआ है।

1. मैसर्स अजय एजेंसीज, चौमूं हाउस, जयपुर।
2. मैसर्स गोयल स्टेशनर्स, पुरानी सब्जी मण्डी, जयपुर।

इसके अतिरिक्त निम्नांकित फर्मों द्वारा वेब प्रिंटिंग का कार्य किया जा रहा है:-

1. मैसर्स अजय आफसैट, अहमदाबाद।
2. मैसर्स गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद।
3. मैसर्स केपिटल बिजनस सिस्टम लि. नई दिल्ली।

(2) जी नहीं। राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद्, जयपुर द्वारा कक्षा 1 से 5 तक की पाठ्य पुस्तकें क्रय हेतु कोई निविदाएं आमंत्रित नहीं की गई थी।

(3) जी नहीं।

(4) जी नहीं।

(5) जी नहीं। राज्य हित में जिस फर्म की निविदा में न्यूनतम दर होती है उसे ही मुद्रण कार्य दिया जाता है। उच्च दर वाली फर्म को नियमानुसार कार्य आबंटित नहीं किया जाता है।

(सूची के लिए कृपया परिशिष्ट-2 देखें)

जिला बून्दी के शिक्षण कर्मियों की प्रतिनियुक्ति

69. श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या विभाग के कर्मचारियों को नियुक्ति स्थान से अन्यत्र सेवारत रखने, प्रतिनियुक्ति पर लगाये जाने सम्बन्धी नियम/निर्देश जारी किये हुए हैं? यदि हां, तो प्रति सदन की मेज पर रखें।

(2) इस प्रकार के नियमों के तहत बून्दी जिले में कितने कर्मचारियों को प्रतिनियुक्ति पर या नियुक्त स्थान से दूसरे स्थान पर लगा रखा है? सूची सदन की मेज पर रखें।

(श्री रामनारायण मीणा)

(3) क्या सरकार ऐसे कर्मचारियों को मूल नियुक्ति स्थान पर वापस लगाने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक और नहीं, तो क्यों?

उत्तर

(1) राजस्थान सेवा नियम, 142 के तहत कर्मचारियों को प्रतिनियुक्ति किये जाने का प्रावधान है। नियम पुस्तक के रूप में होने के कारण प्रति सदन के पटल पर विधान सभा प्रक्रिया नियम 37(2)(8) के तहत रखा जाना सम्भव नहीं है।

(2) जिला कलक्टर, बूंदी द्वारा निर्वाचन एवं अकाल राहत कार्य हेतु 9 कर्मचारियों को प्रतिनियुक्त किया हुआ है। सूची परिशिष्ट "क" पर संलग्न है।

(3) प्रतिनियुक्त कर्मचारियों को कार्यमुक्त किये जाने हेतु जिला कलक्टर, बून्दी को सूचित किया जा चुका है। कार्यमुक्त होकर आते ही उक्त कर्मचारियों को पुनः मूल पदस्थापित स्थान पर लगा दिया जायेगा।

(सूची के लिए कृपया परिशिष्ट-3 देखें)

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पद

70. श्री बहादुर सिंह गोदारा (नोहर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या सरकार राजीव गांधी पाठशालाओं के नाम को बदलने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक व नहीं, तो क्यों?

(2) क्या सरकार ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक व नहीं, तो क्यों?

(3) क्या सरकार सभी विद्यालयों में एक समान पाठ्यक्रम करने का विचार रखती है? यदि हां, तो कब तक व नहीं, तो क्यों?

(4) क्या सरकार ने स्कूल खोलने एवं क्रमोन्नत करने के लिये कोई नीति निर्धारित की है? यदि हां, तो क्या?

उत्तर

(1) राजीव गांधी पाठशालाओं के नाम परिवर्तन का वर्तमान में कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

(2) जी हां। वर्तमान में तृतीय श्रेणी एवं वरिष्ठ अध्यापकों की नई नियुक्ति प्रक्रिया पर माननीय उच्च न्यायालय द्वारा स्थगन है। अतः माननीय न्यायालय के निर्णय उपरान्त नव नियुक्तियां की जा सकेगी।

व्याख्याताओं के रिक्त पद राजस्थान लोक सेवा आयोग एवं विभागीय पदोन्नति समिति से चयनित आशार्थी उपलब्ध होने पर भरे जा सकेंगे।

(शिक्षा मंत्री)

(3) अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के अतिरिक्त शेष समस्त विद्यालयों में समान पाठ्यक्रम संचालित है।

(4) जी नहीं। अपितु विद्यालय खोलने एवं क्रमोन्नत करने के लिये मानदण्ड निर्धारित हैं। बजट उपलब्धता एवं निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले विद्यालयों को गुणावगुण के आधार पर क्रमोन्नत/नये विद्यालय खोले जाते हैं।

जिला बून्दी में डी.पी.ई.पी. योजना के तहत व्यय

71. **श्री बाबूलाल खराड़ी** (फलासिया): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या जिला बून्दी में डी.पी.ई.पी. योजना संचालित है? यदि हां, तो कब से? योजना की तिथि, कार्यक्षेत्र, इसके तहत संचालित कार्यों का विवरण, निर्धारित कार्यकाल एवं बून्दी जिले के लिए इसमें व्यय की जाने वाली राशि का विवरण सदन की मेज पर रखें।

(2) डी.पी.ई.पी. योजना में बून्दी जिले में कुल कार्यरत कर्मचारियों का विवरण पदवार सदन की मेज पर रखें।

(3) उक्त योजना के शेष रहे कार्यकाल में क्या-क्या कार्य प्रस्तावित हैं? विवरण सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

(1) जी हां। दिनांक 5 सितम्बर, 2001 से संचालित है। योजना के अन्तर्गत संचालित कार्य एवं व्यय का विवरण परिशिष्ट "अ" संलग्न है।

(2) कुल मदवार कार्यरत अधिकारी/कर्मचारियों का विवरण परिशिष्ट "ब" पर उपलब्ध है।

(3) परिशिष्ट "अ" पर अंकित कार्य ही यथावत् किए जाने प्रस्तावित है।

(विवरण के लिए कृपया परिशिष्ट-4 देखें)

जिला बून्दी के विद्यालयों में अध्यापकों के रिक्त पद

72. **श्री बाबूलाल खराड़ी** (फलासिया): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(1) जिला बून्दी में कुल कितने प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं? कक्षावार एवं छात्र संख्यावार विद्यालयों की सूची सदन की मेज पर रखें।

(2) इन विद्यालयों में विद्यालयवार शिक्षकों के कितने-कितने पद स्वीकृत हैं? स्वीकृत संख्या के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में कितने-कितने अध्यापक कार्यरत हैं? विषयवार रिक्त पदों की सूची सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

(1) बून्दी जिले में संचालित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च

(शिक्षा मंत्री)

माध्यमिक विद्यालयों की कक्षावार एवं छात्र संख्यावार सूची परिशिष्ट "क" संलग्न है।

(2) उक्त विद्यालयों के अध्यापकों के स्वीकृत, कार्यरत एवं रिक्त पदों की विषयवार सूचना परिशिष्ट "ख" व "ग" संलग्न है।

(सूची विधान सभा पुस्तकालय में रखी गयी)

विधान सभा क्षेत्र रायसिंहनगर के विद्यालयों में अध्यापकों के रिक्त पद

73. श्री लालचन्द (रायसिंहनगर) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

विधान सभा क्षेत्र रायसिंहनगर में कितने प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं? इन विद्यालयों में कितने अध्यापकों के पद किन-किन विषयों के रिक्त हैं एवं इन रिक्त पदों को कब तक भर दिया जायेगा?

उत्तर

विधान सभा क्षेत्र रायसिंहनगर में 256 प्राथमिक, 79 उच्च प्राथमिक, 21 माध्यमिक एवं 9 उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित है।

प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत द्वितीय श्रेणी के 21 तथा तृतीय श्रेणी के 194 अध्यापकों के पद रिक्त है।

माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में विषयवार रिक्त पदों का विवरण परिशिष्ट "क" पर संलग्न है।

रिक्त पदों की पूर्ति राजस्थान लोक सेवा आयोग एवं विभागीय पदोन्नति समिति से चयनित आशार्थी उपलब्ध कराये जाने पर तथा द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी अध्यापकों की नियुक्ति, माननीय न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश हटाये जाने पर सम्भव हो सकेगी।

(विवरण के लिए कृपया परिशिष्ट-5 देखें)

विभागीय छात्रावासों में विद्यार्थियों की मृत्यु

74. श्री शंकर सिंह राजपुरोहित (आहोर) एवं **श्री जोगेश्वर गर्ग** (जालौर): क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) सरकार द्वारा संचालित छात्रावासों में विगत 5 वर्षों में कुल कितने छात्र-छात्राओं की मृत्यु हुई? सूची सदन की मेज पर रखें।

(2) उनकी मृत्यु के क्या कारण थे तथा उसके लिये कौन जिम्मेदार थे?

(3) क्या उक्त प्रकरणों की जांच करवाई गई? यदि हां, तो क्या किसी के विरुद्ध कार्यवाही की गई? यदि हां, तो विवरण सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

(1) सरकार द्वारा संचालित छात्रावासों में विगत पांच वर्षों में एक छात्रा तथा 4 छात्रों कुल 5 छात्र/छात्राओं की मृत्यु हुई है। जिनका विवरण/सूची निम्नप्रकार से है:

1. मंजुला, पुत्री श्री सोमाराम मीणा, राजकीय कन्या छात्रावास, खैरवाड़ा, जिला उदयपुर
2. सुरेश कुमार पुत्र श्री लालूराम, राजकीय बालक छात्रावास, कोटड़ा, जिला उदयपुर
3. सुनील कुमार, पुत्र श्री राधेश्याम, राजकीय स्वच्छकार छात्रावास, कनसुआ, जिला कोटा
4. बनवारी लाल, पुत्र श्री मोतीलाल मेहर, राजकीय अनुसूचित जनजाति छात्रावास, छावनी कोटा, जिला कोटा
5. चेतराम मीणा, पुत्र श्री बद्रीलाल मीणा, राजकीय अनुसूचित जनजाति छात्रावास, ईसरदा, जिला सवाईमाधोपुर।

(2) मंजुला मीणा पुत्री श्री सोमाराम मीणा द्वारा पारिवारिक कारणों से आत्महत्या की थी। छात्र सुरेश कुमार पुत्र श्री लालूराम नदी में तेज गति में बहते पानी में नहाते समय डूबने से मृत्यु हुई। छात्र सुनील कुमार के मृत्यु दिनांक 18.9.2001 को नहर में डूबने से हुई तथा छात्र बनवारी लाल की मृत्यु रेलवे क्रासिंग पर 30.1.2002 को हुई जिसका कारण रेल दुर्घटना रहा। छात्र चेतराम मीणा के बुखारग्रस्त होने के कारण उनके परिवार वालों ने छात्रावास से ले जाकर टौंक के चिकित्सालय में उसका उपचार करवाया तथा उपचार के दौरान दिनांक 29.9.2001 को उसकी मृत्यु हो गई। उक्त प्रकरणों में राजकीय छात्रावास ईसरदा के छात्रावास अधीक्षक श्री आसाराम मीणा को श्री चेतराम मीणा के मृत्यु के प्रकरण में आरोपित किया गया है तथा शेष 4 प्रकरणों में कोई भी अधिकारी/कर्मचारी जिम्मेदार नहीं पाया गया।

(3) जी हां। उक्त प्रकरणों की जांच करवाई गई थी। राजकीय अनुसूचित जनजाति बालक छात्रावास, ईसरदा जिला सवाईमाधोपुर के छात्र चेतराम की मृत्यु के लिए छात्रावास अधीक्षक श्री आसाराम मीणा को आरोपित किया गया तथा उन्हें आदेश क्रमांक 1578 दिनांक 4.12.2001 द्वारा निलम्बित किया गया तथा दिनांक 2.2.2002 को पैंडिंग जांच बहाल किया गया। इन्हें विभाग के मेमोरण्डम क्रमांक 139 दिनांक 25.1.2002 द्वारा राजस्थान सिविल सेवा (वर्गीकरण नियंत्रण एवं अपील), नियम 1958 के नियम 16 के अन्तर्गत आरोप पत्र/आरोप विवरण पत्र दिया गया था, तथा आदेश क्रमांक 780 दिनांक 22.5.2002 द्वारा उप निदेशक, कोटा को जांच अधिकारी व सहायक निदेशक, सवाईमाधोपुर को विभागीय

(शिक्षा मंत्री)

प्रतिनिधि नियुक्त किया गया। जांच रिपोर्ट आना अपेक्षित है। शेष चार प्रकरणों के जांच में कोई भी अधिकारी/कर्मचारी दोषी नहीं पाये गये।

छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियां

75. श्री शंकर सिंह राजपुरोहित (आहोर) एवं श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि सरकार द्वारा छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियां दी जाती हैं? यदि हां, तो किस स्तर पर कितनी राशि दिए जाने का प्रावधान है?

(2) उक्त छात्रवृत्तियों में राज्य एवं केन्द्र सरकार का कितना-कितना हिस्सा है?

(3) चालू वित्तीय वर्ष में कुल कितनी धनराशि इस मद में रखी गई? उसमें से कितनी राशि का भुगतान छात्र छात्राओं को हो चुका है?

(4) क्या यह सही है कि गत वर्ष स्वीकृत छात्रवृत्तियों का भुगतान अभी तक बाकी है? यदि हां, तो क्यों एवं कितना?

उत्तर

(1) जी हां। स्कूल एवं कालेज स्तर पर निम्न दरों से छात्रवृत्तियां दी जाती है:-

1. पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति :

कक्षा	दर (प्रतिमाह)	
	छात्र	छात्राएं
6 से 8	15/-	20/-
9 से 10	30/-	40/-

2. उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति :

समूह	दर	
	छात्रावासी	दिवसीय (डेस्कालर)
ए	425/-	290/-
बी	290/-	190/-
सी	290/-	190/-
डी	230/-	120/-
ई	150/-	90/-

3. स्वच्छकार छात्रवृत्ति :

कक्षा	दर (प्रतिमाह)
1 से 5	40/-
6 से 8	60/-
9 से 10	75/-

इस योजनान्तर्गत प्रत्येक छात्र को प्रतिवर्ष रुपये 550/- तदर्थ सहायता भी दी जाती है।

(2) **1. पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति**

शत प्रतिशत राज्य सरकार द्वारा वहन की जाती है।

(शिक्षा मंत्री)

2. उत्तर मैट्रिक छात्रवृति योजना हेतु राज्य की कमिटेड लाइबिलिटी (19.38 करोड़) के ऊपर होने वाले व्यय हेतु भारत सरकार से केन्द्रीय अर्थ प्रबन्धित योजना के अन्तर्गत बजट प्राप्त होता है।

स्वच्छकार छात्रवृति योजना हेतु राज्य की कमिटेड लाइबिलिटों के ऊपर होने वाले व्यय का आधा–आधा (50:50) राज्य एवं केन्द्रीय सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

(3) 1. **पूर्व मैट्रिक छात्रवृति** पूर्णतया माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर, द्वारा संचालित की जाती हैं एवं बजट भी शिक्षा विभाग के बजट मदों में रखा जाता हैं।

2. **उत्तर मैट्रिक छात्रवृति** योजना हेतु बजट की स्थिति निम्नप्रकार है:

	राज्य मद	सी.एस.एस.	व्यय
अ.जा.	1038.85	706.27	678.64 लाख
अ.जा.जा.	899.95	920.49	765.53 लाख

3. **स्वच्छकार छात्रवृति :**

राज्य मद	सी.एस.एस.	व्यय
160.00	119.87	64.70 लाख

(4) जी हां। वित्त विभाग द्वारा अनुसूचित जाति मद में सामान्य क्षेत्र के स्थान पर टी.ए.डी. क्षेत्र में अधिक प्रावधान रखे जाने के कारण, सामान्य क्षेत्र के लिए बजट कम रहा। इस वर्ष वित्त विभाग द्वारा संशोधित कर दिया गया है। वित्त विभाग द्वारा व्यय की अनुमति दिये जाने पर बकाया भुगतान कर दिया जायेगा जो लगभग रुपये 1.74 करोड़ हैं।

जिला जालौर के भवनविहीन छात्रावास

76. **श्री शंकर सिंह राजपुरोहित (आहोर) एवं श्री जोगेश्वर गर्ग (जालौर):** क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(1) जिला जालौर में विभाग द्वारा कुल कितने छात्रावासों का संचालन किया जा रहा है? उनमें कितने छात्र–छात्राएं रह रहे हैं?

(2) इनमें छात्र–छात्राओं को क्या–क्या सुविधाएं दी जा रही है? क्या सरकार की राय में ये सुविधाएं पर्याप्त हैं?

(श्री शंकर सिंह राजपुरोहित)

(3) उक्त छात्रावासों में से कितनों के पास अपने स्वयं के भवन हैं? शेष के भवन निर्माण के बारे में सरकार की क्या योजना है?

उत्तर

(1) जिला जालौर में राज्य सरकार द्वारा 5 अनुसूचित जाति के, 2 स्वच्छकार तथा 3 अनुसूचित जनजाति के कुल 10 राजकीय छात्रावास संचालित हैं जिनका विवरण निम्नप्रकार से है:

क्र. सं.	छात्रावास का नाम	योजना का नाम	स्वीकृत छात्र संख्या	प्रवेशित छात्र संख्या	भवनों की स्थिति
1.	राजकीय सावित्री बाई फूले छात्रावास, जालौर (कन्या)	अनु. जाति	35	35	राजकीय भवन
2.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) बागरा	अनु. जाति	25	25	किराये का भवन
3.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) औहार	अनु. जाति	25	25	किराये का भवन
4.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) सायला	अनु. जाति	35	35	राजकीय भवन
5.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) सांचौर	अनु. जाति	60	60	किराये का भवन
6.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) जालौर	स्वच्छकार छात्रावास	25	25	राजकीय भवन
7.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) सायला	स्वच्छकार छात्रावास	35	35	राजकीय भवन
8.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) जालौर	अनुसूचित जनजाति	60	60	राजकीय भवन
9.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) भीनमाल	अनुसूचित जनजाति	45	45	किराये का भवन
10.	राजकीय अम्बेडकर छात्रावास, (बालक) रानीवाड़ा	अनुसूचित जनजाति	35	35	किराये का भवन
		योग	**380**	**380**	

(समाज कल्याण मंत्री)

इनमें कुल 380 छात्र/छात्राएं आवास कर रहे हैं।

(2) छात्रावास में आवास कर रहे छात्र/छात्राओं को निःशुल्क आवास, बिस्तर, बर्तन इत्यादि की सुविधा दी जा रही है। तथा प्रतिछात्र/छात्रा प्रतिमाह 675/– रुपये भोजन, नाश्ता, वस्त्र, तेल, साबुन, बाल कटिंग, जूते, मौजे, तौलिए, बिजली–पानी व पत्र पत्रिकाएं हेतु मैस समिति के माध्यम से उपलब्ध कराऐ जाते हैं। सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाएं पर्याप्त हैं।

(3) उक्त छात्रावासों में से 5 राजकीय भवन में तथा शेष 5 किराये के भवनों में संचालित हैं, जिन में से सांचौर का भवन राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा निमार्णाधीन है व भीनमाल का अधूरा छात्रावास भवन को पूर्ण करवाने हेतु बजट प्राप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं तथा शेष तीन भवनों के निर्माण हेतु कोई बजट प्रावधान उपलब्ध नहीं होने के कारण फिलहाल निर्माण कार्य कराया जाना सम्भव नहीं है।

स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

श्री अध्यक्ष : मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि निम्नांकित स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई है :-

(1) श्री रामनारायण मीणा (138) एवं 2 अन्य सदस्यों की ओर से चम्बल बांध की बूंदी शाखा नहर का पानी अन्तिम वितरिकाओं तक नहीं पहुंचने के सम्बन्ध में।

(2) श्री संयम लोढ़ा (168) एवं 11 अन्य सदस्यों की ओर से राज्य में बी.पी.एल. सूची की सीमा कम करने के केन्द्र सरकार के निर्देश से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में।

उपरोक्त प्रस्ताव स्थगन प्रस्ताव के रूप में ग्राह्य नहीं है, अतः इन पर अनुमति देने में असमर्थ हूं।

मुझे माननीय सदस्यों को यह भी सूचित करना है कि निम्न स्थगन प्रस्ताव के सम्बन्ध में राज्य सरकार से जानकारी प्राप्त हुई है:-

श्री संयम लोढ़ा एवं 10 अन्य सदस्यों की ओर से शिक्षा संकुल, जयपुर का नाम बदले जाने की चर्चा के सम्बन्ध में।

उपरोक्त प्रस्ताव भी स्थगन प्रस्ताव के रूप में ग्राह्य नहीं है, अतः अनुमति देने में असमर्थ हूं। प्रमुख प्रस्तावक माननीय सदस्य श्री संयम लोढ़ा को 2 मिनट बोलने की अनुमति दी जाती है। (व्यवधान) इसके बाद। इसके बाद समय मिलेगा। व्यवस्था के बाद।

नियम 295 के अन्तर्गत प्राप्त विशेष उल्लेख सूचनाएं

(1) श्री संयम लोढ़ा, सदस्य की ओर से तहसील सिरोही के गांव बावली

(श्री अध्यक्ष)

के संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय को सामान्य शिक्षा के उच्च प्राथमिक विद्यालय में बदलने के सम्बन्ध में।

(2) श्री अर्जुन सिंह बामणिया, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र घोटिया आंबा दर्शनीय स्थान तक पक्की सड़क के निर्माण के सम्बन्ध में।

(3) श्री बहादुर सिंह गोदारा, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र नोहर में अकाल राहत के रूप में स्वीकृत गेहूं का पूर्ण वितरण नहीं होने के सम्बन्ध में।

(4) श्री मांगीलाल गरासिया, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र गोगुन्दा में एनीकट एवं बांधों का निर्माण करने के सम्बन्ध में।

(5) श्री महावीर प्रसाद जैन, सदस्य की ओर से अकाल सहायता के तहत ए.पी.एल., बी.पी.एल. परिवारों को दिये जाने वाले गेहूं की कालाबाजारी के सम्बन्ध में।

(6) श्री सी.डी. देवल, सदस्य की ओर से जिला पाली की तहसील रायपुर के कतिपय गांवों की पेयजल की समस्या के सम्बन्ध में।

(7) श्री वीरेन्द्र मीणा, सदस्य की ओर से राज्य की केन्द्रीय सहकारी बैंक एवं भूमि विकास बैंकों के प्रबन्ध निदेशक एवं सचिवों के चयन में हुई अनियमितता के सम्बन्ध में।

(8) श्री नन्दलाल पूनिया, सदस्य की ओर से ग्राम हमीरवास तहसील राजगढ़ जिला चूरू में हुए सुमन हत्याकाण्ड के अभियुक्तों को गिरफ्तार करने के सम्बन्ध में।

(9) श्री प्रभुलाल वर्मा, सदस्य की ओर से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र इटावा को रैफरल चिकित्सालय में क्रमोन्नत करने के सम्बन्ध में।

(10) श्री भंवर सिंह डांगावास, सदस्य की ओर से जिला नागौर में पेयजल का संकट होने के सम्बन्ध में।

(11) श्री रामनारायण डूडी, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र बिलाड़ा में पीने के पानी की विकट समस्या पैदा होने के सम्बन्ध में।

(12) श्री मंगलाराम गोदारा, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ में कृषि कनेक्शन एवं सामान्य श्रेणी के विद्युत कनेक्शन नहीं देने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में।

माननीय सदस्यों को उनके द्वारा दी गयी सूचना को पढ़ने की अनुमति होगी।

पहले माननीय संयम लोढ़ा राजीव गांधी शिक्षा संकुल, जयपुर का नाम बदले जाने के सम्बन्ध में दो मिनट बोलेंगे और उसके बाद 295 में सभी माननीय सदस्य

(श्री अध्यक्ष)

अपना–अपना विशेष उल्लेख का प्रस्ताव पढ़ेंगे।

श्री संयम लोढ़ा : माननीय अध्यक्ष महोदय,...(व्यवधान) मुझे तो बोलने दो। आप बाद में बोल लेना। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : हां, फर्माएं आप। (व्यवधान) देखिये, ऐसा है, जब आपका स्थगन प्रस्ताव नामंजूर होता है उस स्थिति में कोई आवश्यक भी नहीं है बोलने की अनुमति देना, फिर भी मैं दो मिनट का समय दे रही हूं।

डा. बुलाकीदास कल्ला (नेता, प्रतिपक्ष) : अध्यक्ष महोदय, एडजोर्नमेंट मोशन यदि आप स्वीकार नहीं करते हैं तो माननीय सदस्यों को बोलने का मौका दिया जाता है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : कब दिया जाता है? (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान आपकी व्यवस्था...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : हम साक्षी हैं इस सदन के...(व्यवधान) नहीं, पूरा रिकार्ड है हमारे पास। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बोलने दीजिये न दो मिनट के लिये उन्हें। (व्यवधान) नेता प्रतिपक्ष को मैं निवेदन करना चाहती हूं कि कोई नियम नहीं है। विशेष तौर से कभी किसी ने दिया होगा तो अलग बात है, वरना नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : परम्पराएं रही हैं। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : इस सदन की परम्परा रही है। मैं इस सदन में पांचवीं बार चुनकर आया हूं। जब जब भी एडजोर्नमेंट मोशन को अस्वीकार किया गया है तो यहां पर माननीय सदस्य बोले हैं, और दो मिनट नहीं, आधे–आधे घंटे घंटे और घंटे–घंटे भर बोले हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय नेता प्रतिपक्ष, आप बार–बार पांच बार चुने जाने की क्यों बात कहते हैं यहां पर? सबको मालूम है कि कब चुने गये हैं। मैं निवेदन करना चाहती हूं आपको कि कभी–कभी विशेष तौर से ऐसा किया गया है लेकिन नियमों में कोई प्रावधान नहीं है। (व्यवधान)

श्री रामसिंह विश्नोई : आप तो 9 बार जीत चुकी हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं उनकी तरह से नहीं दोहराना चाहती कि मैं कितनी बार जींती हूं।

श्री अमराराम (धोद) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी व्यवस्थाओं की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि मैंने

(श्री अमराराम)

पैराटीचर्स, शिक्षा सहयोगी और शिक्षा कर्मियों की समस्याओं के बारे में स्थगन प्रस्ताव दिया था। आपने व्यवस्था भी दी थी कि समस्याएं बहुत विकट हैं...

श्री अध्यक्ष : सुनिये, माननीय सदस्य, जानकारी आयी नहीं है।

श्री अमराराम (धोद) **:** आयी तो नहीं है लेकिन कल सत्रावसान हो जाएगा और...

श्री अध्यक्ष : सुनिये तो। उसकी जानकारी मांगी गयी है, जानकारी मुझे प्राप्त नहीं हुई है, कल उसकी व्यवस्था दूंगी आपको।

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, मुझे कुछ नहीं कहना है, एक निवेदन है कि प्रदेश के अन्दर जो माननीय सदस्यों ने बी.पी.एल., गरीबी की रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले...

श्री अध्यक्ष : जवाब दे दिया था न कल।

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्रीजी दिल्ली जाकर आ गयी हैं, आप जवाब पूछ सकते हैं।

श्री अध्यक्ष : आप शायद सदन में होंगे नहीं, माननीय मंत्रीजी ने सदन में आश्वस्त कर दिया था कि हमने विशेष तौर से इसके बारे में बात की है। मुख्य मंत्रीजी ने बात की है, संख्या कम नहीं होगी, यह कह दिया था।

श्री रामसिंह विश्नोई : नहीं कहा है, मैं वह नहीं कहता। मैं यह कहता हूं कि क्या जवाब आया है आखिर, मुख्य मंत्रीजी दिल्ली जाकर आयी हैं।

श्री अध्यक्ष : नहीं, वो तो अभी...(व्यवधान) जैसा मैंने कहा कि इस बारे में जानकारी प्राप्त की जा रही है लेकिन अपना प्रोटेस्ट उन्होंने कर दिया है।

स्थगन प्रस्ताव आदि पर चर्चा

जयपुर स्थित 'शिक्षा संकुल' का नाम परिवर्तन

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही) **:** अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि देश के स्वाधीन होने के बाद हमारे महान नेताओं का यह लक्ष्य रहा कि प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण हो। 1967 में कोठारी कमीशन की स्थापना की गयी और उसके बाद शैक्षिक व्यवस्था में सुधार करने के लिए सोचा तो...

श्री अध्यक्ष : इतनी भूमिका बांधेंगे आप तो दो मिनट में बात कैसे समाप्त करेंगे?

श्री संयम लोढ़ा : दो मिनट में बोल रहा हूं, आप बोलने तो दीजिये। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : दो मिनट के बाद आटोमेटिक ही बैठ जाएंगे।

श्री संयम लोढ़ा : अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय राजीव गांधीजी ने देश की शैक्षिक स्थिति को महसूस किया, पूरे देश में शिक्षा पर चर्चा चलायी, नयी शिक्षा नीति की रचना की और व्यावसायिक शिक्षा का सोच दिया। उसके बाद पूरे देश के अन्दर हमारे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे, जिनके मां–बाप उनके प्रतिभावान होने के बावजूद... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : सबसे बड़ा घोटाला बोफोर्स काण्ड किया और न जाने क्या–क्या किया। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह सब एक्सपंज किया जाए, अंध्यक्ष महोदय। यह उचित नहीं है। फिर हम कहेंगे...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : बोफोर्स घोटाला कहां चला गया, तोप घोटाला कहां चला गया? (भारी व्यवधान) न जाने क्या–क्या किया।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, देखिये, उन्हें जो समय मिला है दो मिनट का, उस दो मिनट में उन्हें अपनी बात कहने दीजिये। आप बीच में किसी तरह का विघ्न और व्यवधान नहीं डाले।

श्री संयम लोढ़ा : अध्यक्ष महोदय, उन ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं के लिए नवोदय विद्यालय का सोच जिस महान नेता ने दिया, आज देश के हर जिले के अन्दर एक नवोदय विद्यालय काम कर रहा है। हजारों–लाखों की तादाद में ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला, समाज में सम्मान से जीने का हक मिला। उन्हीं महान नेता के नाम पर राजस्थान में कांग्रेस की सरकार ने उनके सपनों को साकार करने के लिए राजीव गांधी पाठशाला का सोच दिया। गांव–गांव, ढाणी–ढाणी, मजरों–मजरों में शिक्षा का प्रबन्धन किया और हमारे प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : क्या तरीका है यह आपका? आप भी सब खड़े हो जाओ। यह क्या तरीका है?...(व्यवधान) ऐसे थोड़े ही होगा कोई।

श्री अध्यक्ष : आसन पैरों पर, माननीय सदस्यगण।

(व्यवस्था–सूचक–घंटी)

माननीय सदस्य आसन पैरों पर है। आप तो बिराजिये, माननीय प्रद्युम्न सिंहजी।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली) : यह जूदेव काण्ड को भूल गये क्या? कफन चोरी करना भूल गये, बंगारू लक्ष्मण को भूल गये क्या? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप स्थान ग्रहण करें। (व्यवधान) एक बार स्थान ग्रहण करें। सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य, आप भी स्थान ग्रहण करें।

माननीय सदस्यगण, जब उन्हें दो मिनट का समय दिया गया है तो आप बीच में टोकाटाकी कर खामखाह में उनका समय बढ़ा रहे हैं। दूसरी बात मैं आपसे

(श्री अध्यक्ष)

यह कहना चाहती हूं कि सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य को भी कोई गलतफहमी हो गयी है। राजीव गांधी पाठशालाओं का नाम नहीं बदला जा रहा है। (व्यवधान) सुनिये, आप क्या करते हैं बीच में, बात नहीं सुनते आप। केवल राजीव शिक्षा संकुल भवन का नाम बदला गया है। वह भी बदला नहीं गया है। उसका जवाब मैं चाहूंगी, मंत्रीजी इस बारे में कोई स्पष्टीकरण देंगे। लेकिन राजीव गांधी पाठशालाओं की जो बात आप कर रहे हैं, राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ती पाठशालाओं के नाम की कोई तब्दीली नहीं की गयी है, यह आपको मैं स्पष्ट कर देती हूं।

श्री धर्मपाल चौधरी (मुण्डावर) : इनको सोनियाजी को राजी करना है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बीच में न बोले। मैं कह रही हूं आप बीच में क्यों बोलते हैं, सत्तापक्ष के लोग बैठे क्यों नहीं रहते, बोलते क्यों हैं बीच में आप? आपको क्या तकलीफ है इस बारे में? आप बोलने दे उन्हें।

हां,. अब आप बोलिये। विदिन टू मिनिट्स अपनी बात खतम करिये।

श्री संयम लोढ़ा : अध्यक्ष महोदय, हमारे मजबूत नेता स्वर्गीय राजीव गांधी ने अपने प्रयासों से राष्ट्रीय युवा नीति की रचना की। उपभोक्ताओं के संरक्षण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी काम किया। कम्प्यूटर शिक्षा का सोच दिया और देश को 21वीं सदी में ले जाने की परिकल्पना दी। (व्यवधान) न केवल हिन्दुस्तान बल्कि पूरी दूनिया को उन्होंने एक नेतृत्व देने की कोशिश की। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मुण्डावर से आने वाले माननीय सदस्य, इस तरह का इशारा न करें।

श्री संयम लोढ़ा : दक्षिण एशिया के अन्दर शांति के प्रयासों में वे लगे हुए थे और उन्हीं प्रयासों की वजह से उन पर बम विस्फोट से हमला हुआ, उनको अपनी जान गंवानी पड़ी। भारतीय जनता पार्टी अपने कुत्सित स्वार्थ के चलते दो महान नेताओं को विवाद में डाल रही है। (व्यवधान) राधाकृष्णन जैसे महान शिक्षक, जिनका हम भी सम्मान करते हैं, हम भी आदर करते हैं...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : अब उसका समझौता क्यों किया है? (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़) **:** यह क्या तरीका है, अध्यक्ष महोदय, समझ में नहीं आ रहा। (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, यह तय कर लें, सदन आप चलाएंगी या माननीय सदस्य चलाएंगे, इसलिए आप व्यवस्था दीजिये। (व्यवधान) आपके कहने के बावजूद भी बीच में खड़े हो

(श्री जुबेर खान)

जाते हैं। यह कभी परम्परा नहीं रही। अध्यक्ष महोदय, अगर आप चाहते हो सदन शांति से चले तो इनको पाबंद करिये, वरना हम यह कार्य करने में सक्षम हैं। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : अध्यक्ष महोदय, टौंक से आने वाले माननीय सदस्य इतने सीनियर हैं...(व्यवधान)...टौंक से आने वाले माननीय सदस्य बारबार खड़े होते हैं, बारबार में भड़काते हैं, बारबार में बोलते हैं।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : जनता ने निपटा दिया, चले गये विपक्ष में। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप कौनसे कम हैं, आप क्या बारबार खड़े नहीं होते? (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : आप इनको तो रोकिये। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण। माननीय पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर, आप अपने सत्ता पक्ष के सदस्यों को नियंत्रित करें, उनको अनुशासन में रखें। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : मैडम को राजीव गांधी की बहुत चिंता है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : राजसमंद से आने वाले माननीय सदस्य, कल भी आप बहुत बार खड़े हो रहे थे, आप अननैसेसरी इनको उत्तेजित करने का काम क्यों करते हैं?

श्री बंशीलाल खटीक : खुद ही उत्तेजित होकर बोलते हैं।

श्री अध्यक्ष : और सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य, आप भी विषयान्तर हो रहे हैं। आप अपनी बात कहिये, विषयान्तर नहीं होएं आप। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : बारबार इनको भाव आता है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बीच में क्यों खड़े होते हैं? बोलिये आप। (व्यवधान) संसदीय कार्य मंत्रीजी, आपसे मैंने निवेदन किया था अपने सदस्यों को नियंत्रित करें।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : माननीय सदस्य, शांत रहें, बिराजिये। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्रतिपक्ष के नेता का भी कर्तव्य है, दोनों तरफ बराबर बात है।

श्री श्रवण कुमार : इस तरह से हमने कभी नहीं देखा है। यह कोई तरीका थोड़े ही है। आप समय देते हो, बोलने देते नहीं। क्या तरीका है यह?

श्री भंवरलाल शर्मा (सरदारशहर): अध्यक्ष महोदय, आप भी बता दीजिये, ऐसा माहौल कभी देखा हो तो। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : माननीय कटारियाजी यहां प्रतिपक्ष के नेता होते थे तो हम कितनी शांति से सुनते थे, इनकी

(श्री श्रवण कुमार)

बात सुनने में मजा आता था। यह कोई तरीका थोड़े ही है?

श्री संयम लोढ़ा : अध्यक्ष महोदय, हम स्वर्गीय राधाकृष्णनजी का सम्मान करते हैं, पूरा देश सम्मान करता है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी अपने कुत्सित स्वार्थ के लिए दो महान व्यक्तियों को लेकर एक विवाद पैदा करने की कोशिश कर रही है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार की भावना के साथ हम हैं, आप राधाकृष्णनजी के नाम पर एक नहीं, हजार भवनों का नामकरण करें, हमारा पूरा समर्थन है। लेकिन देश के एक महान नेता, जिनको देश की खातिर अपनी जान गंवानी पड़ी, अगर पिछली हुकूमत ने कोई फैसला उनके नाम पर नामकरण का किया तो आपको ओछी मानसिकता नहीं रखनी चाहिए। आप यह मत समझिए कि आपका राज बना तो जिन्दगी भर का पट्टा आपको मिल गया। अपने बहुमत के अहंकार में इतना मत रहिए और राष्ट्र के नेताओं का कद छोटा करने की कोशिश मत करिए।

श्री अध्यक्ष : आप विषयान्तर हो रहे हैं। (व्यवधान)

डा. जालम सिंह रावलोत : आपने तो पूरा पाठ्यक्रम बदल दिया था। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, मैं समझती हूं, आपने अपनी भावना प्रकट कर दी इस बारे में। (व्यवधान) आप शांति से रहे। इस बारे में यदि शिक्षा मंत्रीजी को कुछ कहना है कि क्या वजह हुई जिसकी वजह से नाम बदला गया उस भवन का, तो आप जरा बता दें।

डा. करण सिंह यादव (बहरोड़) : इन्होंने स्कूलों का नाम बदल दिया। राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में 2317 शिक्षा गारंटी योजना केन्द्र को नियमित प्राथमिक विद्यालयों में कंवर्ट किया। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यह अलग से प्रश्न है। (व्यवधान) सुनिये, सुनिये, मंत्रीजी क्या कहते हैं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (शिक्षा मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत ही विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूंगा, आज सुबह प्रश्नकाल के समय मैंने निवेदन किया था, व्यक्तिगत रूप से मेरी या पार्टी की या सरकार की किसी भी रूप में स्वर्गीय राजीव गांधीजी के प्रति कोई अश्रद्धा की भावना नहीं है। वे भारत के प्रधानमंत्री थे, भारत रत्न की उपाधि उनको दी गयी है और भारतीय संस्कृति में भी देहान्त हो जाने के पश्चात् व्यक्ति के गुणों का वर्णन होता है। किसी प्रकार से नहीं है। और मैंने सुबह भी कहा था कि राजीव गांधी स्वर्ण जयन्ती पाठशालाओं का नाम बदलने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता। हमने इस बात को सोचा ही नहीं। (व्यवधान) दूसरी बात।

श्री अध्यक्ष : हां, दूसरी बात सुन लीजिए।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मैं एकदम स्पष्ट कर रहा हूं। दूसरी बात मैं यह कह रहा हूं कि इस भवन के बारे में विवाद की कोई स्थिति नहीं है। अगर विवाद की स्थिति होती तो यह जवाहर लाल नेहरू मार्ग है पण्डित जवाहर लाल नेहरू के नाम से, इस पर श्रीमती इन्दिरा गांधी का उसके बाद में चौराहा बना हुआ है, उसके आगे जवाहर सर्कल बना हुआ है। यह पूरी रोड, शिक्षा की रोड है और इस पर बहुत से शिक्षा के संस्थान बने हुए हैं कोई शिक्षा संस्थान इस पर हैं। मेरे मंत्री बनने के पश्चात् और पहले भी इस सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षक संघों के डा. राधाकृष्णन के नाम से शिक्षा संकुल बनाने के लिए ये सारे के सारे पत्र आये हैं। आप कहे जब कभी भी, मैं सदन के पटल पर रख सकता हूं, नम्बर एक।

नम्बर दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं कि डा. श्री राधाकृष्णन भारतीय जनता पार्टी के मैम्बर नहीं थे, वे कांग्रेस के मैम्बर थे। भारत के पहले उप राष्ट्रपति थे और फिर राष्ट्रपति थे। भारत रत्न हैं वह भी और उनके जन्म दिन के अवसर पर ही पांच सितम्बर को इस भवन का उद्घाटन हुआ था। यह सरकारी जमीन भी नहीं थी, यह मुक्तिलाल मोदी चैरिटेबल ट्रस्ट की जमीन थी। जब भैरोंसिंह शेखावत साहब मुख्य मंत्री थे तो उन्होंने कहा कि लोग जमीन पर कब्जा कर रहे हैं। उन्होंने सरकार को दिया और उन्होंने कहा कि किसी शिक्षा शास्त्री के नाम से कोई भवन या संकुल बना दे। इसमें स्कूल बनी नहीं। फिर 19 तारीख को माननीय अशोकजी गहलोत ने इसका शिलान्यास किया। इसी जमीन को बेचकर जे.डी.ए. ने इससे जो पैसा आया उस पैसे से इस भवन का निर्माण किया। तो मैं माननीय सदस्यों को यही कहना चाहता हूं कि न तो राजीवजी का अपमान करने का सवाल है। राजस्थान नहर का नाम था, आपकी सरकार आयी, राजस्थान नहर का नाम बदलकर इन्दिरा गांधी कैनाल कर दिया। उसके बाद हमारी सरकारी आयी, हमारा नाम आया, हमने नहीं बदला। क्या इन्दिराजी का नाम आने से राजस्थान के पांच करोड़ लोगों का अपमान हो गया? ऐसी अपमान की कोई बात नहीं है। मैं पूरा सम्मान करता हूं। और मैं एक बार संक्षेप में कहता हूं, मेरी कल्ला साहब से भी बात हुई है और मेरी इस सम्बन्ध में माननीय अशोकजी से भी बात हुई है, इस प्रश्न को राजनीतिक रूप न दें, मैं इतना ही आपको निवेदन कर सकता हूं। उस समय मंत्रिमण्डल का प्रस्ताव नहीं था इसका नामकरण करने का और मंत्रिमण्डल के प्रस्ताव से यह नाम हुआ है। मैं आपकी भावनाओं की कद्र कर रहा हूं, आप इस विषय को यहीं समाप्त कर दें तो ज्यादा ठीक रहेगा।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी आज्ञा से माननीय शिक्षा मंत्रीजी से यह जानना चाहता हूं कि क्या आप इस पर पुनर्विचार कर रहे हैं?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मैंने एक वाक्य में आपको कहा है कि मैं आपकी भावना की कद्र कर रहा हूं और इस विषय को यहीं छोड़ दे। मैं इतना पर्याप्त समझता हूं। इतना पर्याप्त है, कल्ला साहब। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : 295, श्री रामनारायण मीणा। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : कल्ला साहब, आप खुद गलती करते हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : ऐसा है, आपने सदन की भावनाओं को जान लिया है। मैं उम्मीद करता हूं और राजस्थान की कभी ऐसी परम्परा नहीं रही कि किसी राजनीतिक व्यक्ति के नाम पर...(व्यवधान)

श्री बंशीलाल खटीक : पहले खुद गलती मत करो। इतनी ज्यादा गलती करके आये हो फिर भी बोल रहे हो आप खड़े होकर। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : राज्य सरकार का कोई लेना-देना नहीं है इसमें।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, प्रतिपक्ष के नेता महोदय, मंत्रीजी ने साफ कहा कि मंत्रिमण्डल की कोई स्वीकृति नहीं हुई थी। राजीव गांधी शिक्षा संकुल के भवन के लिए मंत्रिपरिषद् की स्वीकृति नहीं थी। नया मंत्रिमण्डल आया उसने अपना नाम बदल लिया। ये अगर बदलना चाहे, मर्जी की बात है। वैसा आपने कह दिया। आपकी भावना से आपने अवगत करवा दिया। मैं अब 295 के लिए नाम पुकार रही हूं। श्री रामनारायण मीणा। श्री संयम लोढ़ा। 295, विशेष उल्लेख का प्रस्ताव। (व्यवधान) नहीं, आप नहीं, वह गलती हो गयी।

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां) : अध्यक्ष महोदय, मेरा आपने नाम पुकारा है। आपने कल व्यवस्था दी, आपसे मेरा एक अनुरोध है, आप मेरी बात सुनेंगे। मैं तो वैसे ही बात नहीं कहता हूं, सदन में नियमों के तहत बात करता हूं। मैंने आपको स्थगन प्रस्ताव दिया था, चम्बल की नहरों के टेल पर फसलें सूख रही हैं 45 दिन से। आपके कृषि विभाग के अधिकारी कहते हैं कि 15 दिन में फसल को पानी मिलना चाहिए और आपके पास संसाधन नहीं हैं। सरकार सो रही है। न उनके पास जीपें हैं, न मजदूर हैं, न कार्यकर्ता हैं। किसी तरह की व्यवस्था नहीं है।

श्री अध्यक्ष : आपके स्थगन प्रस्ताव का विषय स्वीकृत किये जाने लायक नहीं था इसलिए मैंने अस्वीकृत कर दिया।

श्री संयम लोढ़ा। विशेष उल्लेख का प्रस्ताव पढ़ें। (व्यवधान)

नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख

सिरोही के गांव बावली के संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय का सामान्य शिक्षा में परिवर्तन

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही) : अध्यक्ष महोदय, प्रक्रिया-संचालन नियम 295 के अन्तर्गत सिरोही तहसील के गांव बावली के संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय को सामान्य शिक्षा के उच्च प्राथमिक विद्यालय में बदलने के सम्बन्ध में। निवेदन है कि सिरोही तहसील के गांव बावली में पिछले दशक से राज्य सरकार द्वारा रा.उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय का संचालन किया जा रहा है। संस्कृत शिक्षा विभाग में सिरोही जिले में स्थानीय शिक्षक अत्यन्त कम हैं और जिले से बाहर के शिक्षक प्राय: इस प्रयास में रहते हैं कि अपने मूल जिले में स्थानान्तरण कराएं। इससे विद्यालय की व्यवस्था पूरी तरह चौपट हो गयी है।

गत वर्ष भी अध्यापकों के द्वारा तबादला कराने पर विद्यालय बन्द होने की नौबत आ गयी थी। ग्रामीणों ने आन्दोलन किया था तब पुन: वैकल्पिक व्यवस्था की गयी। बावली गांव के लोगों की यह भावना है कि उन्हें संस्कृत विद्यालय नहीं चाहिए।

अत: मेरा राज्य सरकार से आग्रह है कि इसे संस्कृत से हटाकर सामान्य शिक्षा के उच्च प्राथमिक विद्यालय में बदलने का कष्ट करें जिससे कि बच्चों का भविष्य संवारा जा सके।

श्री अध्यक्ष : श्री अर्जुन सिंह बामणिया।

दानपुर में घोटिया-आम्बा मन्दिर तक सड़क का निर्माण

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर) : अध्यक्ष महोदय, कार्य संचालन एवं प्रक्रिया के नियम 295 के तहत घोटिया-आम्बा दर्शनीय स्थान तक पक्की सड़क निर्माण के सम्बन्ध में।

मान्यवर, विधान सभा क्षेत्र दानपुर में स्थित घोटिया-आम्बा दर्शनीय स्थान है जहां हजारों-लाखों की संख्या में दर्शनार्थी आते हैं। यह बागड़ क्षेत्र का मुख्य दर्शनीय स्थान होने से यहां पर घोटिया-आम्बा में सड़क मन्दिर तक अपूर्ण है उसे पक्की कर माननीय सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित कर अनुरोध है कि इसे पूर्ण कराये जाने की कार्यवाही करावें।

श्री अध्यक्ष : श्री बहादुर सिंह गोदारा।

नोहर में अकाल सहायता के तहत सम्पूर्ण गेहूं का वितरण

श्री बहादुर सिंह गोदारा (नोहर) : अध्यक्ष महोदय, प्रक्रिया तथा कार्य संचालन सम्बन्धी नियम 295 के तहत सदन की जानकारी में लाना चाहता हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र नोहर में अकाल सहायता के

(श्री बहादुर सिंह गोदारा)

रूप में किसानों, मजदूरों को एक-एक मकान बनाने के लिए गेहूं देना तय किया था। जिस पर किसानों-मजदूरों ने कच्चे एवं पक्के मकान बनाना शुरू कर दिया। किसी ने छत डाल दी, किसी ने डाली नहीं। उनको आधे-अधूरे गेहूं दिये, पूरे नहीं मिले गेहूं जिससे किसान एवं मजदूर मुसीबत में फंस गये हैं। अधिकारी उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : आप इसमें जो लिखा है वही पढ़ें।

श्री बहादुर सिंह गोदारा : अत: उन्होंने अनिश्चितकाल के लिए धरने पर बैठने का फसला किया है, जिससे वे पूरी बरबाद हो जाएंगे। उनको गेहूं देने की कार्यवाही तुरन्त की जाए।

श्री अध्यक्ष : श्री मांगीलाल गरासिया।

गोगुन्दा विधान सभा क्षेत्र में एनीकटों का निर्माण

श्री मांगीलाल गरासिया (गोगुन्दा) : अध्यक्ष महोदय, नियम 295 के तहत गोगुन्दा विधान सभा में एनीकट, बांध निर्माण में सम्बन्ध में अनुरोध है कि विधान सभा क्षेत्र गोगुन्दा आदिवासी बहुल अंचल एवं भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी क्षेत्र है। यहां का पानी बहाकर चला जाता है। जब तक यहां का पानी रोक कर सिंचाई के रूप में उपयोग नहीं लिया जाता है तब तक किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं हो सकती है। अतः विधान सभा क्षेत्र गोगुन्दा-कोटड़ा में-

1) एनीकट सोनारियों का नाका पलासमा गोगुन्दा (उदयपुर),
2) एनीकट भैमरियाजी की घाटी तिरोल-गोगुन्दा,
3) एनीकट बन्धी का खेत बांसलिया तिरोल-गोगुन्दा,
4) एनीकट आम्बा का धरा शोभावास (नान्हेशमा) गोगुन्दा,
5) बांध सरीका का नाका कोहनी धरा पीपरना (चित्रावास) गोगुन्दा,
6) बांध दूरदा का नाका रोयडा पंचायत करदा गोगुन्दा
7) बांध सामोली कोटड़ा,
8) बांध चितरा भेगरा पंचायत मेरपुर कोटडा एवं
9) एनीकट बरबेला पीपरमाला (गोगुन्दा) कोटड़ा।

उपरोक्तानुसार एनीकट एवं बांध बनवाये जाने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित कर अनुरोध है कि निश्चित रूप से एनीकट एवं बांध निर्माण कराये जाने की कार्यवाही कराएं।

श्री अध्यक्ष : श्री महावीर प्रसाद जैन।

अकाल राहत हेतु आबंटित गेहूं की कालाबाजारी

श्री महावीर प्रसाद जैन (टौंक) : अध्यक्ष महोदय, अकाल राहत में ए.पी.एल., बी.पी.एल. परिवारों को दिए जाने वाले गेहूं की कालाबाजारी के सम्बन्ध में नियम 295 के अन्तर्गत प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं।

महोदय, उपरोक्त विषय में निवेदन है कि ए.पी.एल., बी.पी.एल., अन्त्योदय, अन्नपूर्णा योजना आदि में राजस्थान में अकाल के समय केन्द्र सरकार द्वारा सहायता के रूप में भेजे गये गेहूं की कालाबाजारी की गयी तथा गरीब एवं अकाल पीड़ित जनता को यह गेहूं नहीं मिल सका। सीकर, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, बांसवाड़ा, टौंक, सवाई माधोपुर आदि स्थानों पर करोड़ों रुपये का गेहूं कालाबाजारी करते हुए पकड़ा भी गया है तथा विभिन्न डीलरों के विरुद्ध कालाबाजारी के मुकदमे भी दर्ज करवाये गये हैं।

अकेले पंचायत समिति अलीगढ़ जिला टौंक में अकाल राहत सम्वत् 2059 में स्वीकृत निर्माण कार्यों पर सृजित मानव दिवस के विरुद्ध 7000 क्विंटल गेहूं का घपला पाया गया है तथा श्रमिकों को उनको दिया जाने वाला गेहूं नहीं दिया गया है। गरीब व मजदूर अपने कूपन लेकर डीलरों तथा अधिकारियों के चक्कर काट रहे हैं जिसके कारण वहां के लोगों में आक्रोश व्याप्त है। प्रधान, पंचायत समिति, उनियारा ने एक प्रार्थना पत्र माननीय खाद्य मंत्रीजी को प्रस्तुत कर इस घोटाले की जांच की मांग की है।

राजस्थान में कई स्थानों पर इस प्रकार के घोटाले सामने आ रहे हैं। अकाल पीड़ित लोगों को अभी तक गेहूं नहीं मिलने से आक्रोश तथा असन्तोष व्याप्त है। ऐसे सारे गेहूं को प्राइवेट एफ.पी.एस. डीलर रसद अधिकारियों से मिलकर डकार गये। अधिकारी तथा कर्मचारी राशन डीलरों से मिलकर रिकार्ड में हेराफेरी कर रहे हैं तथा रिकार्ड खुदबुर्द करने की सम्भावना है।

अतः मैं इस प्रस्ताव के माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित कर निवेदन करता हूं कि एक विशेष टीम बनाकर पूरे राजस्थान में गेहूं घोटालों की जांच की जाए तथा दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं खाद्य मंत्रीजी से...

श्री अध्यक्ष : पढ़ लिया आपने, आपका समाप्त हो गया।

मोहम्मद माहिर आजाद : नहीं, नहीं, इसके अलावा कुछ नहीं कर सकते आप। आप तो खुद बहुत वरिष्ठ आदमी हैं।

श्री अध्यक्ष : श्री सी.डी. देवल।

श्री महावीर प्रसाद जैन : मैं सरकार से यह अपेक्षा करता हूं, अध्यक्ष महोदय, जिसके बारे में सारा सदन उद्वेलित है...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : इनको बोलने का रोग है।

श्री महावीर प्रसाद जैन : जिसके बारे में हमारे कांग्रेस के माननीय सदस्यों को बैल में आना पड़ा...(व्यवधान) और उसमें मंत्री गायब हो जाएं, मैं समझता हूं ऐसे विषयों पर हालांकि मैं बहुत जिम्मेदारी से कहता हूं...

श्री अध्यक्ष : आपने ध्यान आकर्षित कर दिया, अब आप बिराजें। स्थान ग्रहण करें।

श्री महावीर प्रसाद जैन : मुझे पता है कि यह नियमों में व्यवस्था नहीं है पर यदि, मंत्रीजी, मैं समझता हूं आपको क्यों शर्म आ रही है...(व्यवधान) और कार्यवाही क्यों नहीं कर रहे हो आप?

श्री हरिमोहन शर्मा : अध्यक्ष महोदय, इनको बोलने का रोग है, इनको बैठाओ तो सही। (व्यवधान) इनको अस्पताल भेजो, इनको बोलने का रोग हो गया है।

श्री अध्यक्ष : बैठिये, आवश्यकता नहीं है जवाब देने की।

श्री महावीर प्रसाद जैन : आवश्यकता नहीं है। देना चाहे तो दे सकते हैं आप। क्या मजबूरी है? क्या आप मिले हुए हैं उनसे? (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : इनको भेजो अस्पताल ताकि इनका इलाज हो।

श्री रामलाल शर्मा : आप माननीय मंत्री महोदय से निजी...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : लेकिन ऐसे गम्भीर विषय पर यह सरकार...(व्यवधान) शर्म की बात है कि आप सदन में चुपचाप बैठे हो।

श्री बद्रीलाल जाट : अध्यक्ष महोदय, यह मजबूरी है, इनकी सरकार है फिर भी इनकी सुन नहीं रहे हैं।

श्री महावीर प्रसाद जैन : यह सरकार संवेदनशील है, तत्काल एक्शन में विश्वास रखती है। घनश्यामजी और गुलाबजी ने यह करके भी दिखाया है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, माननीय मुख्य मंत्रीजी कह चुकी हैं, आप जवाब देना चाहते हैं क्या?

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल : (व्यवधान) इनके काले कारनामे जनता के सामने आने चाहिए। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण बिराजें, अपना-अपना स्थान ग्रहण करें। माननीय मंत्रीजी, आप कुछ कहना चाहते हैं क्या?

एक माननीय सदस्य : मंत्रीजी इनकी बात सुनते ही नहीं हैं इसलिए हाउस में बोलना पड़ता है। (व्यवधान)

डा. जालम सिंह रावलोत : ऐसा है, हमारी बात को कहने का हमें अधिकार है।

(12.37 बजे)

(डा. एन. एम. गुर्जर, सभापति, पदासीन)

(व्यवधान) हमारी बात भी सुने। आपको क्या तकलीफ हो रही है? हम भी इनकी बात को साथ में मिला रहे हैं। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट : उसमें बकायदा तीन दिन तक कोई रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं हुई।

श्री सभापति : आप बिराजें। माननीय मंत्रीजी बोल रहे हैं। बैठिये। बैठिये मंत्रीजी बोल रहे हैं, आप बैठ जाओ। वह बोल देंगे उसके बाद...(व्यवधान) आप बैठिये, माननीय सदस्य, बैठिये पहले। जब मंत्रीजी जवाब दे रहे हैं तो आप क्यों खड़े हो रहे हैं बीच में? आप बैठिये। माननीय मंत्री महोद्रय...(व्यवधान) बिलकुल नहीं। जब मंत्रीजी खड़े हो गये। जवाब देने तो यू कांट इंटरप्ट।

डा. किरोड़ी लाल (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति) : माननीय सभापतिजी, सदन में अभी टौंक से आने वाले माननीय सदस्य ने इस बात की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है कि एस.जे.आर.वाई, स्पेशन कम्पोनेंट और एस.जे.आर.वाई. योजना का जो गेहूं है ए.पी.एल., बी.पी.एल. का इसमें घपले हुए हैं। जैसे ही सरकार आयी हमने कुछ शिकायतें जो प्राप्त हुई उनकी जांच करवाई। उसमें, माननीय सभापतिजी, अब तक हमने अकेले चित्तौड़गढ़ जिले में...(व्यवधान)

श्री सभापति : बीच में इंटरप्ट नहीं करें।

डा. किरोड़ी लाल : 38,134 क्विंटल गेहूं का घपला मिला है, पिछली सरकार के समय का। इसमें अब तक हमने 57 एफ.आई.आर. दर्ज करायी हैं। कुछ कलक्टर्स ने एफ.आई.आर. दर्ज करायीं, लाइसेंस भी निरस्त कर दिये। चूंकि यह पंचायत विभाग को किया जा चुका था इसलिये कलक्टर के लाइसेंस निरस्त किये हुए, वह डी.ओज. ने बहाल कर दिया। ऐसी भी अनियमितता मिली है।

श्री महावीर प्रसाद जैन : कलक्टर के आदेश को बी.डी.ओ. ने नहीं माना।

डा. किरोड़ी लाल : चित्तौड़गढ़ जिले में ऐसी 8 एफ.आई.आर. दर्ज करायी गयीं जिसमें 8037 क्विंटल गेहूं का घपला है। डूंगरपुर जिले में 7 एफ.आई.आर. दर्ज करायी गयीं जिसमें 529.13 क्विंटल गेहूं का घपला है। झालावाड़ जिले में 4 एफ.आई.आर. दर्ज करायी गयीं जिसमें 1564.55 क्विंटल गेहूं का घपला है। सिरोही में 7 एफ.आई.आर. दर्ज करायी गयीं जिसमें 12515.21 क्विंटल गेहूं का घपला है। बाड़मेर जिले में जो अभी कूपन माननीय सदस्य बता रहे थे, अभी यहां श्रमिक घूम रहे हैं और उनको गेहूं नहीं दिया गया है। वहां पर 2180.42 क्विंटल

(डा. किरोड़ी लाल)

गेहूं का घपला मिला है जिसमें 16 एफ.आई.आर. दर्ज करायी हैं। सवाई माधोपुर जिले में 10313 क्विंटल गेहूं गायब मिला है जिसका पता नहीं है और वहां भी हमने 10 एफ.आई.आर. दर्ज करवायी हैं। इसी प्रकार भरतपुर जिले में 2 एफ.आई.आर. दर्ज करायी गयी हैं और बूंदी जिले में 259.39 क्विंटल गेहूं का दुरुपयोग पाया गया है। सीकर जिले में तो ए.सी.डी. ने ही छापा मारा था, वहां पर 2719.19 क्विंटल गेहूं का घोटाला पाया गया है। इसी प्रकार जो खांट साहब बोल रहे थे, इनके बांसवाड़ा में 1985.84 क्विंटल गेहूं का घपला पाया गया है।

माननीय सभापति महोदय, इसकी गहन जांच करवाना जरूरी है और ऐसा लगता है कि यह तो बहुत कम है, इससे कई गुना बड़ा गेहूं का घोटाला पिछली सरकार ने करवाया है। (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : यह जो बी.डी.ओ. ने कार्यवाही की और कलक्टर के आदेश की अवहेलना की, ऐसे बी.डी.ओ. और ऐसे अधिकारियों के खिलाफ क्या कार्यवाही करने की मंशा रखते हैं?

डा. किरोड़ी लाल : कार्यवाही की तो बता रहा हूं।

सभापति महोदय, यही नहीं हुआ, सरकार की मंशा पता नहीं क्या थी? शुरू में जो कूपन छपवाये गये उस कूपन में...(व्यवधान)

श्री हेमराज : पहले अन्त्योदय, बी.पी.एल. का जवाब दो...(व्यवधान)

श्री सभापति : देखिये, मंत्रीजी जवाब दे रहे हैं। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : जवाब दे रहे हैं, मगर वह तो मिलीभगत है। (व्यवधान)

श्री सभापति : मंत्रीजी जवाब दे रहे हैं। 295 का मंत्रीजी जवाब दे रहे हैं, प्लीज। मंत्रीजी जवाब दे रहे हैं, सदन ने मांगा है जवाब। 295 पर जवाब दिये जाते हैं, यह...(व्यवधान) अब आप बिराज जाइए। नहीं, वह नहीं है, आप बिराज जाइए। (व्यवधान) अब आप बिराजिए। (व्यवधान)

श्री बाबूलाल नागर : मंत्री महोदय, इतना–सा बता दे कि यह एफ.आई.आर. किसने करायी थी, कौन अधिकारी पकड़े गये?

डा. जालम सिंह रावलोत : ये रहे आपके वोटर हैं, ये खाली हैं, इनके पास बी.पी.एल. के कार्ड हैं। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप बैठिये। वह जवाब दे रहे हैं मंत्रीजी, आप बीच में खड़े हो रहे हैं। मंत्रीजी।

डा. किरोड़ी लाल : माननीय सभापति महोदय, इतना ही नहीं हुआ। तहसीलदार गंगरार, चित्तौड़गढ़ की एक जांच हमने

(डा. किरोड़ी लाल)

करवायी थी जिसमें अकाल राहत कार्यों की जांच के दौरान ग्राम पंचायत तूबड़िया एवं अन्य पंचायतों में सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना के अन्तर्गत फर्जी कूपनों का एक प्रकरण पाया गया और फर्जी कूपन पकड़े गये ग्यारह हजार की तादाद में। इनकी एफ.आई.आर. भी दर्ज हुई।

श्री महावीर प्रसाद जैन : यह सारे राजस्थान में हुआ है।

डा. किरोड़ी लाल : सभापति महोदय, यह हुआ कैसे? जून तक राजस्थान की सरकार ने जो कूपन बनाये हैं उस कूपन में एक तरफ मात्रा लिखी हुई थी, जैसे 50 किलो, और उसकी कीमत भी लिखी हुई थी। जुलाई के बाद इन्होंने वह अंकित हटा दिया और केवल तीन पर्त कूपन की लिखीं जिसमें न मात्रा थी, न राशि का कहीं मेंशन था, इसलिये डीलर्स ने अपने हाथ से उसको भर लिया और गेहूं को उठाकर ले गये और जो वाजिब श्रमिक था वह घूमता रहा। उस ढंग का प्रकरण यहां एक फर्जी कूपन का आया जिसमें विभिन्न नम्बर से जारी कूपन बुक्स में से एक-दो कूपन जारी किये गये, शेष पर सामग्री वितरण नहीं पाया गया। ट्रैजरी से इस संख्या के कूपन जारी होना ही नहीं पाया गया। कूपन पर अधिकृत व्यक्ति के हस्ताक्षर होना नहीं पाया गया। मस्टररोल में नाम के सामने अंकित कई कूपन रिकार्ड के अनुसार नहीं पाये गये। ट्रैजरी द्वारा जारी कूपन की सीरिज कुछ और है जबकि मौके पर जांच के दौरान पाये गये कूपन की सीरिज अलग है। जांच के दौरान कुछ प्रिंटिंग प्रेस द्वारा इस प्रकार के कूपन जो कि जिला कलक्टर द्वारा प्रिंट कराये गये थे, उनके अलावा भी प्रिंट होना पाया गया है। इस प्रकार अधिकृत कूपन के समानान्तर फर्जी कूपन छपवाकर हजारों क्विंटल गेहूं की मजदूरों के पेटे मोटी रकम की हेराफेरी की। यह एक चित्तौड़गढ़ का मामला प्रकाश में आया है जहां इसका मुकदमा भी दर्ज कराया गया है। नागर साहब पूछ रहे थे, यह घोटाला तो आपकी सरकार का है और हमने दर्ज कराया है मामला...(व्यवधान) यह हमने दर्ज करायी है।

श्री महावीर प्रसाद जैन : टौंक जिले में आप स्वयं गये थे, उस समय आपके सामने लोग उपस्थित हुए थे। फर्जी कूपन लेकर आए थे और लोगों को मजदूरी के रूप में जो गेहूं मिलने वाला था...(व्यवधान)

श्री सभापति : इस पर डिबेट नहीं। इस पर डिबेट नहीं प्लीज। अब इस पर डिबेट नहीं होगी। देखिये, आप बैठिये। मैं कह रहा हूं...(व्यवधान) इस पर डिबेट नहीं होगी। माननीय मंत्रीजी ने जवाब दे दिया, नैक्स्ट।

श्री जीतमल खांट : बांसवाड़ा जिले के लोगों का अकाल राहत की मजदूरी

(श्री जीतमल खांट)

का अब तक भुगतान नहीं हुआ है। अकाल राहत की मजदूरी का अब तक भुगतान नहीं होना कितना बड़ा गम्भीर विषय है।

श्री सभापति : अब इस पर सवाल-जवाब नहीं होंगे। आपने जो बोल दिया इस पर सवाल-जवाब नहीं होंगे।

डा. किरोड़ी लाल : कोई सवाल जवाब नहीं है। (व्यवधान)

श्री अर्जुन लाल जीनगर : तो आज तक वे मुलजिम बरी क्यों हैं?

श्री सभापति : सवाज-जवाब नहीं होंगे। प्लीज। सवाल-जवाब नहीं। I would not allow you. Please sit down.

श्री अर्जुन लाल जीनगर : नहीं तो उनको बताना बहुत जरूरी है। अब यह इस प्रकार घूमते रहेंगे...(व्यवधान) इस प्रकार के फर्जी कूपन अभी भी हैं...

श्री सभापति : प्लीज, आप बैठ जाएं। सवाल-जवाब नहीं होंगे इस पर। जिसका 295 है, 295 में...(व्यवधान)

श्री जीतमल खांट : मंत्रीजी, बांसवाड़ा का स्पेशल विषय है। बांसवाड़ा आदिवासी बहुल क्षेत्र है...

श्री सभापति : आप बिराजिये एक मिनट। सवाल-जवाब का देखिये... (व्यवधान)

श्री जीतमल खांट : सवाल-जवाब नहीं, यह...(व्यवधान)

श्री सभापति : आप नियम पढ़िये। नियमों में लिखा हुआ है 295...(व्यवधान) आप पहले सुनिये। माननीय सदस्य, पहले आप सुनिये। यह 295 है, 295 में चाहें तो मंत्रीजी जवाब दे सकते हैं, चाहे तो नहीं दें। अब मंत्रीजी ने...(व्यवधान) एक मिनट सुनिये पहले...

श्री जीतमल खांट : मैं तो इनसे सम्बन्धित बांसवाड़ा जिले का जिक्र कर रहा हूं। मैं आपसे कोई सवाल नहीं कर रहा हूं। अकाल राहत में गेहूं मजदूरी के रूप में नहीं मिला है, इससे बड़ा और क्या गम्भीर विषय है...

श्री सभापति : जब मैं बोल रहा हूं। जब मंत्रीजी ने जवाब देना शुरू कर दिया, वह जवाब दे रहे हैं, इस पर कोई सवाल जवाब नहीं होगा। वह जो बोल रहे हैं, ठीक है उतना ही। सवाल-जवाब नहीं होगा इस पर।

डा. किरोड़ी लाल : माननीय सभापति महोदय, पूरे राजस्थान भर में ऐसा कोई सैगमेंट नहीं है विधान सभा का या जिला, जहां इस प्रकार की गम्भीर प्रवृत्ति की शिकायत नहीं मिली हो। लेबर हमारे पास आ रहे हैं, उनका भुगतान नहीं हुआ और भारी गेहूं डम्प हो रहा है। दुरुपयोग हुआ है, घपला हुआ है। इसलिये जो महावीरजी चाह रहे हैं, मैं टौंक गया था, निर्देश देकर

(डा. किरोड़ी लाल)

आया था बी.डी.ओ. को। अकेले... (व्यवधान) सात हजार क्विंटल गायब है। इसलिये इस समूचे प्रकरण की हम...

श्री सभापति : जांच कराएंगे।

डा. किरोड़ी लाल : उच्च स्तरीय दल गठित करके इसकी जांच कराएंगे।

श्री सभापति : सब ठीक। ओ.के.। नैक्स्ट...(व्यवधान) श्री सी.डी. देवल।

श्री सी.डी. देवल : सभापति महोदय, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि सदन के अध्यक्ष महोदय ने मेरा नाम पुकार लिया था 295 के मामले में, उसके बावजूद भी टौंक से आए हुए सदस्य का जो 295 का जवाब था उसके अन्दर इतनी व्यवस्था कर दी गयी। आपने अध्यक्ष महोदय के निर्णय को बदल करके इनको बोलने की अनुमति दे दी। यह आपके लिये विचारणीय प्रश्न है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपने जो मामला उठाया है, मैं वह क्लीयर कर दूं। यह मेरा निर्णय नहीं था। मंत्रीजी को बोलने के लिये माननीय अध्यक्ष महोदय ने ही कहा था कि आप बोलना चाहे तो बोल ले।

श्री सी. डी. देवल : सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन करूं कि माननीय अध्यक्ष ने मेरा नाम पुकार लिया था और मैं खड़ा हो गया था। इस बीच आसन पर आप पधार गये और आपने माननीय मंत्रीजी को बोलने की अनुमति दे दी।

श्री सभापति : कई बार ऐसा होता है। माननीय अध्यक्ष महोदय ने ही कहा था कि मंत्रीजी बोलना चाहे, जवाब देना चाहते हैं तो बोल ले इसलिये वह बोल रहे थे।

रायपुर विधान सभा क्षेत्र के गांवों में जल संकट

श्री सी. डी. देवल (रायपुर) : सभापति महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा के कार्य संचालन के नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि तहसील रायपुर, जिला पाली के कुशालपुरा, लीलाभा, झूठाका, निम्बेहडा कलां, देवली कलां, पीपलिया कलां, मोहरा कलां व रायपुर ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत गांवों में पीने के पानी की गम्भीर समस्या है। रामपुरा कलां पंचायत में व करीब 18 गांवों में पीने के पानी की समस्या है। कुओं का जल स्तर दो सौ फुट तक गहरा हो गया है। ग्राम कुशालपुरा में एक काश्तकार ने नलकूप खुदाया जिसमें एक हजार फुट पर भी पानी नहीं है। नीचे ग्रेनाइट पत्थर आया हुआ है। रायपुर, लूणी नदी बन जाने पर इस नदी में पानी नहीं आता है जिससे कुओं का जल स्तर दिनों दिन नीचे जा रहा है। इस वर्ष जो वर्षा हुई है वह खेती के लिए ही पर्याप्त नहीं

(श्री सी. डी. देवल)

है। न तो नदी आई, न ही तालाबों में पानी आया। माह जनवरी में ही पीने के पानी की समस्या पैदा हो गयी है और अप्रैल–मई में तो स्थिति बेकाबू हो जाएगी।

गत चार वर्षों में इन गांवों में पीने के पानी की समस्या के समाधान हेतु पी.एच.ई.डी. द्वारा पेयजल योजना बनाने का निरन्तर प्रयास किया गया है, परन्तु आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी है। रायपुर-लूणी नदी पर बने दीपावास बांध में लगभग आठ फुट पानी अनुपयोगी रहता है क्योंकि सिंचाई के लिए जो नहर बनायी गयी है वह बांध की सतह से आठ फुट ऊंची है।

अतः इन गांवों को पीने के पानी के लिए रायपुर बांध के इस डैड स्टोरेज से आपातकालीन योजना बनाकर इन सोलह गांवों को पीने का मीठा पानी उपलब्ध कराया जाए। इन सभी गांवों में पीने का पानी फ्लोराइडयुक्त है जिससे जनता के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है।

अतः मैं सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए जनहित में निवेदन करना चाहता हूं कि पेयजल योजना को शीघ्र स्वीकृत कर लोगों को राहत पहुंचाएं और योजना बनाने में देरी करने के कारणों की जांच कराएं।

श्री सभापति : श्री वीरेन्द्र मीणा।

राज्य के सहकारी व भूमि विकास बैंकों में अधिकारियों के चयन में अनियमितता

श्री वीरेन्द्र मीणा (लालसोट) : सभापति महोदय, मैं राजथान विधान सभा के प्रक्रिया एवं कार्य संचालन के नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी के शासन के दौरान केन्द्रीय सहकारी बैंकों एवं भूमि विकास बैंकों में प्रबन्ध निदेशकों एवं सचिवों के चयन में भारी अनियमितता बरती गयी है, बिना किसी नियमों के ऐसे पंदों पर चयन किया गया है। पूर्व सरकार के कार्यकाल में राजस्थान में सवाईमाधोपुर, हिण्डौन, अलवर एवं बारां जिलों में ऐसी बैंकों में भ्रष्ट तरीके अपनाकर नियमों के विरुद्ध लोगों का चयन किया गया है।

अतः मैं इस प्रस्ताव के माध्यम से सरकार का ध्यानाकर्षित करता हूं तथा यह निवेदन करता हूं कि नियमों के विरुद्ध की गयी नियुक्तियों को समाप्त किया जाए तथा नियम विरुद्ध कार्य करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही करने का श्रम करें।

श्री सभापति : श्री नन्दलाल पूनिया।

राजगढ़ तहसील, जिला चूरू के थाना हमीरवास में दर्ज मुकदमा से 3/2004 के अभियुक्तों की गिरफ्तारी

श्री नन्दलाल पूनिया (सादुलपुर) : सभापति महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा

(श्री नन्दलाल पूनिया)

के कार्य संचालन के नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि दिनांक 3 जनवरी, 2004 को मोहनलाल पुत्र श्री अमरसिंह हरिजन, निवासी हमीरवास, तह. राजगढ़, जिला चूरू ने थाना पुलिस हमीरवास में एक मुकदमा एफ.आई.आर. 3/2004, भा.द.सं. की धारा 376/511/306, एस.सी./एस.टी. की धारा अनुसार दर्ज कराया कि दिनांक 2 जनवरी, 2004 को उनकी नाबालिग लड़की सुमन, उम्र 13 साल अपने घर में अकेली थी। उसे अकेली देखकर सुरेन्द्र पुत्र श्री रामस्वरूप डूडी, निवासी हमीरवास, तहसील राजगढ़, जिला चूरू एवं कुलदीप पुत्र श्री सत्यवीर हरिजन, निवासी हमीरवास मेरे घर में दिन के 11 बजे घुस आये तथा मेरी लड़की सुमन के साथ बलात्कार किया। उस दौरान सुमन का भाई घर पर आ गया तो उसने सारी स्थिति को देखा तो दोनों अभियुक्त धमकी देकर भाग गये तथा कहा कि इस घटना का कहीं जिक्र किया तो आपको जान से मार देंगे। सुमन के भाई ने उक्त घटना की जानकारी अपने पिता मोहन लाल पुत्र अमर सिंह जो कि खेत में गया हुआ था को दी। श्री मोहन लाल ने उक्त घटना की जानकारी ग्राम के सरपंच श्री निहाल चंद हरिजन जो कि मोहन लाल के परिवार का है, को दी तथा साथ चलकर पुलिस थाना हमीरवास में मुकदमा दर्ज कराने का अनुरोध किया।

इस पर सरपंच श्री निहाल चंद ने कहा कि बिना ब्याही लड़की का मामला है, मैं अभियुक्तों को बुलाकर माफी मंगवा देता हूं। सरपंच ने अभियुक्त के अभिभावक रामस्वरूप डूडी आदि को बुलाकर माफी मंगवा दी एवं भविष्य में इस प्रकार की घटना न होने का वादा भी उन लोगों ने किया। दिनांक 3 जनवरी, 2004 को जब सुमन अपने पिता मोहन लाल की रोटी लेकर खेत में गयी तो उक्त दोनों अभियुक्त मोटर साइकिल पर सवार होकर सुमन के पीछे-पीछे चल दिये। गांव से एक किलोमीटर की दूरी पर चलने के बाद उक्त दोनों अभियुक्त मोटर साइकिल से उत्तर कर सुमन की इज्जत लूटने के लिए उसके पीछे भागे, तब सुमन ने इन भेड़ियों से अपनी इज्जत बचाने की भरसक कोशिश की। तब तक वे नजदीक आ गये तो उसने अपनी इज्जत बचाने के लिए नजदीक ही एक कुआं था उसमें कूदकर अपनी जीवन लीला खतम कर ली।

सभापतिजी, मेरा आपसे निवेदन है कि उक्त सुमन प्रकरण में अभी तक सिर्फ एक अभियुक्त कुलदीप पुत्र सत्यवीर हरिजन ही गिरफ्तार हुआ है। दूसरा अभियुक्त सुरेन्द्र पुत्र रामस्वरूप डूडी अभी तक गिरफ्तार नहीं हुआ है। उक्त अभियुक्त सुरेन्द्र डूडी को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त है। एक गरीब नाबालिग हरिजन के बलात्कार तथा हत्या का मामला है। सरपंच ने समय पर मुकदमा दर्ज

(श्री नन्दलाल पूनिया)

कराकर कार्यवाही करने दी होती तो सुमन को अपनी जीवन लीला समाप्त नहीं करनी पड़ती। सभापति महोदय, पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में भी बलात्कार होना बताया गया है। आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि उक्त प्रकरण में अभियुक्त को अतिशीघ्र गिरफ्तार किया जाए अन्यथा जन आंदोलन भड़क सकता है। काफी संगठनों ने गिरफ्तार करने की मांग की है। अत: तुरन्त गिरफ्तार किया जाए।

श्री सभापति : श्री प्रभुलाल वर्मा।

इटावा में रैफरल चिकित्सालय

श्री प्रभुलाल (पीपल्दा) : सभापति महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि इटावा कस्बा जिला मुख्यालय से अस्सी किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इतनी दूरी पर होने एवं बढ़ते हुए मरीजों की संख्या को देखते हुए परिजनों को काफी समय व धन की बरबादी का सामना करना पड़ता है। इटावा के अस्सी किलोमीटर दूरी तक रैफरल चिकित्सालय नहीं होने के कारण कई मरीज तो इटावा से कोटा ले जाते समय रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं। कई माताओं–बहनों को भी डिलीवरी में चिकित्सा सुविधा के अभाव में अपनी जान खोनी पड़ती है।

ऐसी स्थिति में अगर इटावा कस्बा जहां की जनसंख्या 38 हजार के लगभग है तथा आसपास के गांवों की संख्या सौ के लगभग है, इनकी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए इटावा मैं रैफरल चिकित्सालय की सुविधा दे दी जाए तो सौ दिनों की महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

श्री सभापति : श्री भंवर सिंह डांगावास।

नागौर जिले के लिए इन्दिरा गांधी नहर से जल की व्यवस्था

श्री भंवर सिंह डांगावास (मेड़ता) : सभापति महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया एवं कार्य संचालन के नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि नागौर जिले में पूरे गांव फ्लोराइड युक्त पानी के घोषित किये जा चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने फ्लोराइड की मात्रा सिर्फ पी.पी.एम. (प्रपोशन पर मिलियम) निर्धारित की है, परन्तु राज्य सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने 3 पी.पी.एम. मानकर पीने योग्य पानी माना है जो बहुत अधिक है एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जबकि वास्तविकता यह है कि अधिकतर गांवों में 6 पी.पी.एम. से अधिक मात्रा का पानी पीने के लिए दिया जा रहा है।

नागौर जिले में परम्परागत स्रोत व भूमिगत जल जो पीने योग्य था, वह समाप्त हो रहा है। मैं इस सम्बन्ध में

(श्री भंवर सिंह डांगावस)

सरकार का ध्यान राजस्थान नहर के मूल प्रारूप की ओर आकर्षित कर आग्रह करता हूं कि नागौर जिला पूरे को दो स्रोत प्रथम, गजनेर हैड से व दूसरा साई–सिद्धमुख हैड से पेयजल उपलब्ध कराने का प्रावधान है। अब समय आ गया है कि यदि राजस्थान नहर का जल नागौर जिले को पीने को नहीं दिया गया तो जन–जीवन बचाने का कोई तरीका नहीं हो सकता। मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि नागौर जिले को गजनेर हैड, साई–सिद्धमुख हैड व जोधपुर फेज–द्वितीय के द्वारा रणसी गांव से आगे मेड़ता क्षेत्र को पेयजल उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

श्री सभापति : श्री रामनारायण डूडी।

बिलाड़ा विधान सभा क्षेत्र में पेयजल समस्या

श्री रामनारायण डूडी (बिलाड़ा) : सभापति महोदय, मैं राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे विधान सभा क्षेत्र के कुल दो शहर बिलाड़ा और पीपाड़ व 93 गांव पीने के पानी की समस्या से ग्रस्त हैं और यहां अगर शीघ्र कोई समाधान नहीं किया गया तो आने वाले समय में पीने के पानी की विकट समस्या हो जाएगी। मैं पिछले दिनों मेरे क्षेत्र के सभी ग्रामों और शहरों में गया और लोगों की समस्या के बारे में जानकारी ली। पीपाड़ शहर और क्षेत्र के 77 गांवों में पानी की अधिक कमी है तथा वहां पर अत्यधिक खारा पानी है जो पीने के योग्य नहीं है। मेरे इस क्षेत्र में ज्यादातर भाग में पानी और जमीन दोनों ही खारे हैं जिसके कारण पीने के पानी की समस्या हमेशा बनी रहती है।

(13.00 बजे)

यहां हर वर्ष नए नलकूप बनाए जाते हैं किन्तु वे नलकूप कुछ समय बाद सूख जाते हैं और पानी खारा हो जाता है और समस्या ज्यों की त्यों ही बनी रहती है। इस क्षेत्र में पानी का स्तर लगातार नीचे गिर रहा है और कुछ क्षेत्रों में तो पानी समाप्त ही हो गया है। अतः इस क्षेत्र में शीघ्र ही स्थाई सोर्स पानी का उपलब्ध कराना आवश्यक है। हर वर्ष किया जा रहा लाखों रुपए का खर्च व्यर्थ है। अतः इस क्षेत्र के लिए स्थाई समाधान हेतु योजनाओं को तैयार करवाना एवं स्वीकृत करवाना आवश्यक है।

इस वर्ष वर्षा तो अच्छी हुई है किन्तु नदी–नालों में पानी का बहाव न बनने से गांवों के तालाबों और इस क्षेत्र के बड़े पिचियाक बांध में भी पानी नहीं आया जिससे यहां के कुओं और नलकूपों में पानी की बढ़ोतरी नहीं हुई। इसके विपरीत इन कुओं का जल स्तर गर्मी से 5 से 10 मीटर नीचे चला गया है। कहीं–कहीं तो नलकूप सूख गये हैं या पानी इतना खारा हो गया है कि पशुओं को भी नहीं

(श्री रामनारायण डूडी)

पिलाया जा सकता है। सर्दियों में ही पानी की समस्या शुरू हो गई है तो गर्मी में स्थिति और ही विकट हो जाएगी। इसलिए इस क्षेत्र में तुरन्त समस्या समाधान के लिए लगभग 15 नलकूप बनवाने या जहां सम्भव है वहां पर नलकूपों और कुओं को गहरा करवाने के लिए शीघ्र आदेश जारी किए जाएं। इस क्षेत्र के वर्तमान में प्रभावित 78 गांवों की सूची इस पत्र के संलग्न कर रहा हूं जिस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

बासनी–रतकूड़िया जलप्रदाय योजना के तहत पेयजल स्रोत वासनी के सूख जाने के कारण एवं पुनर्गठित योजना भोपालगढ़ में भी नलकूपों का जल स्तर अत्यधिक नीचे चले जाने के कारण यह योजना भी भयंकर प्रभावित हुई है एवं पानी की पूर्ति स्थानीय फ्लोराइडयुक्त जो भी थोड़ा बहुत है उसे कभी–कभी होती है। अतः नियम 295 के तहत भयंकर पानी की किल्लत को देखते हुए जोधपुर लिफ्ट कैनाल से इस पूरे क्षेत्र में पेयजल योजना बनाकर समस्या का समाधान करावें।

सभापति महोदय, मैं पुरजोर शब्दों में सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि आज जोधपुर के दो बड़े शहर और पूर्ववर्ती सरकार में पांच बड़े–बड़े मंत्री और मुख्य मंत्री सहित, जो कि अपने को दूसरे शहर का निवासी कहते थे, उन्होंने किसी प्रकार समस्या पर ध्यान नहीं दिया और आज वह स्थिति इतनी विकट हो गई है कि वहां पर 7 और 8 दिन के अन्दर पानी मिल रहा है।

(13.01 बजे)

(श्री अमराराम चौधरी, सभापति, पदासीन)

श्री सभापति : यह 295 में तो लिखा हुआ नहीं है, यह जो आप बात कह रहे हैं।

श्री रामसिंह विश्नोई (लूणी) : माननीय सदस्य को जानकारी नहीं है। पूर्व सरकार ने और पूर्व मंत्रियों ने आपके जोधपुर की, आपके मेड़ता की, आपके नागौर की, आपके बालोतरा की सारी योजनाएं मंजूर करवाई हुई है, पांच–छह हजार करोड़ रुपए की। आपमें क्षमता हो, आप में कोई गुण हो, आप में कोई ताकत हो तो उसको मंजूर करवा दो शीघ्र।

श्री रामनारायण डूडी : हमारे में गुण हैं तो करवाएंगे, मगर आप वाले गुण जो पहले भाषण हुए थे, उनका क्या होगा? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : ...रणसी गांव तक लाकर छोड़ दिया पानी। रणसी गांव तक गया, आगे नहीं बढ़ा है। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय श्री मंगलारामजी गोदारा। (व्यवधान) आर्डर प्लीज। माननीय मंगलारामजी गोदारा।

डा. जालम सिंह रावलोत (शिव) : मेरे गांव का पानी लिफ्ट करके जोधपुर को ले गये मगर...(व्यवधान)

श्री सभापति : आर्डर प्लीज।

डूंगरगढ़ विधान सभा क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था

श्री मंगलाराम (डूंगरगढ़) : सभापति महोदय, राजस्थान विधान सभा की प्रक्रिया के नियम 295 के तहत निवेदन है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र डूंगरगढ़ (बीकानेर) में कृषि कनेक्शन काफी समय से बन्द कर रखे हैं तथा सामान्य श्रेणी के, विशेष श्रेणी के व एस.सी., एस.टी. के कनेक्शन भी नहीं दिए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त 33 के.वी. के ग्राम दुसारणा बिंजासर में स्वीकृत जी.एस.एस. जो क़ाफी समय से स्वीकृत हैं व इसके टेण्डर भी हो चुके हैं लेकिन उनका अभी तक कार्य प्रारम्भ नहीं करवाया गया है। कृपया उक्त 33 के.वी. कनेक्शन को चालू करवाने की व्यवस्था करावें।

इसके अतिरिक्त, मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र के निम्नांकित ग्रामों अभयसिंहपुरा, जाखासर, सोनियासर, व बिग्गा आदि गांवों में भी 33 के.वी. ग्रिड सब स्टेशन लगाने की व्यवस्था करावें क्योंकि कृषि कनेक्शन ज्यादा होने से लोड बहुत ज्यादा है जिससे किसानों के ट्यूब वैल बन्द पड़े हुए हैं। मेरे क्षेत्र के ग्रामों में जले हुए ट्रांसफार्मर 15–20 दिन तक ठीक नहीं होने के कारण किसानों की फसलें चौपट हो रही हैं। कृपया उक्त सम्बन्ध में अविलम्ब व्यवस्था कराने का कष्ट करें ताकि किसानों को राहत मिल सके।

मान्यवर, इसके अतिरिक्त मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में, डिजीज़न में सबसे ज्यादा कृषि कनेक्शन हैं लेकिन बिजली बहुत कम मिल रही है। जिससे फसल नष्ट हो रही है, कृपया उक्त क्षेत्र में कम से कम आठ घंटे बिजली उपलब्ध कराने की व्यवस्था करावें।

श्री सभापति : पर्ची के माध्यम से चर्चा। माननीय सदस्य श्री वीरेन्द्रजी बेनीवाल।

पर्ची के माध्यम से उठाये गये मुद्दे

लूणकरणसर विधान सभा क्षेत्र में बिजली की उपलब्धता

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से मेरे लूणकरणसर विधान सभा क्षेत्र में बिजली की उपलब्धता सम्बन्धी समस्या तथा सीमान्त क्षेत्र के किसानों को बिजली उपलब्ध कराने के विषय पर माननीय ऊर्जा मंत्रीजी एवं सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

माननीय सभापति महोदय, कल ऊर्जा मंत्रीजी ने अपने वक्तव्य में यह फर्माया कि वर्तमान समय में घरेलू बिजली और कृषि कुओं के लिए 8 घंटे बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित कर दी गई है और 8 घंटे बिजली उपलब्ध हो रही है। वर्तमान समय में सायं 6 से 10 बजे तक और साढ़े 5 से 7 बजे तक बिजली की उपलब्धता घर के लिए और 8 घंटे सभी कृषि कुओं को निश्चित रूप से बिजली मिल रही है। वर्तमान समय में, मैं आपको यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह 8 घण्टे की सूचना जो दी जा रही है, अगर हम सभी माननीय सदस्यगण राजनीतिक पार्टीबाजी से ऊपर उठकर बात करें, क्योंकि हम सब यहां पर चुनकर आये हैं अपने क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, इस पर कल चर्चा हो चुकी है, आप कोई नई बात हो आपके क्षेत्र की, वह बताओ।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): मैं इसी पर आ रहा हूं, सभापति महोदय।

श्री सभापति : तो वह बता दें फटाफट।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : वर्तमान समय में बिजली 8 घंटे उपलब्ध नहीं हो रही है और स्थान-स्थान पर आमजन आंदोलनरत है। इसी बात को लेकर कल चर्चा के समय में माननीय प्रतिपक्ष के नेता को झूठा भी बताया गया था। इसलिए मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि गत 21 दिसम्बर को ग्राम शेखसर में किसानों ने और आम जन ने विरोध प्रदर्शनस्वरूप सब स्टेशन को रोका था और 21 दिसम्बर से 22 दिसम्बर के 3 बजे तक उस सब स्टेशन का घेराव किये रखा। अधिशासी अभियन्ता ने स्वयं जाकर मौके पर इस बात का आम जन को आश्वासन दिया कि बिजली की पूरी उपलब्धता रहेगी।

माननीय सभापति महोदय, मेरा विधान सभा क्षेत्र सीमान्त क्षेत्र है इसलिए मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूं कि 1984 के अन्दर सेना को जमीन उपलब्ध करवाने के नाम पर 33 गांवों की भूमि को अवाप्त किया गया था...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : माननीय सभापति महोदय, बहुत महत्वपूर्ण विषय है, इससे हजारों लोग जुड़े हुए हैं।

श्री सभापति : आपने पर्ची में जो थी, वह सारी बात कह दी। अपने एरिये की कोई बात नहीं कही, जनरल बात करते हैं।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : सभापति महोदय, मैं सब एरिये की ही बात कह रहा हूं। ग्राम शेखसर मेरे लूणकरणसर विधान सभा क्षेत्र का भाग है। मेरा विधान सभा क्षेत्र सीमान्त क्षेत्र से लगता है, पाकिस्तान की सीमा से। मेरे विधान सभा क्षेत्र के 33 गांवो में विस्थापितों को

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

पुनर्स्थापित करने के नाम पर जो भूमि दी गई, वह अधिकांशतः सीमांत क्षेत्र में दी गई। आबाद होने के लिए जो मूलभूत सुविधाएं दी जाने चाहिए, वे वहां नहीं दी गईं। इस विषय पर बोलने के लिए मुझे और समय दिया जाए।

श्री सभापति : नैक्स्ट। श्री राव राजेन्द्र सिंह। आप शुरू कीजिए।

श्री राव राजेन्द्र सिंह (बैराठ) : धन्यवाद। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं...(व्यवधान)

श्री सभापति : आप दो विषय पर, एक तो आप बिजली पर बोले, फिर अवाप्ति के बारे में बोल रहे हो। यह आपकी कोई पर्टीकुलर बात नहीं थी, समाप्त कीजिए।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : सभापति महोदय, मैं आपको यह निवेदन करना चाह रहा हूं कि अवाप्ति पर नहीं बोल रहा हूं।

श्री सभापति : माननीय राजेन्द्र सिंहजी।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : मैं यह निवेदन करना चाह रहा था कि जिन 33 गांवों के लोगों को विस्थापित किया गया उनको पुनर्स्थापित करने के नाम पर उनको वहां बिजली की उपलब्धता करायी जानी चाहिए, कृषि के लिए उनको बिजली मिलनी चाहिए। मैं मेरे सब्जैक्ट से कभी भी अलग नहीं हुआ हूं।

श्री सभापति : आर्डर प्लीज, आपकी बात हो गई, समाप्त हो गई। (व्यवधान) आप भी कल बोले बहुत।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : सभापति महोदय, मैं आपको स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं कभी भी विषय से अलग नहीं हटा हूं।

श्री सभापति : विषय पर आप बोले ही नहीं। आपका टाइम था, आप बोले ही नहीं।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : मैं लगातार अपनी बात को जारी रखे हुए हूं, मैंने कोई अपनी बात में रुकावट नहीं डाली है।

श्री सभापति : समाप्त कीजिए, आर्डर प्लीज। माननीय राजेन्द्र सिंहजी।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : सभापति महोदय, मैं आपका पुनः ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि सेना को भूमि देने वाले उन किसानों...(व्यवधान)

श्री राव राजेन्द्र सिंह : मैं जो बोलूंगा वह सुनेंगे ही नहीं तो फिर बोलने से क्या फायदा?

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : जो लोग आज पीड़ित हैं 20 साल होने को आये, आज तक उनको मूलभूत सुविधाएं नहीं मिली हैं।

श्री सभापति : आर्डर प्लीज, बेनीवालजी।

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल : उनको सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार का धर्म है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य बेनीवालजी, आर्डर प्लीज। आर्डर प्लीज, बिराजें आप। राव राजेन्द्र सिंहजी।

बैराठ विधान सभा क्षेत्र के रामपुरा ग्राम के वृक्षों की पंचायत द्वारा अवैध नीलामी

श्री राव राजेन्द्र सिंह (बैराठ) : धन्यवाद, सभापतिजी। मैं सभापति महोदय के माध्यम से यह ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि ग्राम रामपुरा के अन्दर भिन्न-भिन्न सालों के अन्दर सन् 2000 तक 45 हजार वृक्षों का वृक्षारोपण हुआ। पंचायती राज और ग्राम पंचायत ने सारे कानून को ताक में रखकर उन हरे वृक्षों की नीलामी का आदेश दे दिया। जो वहां पंचायत का सचिव था उसने अपने पृष्ठ में और पंचायत के कोरम में यह लिखित आवेदन किया कि यह किसी भी नियम के तहत नहीं आता, बगैर जिला परिषद् की अनुमति और बगैर वनपालक और वन विभाग की अनुमति से इस तरीके की नीलामी अवैध है। मेरा क्षेत्र वो है जो उस समय उप मुख्य मंत्री द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता था, उसके बावजूद इन हरे वृक्षों की नीलामी की गई जिसका तकरीबन मूल्य 45 से 50 लाख रुपये होता है। इसके बावजूद जब जनता ने आकर उस वक्त के प्रतिपक्ष के नेता आदरणीय भैरोंसिंहजी शेखावत को आवेदन किया तो उनके माध्यम से सरकार ने कलक्टर के माध्यम से आदेश जारी किया। आदेश संख्या, अगर आप चाहें तो मैं आपको बता दूं। आदेश के बाद वर्तमान ए.डी.एम. (4) महेशजी शर्मा द्वारा उसका पूरा का पूरा अवलोकन किया गया और अवलोकन के बाद जो रिपोर्ट आई उसमें वहां के तत्कालीन, जो आज भी उप प्रधान हैं, विकास अधिकारी, वहां का तत्कालीन सरपंच और समस्त पंच जो उसमें शामिल थे, दोषी पाये गये। उसके बाद कलक्टर साहब ने निर्णय लिया कि इनको सस्पैंड किया जाए। उप प्रधान को सस्पैंड करने का निर्णय लिया गया, बी.डी.ओ. पर विभागीय जांच का निर्णय लिया गया, लेकिन आज तक न तो उप प्रधान निलम्बित हुआ, न उस पर कोई कार्यवाही हुई। जो नीलामी की राशि थी वह आज तक पंचायत में जमा नहीं करायी गई। यह पूरा का पूरा घोटाला है। 45 लाख रुपये उस वक्त की सरकार दवा गई, क्योंकि राजस्व मंत्री उस वक्त की उप मुख्य मंत्री थीं। आज तक एक पैसा नहीं रहा।

सभापति महोदय, प्रजातंत्र की वास्तविक धरोहर पंचायत राज है, उनको तो कहीं से कोई आय नहीं होती। 45 लाख की आय 7 लाख में नीलामी कर दी गई और आज तक 7 लाख रुपये भी जमा

(श्री राव राजेन्द्र सिंह)

नहीं हुए। यह उस सरकार का दमन का काम है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त कीजिए।

श्री राव राजेन्द्र सिंह : आपके माध्यम से मैं चाहूंगा कि इस पूरे के पूरे...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त कीजिए।

श्री राव राजेन्द्र सिंह : मैं आपके माध्यम से यह चाहूंगा...

श्री सभापति : सारी बात आ गई आपकी।

श्री राव राजेन्द्र सिंह : इसमें कार्यवाही कर जो भी हो सके, न्यायोचित निर्णय लिया जाए और दोषियों को सजा दी जाए। अगर कोई मंत्री था या उप मुख्य मंत्री, अगर वो भी दोषी है तो उसे भी सजा दी जाए। धन्यवाद, सभापति महोदय

श्री सभापति : माननीय श्री प्रताप सिंहजी।

बारां जिले में ओलावृष्टि से हुए नुकसान का मुआवजा

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (छबड़ा) : माननीय सभापति महोदय, मैं पहले तो आपको और सदन के सभी माननीय सदस्यों को और पत्रकार बंधुओं को नए वर्ष की शुभकामनाएं देता हूं। इसी के साथ-साथ हमारे बारां जिले पर कल संकट आया उसके बारे में आपको थोड़ा निवेदन करना चाहूंगा।

माननीय सभापति महोदय, कल पूरे बारां जिले में भयंकर बरसात हुई, ओलावृष्टि हुई, उससे पूरे जिले की फसलों को विशेषकर वहां पर धनिया, अफीम, चने, गेहूं की जो भी फसलें होती हैं, भयंकर नुकसान हुआ है। कई-कई गांवों में तो सेंट परसेंट खराबा हुआ है। तो मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि स्पेशल गिरदावरी कराकर उन गांवों को आइडेंटिफाई करें जिन गांवों में नुकसान हुआ है और जिन गांवों में नुकसान हुआ है वहां के किसानों को मुआवजा दें।

इसी के साथ-साथ किशनगंज, शाहबाद में पठारी गांव है वहां पर बरसात की वजह से, ओलावृष्टि की वजह से एक सहरिया की मृत्यु हो गई है। बारां प्रोपर में भी बरसात के कारण किसी एक व्यक्ति की मौत हो गई है। मेरे क्षेत्र छबड़ा और छीपा बड़ौद में भी भयंकर बरसात होने की वजह से, चूंकि वहां पर अफीम बहुतायत में होती है, अफीम की फसल में काफी नुकसान हुआ है। जहां अफीम में फूल आ गये थे वे फूल क्षतिग्रस्त हो गये हैं, खराब हो गये हैं। कहीं डोडी निकल रही थी वह डोडी टूट गई है, फसल आड़ी गिर गई है, इससे अफीम

(श्री प्रताप सिंह सिंघवी)

जो वहां की लाइफ लाइन भी है, उसको काफी नुकसान पहुंचा है। चूंकि यह अफीम का मामला राज्य सरकार के अंडर में नहीं आता, इसलिए मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि इस बारे में भारत सरकार के वित्त मंत्रालय को लिखे कि वे वहां नारकोटिक्स विभाग से टीम भिजवाकर उनका भी सर्वे कराएं और किसानों को जो उचित राहत है वह दिलवाने का कष्ट करें।

इसी के साथ-साथ जो सड़कों की स्थिति आसपास हो गई है, कहीं पर ट्रैफिक जाम हो गया है, आसपास की पटरियां खराब हो गई हैं, पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री यहां पर बिराजमान हैं, मैं उनसे भी आपके माध्यम से आग्रह करूंगा कि कई जगह ट्रैफिक जाम होने की वजह से जो पटरियां खराब हो गई हैं वैसे भी वहां सड़कों की स्थिति बहुत दयनीय है, पिछले पांच साल में...

श्री सभापति : विषयान्तर न हों।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : अशोकजी गहलोत के राज में एक कंकर भी उन पर नहीं लगा है।

श्री सभापति : विषयान्तर मत हों, श्रीमान्।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : हमारे मंत्रीजी आये, इन्होंने बहुत अच्छी घोषणाएं की हैं।

श्री सभापति : समाप्त करें। समाप्त करें, प्रताप सिंहजी।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : मैं निवेदन करूंगा, जो पटरियां खराब हो गई हैं उन पटरियां को भी तुरन्त भरवाएं।

श्री सभापति : माननीय प्रताप सिंहजी, समाप्त करें। माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : ताकि वहां का यातायात सामान्य हो सके। सभापति महोदय, आपने जो...(व्यवधान)

श्री हेमराज (किशनगंज) : ऋण वसूली बंद कीजिए।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : वह तो सर्वे के बाद ही होगा, पहले कैसे होगा?

एक माननीय सदस्य : पर अभी रोक तो चालू करो।

श्री सभापति : माननीय प्रताप सिंहजी, समाप्त करें।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : सर्वे कराने के बाद अगर मान लो सरकार उचित समझती है कि किसानों को जो ऋण दिया है वह चुकाने में असमर्थ रहेंगे...(व्यवधान)

श्री हेमराज : ऋण वसूली को रोका जाए।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : जो यातायात में असुविधा उत्पन्न हो रही है, पटरियां खराब हो गई हैं उनको भी तुरन्त ठीक कराकर यातायात को सुचारू कराने का कष्ट

(श्री प्रताप सिंह सिंघवी)

करें। आपने समय दिया उसके लिए धन्यवाद। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय श्री बाबूलालजी नागर।

दूदू में अकाल राहत कार्यों का भुगतान

श्री बाबूलाल नागर (दूदू) : माननीय सभापति महोदय, आपके माध्यम से मैं मेरे विधान सभा क्षेत्र दूदू में अकाल राहत कार्यों की मजदूरी का भुगतान अभी तक नहीं हुआ है, इसके सम्बन्ध में सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। सभापति महोदय, मेरा क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है जो लगातार चार साल तक भीषण अकाल में रहा। मैं आभार प्रकट करना चाहूंगा राज्य के पूर्व मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत का जिन्होंने जनता की मांग के अनुसार खूब अकाल राहत कार्य खोले, समय पर भुगतान होता रहा। 15 जुलाई को अकाल राहत कार्य बन्द हो गये। इसी बीच माननीय पूर्व मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत ने अकाल राहत कार्यों के तहत व्यक्तिगत लाभ योजना का भी कार्य चलाया, जिसके तहत कोई भी अपने कुएं को खुदा सकता था। निजी आवास भी। माननीय सभापति महोदय, मेरे क्षेत्र में हजारों निजी कुएं और निजी आवासों का कार्य हुआ। गरीब आदमी जो झोंपड़ी में रहता था उसने कभी कल्पना की थी, कभी सपना देखा था, उनको निजी आवास के रूप में कमरे बनाने का मौका मिला। माननीय सभापति महोदय, खूब काम हुए। मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाह रहा हूं, जो काम पूरे हो गये उनका भुगतान हुआ है लेकिन सभापति महोदय, कुछ काम ऐसे रह गये, कि इस कमरे में कुंडी नहीं लगी खिड़की नहीं लगी या दरवाजे नहीं लगे। बेचारे गरीब आदमी जो गरीबी के कारण कुंडी नहीं लगा पाये...

श्री सभापति : नहीं, नहीं, कब का है, आपका मुद्दा?

श्री बाबूलाल नागर : यह 2003 का है। कुंडी नहीं लगी, किवाड़ नहीं लगे उन कार्यों को अपूर्ण कार्य बता दिया गया। जिलाधीश महोदय, जयपुर ने भौतिक सत्यापन करवाया तो जो अपूर्ण कार्य बताये गये, इस तरह से मेरे विधान सभा क्षेत्र में 766 निजी आवास के कार्य हैं। जिलाधीश ने राज्य सरकार को भुगतान करने के लिए लिखा है लेकिन अभी तक राज्य सरकार द्वारा भुगतान नहीं किया गया। सभापति महोदय, गरीब आदमी ने, मैं खुद गवाह हूं, कई लोगों ने दुस्साहस किया है, अपने कच्चे झोपड़े में रहते थे उसको तोड़ा और अपनी औरतों के गहने गिरवी रख दिये इस सोच में कि हम पक्के घर में रहेंगे। उसकी कभी बरसात में छान टूट जाती थी कभी उसका कच्चा घर ढह जाता था, उससे जीवन भर के

(श्री बाबूलाल नागर)

लिए निजात मिल जाएगी। उसने हिम्मत करके इस योजना का लाभ लिया, मकान बना लिया, कमरा बना लिया। लेकिन ऐसे 766 परिवारों का भुगतान अभी तक नहीं हुआ। सभापति महोदय, मान लो किसी ने छत डाल ली, किसी ने किवाड़ नहीं लगाये, किसी ने कुंडी नहीं लगाई तो, सभापति महोदय, मैं चाहूंगा सरकार से कि जितना, क्योंकि इस योजना में वन फोर्थ पैसा मजदूर का पैसा था वह सरकार को देना था...

श्री सभापति : माननीय नागर साहब, समाप्त करो, हो गया आपका।

श्री बाबूलाल नागर : सभापति महोदय, आधा मिनट लूंगा। वन फोर्थ पैसा सरकार को देना था और 75 परसेंट पैसा उस व्यक्ति को लगाना था, उसमें बेचारों ने वह बना ली। एक मिनट लूंगा, साहब। मैं यह चाहता हूं कि जितना काम हुआ, आपने भौतिक सत्यापन करा लिया, आपके पास रेकार्ड आ गया, टास्क बेसिस पर टोटल जितनी मजदूरी बनती है, सभापति महोदय, वह मिलनी चाहिए। उसका काम हुआ था, उसको मस्टररोल मिला था, मस्टररोल के आधार पर मजदूर लगाये हैं, उसने निर्माण किया है तो मैं चाहूंगा कि इनको जल्दी से जल्दी भुगतान हो सके उतनी जल्दी भुगतान करवाइये। बेचारे इतनी दुःखी हो रहे हैं, कई लोग तो मैं गवाही में जाता हूं, सभापति महोदय, मेरे सामने आकर आत्महत्या करने की धमकी देते हैं।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, नागर साहब, अब समाप्त करें, हो गई बात सारी। यह कोई जरूरी नहीं है कि जवाब दें आपकी पर्ची का।

श्री बाबूलाल नागर : मंत्री महोदय, राजस्थान के कटारियाजी बिराजमान हैं बहुत दयालु आदमी हैं, मैं चाहूंगा कि सरकार की तरफ़ से मुझे विश्वास दे, आश्वासन दें कि जो जांच हो गई, जिलाधीश महोदय ने जांच की है, जो अपूर्ण काम जरूर हैं तो उनका भुगतान हम जल्दी करा देंगे, माना है जयपुर जिलाधीश ने, इनका भुगतान करवाया जाना चाहिए क्योंकि इन्होंने काम किया है। मैं यही नहीं कह रहा, सभापति महोदय, कि आप पूरा पैसा दे।

श्री सभापति : आर्डर प्लीज, माननीय सदस्य, बिराजिये।

श्री बाबूलाल नागर : लेकिन जितना काम हुआ है उसका भुगतान करें।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बिराजिये, माननीय नागर साहब, बिराजिये।

श्री बाबूलाल नागर : काबिल मंत्री बैठे हैं, मैं कटारिया साहब से आश्वासन चाहूंगा। सभापति महोदय, आपके माध्यम से माननीय कटारिया साहब काबिल मंत्री

(श्री बाबूलाल नागर)

बैठे हैं, मैं इनसे आश्वासन चाहूंगा, मुझे इतना तो आश्वासन दे कि इनका भुगतान हम 10 दिन में, 15 दिन में, 20 दिन में बेचारे जिन लोगों के सपने को साकार किया पूर्व मुख्य मंत्री अशोक गहलोतजी ने, उनको कम से कम उसका लाभ मिल सके। मैं चाहूंगा कि कटारिया साहब मेहरबानी करके मुझे विश्वास दे ताकि मैं जाकर कह सकूं कि आपका भुगतान जो रुक गया था इतने दिन में उसका पेमेंट हो जाएगा।

श्री सभापति : माननीय नागर साहब।

श्री बाबूलाल नागर : सभापति महोदय, कटारिया साहब बिराजमान हैं।

श्री सभापति : राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अग्रेत्तर वाद विवाद। माननीय जगन्नाथजी पहाड़िया।

श्री रामप्रताप कासनिया : सभापति महोदय, हनुमानगढ़ और गंगानगर जिले में बीकानेर के काश्तकारों पर कुठाराघात हो रहा है। उनके पानी की बारियां काटी जा रही हैं। पिछले तीन वर्ष का अवियाना काश्तकार अकाल के कारण से...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय कासनियाजी, पीलीबंगा से आने वाले माननीय सदस्य, नियमों के अन्दर आपका कोई भी प्रश्न नहीं है।

श्री रामप्रताप कासनिया : सभापति महोदय, बहुत गम्भीर विषय है, काश्तकारों की पानी की बारियां काटी जा रही हैं, मैं आपके माध्यम से सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं।

श्री सभापति : आपकी कोई पर्ची नहीं, आपका किसी प्रावधान में, कहीं नियमों में नहीं।

श्री रामप्रताप कासनिया : सभापति महोदय, मैं अनपढ़ आदमी हूं, गांव का आदमी हूं, मैं नियम नहीं जानता। सभापति महोदय, जो पीड़ा है, काश्तकारों की हालत बहुत दयनीय है अकाल के कारण से और सरकार नोटिस दे रही है कि पांच दिनों के अन्दर आदियाना जमा करवाइये नहीं तो आपके पानी की बारियां काटी जाएंगी। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपको नियमों में आना पड़ेगा फिर आप बोलोगे। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया : आप संवेदनशील सरकार हैं, इस तरह का कठोर व्यवहार काश्तकारों के ऊपर मत करो, रहम करो, और दया करो। अगर काश्तकारों की बारियां काटी गयीं...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आर्डर प्लीज। माननीय जगन्नाथजी पहाड़िया।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री जगन्नाथ पहाड़िया (वैर) : माननीय सभापतिजी, माननीय राज्यपाल के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर हम बहस कर रहे हैं। सबसे पहले तो मैं माननीय राज्यपालजी को, सरकार को और सभी निर्वाचित सदस्यों को बधाई देता हूं। राज्यपाल का अभिभाषण सरकारी रीति-नीति और भविष्य में किये जाने वाले कार्यों का विवरण माना जाता है और ऐसा लोकतांत्रिक तरीका है कि उन सब की घोषणा जिनको सरकार करना चाहती है, राज्यपाल के अभिभाषण के जरिए इस सदन में होनी चाहिए। सबसे पहले तो मुझे कहते हुए अच्छा भी नहीं लग रहा है कि जिन बातों की चर्चा माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में की गई है, उन सब बातों की चर्चा इस सदन के बाहर पहले ही कर दी गई। जैसा मैंने कहा, संसदीय प्रणाली का तरीका यह है कि जब सदन को आहत कर लिया जाए उस समय सरकार को कोई घोषणा करनी हो तो इस सदन में ही की जानी चाहिए। हमारी ऐसी आशा है कि भविष्य में इस परम्परा को नहीं तोड़ा जाएगा और जो भी रीति-नीति सम्बन्धी घोषणाएं सरकार को करनी होंगी, इस सदन में की जाएंगी। श्रीमन्, मैंने एक बार नहीं कई बार इस अभिभाषण को बड़े गौर से पढ़ा है। इसमें पहले ही पेज पर शुरू किया गया है कि सरकार का परिवर्तन मूल्यों का परिवर्तन है। इसमें यह भी कहा गया कि इससे खुशहाली आएगी। मैं मानता हूं कि जब भी कोई परिवर्तन होता है, कुछ न कुछ नई चीज तो होती है। लेकिन राज्यपाल के अभिभाषण में किन नये मूल्यों की चर्चा की गई है, मैं समझ नहीं पाया, नैतिक मूल्यों की चर्चा है या राजनीति मूल्यों की चर्चा है या सामाजिक मूल्यों की चर्चा है। ये तो मूल्य बढ़ रहे हैं, बराबर कीमतें बढ़ रही हैं उनकी चर्चा है। मूल्यों का परिवर्तन अगर सरकार बदलने मात्र से हो जाता है तो हमने बहुत सरकारें बदलते देखा है, जब जब भी कोई नई सरकार आती है यही बात कहती रहती है और हम देखते रहते हैं। जिन मूल्यों की चर्चा हम कर रहे हैं उन मूल्यों में कोई अन्तर आता नहीं है, बल्कि वे बिगड़ते ही जाते हैं। मेरी ऐसी आशा है कि सरकार इस बात को ध्यान में रखेगी। केवल इन मूल्यों का परिवर्तन नहीं, बल्कि हमारे संस्कारों, हमारे विचारों, हमारी रीति, हमारी नीति, हम किस तरह से प्रजातंत्र के तरीके से, समाजवादी तरीके से इस देश को आगे ले जाएं, गरीब-अमीर का अन्तर मिटाएं, शहर और देहात का अन्तर मिटाएं, इन बातों की चर्चा इसमें होती तो अच्छा होता। लेकिन जैसे मैंने कहा, इन बातों की कोई चर्चा तो है नहीं, वरन् मूल्यों का परिवर्तन जरूर हो रहा है, कीमतें बढ़ती चली जा रही हैं। सरकार कह सकती है कि कुछ कीमतें ऐसी हैं जो

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

भारत सरकार के कदमों से बढ़ती हैं। यह बात सही है कि कुछ कीमतें यहां बढ़ती हैं, कुछ भारत सरकार के करने से बढ़ती हैं, लेकिन कीमतें बढ़ रही हैं, मूल्य बढ़ रहे हैं। हमारी ऐसी आशा है कि इस मूल्य नियंत्रण पर गम्भीरता से विचार किया जाएगा। वरना जिस तरह मूल्य बढ़ रहे हैं, उन मूल्यों की चर्चा तो मैंने छोड़ दी है जिनकी मैंने चर्चा की थी, ये मूल्य क्योंकि किस तरह से खाद्यान्न की कीमतें बढ़ गईं उनका भी ध्यान रखा जाएगा। नई सरकार के आते ही कुछ नये टैक्स तो अभी लगे नहीं, लगेंगे। मैं मानता हूं कि सरकार द्वारा विकास के काम करने के लिए, अपनी तनखाहें चुकाने के लिए उनको भी करना पड़ता है, लेकिन ऐसे खुशहाली कैसे आ गई परिवर्तन से, यह अब तक मेरे समझ में नहीं आया। खुशहाली अगर परिवर्तन मात्र से आ जाती है तो फिर परिवर्तन करते ही रहे, बहुत खुश हो जाएंगे लोग-बाग। खुशहाली तो कुछ करने से आएगी। हमारी ऐसी आशा है कि सरकार जिसकी घोषणाएं उन्होंने की हैं उनका ध्यान रखेगी और खुशहाली जिसकी चर्चा उन्होंने की है उस खुशहाली को लाएगी।

श्रीमन्, इसमें कुछ जन कल्याणकारी योजनाओं को रूपरेखा तैयार की जा रही है ऐसा जिक्र किया गया है, जो 100 दिन की है, एक वर्ष की है, पांच वर्ष की है। एक वर्ष की, पांच वर्ष की तो शायद बाद में पेश की जाएगी लेकिन 100 दिन में क्या होगा, वह भी अभी हमको इसमें पढ़ने को मिला नहीं। मुझे तो ऐसा लगता है कि जिन योजनाओं का जिक्र किया है वो पिछली सरकार जो थी उसकी चलाई हुई योजनाएं हैं। हम और आप सब जानते हैं कि 31 मार्च को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष में कुछ काम पूरे करने होते हैं, उनके लिए पहले से पिछली सरकार ने कोई प्रावधान किये हुए हैं। ऐसा लगता है कि पिछले प्रावधान को ध्यान में रखते हुए इस सरकार ने नया नाम लेकर वो घोषणाएं की हैं। चलो, उनको पूरा कर ले, वही अच्छी बात है। अगर वो भी पूरे हो जाएंगे तो इस सरकार को और इस सदन के जरिये से हम राज्यपालजी को जरूर धन्यवाद देंगे। मुझे ऐसा लगता है कि चुनाव को ध्यान में रखकर ये सारी घोषणाएं की जा रही हैं। कोई आपत्ति नहीं है कि चुनाव के लिए हों, नाम के लिए हों। घोषणाएं हुई हैं। इसी आशा के साथ हम चल रहे हैं कि शायद इनकी शीघ्र पूर्ति की जाएगी।

श्रीमन्, बिजली की चर्चा काफी हो चुकी है, मैं उसको दोहराऊंगा नहीं क्योंकि कल ही इस सदन में कुछ घोषणाएं सरकार ने कीं। बार-बार कहने की आवश्यकता नहीं है, कुछ हमें इंतजार करना पड़ेगा। हमारी ऐसी आशा है कि जो आने वाला

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

एक महीने का समय है उसमें बिजली की पूर्ति ठीक तरह से हो जाए तो किसान को भी फायदा होगा, मजदूर को भी फायदा होगा, उद्योगों को भी फायदा होगा और खास तौर से हमारे पढ़ने वाले बच्चों को बहुत लाभ होगा। बार-बार ट्रिपिंग होती है, बिजली समय पर आती नहीं है। इससे केवल किसानों को ही नुकसान नहीं है, किसान को तो है ही बल्कि समाज के हर वर्ग को नुकसान होता है। हमारा ऐसा खयाल है कि इस सारी व्यवस्था को ऐसे समायोजित किया जाएगा जिससे कि कम से कम कठिनाई लोगों को हो।

श्रीमन्, इसमें सरकारी कर्मचारियों को दी गई सुविधाओं को बहाल करने का बहुत जोर के साथ जिक्र किया गया है। बहुत अच्छी बात है। सरकारी कर्मचारी हमारे अपने भाई हैं, सरकार के बहुत महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके बिना सरकार का कोई काम चल नहीं सकता, न एडमिनिस्ट्रेशन का, न डवलपमेंट का, इसलिए उनको खुश रखा जाना बहुत जरूरी है। इसलिए मैंने कहा कि यह अच्छी बात है, लेकिन समय बताएगा कि जो घोषणाएं सरकारी कर्मचारी भाइयों के लिए यहां पर की गई हैं उनको कितना पूरा किया जाता है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि विधान सभा चुनाव के बाद में तुरन्त लोक सभा का चुनाव आ रहा है इसलिए उन चुनावों को ध्यान में रखकर ये सारी घोषणाएं की गई हैं। हमारी ऐसी आशा है कि लोक सभा के चुनावों के पहले पहले सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली सारी सुविधाओं का लाभ उनको मिल जाएगा।

सत्ता के विकेन्द्रीकरण को ध्यान में रखा जाएगा, विकेन्द्रीकरण किया जाएगा, ऐसा जिक्र इस अभिभाषण में किया गया है। यह तो पिछली सरकार ने बहुत सारी घोषणाएं की ही नहीं थीं, बल्कि सत्ता के विकेन्द्रीकरण को ध्यान में रखते हुए बहुत सारे ऐसे कदम भी उठाये थे, और जहां तक मुझे जानकारी है, उन कदमों के हिसाब से पंचायती राज संस्थाओं को बहुत सारे अधिकार दे भी दिये गये थे। कुछ दिन पहले अखबार में पढ़ने को मिला कि सरकार ने कुछ विभाग जो कि पंचायती राज संस्थाओं को पिछली सरकार ने दिये थे, उनको वापस ले लिया है। अगर यही विकेन्द्रीकरण है तो ऐसा लगता है कि अभी कुछ विभाग पंचायती राज संस्थाओं से वापस लिये हैं, हो सकता है कि भविष्य में धीरे-धीरे करके वो सारे अधिकार जो पिछली सरकार ने पंचायती राज संस्थाओं को दिये, न केवल वे वापस ले लिये जाएंगे बल्कि इसके पहले की सरकार ने भी मान लो और कोई सरकार होगी जिन्होंने अधिकार दिये थे, तो उनको भी वापस लिया जाएगा। लेकिन हमारी ऐसी आशा है कि विकेन्द्रीकरण का यह मजाक नहीं बनाया जाएगा और जो

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

अधिकार उनको पिछली सरकार ने दिये थे उनको न केवल कायम रखा जाएगा बल्कि इस बात की कोशिश की जाएगी कि और ज्यादा से ज्यादा अधिकार उनको मिलें।

श्रीमन्, इसमें निजी निवेश को बढ़ाये जाने की चर्चा की गई है। निजी निवेश का बढ़ाया जाना कोई नई बात नहीं है क्योंकि आपको मालूम है और हमको भी मालूम है कि आज देश में नहीं, दुनिया के अन्दर निजीकरण की एक हवा चल रही है। निजीकरण, अन्तरराष्ट्रीकरण ये सब ऐसे नारे हैं जिनको बार-बार हम सुनते रहे हैं। आज उनकी क्रियान्विति केवल यहीं नहीं, दुनिया में हो रही है। अगर भारत देश को हम ध्यान में रखें तो हमको यह सोचना पड़ेगा कि केवल निजी निवेश से, निजीकरण से काम चलने वाला नहीं है। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लालजी नेहरू ने जिस नीति का निर्माण किया था, जो कहने के लिए आज भी जारी है, उसके अनुसार हम चार सैक्टर मान कर चले। एक पब्लिक सैक्टर और एक प्राइवेट सैक्टर, धीरे-धीरे करके हमारा प्राइवेट सैक्टर बढ़ा और उधर बहुत सरकारी कारखाने बनाये गये। कोआपरेटिव सैक्टर को बढ़ावा दिया गया और उसके साथ-साथ एक नया सैक्टर जिसको जोइंट सैक्टर कहते थे, उसका ईजाद हुआ। सभी सैक्टर शायद इसलिए बनाये गये थे जिससे कि अच्छा कम्पीटिशन हो सके। अगर सरकारी क्षेत्र में कोई कारखाना, कोई काम, कोई निवेश ठीक तरह से वहीं चल रहा है तो प्राइवेट सैक्टर उसको सम्भाल सके। प्राइवेट सैक्टर अगर शोषण कर रहा है तो पब्लिक सैक्टर के जरिये से उसको थोड़ा बैलेंस किया जा सके। और अगर ये दोनों भी ठीक तरह से बैलेंस नहीं होते हैं तो शायद उस समय के नीति निर्माताओं ने यह सोचा था कि एक जोइंट सैक्टर का निर्माण किया जाए, इसमें सरकारी, गैर सरकारी दोनों मिलकर काम कर सकें। और फिर हमारा चौथा सैक्टर कोआपरेटिव सैक्टर जिसकी चर्चा आज भी होती है, वह भी साथ-साथ काम कर रहा था। हमारी ऐसी आशा है कि इन सब बातों को ध्यान में रखा जाएगा। केवल निजी निवेश को लेकर कुछ पैसे वाले लोग आकर अपना निवेश कर दे, उसका एक ही खतरा है कि धीरे-धीरे करके इससे कहीं हमारे रोजगार के एवेन्यूज जो हम सोचकर चल रहे थे, वे बन्द न हो जाएं। जैसे-जैसे निजी निवेश होगा, शक्तिशाली व्यक्तियों के हाथ में जिनके पास पैसा है, ये सारे के सारे उद्योग, ये सारे के सारे रोजगार के अवसर चले जाएंगे। तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि असमानता बढ़ जाएगी। डर यह लगता है कि अगर यह सब मशीनीकरण हो गया, निजीकरण हो गया तो रोजगार के

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

अवसर भी हमारे कम हो जाएंगे। रोजगार के अवसर कम हो जाएंगे तो केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, सामाजिक दृष्टिकोण से, रोजगार की दृष्टि से और ऐसा लगता है कि कई बार आर्थिक अपराध भी बहुत सारे बढ़ जाएंगे। अगर ये अपराध बहुत बढ़ गये तो इनको रोकना बहुत मुश्किल हो जाएगा। इसलिए, श्रीमन्, मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि मेहरबानी करके इस सरकार का ध्यान इस ओर लाया जाए कि सारे के सारे सैक्टर केवल निजी निवेश से नहीं, सरकारी सैक्टर में, गैर सरकारी क्षेत्र में, संयुक्त क्षेत्र में और कोआपरेटिव सैक्टर में, इन सबको बैलेंस करने वाली नीति जो चलती आ रही है, उसको कायम रखा जाना चाहिए।

मैं एक बात और इस सम्बन्ध में कहना चाहूंगा कि अगर केवल निजी निवेश की बात हुई तो आर्थिक दृष्टि से जो कमजोर वर्ग है, केवल शिड्यूल्ड कास्ट, शिड्यूल्ड ट्राइब की बात नहीं कर रहा हूं, उन सब की बात कर रहा हूं जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं चाहे वो शिड्यूल्ड कास्ट के, शिड्यूल्ड ट्राइब के हों, चाहे और उच्च वर्ण के हों, उन सभी को नुकसान होने वाला है। अभी धीरे धीरे करके हम इसको महसूस करने लगे हैं, बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए। मेरी ऐसी आशा है कि जो पुरानी नीति हमारी चल रही है इसको बिलकुल नजरअंदाज नहीं किया जाएगा और किस तरह से हम आर्थिक दृष्टि से बैलेंस कायम रखें इस देश के अन्दर क्योंकि दुनिया के साथ हमको कम्पीट करना है, उसको भी ध्यान में रखा जाएगा।

श्रीमन्, कानून-व्यवस्था की स्थिति के बारे में बहुत जोर से कहा गया है। अब इस पर हम क्या कमेंट्स करें, कोई ज्यादा दिन हुए नहीं। लेकिन जितने दिन हुए हैं उनके अन्दर हम देख रहे हैं कि चोरियां बढ़ गईं, डकैतियां बढ़ गईं, बलात्कार बढ़ गये, तस्करी के मामले आने लगे और, और तो और आतंकवादी प्रवृत्तियां भी इस देश के साथ साथ हमारे इस प्रदेश में भी बढ़ने लगीं। हमारी ऐसी आशा है कि इसका ध्यान रखा जाएगा। अगर इस पर कंट्रोल नहीं किया गया तो बहुत मुश्किल हो जाने वाली है। इस प्रवृत्ति को ही रोकना पड़ेगा। केवल अपराधों की संख्या देने से, अपराधों के लिए क्या काम किये जा रहे हैं, उससे काम नहीं चलेगा, बल्कि इस प्रवृत्ति पर कैसे रोक लगे, उसके लिए हमको उन मूल्यों पर जिसकी मैंने चर्चा की, नैतिक मूल्यों को भी बढ़ावा देने की कोशिश करनी पड़ेगी। (व्यवधान)

योजना का विवरण देते समय कुछ आंकड़े दिये गये हैं, उसमें मैं अभी नहीं जाना चाहूंगा। पहली पंचवर्षीय योजना से लेकर आज तक भी योजनाओं की चर्चा की है, अगर मौका मिला तो बजट के

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

समय उन बातों पर चर्चा करेंगे, केवल एक ही बात मुझे कहनी है। कभी भी गवर्नर के अभिभाषण में सरकारों की चर्चा होती है, समय की चर्चा होती है, पार्टियों की चर्चा नहीं होती है। मैं पहला मौका देख रहा हूं। श्रीमान्, मुझे बहुत अनुभव नहीं है पार्लियामेंट्री लाइफ का, केवल 1957 से मैम्बर आफ पार्लियामेंट बना था, तब से लेकर आज तक और यहां भी कुछ दिनों, 2-3 बार विधान सभा का सदस्य रहा हूं। कभी मैंने किसी भाषण में पार्टियों का नाम नहीं देखा। यह पहला मौका आया है जब नाम लेकर लिखा है कि कांग्रेस के राज में यह था, बी.जे.पी. के राज में यह हुआ। आप जब समय दे देते हैं तो सबको पता है किस समय कौन-सी सरकार थी, सबको पता है कि मुख्य मंत्री कौन थे, सबको पता है कि किस प्रकार की नीतियां थीं। इसलिए मेरी ऐसी आशा है कि भविष्य में इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि राज्यपाल का अभिभाषण जब भी सरकार तय करे, पार्टियों का नाम लिखा नहीं जाए। समय का आप ध्यान रखकर चल सकते हैं, योजना का नाम आप दे सकते हैं लेकिन पार्टियों को बढ़ावा अगर आप ही देने लगेंगे तो उन व्यक्तियों का क्या होगा जो किसी भी पार्टी के सदस्य नहीं है? बहुत सारे ऐसे लोग भी हैं जिनका शासन नहीं रहा। मेरे बगल में 2-2 पार्टियां बैठी हैं, इनका शासन तो राजस्थान में नहीं रहा। इसका मतलब इनके बारे में तो हम चर्चा करना ही भूल जाएंगे बिलकुल? इसलिए केवल सरकार की चर्चा होनी चाहिए, इसमें लिखते समय पार्टियों की चर्चा नहीं हो तो मैं समझता हूं कि ज्यादा ठीक रहेगा।

योजनाओं का एक कम्पेरेटिव चार्ट दिया गया है कि कितनी योजना में कितना पैसा खर्च हुआ और कब से लेकर कितना बढ़ गया। श्रीमान्, पहली योजना को छोड़कर दूसरी योजना से थोड़ा बहुत जानकारी का सरोकार हमारा भी रहा है। क्या कोई ऐसी योजना है किसी प्रकार की जिसने बजट को घटाया हो योजना के लिए? क्या कोई ऐसा योजना है जिसमें कि कुछ कम किया हो? एक योजना से दूसरी योजना बढ़ती है। दूसरी से तीसरी ज्यादा होती है। तीसरी से चौथी ज्यादा होती है। चौथी से पांचवीं ज्यादा होती है। यह क्रम तो चलता ही रहता है। हां, अनुपात की बात आप कर सकते हैं कि अनुपात में किस योजना में कितना पैसा किस मद के लिए प्रावधान किया गया। लेकिन यह कम्पेरेटिव चार्ट दिया, मैं समझता हूं, इसकी माइन्यूट स्टडी अभी आपने भी नहीं की होगी, हम भी नहीं कर पाये हैं। बजट के समय योजना जिक्र करते समय अगर मौका मिलेगा तो निश्चित रूप से इसकी चर्चा करेंगे। ये ज्यादा बढ़ा चढ़ाकर लिखने वाली बातें नहीं हैं, ये

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

तो आंकड़े हैं, इनको कभी भी दिया जा सकता है। लेकिन राज्यपाल के अभिभाषण में उनको अटका कर रख दिया जाए लोगों को गुमराह करने के लिए तो मैं समझता हूं कि भविष्य में इस बात का ध्यान रखा जाएगा।

श्रीमान्, एक बात अच्छी भी सरकार ने सोची लगती है कि सिंचाई और पेयजल एक साथ जोड़कर कैसे समन्वय हो, उसकी चर्चा इसमें की गई है। मैं उसके लिए सरकार को धन्यवाद देता हूं और राज्यपाल के अभिभाषण के जरिये राज्यपालजी को लेकिन मैं एक बात का जिक्र जरूर करना चाहूंगा कि देश के अन्दर और हमारे प्रदेश के अन्दर पीने के पानी की जिस तरह से किल्लत होती जा रही है-कुए सूख गये हैं, ट्यूबवैल पहले कितने फुट पर लगता था, उससे दुगुने-तिगुने नीचे जाने लग गये हैं, हैण्ड पम्पों का तो हाल बहुत खराब है, थोड़े दिन चलते हैं, पानी निकल आता है, ऐसा लगता है कि योजना को बनाते समय इन बातों का ध्यान नहीं रखा जाता है कि पानी की सतह कितनी नीची है। हमारा सारा जोर सिंचाई पर, हमारा सारा जोर पीने के पानी पर एक साथ चल रहा है। मेरी ऐसी आशा है कि पीने के पानी को अगर प्रमुखता मिलेगी तो ज्यादा ठीक रहेगा। वरना सिंचाई के लिए भी साधन बराबर हम बढ़ाते रहें, हर किसान की इच्छा होती है कि उसके खेत को पानी मिल जाए, श्रीमान् छोटा-मोटा अनुभव हमको भी है, वह होना बहुत जरूरी है, कोई किसान अपने खेत को असिंचित नहीं रखना चाहता, लेकिन पीने का पानी पहले चाहिए। वही किसान जो अपने खेत को सींच रहा है, दूर जाकर खेत को सींचता है, गांव में आकर पानी मांगता है, इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि इस बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए कि सरकार के जरिये से पीने के पानी को प्राथमिकता मिले। मैंने सुना है, मैंने देखा है, कई प्रदेशों में कितनी-कितनी दूरी पर ट्यूबवैल लगेंगे, इस बात का कानून बन गया। यहां नहीं बनने की वजह से राजस्थान के अन्दर जगह-जगह ट्यूबवैल लग रहे हैं। यह बहुत अच्छी बात है होना चाहिए, लेकिन पहली प्राथमिकता पीने के पानी को मिलनी चाहिए। हम लोग सुन रहे हैं और देख रहे हैं, जो ट्यूबवैल पीने के पानी के लिए लगाये गये हैं; उनके अन्दर लोगों ने छोटे-छोटे इंजन, मोटर लगा दिये हैं जिसके जरिये से सिंचाई हो रही है। पीने के लिए लगाये गये ट्यूबवैल हैं वे सिंचाई के काम में आ रहे हैं। सरकारी ट्यूबवैल भी इस तरह से काम आ रहे हैं, ऐसा हमने सुना है। हमारी ऐसी आशा है कि इस पर कंट्रोल किया जाएगा। अगर इस पर कंट्रोल नहीं किया गया तो पीने के पानी की समस्या और बहुत जोर के साथ

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

बढ़ सकती है। मैं आशा करके चलता हूं कि इस नीति का जो इन्होंने जिक्र किया है, उसको समन्वित करने के लिए और ध्यान रखा जाएगा जिससे कि पीने के पानी को प्राथमिकता मिल सके। सिंचाई के और साधन भी हो सकते हैं, नदियों के द्वारा भी हो सकती है, दूर से पानी लेने से हो सकती हैं, इसलिए मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं कि पीने के पानी को ध्यान में रखा जाए और उसको प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

श्रीमान् एक और हमने पढ़ा, देखा, सुना कि नशामुक्ति आन्दोलन को चलाया जाएगा। लेकिन उसके साथ-साथ हमें अखबारों में यह भी पढ़ने को मिला कि सरकार ने यह भी फैसला किया है कि शराब के और लाइसेंस देंगी, नये-नये पब खोले जाएंगे, शराब को और सस्ती दरों पर शराब पीने के लिए लाइसेंस दिये जाएंगे। ये दोनों बातें तो कंट्राडिक्टरी लगती हैं। एक तरफ हम नशामुक्ति करेंगे और दूसरी तरफ नशामुक्ति के साथ-साथ जगह-जगह पब खोलेंगे, होटलों को सस्ते बार देंगे, पीने की व्यवस्था करेंगे। यह पीना-पिलाना, यहां तो पानी ही मिल जाए। तो बहुत बड़ी बात है। आज तो पानी भी शुद्ध नहीं मिल रहा है। हमारी ऐसी आशा है कि पहले शुद्ध पानी पीने की व्यवस्था हो जाए, फिर यह दारू पीने की व्यवस्था हो, यह सरकार चाहे तो बाद में कर सकती है। मैं कोई इसमें अतिशयोक्ति नहीं कर रहा हूं लेकिन वही बात है कि आज जिस तरह से अपराध बढ़ रहे हैं, उसका एक कारण हमारा नशा है। चाहे वह नशा शराब का हो, चाहे वह नशा अफीम का हो, चाहे वह नशा कोकीन का हो, चाहे वह नशा तरह-तरह की खाने-पीने की चीजों का हो, उनसे है। मैं समझता हूं, जब तक इस नीति पर कंट्रोल नहीं किया जाएगा, तब तक आज बहुत सारी बीमारियां बढ़ रही हैं, कैंसर रोग बहुत बढ़ रहा है, तपेदिक का रोग बहुत बढ़ रहा है, लोग कहते हैं, डाक्टर कहते हैं, उनसे जानकारी मिलती है कि कई चीजों में इसके साइड इफैक्ट्स होते हैं। ये सब चीजें दूसरी चीजों की ओर बढ़ावा देती हैं। स्वास्थ्य के लिए फिर आपको इंतजाम करना पड़ता है, अस्पताल खोलने पड़ते हैं, डाक्टर लगाने पड़ते हैं। इसलिए हमारी आशा है कि इस नशामुक्ति अभियान को ठीक तरह से समन्वित करके लगाया जाएगा। इसमें सरकारी और गैर सरकारी सभी संस्थाओं का भी सहयोग लेकर इस तरह की विचारधारा वाले लोगों को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

श्रीमान्, एक सदस्य ने बड़े फख्र के साथ कहा कि इस सरकार ने नये टैक्स लगाये नहीं। इस सरकार ने अभी कोई बजट तो पेश नहीं किया है, इसलिए टैक्स

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

कहां से लगाते ये? जब बजट पेश करेंगे उस समय नहीं लगाएंगे तो हम सोचेंगे कि सरकार बहुत अच्छी है। मैं तो पहले ही कहना चाहता हूं, मैं इस विचार का नहीं हूं कि टैक्स नहीं लगाये जाने चाहिए। जरूरी हो तो टैक्स लगाना भी पड़ता है। सरकार विकास के काम कहां से करेगी? सरकार कहां से चलाएंगी? तनखाह कहां से देगी? लेकिन युक्तिसंगत होना चाहिए। अभी से टैक्स की बात करना कि हमने कोई टैक्स नहीं लगाये, यह तो हास्यास्पद लगता है। हमारा ऐसा खयाल है कि सरकार में बैठे लोग इस बात का ध्यान रखेंगे कि अपने सदस्यों के जरिये से ऐसी बात तो नहीं कहलवाएं जो कि हास्यास्पद लगती हो।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं, कोई खास बात नहीं है और उन्होंने कहा कि टैक्स नहीं लगाये, हमने टैक्स में छूट दी। हमने तो यह देखा है कि खल पर जो टैक्स में छूट दी हुई थी पिछली सरकार ने, उसको तो वापस ले लिया। इसका मतलब नया टैक्स लग गया अगर छूट दी हुई वापस हो जाती है और वह भी उन मूक पशुओं के ऊपर जिनके काम में वह खल आती है। मैं समझता हूं कि आगे चलकर केवल इंसानों के लिए नहीं बल्कि मूक पशुओं पर भी जिसका असर पड़ने वाला हो, उन बातों का भी ध्यान रखकर चले। अगर छूट वापस लेनी हो तो उन चीजों की छूट वापस लो जो कि मानव के लिए, समाज के लिए, इस प्रदेश के लिए अलाभकारी हों। ऐसी चीजें जो छोटी-छोटी हैं, जिनका कि मूक पशुओं के ऊपर असर पड़ता है, उनको तो वापस नहीं लें।

इसके साथ-साथ मुझे एक निवेदन यह भी करना है, सत्ता पक्ष के टोडारायसिंह से आने वाले माननीय सदस्य नाथूसिंहजी गुर्जर अभी दिख नहीं रहे हैं, उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि इस देश के अन्दर, प्रदेश के अन्दर भीषण अकाल पड़ा। उस अकाल के अन्दर सरकार ने अच्छा प्रबन्धन किया कि नहीं किया, हम समझते हैं कि अच्छा प्रबन्धन किया और उस प्रबन्धन के कारण इस देश के अन्दर, इस प्रदेश के अन्दर बहुत सारे लोगों को रोजगार मिला, पानी की व्यवस्था हुई, चिकित्सा की व्यवस्था हुई। छोटे-मोटे काम जो आज तक नहीं हो पाये थे, कम से कम हम तो अपने इलाके की बात कह सकते हैं कि वे सारे के सारे काम जो अब तक सोच भी नहीं सकते थे, वे काम हुए लेकिन उसका जिक्र करते समय उन्होंने यह भी कहा कि लोक सभा की, पार्लियामेंट की विपक्ष की नेता राजस्थान के दौरे पर आईं, उन्होंने लगभग 600 किलोमीटर की यात्रा की और मात्र 27 मिनट जनता से सम्पर्क किया। मैं समझता हूं कि यह बात बहुत मुनासिब नहीं है।

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

उन्होंने सम्पर्क तो किया, चाहे एक मिनट के लिए ही किया। मैं जानना चाहता हूं देश के प्रधानमंत्री, देश के अन्य मंत्री दिल्ली में बैठे क्या कर रहे थे? प्रतिपक्ष की नेता राजस्थान में आ सकती हैं। एक बार नहीं, अनेकों बार आ सकती हैं, कई बार आ सकती है। 600 किलोमीटर की यात्रा कर सकती है। 27 मिनट ही सही, लोगों से सम्पर्क कर सकती हैं। लेकिन जिनकी जिम्मेदारी थी अकाल को देखने की, क्या कृषि मंत्री यहां पर आये? क्या देश के वित्त मंत्री यहां पर आये? क्या प्रधान मंत्रीजी यहां पर आये? प्रधान मंत्रीजी का मैं बहुत सम्मान करता हूं, मुझे बहुत ज्यादा जानकारी नहीं है उनके बारे में...

श्री अर्जुन सिंह देवड़ा : मैं कहूंगा कि फाइनेंस मिनिस्टर जालौर पधारे, अकाल के क्षेत्र को देखा और वहां पूरी मीटिंग ली, पूरे राजस्थान घूमे।

श्री जगन्नाथ पहाड़िया : आप जब जवाब दे तो बोल देना, I am not yielding मैं बोल नहीं रहा हूं। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बिराजें।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आपके मुख्य मंत्रीजी राजस्थान विधान सभा में कितने दिन बैठे, कितनी देर बैठे, यह बताएंगे आप? मात्र पचपन मिनट पांच साल में।

श्री सभापति : कनक्लूड कीजिये।

श्री जगन्नाथ पहाड़िया : मेरी ऐसी आशा है, भगवान करे, इस प्रदेश के अन्दर कभी अकाल न पड़े। अकाल पड़े तो इसका वह प्रबंध होना चाहिए जिसकी चर्चा आपने की है। फेमिन कोड अगर सदन में चर्चा के लिए आएगा तो उसमें भी हम सुझाव देना चाहेंगे। यह बात सही है कि फेमिन कोड बहुत पुराना हो गया, उसके जरिये से बहुत सारी समस्याएं जो आज पैदा हो गई हैं, जो उस समय नहीं थीं, उनका समाधान हम नहीं कर पाते हैं। हमारी ऐसी आशा है कि उस फेमिन कोड को विचार करते समय पक्ष और विपक्ष साथ में बैठेंगे और उन लोगों की चर्चा करेंगे जो इससे प्रभावित होते हैं। जो लोग अब तक अकाल से प्रभावित नहीं थे, अब प्रभावित होने लगे हैं। राजस्थान का वह पूर्वी हिस्सा जहां अकाल को हम जानते ही नहीं थे, हम बाढ़ की चर्चा किया करते थे, वह भी अकाल से ग्रसित होने लगा है। तो हमारी ऐसी आशा है कि सब लोग मिल करके इस कोड पर चर्चा करेंगे जिससे एक नया नियम, नया कोड आफ कंडक्ट, नया एक फेमिन कोड हम बना सके जिससे कि अब जो समस्याएं पैदा हो गई हैं उनके बारे में इसमें चर्चा कर सके।

श्रीमन्, एक बात मैं और कहना चाहूंगा, इसमें पर्यावरण की चर्चा है बहुत गहराई के साथ उसमें कहा गया कि कुछ

(श्री जगन्नाथ पहाड़िया)

शहरों का मास्टर प्लान बनाया जाएगा जिससे कि पर्यावरण पर कंट्रोल किया जा सके। श्रीमन्, केवल शहरों में ही नहीं, यह प्रदूषण देहात में भी फैल रहा है। आवाज का प्रदूषण है, हवा का प्रदूषण है, रास्ते सकड़े होते जा रहे हैं, धीरे-धीरे करके कई समस्याएं पैदा होती चली जा रही हैं। हमारी ऐसी आशा है कि मास्टर प्लान बनाते समय केवल बड़े शहरों का, बड़े कस्बों का ही ध्यान नहीं रखा जाएगा बल्कि अब गांव-गांव का मास्टर प्लान बनना चाहिए कि कहां रास्ते होंगे, कहां नाली होगी, कहां बिजली का लट्ठा गड़ेगा, कहां किस तरह से क्या होगा, जिससे बीमारियां नहीं फैले। हर एक तरफ गांव के अन्दर पानी की मांग करते हैं, नल लग जाते हैं। नल लगते ही नाली की मांग होने लगती है। नालियों का प्रबंधन ठीक नहीं हो पाता है तो उसमें गड्ढे खोद करके हम कुछ कोशिश करते हैं, मच्छर पैदा हो जाते हैं। मच्छर पैदा हो जाते हैं तो कई बीमारियां फैल जाती हैं तो इस बात का ध्यान रखा जाए। इस बात का भी ध्यान रखा जाए, बात बहुत छोटी-सी है श्रीमन्, मैं जानता हूं कि लोग मजाक कर सकते हैं मेरा, गांव के अन्दर हमारी माताएं और बहनें अभी भी रास्ते में टट्टी फिरने जाती हैं। इतने दिन देश की आजादी को हो गये, आज भी इस बात की व्यवस्था नहीं हो पाई है कि शौच किस तरह से हम सब लोग जाएं। श्रीमन्, हम तो खुद महिलाओं की बात क्या करें, अभी संकोच में पड़ जाते हैं, लोटा लेकर पुरानी व्यवस्था हो नहीं सकती, गांव में टट्टी फिरने चले जाएं। आज तो माता-पिताओं को क्या सब को ही व्यवस्था होती है। इसलिए मेरी ऐसी आशा है कि गांव का मास्टर प्लान बनेगा और मास्टर प्लान बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि पानी की, बिजली की, सड़क की, चिकित्सा की, स्कूल की, अस्पताल की, इन सब की व्यवस्था हो, इस तरह से विचार करने की आवश्यकता है। श्रीमन्, एक बात मैं और कहना चाहूंगा कि नई सरकार बनने के बाद में डीजल के दाम बढ़े, पैट्रोल के दाम बढ़े, उससे और चीजों के दाम भी बढ़ गये हैं। हमको ऐसा लगता है कि जो लोग गरीब थे वे और ज्यादा गरीब हो गये क्योंकि कीमतें बढ़ गईं। श्रीमन्, एक अखबार में हमने पढ़ा...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय पहाड़ियाजी, आपको 18-20 मिनट तो हो गये, आप कनक्लूड कीजिये। आप बहुत रचनात्मक बातें कह रहे हैं लेकिन अब...

श्री जगन्नाथ पहाड़िया : मैं अब जल्दी समाप्त कर रहा हूं।

श्री सभापति : हां।

श्री जगन्नाथ पहाड़िया : श्रीमन्, हमने सुना है कि भारत सरकार का कोई डाइरेक्शन राजस्थान की सरकार को आया है कि बी.पी.एल. की संख्या, जो लोग गरीबी की रेखा के नीचे हैं उनकी संख्या घटाई जाए। मैं जानना चाहूंगा कि क्या चालीस दिन के अन्दर वे गरीब लोग अमीर हो गये? या उनको सारी सुविधाएं जो मिलनी चाहिए थीं, मिल गईं? अगर ऐसा नहीं है तो राजस्थान सरकार को जो डाइरेक्शन प्राप्त हुआ है उसकी जानकारी इस सदन को दी जानी चाहिए जिससे कि भारत सरकार को हम कह सके कि चालीस दिन के अन्दर इस सरकार ने ऐसा क्या कर दिया या उस सरकार ने ऐसा क्या कर दिया जिससे कि बी.पी.एल. की संख्या घटाने की आवश्यकता पड़ गई। अगर ऐसा हो गया है तो हमें बहुत खुशी है, हम भारत सरकार को, राजस्थान सरकार को, दोनों को धन्यवाद देते हैं। लेकिन हमारी नजर में इस चालीस दिन के अन्दर ऐसा कुछ नहीं हुआ है जिससे कि गरीबी मिट गई हो, इसलिए इस संख्या को घटाने का अगर डाइरेक्शन प्राप्त हुआ है तो सदन को इसकी जानकारी होनी चाहिए।

श्रीमन्, एक बात मैं और कहना चाहूंगा, एक अखबार में पढ़ा कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का विस्तार किया जा रहा है, अलवर जिले को शायद उसमें ले लिया गया है। मेरा सुझाव है, मैं राज्य सरकार से मांग करना चाहूंगा कि धौलपुर, भरतपुर को भी इसमें सम्मिलित किया जाए जिससे कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का विस्तार जो किया जा रहा है धीरे-धीरे करके उत्तर प्रदेश की ओर, हरियाणा की ओर, वह राजस्थान की ओर भी हो सके।

श्रीमन्, इन्हीं शब्दों के साथ माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर आपने बोलने का मौका दिया उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं और आशा करके चलता हूं कि भविष्य में उन बातों का ध्यान रखा जाएगा जिन बातों की चर्चा हमने की है। धन्यवाद।

श्री सभापति : माननीय रामकिशोरजी मीणा।

श्री रामकिशोर मीणा (सिकराय) : सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के समर्थन में माननीय श्री नन्दलालजी मीणा, सदस्य द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव तथा राजेन्द्रजी राठौड़ द्वारा उसके समर्थन में दिये गये भाषण के अग्रेत्तर भाग लेते हुए मैं माननीय राज्यपाल महोदय को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सोजत) : माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे जानकारी चाहूंगा, कल महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में अन्तिम नाम मेरा लिखा हुआ था, वह समय समाप्त होने के कारण मेरा नाम नहीं आ सका और आज इस डिबेट के अन्दर सर्वप्रथम मेरा

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

नाम आना चाहिए था, आप सीरियल नम्बर करके मुझे बताएं कि मेरा नाम है या नहीं। (व्यवधान)

श्री सभापति : अभी इनका तो भाषण होने दो, उसके बाद बताउंगा मैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : ठीक है।

श्री रामकिशोर मीणा : सभापति महोदय, महामहिम राज्यपाल के अभिभाषण में जो बातें बताई गई हैं, वे वास्तविकता के ऊपर आधारित बताई गई हैं। जब-जब सरकार का परिवर्तन होता है, विभिन्न दल अपने घोषणा पत्रों के मार्फत जनता का ध्यान आकर्षित कर उनके मत प्राप्त करते हैं। कई बार ऐसी घोषणाएं की जाती हैं जो वास्तविकता के बहुत परे होती हैं, लेकिन सदन की नेता को इस बात के लिए धन्यवाद है कि उनके सामान्य जीवन में ऐसी परिस्थितियां नहीं होने के बावजूद भी 93 दिन तक 22 हजार किलोमीटर से भी ज्यादा उन्होंने राजस्थान के प्रत्येक कोने में जाकर उस क्षेत्र की समस्याओं की जानकारी की। उसको हम किस प्रकार से सुलझा सकते हैं उसके बारे में उन्होंने विचार किया और विचार करने के बाद में सरकार के द्वारा उस दृष्टिकोण को इस अभिभाषण के मार्फत व्यक्त किया गया है। सरकार आगे क्या करने जाएगी, इसकी एक दृष्टि इसमें होती है। महामहिम राज्यपाल महोदय के इस अभिभाषण में प्राथमिकताएं तय की गई हैं। समयबद्ध विकास के लिए सभी विभागों को अलग अलग दृष्टि देकर कि उनको हम किस प्रकार से पूरा करेंगे, उनको अमली जामा किस प्रकार हम पहनाएंगे इसकी व्याख्या इसमें की गई है। कोई भी कल्याणकारी सरकार अपनी योजनाओं के मार्फत ज्यादा संवेदनशील रह करके और पारदर्शी रूप में जनता की समस्याओं को यदि सफलतापूर्वक सुलझाती है तो उससे बड़ी कोई शासन की व्यवस्था नहीं हो सकती। हमने देखा है कि ज्यादातर सरकारों ने और उसमें पिछली सरकार भी शामिल थी, अपनी घोषणाओं को इस प्रकार से व्यक्त किया है कि वास्तविक जीवन में उनको वे अमली जामा नहीं पहना सकती थीं। जिस प्रकार से उन्होंने जनता को गुमराह करने वाली घोषणाएं की थीं जनता ने उसी कारण से फैसला किया और आज उनकी संख्या घटकर बहुत कम रह गई है। इस अभिभाषण में जो सौ दिन, एक वर्ष और पांच वर्ष की योजनाओं का प्रारूप तैयार करके दिया है, इससे सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि जो व्यक्ति अभी तक उत्तरदायी नहीं ठहराये जा सकते थे,

(14.00 बजे)

उनका उत्तरदायित्व निश्चित होगा। समय समय पर उनका आकलन किया जाएगा कि हमने जो लक्ष्य तय किये थे, वो वास्तव में खरे उतरे हैं या नहीं उतरे हैं।

(श्री रामकिशोर मीणा)

उनमें यदि कमी रह गयी है तो उनको हम किस प्रकार से पूरा कर सकते हैं। यह बहुत ही स्तत्य प्रयास है और इस प्रयास को प्राप्त करने के लिए भी इन्होंने अपने-अपने लक्ष्य तैयार किए हैं।

21वीं सदी विश्व में भारत की सदी हो, इस प्रकार का हमने सपना देखा है और उसके तहत सबसे पहली प्राथमिकता तय की गयी है कानून-व्यवस्था वह जितनी मजबूत होगी उतना ही ज्यादा शोभाजनक होगा। आधारभूत सुविधाओं को भी उपलब्ध कराना जनता की भलाई के लिए बहुत जरूरी है, जब तक हमारा आधारभूत ढांचा अच्छी तरह से तैयार नहीं होगा हम किसी प्रकार नीचे के तबकों को राहत पहुंचाने की कोशिश नहीं कर सकते। और सबसे बड़ी बात आज बेरोजगारों को रोजगार की भी है क्योंकि हम हमारे पास बहुत बड़ा श्रम...

श्री सभापति : माननीय रामकिशोरजी मीणा साहब, आप जल्दी जल्दी बोलते जाएं। चार बजे माननीय मुख्य मंत्री महोदया का भाषण होगा इसलिए माननीय सदस्यों से निवेदन है कि अपना भाषण संक्षेप में ही, सारी बात जल्दी से ही कह दें।

श्री रामकिशोर मीणा : माननीय सभापति महोदय, मैं जल्दी कहने की कोशिश करूंगा।

एक माननीय सदस्य : सभापति महोदय, निर्दलीयों का भी है। (व्यवधान)

श्री सभापति : आपका भी नाम है। आपका नाम है लेकिन जब आएगा तब जरूर बोलिएगा।

श्री रामकिशोर मीणा : मैं निवेदन कर रहा था कि अकाल में अब से पहले जो भी अकाल के प्रबन्ध किये गये, वो केवल देखने के लिए और कागजों में तो बहुत अच्छे थे लेकिन उनसे वास्तव में आम जनता को राहत नहीं मिली। विकृति यह आयी कि पिछले समय में समाचार माध्यम थे, हमारा मीडिया था, उसको भी भ्रष्ट करके उनसे इस प्रकार की व्यवस्था करायी गयी कि राज बहुत अच्छा है, नम्बर-1 किस प्रकार से दिखे। वास्तविक जिनका कर्तव्य था और जिसका बहुत बड़ा योगदान होता है जनतांत्रिक प्रणाली में, मीडिया का, उसको भी अपने प्रचण्ड बहुमत के आधार पर इस प्रकार से किया गया कि वास्तविक तस्वीर जनता के सामने और सरकार के सामने नहीं रख सके। जो अभी सरकार ने अपना विजन दिया है सौ दिन का, आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यदि सरकार की इच्छा शक्ति बहुत प्रबल होती है तो जिस काम को करना बहुत जल्दी सम्भव नहीं होता है उसको भी किया जा सकता है। अभी बिजली का मामला था, गत वर्ष भी हमने देखा है, पिछली सरकार कह रही थी कि हमने बिजली का उत्पादन बहुत ज्यादा

(श्री रामकिशोर मीणा)

बढ़ाया है, लेकिन बढ़े हुए उत्पादन के आधार पर भी उन्होंने उसके वितरण की व्यवस्था अच्छी नहीं की। पांच कम्पनियां बना दीं, उनके ऊपर डेढ़ सौ करोड़ से ऊपर का संस्थागत व्यय किया गया लेकिन जिसका फायदा आम जनता को मिलना था वो नहीं मिल पाया। इसी कारण से...

सूचना-प्राप्ति-प्रश्न

प्रेस द्वारा सदन की कार्यवाही का बहिष्कार

डा. बुलाकीदास कल्ला : माननीय सभापति महोदय, पाइंट आफ इंफार्मेशन। सभापति महोदय, मैं इस सदन को बहुत आवश्यक सूचना देना चाहता हूं कि प्रेस पूरा का पूरा नाराज होकर चला गया है। मैं चाहता हूं कि विधान सभा सचिवालय तत्काल उनसे वार्ता करे कि प्रेस को क्यों नाराज किया गया है। उनके मूवमेंट को लेकर, उनके आवागमन को लेकर, जिनके पास वैध प्रवेश पत्र हैं उन प्रवेश पत्रों के होते हुए भी उनके आने-जाने में दिक्कत पहुंचायी गयी, उनको परेशान किया गया, उनके आवागमन में बाधा पहुंचायी गयी, इसलिए प्रेस ने पूरी विधान सभा का बहिष्कार कर दिया है। चूंकि आप जानते हैं, सदन बहुत गरिमामय सदन है और इसकी एक-एक मिनट की कार्यवाही जनता पढ़ना चाहती है, इसलिए मैं चाहता हूं कि सदन की कार्यवाही को रोक कर इस पर व्यवस्था दी जाए और प्रेस से वार्ता करके उन्हें पुनः प्रेस दीर्घा में बुलाने हेतु उपाय किया जाए।

श्री सभापति : माननीय प्रतिपक्ष के नेता, मैं इसकी जानकारी करके और उनसे वार्ता करके इस प्रकार की कोई बात हुई है तो प्रेस से कोई नाराजगी नहीं होगी।

डा. बुलाकीदास कल्ला : माननीय सदस्य बोल रहे हैं इनको कौन रिकार्ड करेगा, कौन छापेगा? यह पक्ष और विपक्ष दोनों का सवाल है, रामकिशोरजी बोल रहे हैं, क्या बोल रहे हैं माननीय सदस्य, आपके इलाके के लोग एक भी लाइन नहीं छपेगी तो वो कहते हैं न कि जंगल में मोर नाचा किसने देखा। इसलिए आपके हित की भी बात कर रहे हैं। कोई दिक्कत नहीं है, पांच मिनट के लिए, 10 मिनट के लिए सदन को स्थगित करके उनसे...

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा : आप बुलाकर वार्ता कर लीजिये उनसे।

डा. बुलाकीदास कल्ला : केवल ये डी.पी.आर. के लोग बैठे हुए हैं, आप जानते हैं, मैं भी जानता हूं।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा : पूरी प्रेस बहिष्कार करके चली गयी है, शोचनीय विषय है।

डा. बुलाकीदास कल्ला: पूरी प्रेस गायब है, मैं समझता हूं कि पहला मौका

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

है जब पूरी प्रेस ने एक तरीके से बायकाट कर दिया है विधान सभा का।

श्री सभापति : माननीय प्रतिपक्ष के नेता, माननीय मिर्धाजी, बिराजिये।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा : ...(व्यवधान)... हम तो आपका ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : पहले भी जब प्रेस इस प्रकार का कोई कदम उठाती थी तो तत्काल वार्ता कर प्रेस को राजी करके बुलाया गया है, इसलिए मेरा आपसे आग्रह है, माननीय सभापति महोदय... नहीं आये हैं। ये डी.पी.आर. के लोग हैं।

श्री हेमाराम चौधरी : प्रेस का यहां से बहिष्कार करना बहुत बड़ी बात है।

श्री जोगेश्वर गर्ग : माननीय सभापति महोदय, मेरा भी निवेदन सुन लें। प्रेस नाराज है, बिलकुल सही बात है। प्रेस के मेरे मित्रों के साथ मेरी भी बात हुई है, मैं माननीय अध्यक्ष महोदय की जानकारी में भी बात डालकर आया हूं कि इस कारण से प्रेस नाराज हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय इस बारे में विचार करके शीघ्र ही कुछ व्यवस्था करने वाली हैं, इसलिए हाउस को स्थगित करने की मैं आवश्यकता नहीं समझता, लेकिन उस समस्या का निदान होना चाहिए, यह प्रक्रिया चल रही है। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : माननीय सभापति महोदय, मेरा आसन से आग्रह है कि जो आपत्ति प्रतिपक्ष के नेता ने उठायी है, आप विधान सभा सचिवालय को निर्देश दें और निर्देश देकर जिस कारण से आज लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाना वाला प्रेस प्रेस दीर्घा में नहीं है, उनकी पूरी बात सुनकर समुचित व्यवस्था इस बात की हो कि प्रेस आए, क्योंकि आज महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का उत्तर होना है। प्रतिपक्ष के नेता और माननीय सदन की नेता अपनी बात कहें, इस सदन के माध्यम से यह बात राजस्थान के आम-आवाम तक पहुंचे, इसके लिए मेरा आसन से आग्रह है कि कृपया शीघ्रातिशीघ्र जो भी निर्देश देने हैं, दें ताकि प्रेस को ले जाएं।

श्री सभापति : मैं इस सम्बन्ध में, माननीय सदस्यगण, जो भी प्रेस के प्रतिनिधि जो यहां मौजूद नहीं हैं, निर्देश देता हूं, और इस बारे में माननीय अध्यक्ष महोदया भी विचार-विमर्श कर रही हैं, जल्दी ही उनकी नाराजगी दूर कर दी जाएगी, तब तक अपना वाद-विवाद जारी रखा जाए।

धन्यवाद प्रस्ताव पर वाद-विवाद

श्री रामकिशोर मीणा : माननीय सभापति महोदय, मैं इच्छाशक्ति की बात कर रहा था, सरकार की इच्छाशक्ति हो, मन साफ हो तो निश्चित तौर पर प्रकृति भी हमारा साथ देती है। यह पहला अवसर है, सभापति महोदय, पांच साल के बाद में मावठ के दर्शन लोगों को मिले हैं।

(श्री रामकिशोर मीणा)

कांग्रेस के शासन में सर्दियों में मावठ जैसे शब्द को हम भूल गये थे क्योंकि कभी एक बूंद भी पानी नहीं पड़ा था। इसी कारण से तेल के भी विपुल भण्डार राजस्थान में मिलने प्रारम्भ हो गये हैं। तो यदि इच्छाशक्ति होती है तो कोई भी असम्भव काम हो वो सम्भव हो जाता है। जो एक असम्भव काम था, अभी इस समय बहुत अच्छी फसल है और बिजली की बहुत बड़ी कमी आ रही थी, लेकिन सरकार ने और माननीय मुख्य मंत्रीजी ने दृढ़ इच्छाशक्ति के आधार पर जिस प्रकार की व्यवस्था की, वो बहुत प्रशंसनीय कदम है। 8 घंटे तक लगातार अबाध रूप से बिजली किसानों को मिल रही है और उसी कारण से हमारा जो छात्र वर्ग है उसको भी फायदा मिल रहा है।

श्री सभापति : समाप्त कीजिये, माननीय सदस्य। समाप्त कीजिये, हो गया सारा अब।

श्री रामकिशोर मीणा : माननीय सभापति महोदय, थोड़ा-सा। बिजली के मामले में जो इस प्रकार की व्यवस्थाएं हैं, एक बड़ा उदाहरण देना चाहता हूं...

श्री सभापति : माननीय रामकिशोरजी, आप बिराजिये, आपका समय हो गया है। माननीय जीतमलजी।

श्री जीतमल खांट (बागीदौरा) **:** माननीय सभापति महोदय, राजस्थान के महामहिम राज्यपाल महोदय ने 12वीं विधान सभा के प्रथम सत्र में जो अपना अभिभाषण सदन के पटल पर रखा है और अपने मुखारबिन्द से सरकार की रीति-नीति व कार्यक्रम इस सदन में प्रस्तुत किये हैं, मैं इस अभिभाषण के समर्थन में अपनी बात को जोड़ना चाहता हूं। मैं आपके माध्यम से सदन को अवगत कराना चाहूंगा कि राजस्थान में अभी हाल में हुए चुनावों में राजस्थान की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट जनादेश देकर प्रदेश में लोकतांत्रिक कल्याणकारी योजनाओं, जनता की भावनाओं, उनकी समस्याओं का निदान, निराकरण कैसे किया जाए, इस बात पर अपना निर्णय दिया। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के अभिभाषण को भी हमने सुना, उनके कार्यक्रमों को भी हमने देखा। इसी विधान सभा में कांग्रेस के अशोक गहलोतजी के नेतृत्व में 156 सीटों के रिकार्ड तोड़ बहुमत के साथ राजस्थान की जनता ने जनादेश दिया था। नारा दिया गया पारदर्शिता का, जवाबदेही का संवेदनशीलता का, इन नारों के साथ हमें यह महसूस हुआ था कि जब राजस्थान की जनता ने इतना भारी स्पष्ट बहुमत दिया है तो निश्चित रूप से अशोक गहलोतजी के नेतृत्व में राजस्थान की समस्याओं पर, जन कल्याणकारी योजनाओं पर एक नया रास्ता मिलेगा।

श्री महावीर प्रसाद जैन : श्री अशोक गहलोतजी नहीं रहे।

श्री जीतमल खांट : मैं पूर्ववर्ती सरकार की बात कर रहा हूं, आप सुनिए हमारी बात को। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, व्यवधान नहीं।

श्री जीतमल खांट : लेकिन जिस पूर्ववर्ती सरकार के नारों को सुना, कागजों में पढ़ा-लिखा गया, वे सारी की सारी घोषणाएं थोथी साबित हुई। जो सरकार थोथी घोषणाओं को देकर, लोक-लुभावने नारों को देकर 156 सीटों के साथ इस विधान सभा में पहुंची, पांच साल में हमें कोई लाभ नहीं मिला।

मैं कहना चाहता हूं राजस्थान के दक्षिण क्षेत्र के बारे में जहां उदयपुर जोन में पांच जिले आते हैं, जो सम्पूर्ण रूप से ट्राइबल क्षेत्र माना जाता है। यहां की वस्तु स्थिति को मैं आपके समक्ष रखना चाहूंगा। इन पांच जिलों के ट्राइबल बैल्ट में रहने वाले आदिवासी के विकास के लिए चाहे, वह शैक्षणिक विकास हो, सामाजिक विकास हो, आर्थिक उन्नति हो, पूरे क्षेत्र में रहने वाले आदिवासीयों के विकास के ग्राफ को किस तरीके से ऊंचा किया जाए, इस क्षेत्र में रहने वाली जनता के सम्पूर्ण विकास के लिये क्या योजना बनायी जाए, यह हम 1952 से लगाकर आज तक इस विधान सभा के माध्यम से सुनते आये हैं, पढ़ते आये हैं और योजनाओं का आकार-प्रकार हम देखते आये हैं। मैं कहना चाहता हूं कि प्रदेश यह दक्षिणी जोन उदयपुर, कुल 23 पंचायत समितियों का यह भौगोलिक क्षेत्र इसको भारत सरकार और राजस्थान सरकार ने अनुसूचित क्षेत्र में घोषित कर रखा है। कुल 54.75 लाख आबादी और जनजाति आबादी करीब 24 लाख हमारे उदयपुर जोन में निवास करती है जो कुल आबादी का 43.86 प्रतिशत है। समय-समय पर राज्य सरकारों ने कई योजनाओं, कई कार्यक्रमों को तय किया, लेकिन इसके पश्चात् भी उस दक्षिण जोन का चाहे बांसवाड़ा जिला हो, चाहे डूंगरपुर हो, चाहे झाड़ौल-फलासिया का इलाका हो, पांच जिले और 4437 गांवों में फैला हुआ यह भू-भाग, आज हम देखते हैं कि 57 वर्ष की आजादी के बाद भी यह सम्पूर्ण आदिवासी इलाका बिजली की समस्याओं से त्रस्त है, जिसका कल यहां जबरदस्त जिक्र हो रहा था। हमें कहते हुए बड़ा खेद है। वर्तमान सरकार ने पूर्ण पारदर्शिता और उत्तरदायी सरकारी बात कही है। घटक दल के नाते हमें पूरा भरोसा है। मुख्य मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में यह जो सरकार बनी है हम कहना चाहते हैं, हमारी मांग रखते हैं, वसुंधराजी से हम निवेदन करना चाहेंगे, कि 57 वर्ष की आजादी में आज भी उस गरीब के घर में बिजली का एक भी बल्व नहीं जला है, हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य है 57 वर्ष की आजादी के बाद बिजली का एक बल्ब नहीं जलना गरीब आदिवासी के साथ कितना बड़ा खिलवाड़ है। मैं जहां तक सोचता हूं यह आजादी आजादी नहीं कहलाती है। चाहे पूर्ववर्ती सरकार

(श्री जीतमल खांट)

हो, चाहे वर्तमान सरकार हो, हम सबको मिलकर इस बात पर सोचना चाहिये। आज हम देखते हैं, बड़े-बड़े शहरों में एक घंटा भी अगर बिजली गुल हो जाती है तो सारी सरकार हरकत में आ जाती है। गरीब आदिवासी इलाके में रहने वाला, ढाणी और मजरों में रहने वाला, जब देश आजाद नहीं हुआ था उस समय भी वह दीपक की जिदंगी जीता था और आज देश आजाद होने के 57 वर्षों बाद भी बिजली का एक बल्ब उसके नसीब में नहीं है। हम लोगों को इस बात पर चिंतन-मनन करना चाहिये।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

सभापति महोदय, हम शैक्षणिक विकास की बात करें, आर्थिक विकास की बात करें, सामाजिक विषमता को दूर करने की बात करें, लेकिन मैं आपके माध्यम से सदन को निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आदिवासियों का आर्थिक विकास करना चाहते हैं तो बिजली के साथ-साथ हर इलाके में पानी की भी व्यवस्था होनी चाहिये। हमारे इलाके में पानी का समुचित भण्डार पड़ा है। चाहे नदी हो-बनास ले लो, माही ले लो, चाहे हमारा छोटा-मोटा नदी-नाला ले लो, वहां पर पानी के पर्याप्त स्रोत हैं, मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि हर कुएं पर बिजली का कनेक्शन दिया जाए। बिजली कनेक्शन के माध्यम से कुए पर जाएगी तो निश्चित रूप से उसके आर्थिक हालात में सुधार आएगा। जब तक किसान का खेत सुखा हुआ है तब तक किसान का विकास सम्भव नहीं है। जितनी हमारी पंचवर्षीय योजनाएं समाप्त हुई हैं, अब तक 3227.86 करोड़ रुपया जनजाति उप योजना क्षेत्र के विकास के नाम पर खर्च किया जा चुका है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहूंगा कि ये आंकड़े इसी तरीके से बढ़ते रहेंगे, लेकिन हमारा आदिवासी ज्यों का त्यों रहेगा। वह आपके ऊपर आशा की नजरें टिकाये खड़ा है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आर्थिक उन्नति का जहां सवाल आता है, हमारे सूखे हुए खेतों को पानी दिलाने का काम करें, बिजली के चाहे घरेलू कनेक्शन हों, चाहे कृषि कनेक्शन हों, जो प्रक्रिया है उसको बहुत कठिन बना रखा है। उसका सरलीकरण करे सस्ते दाम पर बिजली-पानी का जब तक पुख्ता इंतजाम नहीं किया जाएगा, तब तक किसान और आदिवासी की हालत में सुधार नहीं हो सकता है।

सभापति महोदय, आपने घंटी बजा दी इसलिए मैं एक-दो बातें और कहना चाहूंगा। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे सम्पूर्ण आदिवासी इलाके में ग्रामीण क्षेत्र की अधिकांश स्कूलों में अध्यापकों का अभाव है। पूर्ववर्ती सरकार के ऊपर मेरा कोई दोषारोपण नहीं है, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि पूर्व सरकार ने हमारे

(श्री जीतमल खांट)

दक्षिणी इलाके में ढाणी–ढाणी, मजरे–मजरे में राजीव गांधी पाठशालाएं खोल दीं, हमें बड़ी खुशी है, लेकिन वहां की हालत को हम देखते हैं तो राजीव गांधी पाठशाला में पढ़ाने के लिये एक से पांच तक के लिये मात्र एक अध्यापक है, न वहां भवन बना हुआ है, न पाठी है, न पुस्तक है, न पैंसिल है, न ब्लैकबोर्ड है। यही हालात अगर हमारे शिक्षा जगत में रहे तो जनजाति इलाके से एक भी आदिवासी बच्चा दसवीं कक्षा पास नहीं कर पाएगा, यह मैं दावे के साथ कह सकता हूं। सभापति महोदय, आपके माध्यम से हमें कई बातें कहनी हैं लेकिन आपकी नजर हमारे ऊपर है इसलिये मैं कहना चाहूंगा कि शिक्षा का ग्राफ नीचे गिरता जा रहा है, शिक्षा का ग्राफ अगर गिरता गया तो हम लोगों के वहां का विकास अवरुद्ध हो जाएगा। मैं चाहता हूं कि शिक्षा जगत में शिक्षकों के अभाव में जो विद्यालय चल रहे हैं, वहां शीघ्र ही अध्यापकों की पूर्ति की जाए।

इतना ही नहीं, कडाना और माही से लोग विस्थापित होकर आज 20-20, 25-25 साल से भटक रहे हैं। अभी हमारे वरिष्ठ सदस्य, प्रतापगढ़ से आने वाले मीणा साहब कह रहे थे कि बांसवाड़ा और डूंगरपुर के लोग भटकते हुए चित्तौड़ और प्रतापगढ़ के इलाके में बस गये हैं। 1980 का जो पट्टा उनको देना चाहिए था, आज दिन तक नहीं मिल रहा है, वे दर-दर भटक रहे हैं। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि वह मामला भारत सरकार को पहुंचे, कई सारे लोग बेघर होकर भटक रहे हैं।

श्री सभापति : समाप्त कीजिए, माननीय सदस्य।

श्री जीतमल खांट : माननीय सभापतिजी, इस तरीके के जो मुद्दे हैं। मैं कहना चाहता हूं आपके माध्यम से कि भारत के प्रधान मंत्रीजी भी कहते हैं कि जो आने वाला समय है, जो 21वीं सदी है, वह भारत के लिये बनी है। लेकिन मैं इस सदन के माध्यम से अवगत करना चाहूंगा कि चाहे जितनी भी स्वर्ण जयन्ती मना लें, चाहे 21वीं सदी का कोई भी भारत बना लें, लेकिन सबसे पहले हमारी मूलभूत आवश्यकताओं पर बड़ी मार्मिकता के साथ विश्लेषण करने की जरूरत है। हम जितने भी जन प्रतिनिधि हैं, उदयपुर बैल्ट के जितने भी आदिवासी हैं, मैं आज कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में, वसुंधरा राजेजी के नेतृत्व में उदयपुर जोन से सबसे ज्यादा हम लोगों को समर्थन दिया है। मैं कहना चाहता हूं, पूर्ववर्ती सरकार ने हमारी तरफ ध्यान नहीं दिया, इसलिये वहां पर कांग्रेस का सफाया हो गया।

श्री सभापति : समाप्त कीजिए।

श्री जीतमल खांट : मैं आपसे कहना चाहता हूं कि वर्तमान सरकार को हमारी जनता ने वहां पर पूरी तरह समर्थन दिया है। (व्यवधान) वसुंधरा राजेजी को ऐसा काम करना चाहिए, उन्होंने एक नारा दिया है, ''अंधियारे से उजयाले'' का, मैं कहना चाहता हूं कि हर आदिवासी के घर में बिजली का बल्ब जले, शिक्षा की जोत जलती रहे, हम शिक्षा के रूप में आगे बढ़ें, ऐसे हमारी सरकार कदम उठाएं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस अभिभाषण का समर्थन करते हुए मेरी बात को समाप्त करता हूं। जयहिन्द, जयभारत।

श्री सभापति : माननीय हेमारामजी।

श्री नन्दलाल मीणा : आप तो पहले रोने वाले थे, वही हैं?

श्री हेमाराम चौधरी : हां, सही है, आपको याद है।

श्री नन्दलाल मीणा : पीछे मिर्धा साहब हंस रहे हैं।

श्री हेमाराम चौधरी : अब आप ध्यान रखना।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा : मीणा साहब, आप हमारे को लड़ाने का तो काम न करें। (व्यवधान) हमारे को कम से कम लड़ाने का तो आप काम मत करो।

श्री सभापति : शुरू करें आप।

श्री हेमाराम चौधरी (गुढ़ामलानी) **:** मैं तो शुरू कर रहा था, मैंने शुरू नहीं किया उससे पहले ही प्रतापगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य ने मुझे टोक दिया।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से महामहिम राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण इस सदन में पढ़ा और उस पर धन्यवाद प्रस्ताव प्रतापगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य ने रखा, उसके बारे में निवेदन करना चाहता हूं। राज्यपाल हमेशा इस सदन में अभिभाषण पढ़ते हैं और वह सरकार का ही तैयार किया हुआ एक भाषण होता है। सरकार अभी नयी-नयी बनी है, इसको कोई समय नहीं हुआ है इसलिये इसके कामकाज के बारे में हम इसमें कुछ कमियां या खामियां निकालें तो ठीक भी नहीं है। क्योंकि कुछ समय के बाद में ही...(व्यवधान)

श्री ज्ञानचन्द पारख : 5 साल के बाद भी आपको कमी निकालने का मौका नहीं मिलेगा। कमी निकालने का 5 साल के अन्दर भी मौका नहीं मिलेगा आपको, यह तो तय है।

श्री हेमाराम चौधरी : यह आज ही आपको क्या सपना आया है क्या?

श्री ज्ञानचन्द पारख : नहीं, ऐसा होगा।

श्री हेमाराम चौधरी : यह सपना है, सपना साकार हो।

श्री ज्ञानचन्द पारख : यह तो साकार होगा और आप खुद देखेंगे।

श्री हेमाराम चौधरी : देख लेंगे, कोई बात नहीं। बोलने तो दो आप।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप समय खराब मत कीजिए।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, नयी सरकार से जनता को बहुत उम्मीदें हैं। आप उन उम्मीदों पर खरे उतरेंगे, आप उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप काम कर पाएंगे तभी 5 साल के बाद में आपकी सरकार की परफार्मेंस का निर्णय होगा। हमने 5 साल क्या किया, क्या नहीं किया...(व्यवधान) आप बोलने ही नहीं देंगे क्या? थोड़ा बोलने तो दो। अब आप कहो वहां बोलूं क्या?

श्री सभापति : अब आप तो फिर...(व्यवधान) माननीय सदस्य, प्लीज, अब आप तैयार रहना फिर। (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा : टोकाटाकी बंद करें, हमारे वरिष्ठ माननीय सदस्य बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी : थोड़ी तो आप मेहरबानी रखें। अभी प्रतापगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे, आप तो बिजली के मामले में पिछली बार...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप इस तरफ देखिये। (व्यवधान) गुढ़ामलानी से आने वाले माननीय सदस्य, इधर आप चेयर को देखिये। आप उधर मत देखिये।

श्री हेमाराम चौधरी : इनको रोके आप मेहरबानी करके।

श्री सभापति : आप इधर ही देखिये, नहीं तो आपके व्यवधान हो जाएगा।

श्री हेमाराम चौधरी : मैं तो हमेशा ही आपकी तरफ देखता हूं।

श्री सभापति : हां, आप हमेशा देखते हैं तो अब भी देखें।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि नयी सरकार जो भारतीय जनता पार्टी की बनी, उसने कुछ घोषणाएं की होंगी। जनता के सामने अपना मेनिफेस्टो भी रखा, उस मेनिफेस्टो के अनुसार वह काम करेगी, उसमें समय लगेगा। लेकिन मैं सरकार के ध्यान में लाना चाहता हूं कि किसानों के 10 हजार तक के कर्जे माफ करने का भी शायद आपके घोषणा पत्र में होगा...(व्यवधान) अगर आपके घोषणा पत्र में यह मुद्दा है, क्योंकि मैंने पढ़ा नहीं, चुनाव के समय में यह मुद्दा...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, प्लीज, आप, इस चेयर की तरफ देखेंगे तो कोई आपको डिस्टर्ब नहीं करेगा।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, जब किसानों के 10 हजार तक के कर्जे माफ करने का अपने घोषणा पत्र में एलान किया है, 10 हजार तक के कर्जे माफ करने की बात इस राज्यपाल के अभिभाषण

(श्री हेमाराम चौधरी)

में आ जाती तो किसानों में एक खुशी की लहर छा जाती है और आपको लोक सभा में वोट ठीक से वापस मिल जाते। फायदा होता आपको। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी : आपने कितने किये?

श्री हेमाराम चौधरी : हमने तो कहा ही नहीं न। (व्यवधान) अब यह क्या बात हुई, हमारे मेनिफेस्टो में कर्जे माफ करने की बात हमने कही भी नहीं।

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी : आपने कृषि बीमा योजना की तो की थी।

श्री सभापति : आर्डर प्लीज।

श्री हेमाराम चौधरी : इसलिये, सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से इस सदन से विनम्र शब्दों में अनुरोध करना चाहता हूं कि किसानों के 10 हजार तक के कर्जे माफ करने की आज ही मुख्य मंत्री महोदया जिस समय इस अभिभाषण पर जवाब दे उस समय घोषणा करें। आप की कही हुई बात को सदन में निवेदन कर रहा हूं, इसके अलावा कुछ नहीं कर रहा हूं।

श्री सांवर लाल : 5 साल का घोषणा-पत्र है यह।

श्री सभापति : आप तो आसन की तरफ ही देखो। आप उनको इशारा मत करो।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, अभी हमारे सिंचाई मंत्रीजी कह रहे हैं कि 5 साल में...(व्यवधान) किसान तो कर्जे चुका ही नहीं रहे हैं। (व्यवधान) वसूलियां हो नहीं रही हैं, किसान तो बैठे हैं कि हमारे कर्जे माफ होंगे। इसलिये आप बता दे कि कब होंगे तो किसान आगे वाले कर्जे दे नहीं, वसूलियां नहीं होंगी। बैंक कैसे चलेंगे, कैसे काम चलेगा? आप फैसला करिये। वसूली वाले पीछे घूम रहे हैं, वे आगे भाग रहे हैं। देख रहे हैं, कर्जे माफ हो जाएंगे। हमने चुका दिये तो फिर माफ क्या होंगे? चुकाने के बाद में तो वापस कोई देता नहीं, लौटाता नहीं है। यह किसानों में एक भ्रम फैला हुआ है, इस भ्रम को आप दूर कर दीजिए, इतना ही मैं निवेदन कर रहा हूं। करना, नहीं करना यह आपका काम है। माफ करें न करें, मुझे उसमें कोई तकलीफ नहीं है। आपने ही कहा, आप जानें, आपका काम है। इसमें आपको अगर बुरा लगता है तो हम कुछ तो कहेंगे ही, आपकी कही हुई बात।

प्रतापगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे बिजली के बारे में। मैंने बिजली के बारे में कहा, हमारी सरकार थी, मैं सत्ता में था। लेकिन मुझे पीड़ा थी, इसलिये मैंने बात कही। आज भी अगर कोई चीज की अगर मैं पीड़ा मानता हूं, समझता हूं, उस पीड़ा को मैं यहां पर सदन के सामने रख तो सकता हूं।

(श्री हेमाराम चौधरी)

निर्णय करना, न करना, क्या करना, क्या न करना, यह आपका काम है, आप करें या न करें। उचित समझे तो करें, उचित न समझे तो न करें। पपीहे का बोलने का काम है, बरसना इन्द्र के हाथ में है। इसलिये आप बरसे या न बरसे, यह आपका काम है।

हां, पपीहा बोलता है, इन्द्र बरसता है। अभी आप यहां कहते रहे हैं कि बरसात भी हुई, इस साल जमाना भी आया। यह भी हमारी वजह से आया। आपकी वजह से आया? आप इतनी गलत फहमी मत पालो। ईश्वर का ठेका आप मत लो। इन्द्र देवता का काम आपके हाथ में नहीं है इतना। करो कोई बात, मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं है लेकिन मनुष्य को इतना गरूर भी नहीं करना चाहिए। यह शरीर है, यह भी अपना नहीं है।

श्री नन्दलाल मीणा : यह तो सही है कि आपके शासन में लगातार चार वर्ष से अकाल पड़ा। अब ज्यों ही सत्ता परिवर्तित हुई, खुशहाली आ गयी, तो यह तो स्वाभाविक सत्य है न? आपने अनुभव किया है इसको तो।

श्री हेमाराम चौधरी : अभी आगे पांच साल हैं, पता पड़ेगा।

श्री ज्ञानचन्द पारख : पांच साल भी हो जाएंगे। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी : आपकी सरकार तो अब आयी है दिसम्बर में। आपकी सरकार तो दिसम्बर में बनी है, जमाना आया, उस समय तो सरकार हमारी थी। (व्यवधान)

श्री ज्ञानचन्द पारख : पूर्व संकेत थे ये।

श्री सभापति : पाली से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री हेमाराम चौधरी : जमाना तो हमारा आया है।

श्री नवरतन राजोरिया : वसुन्धराजी के पग फेरे के कारण बारिश हुई है यह।

श्री ज्ञानचन्द पारख : ये पूर्व संकेत थे।

श्री हेमाराम चौधरी : जमाना आया उस समय सरकार हमारी थी।

श्री सभापति : पीलीबंगा से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री हेमाराम चौधरी : लेकिन वह जमाना कोई हमारी सरकार की वजह से नहीं आया। हम इस बात को नहीं मानते। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय हेमारामजी, आप इधर देखिये, आसन की तरफ। आप उधर देखोगे तो फिर आप अपनी बात पूरी...समय समाप्त हो रहा है। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी : माननीय सभापति महोदय, यह आपकी पार्टी को बहुत ही गलतफहमी हो रही है। हमको भी गलतफहमी थी, हमारी गलतफहमी दूर हो गयी, अब आपकी गलतफहमी अगर आप पालोगे तो आप ही भुगतोगे। पालो, मुझे कोई तकलीफ नहीं है, लेकिन भुगतना। यह जो बरसात हुई है, यह ईश्वर ने की है। धन्यवाद उस ईश्वर का, शुक्रगुजार हम उस ईश्वर के हैं, इन्द्र देवता के हैं, जिसने इस साल अच्छी बरसात की। पीने का पानी भी ठीक हुआ और जमाना भी अच्छा आया। आपका शासन आया तो आपको इस अकाल का मुकाबला नहीं करना पड़ेगा। तो आपका कितना सारा पैसा बचेगा? उस पैसे को आप विकास में लगाना। जिस तरह से आप अभी कह रहे थे कि मावठ भी इनके आने से हो गया, सब काम इनके राज में आने से हो गया तो फिर भगवान भी इनके कब्जे में आ गया। अब तो भगवान को भी इन्होंने अपने कब्जे में कर लिया, ऐसा लगता है। ऐसा मत करो। मैं हमेशा कहता था, जब भी सरकार, मंत्री लोग या कोई और भी जनता के सामने यह बात कहते थे कि राम रूठे, राज नहीं रूठे, मैं इसको नहीं मानता था। राम के राज बड़ा नहीं होता है। राम के राज बड़ा नहीं होता है। राम रूठे, उसकी कोई भी भरपाई नहीं कर सकता है। राज भी नहीं कर सकता है। ठीक है, राज तो थोड़ी-बहुत मदद कर सकता है, सहारा दे सकता है। आदमी तो आदमी है, और क्या है? राम की बराबरी राज थोड़े ही कर सकता है। लेकिन इनको अगर इतनी गलतफहमी है तो रखे, पाले, मुझे इसमें कहां दिक्कत है? (व्यवधान) कहा होगा। इन्होंने कहा है, मैंने तो कहा नहीं। आप क्यों बीच में बोलते हैं। इसलिए, सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय हेमारामजी, आपका समय समाप्त।

श्री हेमाराम चौधरी : माननीय सभापति महोदय, दूसरा मैं बिजली के बारे में निवेदन कर रहा हूं कि राजस्थान में शिड्यूल्ड कास्ट के लोगों को आप कृषि कनेक्शन तत्काल दे देते हो। जिस समय एप्लाई किया है, उसी समय उनको मिल जाता है, प्रायोरिटी से। पर शिड्यूल्ड ट्राइब के लोगों को आप नहीं दे रहे हो। सिर्फ ट्राइबल सब प्लान है उसमें आदिवासी को आप दे रहे हो। आज बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर उस तरफ के जो भील हैं, ट्राइबल, उनको तत्काल कनेक्शन नहीं दे रहे हैं। हमारे उधर के जो भील हैं वे बहुत ही गरीब हैं और शिड्यूल्ड कास्ट से आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टि से ज्यादा पिछड़े हुए हैं। शिड्यूल्ड कास्ट से पिछड़े हुए हैं। उनको दे रहे हैं, अच्छा है, लेकिन उसके साथ-साथ शिड्यूल्ड ट्राइब के लोगों को भी तत्काल कनेक्शन की जो आपकी नीति हैं, उसमें उनको

(श्री हेमाराम चौधरी)

भी मेहरबानी करके आप शामिल कर लीजिए।

सभापति महोदय, आपको याद होगा कि भील समाज के लोगों ने जब आप चुनाव जीते तो आपका वहां पर स्वागत किया था और आपसे उन्होंने निवेदन किया था कि हमारे को शिड्यूल्ड कास्ट की तरह शामिल करके तत्काल कनेक्शन दिलाये जाएं। उनको सामान्य श्रेणी के कनेक्शनों के हिसाब से आप कनेक्शन देते हो और दस-दस साल तक इन्तजार करना पड़ता है। वहां तो शिड्यूल्ड ट्राइब के लोगों को कनेक्शन बहुत कम मिलता है। (व्यवधान)

श्री सभापति : शेरगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री हेमाराम चौधरी : इसलिए, सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप शिड्यूल्ड ट्राइब के गरीब लोगों के लिए भी सुनवाई कर सके तो आपसे हमारा निवेदन है, और न करें तो आपकी इच्छा। (व्यवधान)

श्री सभापति : धन्यवाद। पहली वाली सरकार ने तो नहीं किया, लेकिन यह सरकार जरूर करेगी। आप चिन्ता मत करो।

श्री हेमाराम चौधरी : ये बज गयीं तालियां, जैसे कि आपने कर ही दिया।

डा. बुलाकीदास कल्ला : माननीय, आप चेयर पर बैठकर इस प्रकार की बात नहीं कहें। उधर बैठे जब कर ले। (व्यवधान)

श्री सभापति : अच्छा।

श्री हेमाराम चौधरी : माननीय सभापति महोदय, पहले वाली सरकार की आप बात करते हो, हमने क्या किया, क्या नहीं किया, उसका निर्णय तो हो गया। कोई भी अगर गलती या अपराध है, उसकी सजा तो एक बार ही होती है। बार बार होती है क्या? आप पांच साल तक हमारे ही गीत गाते रहेंगे या आपके भी कुछ गाओगे? आप सब यहां हमने पांच साल क्या किया उसके ही गीत गाये जा रहे हो, आप क्या करेंगे, उसके भी थोड़े-से गीत गाओ साथ में। बाकी, इच्छा है, आप गाते रहो, कोई बात नहीं क्योंकि मैं...(व्यवधान)

श्री सभापति : आर्डर प्लीज। हेमाराजी, आपका समय समाप्त।

श्री हेमाराम चौधरी : माननीय सभापति महोदय, मैं एक और निवेदन कर रहा था।

श्री सभापति : हां, बोल दो एक।

श्री हेमाराम चौधरी : जो कृषि भूमि पर ढाणियों में लोग रहते हैं, आबाद हैं, कृषि की भूमि पर बैठे हैं, ढाणी में बैठे हैं, इसके अलावा उनके रहने की कोई जगह नहीं है, पर इनको बिजली का

(श्री हेमाराम चौधरी)

कनेक्शन लेने के लिए फ्री-पोल की सुविधा नहीं है। एक भी फ्री पोल नहीं लग सकता है-उनके कनेक्शन में, 11 हजार रुपये देने पड़ते हैं। जबकि शहर के अन्दर अगर कनेक्शन किसी को लेना है, डोमेस्टिक कनेक्शन, तो तीन पोल फ्री हैं। और ग्रामीण क्षेत्रों में दो पोल फ्री हैं आबादी में जो बैठे हैं उनके लिए। कृषि की भूमि पर

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

जो बैठे हैं उसको आप एक पोल भी फ्री नहीं दे रहे हो। हमारे वहां तो सारे के सारे किसान अपने-अपने खेत में, कृषि भूमि में ढाणी बनाकर बैठे हैं, इसलिए इस नीति पर भी आप विचार करें। जो फ्री पोल की सुविधा है, दूसरों की तरह इनको भी दें। इन्होंने क्या ऐसा गुनाह किया है? वे अपनी भूमि पर बैठे हैं, आबादी की भूमि पर बैठे हैं। अतिक्रमी हैं, लोग सरकार की भूमि पर बैठे हैं अतिक्रमण करके और फिर नियमन करते हैं, फिर कनेक्शन भी देते हैं, लेकिन ये तो अपनी खुद की जमीन पर बैठे हैं और आप इनको कोई सुविधा नहीं दे रहे हैं।

श्री सभापति : समाप्त कीजिए, माननीय सदस्य।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, एक शिक्षा सहयोगियों के बारे में, शिक्षाकर्मी और पैराटीचर्स के बारे में मैं निवेदन करना चाहूंगा कि चुनाव के समय में आपने शायद उनको बहुत बड़े-बड़े आश्वासन दिये थे तो अब उनकी भी सुन लो न आप। लोक सभा के चुनावों के बाद में तो फिर आप क्या सुनेंगे? अभी आप शिक्षकों की भर्ती करने जा रहे हैं...(व्यवधान)

श्री सभापति : यह पहले कई बार उठ चुका है, अब आप समाप्त कीजिए। श्री लक्ष्मीनारायण दवे।

श्री हेमाराम चौधरी : शिक्षकों की भर्ती करने जा रहे हो, सभापति महोदय, शिक्षकों की भर्ती में उनको आप कैसे भर्ती करेंगे? मेरा आपसे अनुरोध है कि आप जो हाई कोर्ट में मामले वगैरह चलते हैं, इस तरह से ऐसे मत करो। प्रक्रिया इस प्रकार की बनाओ, शिक्षा मंत्रीजी बैठे हैं...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय श्री लक्ष्मीनारायण दवे। माननीय सदस्य, समाप्त कीजिए।

श्री हेमाराम चौधरी : एक मिनट कहना है। शिक्षा मंत्री महोदय, उनके लिए आप इंटरव्यू कर दो और अनुभव के अंक कर दो।

श्री सभापति : आर्डर।

श्री हेमाराम चौधरी : तो अनुभव के आधार पर आपको कोर्ट से भी कोई स्टे नहीं होगा और उनको आप...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : इस पर आप आम सहमति बना लो, कल्ला साहब से भी बात कर लो, मैं इस पर आप लोगों से बात करने के लिए तैयार हूं। आप से मिलकर नीति बनाने के लिए तैयार हूं, अगर आप लोग सहमत होते हैं तो उसी प्रकार की नीति बना दूं, उनसे बात कर लो।

श्री हेमाराम चौधरी : मैं तो आपसे यही हाथ जोड़ कर निवेदन करता हूं कि इनका 1200 रुपये में कब तक चलेगा? इन पर भी आप मेहरबानी करें, इनकी भी मदद करो।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सोजत) : माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में...

श्री घनश्याम तिवाड़ी : बैठ जाओ।

श्री हेमाराम चौधरी : माननीय सभापति महोदय, एक मिनट में ही खतम करता हूं। नर्मदा नहर और इन्दिरा गांधी नहर से बाड़मेर जिले में पीने के पानी और सिंचाई के लिए पानी का इस अभिभाषण में उल्लेख किया गया है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपका समय समाप्त हो चुका है। आप और किसी समय, या प्रस्ताव अपना लाइये। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी : मैं आपके माध्यम से निवेदन करता हूं कि दूसरी योजनाएं छोटी-मोटी हैं...(व्यवधान) इन पर जितना खर्चा होता है उससे कोई लाभ, हमारे तो इन दो योजनाओं से बाड़मेर जिले के लिए पीने के पानी का इन्तजाम कर दो, इससे ज्यादा और हमारे लिए तो कोई खुशी की बात नहीं हो सकती। इसमें उल्लेख किया है और मुझे विश्वास है, भरोसा है आप पर।

श्री सभापति : माननीय श्री हेमारामजी साहब, बिराजिए।

श्री हेमाराम चौधरी : आप करोगे तो सुख पाओगे और नहीं करोगे तो हमारी तरह आप भी दुःख पाओगे।

श्री सभापति : माननीय श्री लक्ष्मीनारायण दवे, प्रारम्भ कीजिए, दस मिनट का समय आपको दूंगा।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सोजत) : माननीय सभापति महोदय, इस पवित्र सदन में महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा दिये गये अभिभाषण के लिए जो धन्यवाद प्रस्ताव श्रीमान् नन्दलालजी मीणा ने रखा और जिस प्रस्ताव का समर्थन चूरू से आने वाले माननीय सदस्य श्रीमान् राजेन्द्र सिंहजी राठौड़ ने किया, मैं लोकतांत्रिक ढंग से परिवर्तन के लिए जनता के विवेक की प्रशंसा करता हूं, जनता को धन्यवाद देता हूं। प्रजातंत्र के अन्दर पूरे राजस्थान की जो मूलभूत समस्याएं-गांव की समस्याएं, किसानों की समस्याएं, बेरोजगारों की समस्याएं, शिक्षा की समस्याएं हैं, इन

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

समस्याओं के निवारण के लिये जनता ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार में विश्वास प्रकट किया और आज इस पवित्र सदन में 120 की संख्या में भारतीय जनता पार्टी आई है। मैं राजस्थान की जनता को इस पवित्र सदन के द्वारा धन्यवाद प्रेषित करना चाहता हूं।

माननीय सभापति महोदय, कांग्रेस की सरकार की परिपाटी रही है जनता को गलत नारों के आधार पर, धोखा देने की। पहले कांग्रेस सरकार ने "गरीबी हटाओ" का नारा दिया और जनता के साथ विश्वासघात किया। बाद में "रोटी, कपड़ा और मकान" के आधार पर जनता को गुमराह कर जनता का विश्वास प्राप्त करने की कोशिश की। जनता ने उनके गुमराह में आकर उन पर विश्वास किया। 56 साल के कार्यकाल में कांग्रेस की सरकार ने जनता के साथ विश्वासघात किया, महिलाओं के साथ विश्वासघात किया, बिजली के मामले में किसानों के साथ विश्वासघात किया। पूर्व मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत को टोडाभीम से आने वाले पूर्व माननीय सदस्य श्री रामस्वरूपजी मीणा ने इस पवित्र सदन में सम्राट अशोक की पदवी से सुशोभित किया, लौह पुरुष सरदार पटेल से अधिक शक्तिशाली के रूप में प्रकट किया। मैं पूछना चाहता हूं, माननीय सभापति महोदय, जनता ने प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अन्दर उनमें विश्वास प्रकट किया, कांग्रेस के विधायक ने अशोक सम्राट की पदवी दी, लौह पुरुष की पदवी दी, उस लौह पुरुष ने राजस्थान के गरीब और पिछड़े समाज के खोमचे वाले हैं, जो गांव के गरीब व्यक्ति हैं, शहरों के अन्दर जो कमजोर वर्ग के तबके हैं उन लोगों पर बुलडोजर चलाकर बहुत बड़ा अन्याय किया, अत्याचार किया।

माननीय सभापति महोदय, तत्कालीन मुख्य मंत्रीजी के समय में महिलाओं पर राजस्थान के अन्दर अत्याचार हुए हैं। मैं बताना चाहता हूं कि कांग्रेस के शासन के अन्दर किशनगढ़ में दो बालिकाओं पर तेजाब डाल कर घृणित कृत्य किया गया। तेजाब डालने के पश्चात् तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उन लोगों का पक्ष लेकर यह बात बतायी मुलजिमों के लिये कि वे मुलजिम मानसिक रूप से क्षतिग्रस्त थे, मानसिक रूप से पागल थे।

माननीय सभापति महोदय, अजमेर का अश्लील फोटो काण्ड पूरे राजस्थान में ही नहीं हिन्दुस्तान में चर्चित हुआ। राजस्थान की जनता को नीचा देखना पड़ा। अश्लील फोटो काण्ड के अन्दर जो मुलजिम थे वे कांग्रेस के पदाधिकारी थे।

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां) : बूंदी में क्या हुआ था? समाज कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष...(व्यवधान) मैं पूछना चाहता हूं आपके माध्यम से...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बीच में नहीं। (व्यवधान)

श्री रामनारायण मीणा : कांग्रेस का मैम्बर था, कब फार्म भरा? मैं तो कहता हूं, अलवर काण्ड में समाज कल्याण बोर्ड की...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बिराजिये। (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : माननीय सभापति महोदय, इसी पवित्र सदन के पूर्व सदस्य, कांग्रेस विधायक ऐसी घृणित, ऐसी अश्लील हरकत, चकला चलाने के लिये जिनके ऊपर मुकदमे हुए, अशोक गहलोत को सम्राट अशोक की पदवी देने वाले, पूरा राजस्थान ही नहीं हिन्दुस्तान शर्मसार हो गया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विधान सभा क्षेत्र की जनता ने उन पर विश्वास कायम किया और इस प्रकार के घृणित कृत्य किये कि राजस्थान की जनता को शर्मसार होना पड़ा।

माननीय सभापति महोदय, राजस्थान के अन्दर तोगड़िया साहब ने जो हमारे आराध्य देव और इष्ट देव भगवान शंकर का त्रिशूल है, उस त्रिशूल की दीक्षा का कार्यक्रम राजस्थान में किया। एक अच्छा कार्यक्रम था, भगवान की पूजा का कार्यक्रम, अच्छे संस्कार देने वाला कार्यक्रम था। उस कार्यक्रम ने 1975 की याद ताजा कर दी। 1975 के अन्दर तत्कालीन कांग्रेस की केन्द्र सरकार ने पूरे हिन्दुस्तान के अन्दर आपातकाल की व्यवस्था लागू की, उसी तरह एक काला कलंक राजस्थान की प्रजातांत्रिक व्यवस्था पर उन्होंने लागू किया। अशोकजी गहलोत ने दीक्षा कार्यक्रम के ऊपर भाई प्रवीणजी तोगड़िया को, जो भारतीय संस्कृति, हिन्दू संस्कृति... (व्यवधान) प्रवीण भाई तोगड़िया को गिरफ्तार किया गया। माननीय सभापति महोदय, इसी तरह से तत्कालीन मुख्य मंत्री...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बिराजें।

श्री श्रवण कुमार : खाने में अशोकजी, तोगड़िया में भी अशोकजी, पागल नहीं हो जाएं। (व्यवधान)

श्री सभापति : बिराजिये आप। आप बिराजिये। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : आपको अशोकजी शब्द से एलर्जी है क्या? आपको अशोकजी शब्द से डर लग रहा है क्या? (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय बंशीवालजी, बिराजिये। समाप्त कीजिये।

श्री बीरूसिंह राठौड़ (बनीपार्क) : +++ (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : माननीय सभापति महोदय, बहुत बढ़िया बोल रहे हैं, थोड़ा और टाइम दिया जाए।

+++ अभिव्यक्ति अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित की गयी।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : माननीय सभापति महोदय, जिस वक्त राजस्थान चार वर्षों से अकाल से जूझ रहा था, क्षेत्र की जनता...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी : +++ इसको एक्सपंज किया जाए। एक्सपंज किया जाए। (व्यवधान)

श्री सभापति : इसको कार्यवाही से निकाल दे।

श्री हेमाराम चौधरी : पहले वाला जो बोला है न वह भी निकालो आप। उन्होंने बोला है वह भी निकालो। (व्यवधान)

श्री सभापति : दोनों पक्षों ने जो बातें कही हैं वह निकाल दीजिये।

एक माननीय सदस्य : +++

श्री सभापति : आप प्रारम्भ कीजिये।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने सौन्दर्यीकरण के नाम पर 6 शहरों में 1560 करोड़ रुपये लगाकर ए.डी.बी. का लोन लिया। जोधपुर के अन्दर 14-14 लाख के फव्वारे लगाये गये। सड़कों का और शहर का सौन्दर्यीकरण का कार्य किया गया जबकि जोधपुर के पड़ोस में सोजत विधान सभा क्षेत्र पड़ता है जहां की 60 प्रतिशत जनता फ्लोराइड का पानी पीती है। राजस्थान के मुख्य मंत्री ने सौन्दर्यीकरण के नाम पर 1560 करोड़ का कर्ज लेकर राजस्थान की गरीब जनता का पैसा बरबाद किया जबकि गांवों अन्दर अकाल का भयंकर संकट था, गांव के गरीबों को, गांव के अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को अकाल के समय पर्याप्त रूप से मजदूरी नहीं मिल रही थी।

(व्यवस्था-सूचक घंटी)

ऐसे समय में राजस्थान के तत्कालीन मुख्य मंत्री...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय तगारामजी।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : सौन्दर्यीकरण के नाम पर लोन लेकर पैसा खर्च कर रहे थे।

माननीय सभापति महोदय, रोजगार का जहां तक सवाल है, राजस्थान की तत्कालीन सरकार ने अपने मेनिफेस्टो में यह घोषणा की थी कि 60 वर्ष की आयु से 58 वर्ष की आयु की जाएगी जिसके पश्चात् नौजवान व्यक्तियों में, बेरोजगार व्यक्तियों में एक आशा का संचार हुआ था, एक विश्वास हुआ था कि राजस्थान के बेरोजगार व्यक्तियों को, नवयुवकों को रोजगार दिया जाएगा। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि एक व्यक्ति को भी रोजगार नहीं दिया गया, एक व्यक्ति को भी काम पर नहीं लगाया गया। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं सदन की नेता को भारतीय जनता पार्टी की मुख्य मंत्री को जिन्होंने आते ही 100 दिवस के अन्दर राजस्थान की

+++ अभिव्यक्ति अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित की गयी।

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

जनता को यह विश्वास दिलाया कि एक लाख बेरोजगार नवयुवकों को रोजगार दिया जाएगा, उनको बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा।

श्री सभापति : माननीय दवे साहब, समाप्त कीजिये। माननीय तगारामजी।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि बिजली का जहां तक प्रश्न है, गत कांग्रेस सरकार ने टी एण्ड डी लोसेज परसेंटेज गिराने का 2007 तक का जो एग्रीमेंट किया उस एग्रीमेंट से 1700 करोड़ रुपये की टैरिफ बढ़ा दी।

श्री सभापति : माननीय दवे साहब, आपका समय समाप्त हो गया।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : कुओं की टैरिफ बढ़ायी गयी, लोड पर रेट बढ़ायी गयी, स्थायी चार्ज अलग से लगा दिया गया, स्थायी विद्युत शुल्क अलग से लगा दिया गया। पोल की 1500 रुपये प्रति पोल जो राशि थी वह 3000 रुपये कर दी गयी।

श्री सभापति : माननीय दवे साहब, समय समाप्त हो गया। 5 मिनट से 10 मिनट था, 15 मिनट दे दिये।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान की वर्तमान सरकार ने, राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी ने सोजत विधान सभा क्षेत्र में नेशनल हाई-वे के पास में जो फेरे आये हुए हैं उन फेरों को...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय दवे साहब, आप समाप्त कीजिये।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : ट्रामा इकाई लगाने के लिए जो व्यवस्था की, मैं धन्यवाद देना चाहता हूं राजस्थान की सरकार को।

श्री सभापति : फिर मौका मिलेगा आपको, अब समाप्त कीजिये।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इस अकाल के समय में जब राजस्थान का किसान, राजस्थान का मजबूर, बेरोजगार व्यक्ति, राजस्थान की माताएं और बहनें व्यथित थीं उस वक्त 22 हजार किलोमीटर की यात्रा कर राजस्थान की जनता की समस्या को समझा।

श्री सभापति : दवे साहब, समाप्त कीजिये।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे : किसान की समस्या को समझा, अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की समस्या को समझा। इसी का परिणाम यह 100 दिन की कार्य योजना है।

श्री हेमाराम चौधरी : सभापति महोदय, संसदीय मंत्रीजी नींद ले रहे हैं। (व्यवधान)

श्री तगाराम चौधरी (बाड़मेर) : सभापति महोदय, आपने मेरे को महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने की अनुमति दी, मैं इसका स्वागत करता हूं। मान्यवर, इस नये सदन में आकर जो नयी-नयी बातें देखीं, राजस्थान सरकार द्वारा 100 दिन की योजना बनायी गयी और अभिभाषण में भी राजस्थान को आगे बढ़ाने के लिए जिस प्रकार से महामहिम राज्यपाल महोदय ने उल्लेख किया, मैं इसकी बहुत प्रसन्नता करता हूं।

पूर्व की श्री अशोक गहलोत की सरकार ने कर्मचारियों के सम्बन्ध में ऐसा चक्कर चलाया कि उस चक्कर में आकर 5 साल निकाल दिये। एक राजीव गांधीजी के नाम पर विद्यालय खोलने का चक्कर चलाया। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा, मान्यवर, कोई आदेश ही नहीं। राजीव गांधी पाठशालाओं का न तो स्वीकृति आदेश निकला औपचारिक रूप से और न उनको लेने के लिए कोई नियम बना, न कोई ले रहा है। कौन नहीं ले रहा है, इसका जीता-जागता उदाहरण मैं आपसे निवेदन करूं। तत्कालीन मुख्य मंत्रीजी बाड़मेर पधारे थे और कर्मचारियों के प्रतिनिधियों ने जाकर उनसे निवेदन करना चाहा था। उनका संगठन बना, यूनियन बनी। वहां गये तो तत्कालीन मुख्य मंत्रीजी ने उनको कहा, कौन हो तुम, किसने रखा तुमको, भाग जाओ यहां से, नहीं तो पुलिस बुलाता हूं। ऐसा किया। (व्यवधान) हेमारामजी का उसमें कुछ नहीं है।

तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस तरह से एक चक्कर चलाया 5 साल निकालने का वह तो सबने चलाया है। उन्हीं कर्मचारियों को बाद में अकाल प्रबन्धन में नोडल अधिकारी बना दिया। मेरे को बड़ी हंसी आ रही थी कि यह है क्या। मैं उनसे पूछता रहता था, मैंने कहा कि कोई आदेश है? कि आदेश कोई नहीं है, जबानी आदेश है। जबानी आदेश पर सरकार चलती थी और बड़े राजी होते थे। राजस्थान की जनता ने इनको इतना प्रचण्ड बहुमत दे दिया था जो आज तक नहीं दिया था इसलिए जबानी सरकार क्यों नहीं चलती? चलती रही।

यह एक ही उदाहरण नहीं है। अकाल का प्रबन्धन बड़ा जोरदार किया। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज तक एक माह में दो पखवाड़े होते हैं, कभी तीन पखवाड़े नहीं देखे गये, पर इनके राज में था। क्यों था? इसलिए कि गेहूं तो बांटने नहीं। कुल नाड़ियों पर मस्टररोल भेज देना और मस्टररोल भेज कर नोडल अधिकारी को अधिकार दे दिया, वह चाहेगा वह लगेगा और 10 दिन लगेगा। उसमें से एक दिन तो मस्टररोल भरने का था और 9 दिन में 2 दिन झगड़े के थे। 10 में से 7 दिन लगेगा। 7 दिन लगाकर आंकड़े भेजते थे

(श्री तगाराम चौधरी)

कि इतने लगा दिये, इतने को रोजगार दे दिया अकाल में और अकाल प्रबन्धन हो गया। हो गया। वह तो अभी सभी ने कहा कि कैसे हो गया, कैसे नहीं हुआ, तो पता पड़ा। लेकिन पता पूरा नहीं पड़ा।

श्री श्रवण कुमार : अकाल पर बोल रहे हो या इस पर?

श्री तगाराम चौधरी : कर्मचारियों के बारे में वर्तमान हमारी पार्टी की सरकार, वसुन्धराजी की सरकार द्वारा, राज्यपाल महोदय के भाषण में उल्लेख है कि लगभग एक लाख युवाओं को रोजगार पर लगाया जाएगा जिसमें कर्मचारी भी शामिल हैं, इस बात की मैं प्रशंसा करता हूं।

बहुत नयी बात मेरे को देखने को मिली, महिलाओं के बारे में कल्याणकारी योजनाओं का जिक्र किया गया है। एक बात की बड़ी खुशी है कि पहली बार राजस्थान में माननीय मुख्य मंत्री वसुन्धराजी जैसी बड़ी अनुभवी, दूरदर्शी और कर्मठ मुख्य मंत्री हम को मिली है। इन्होंने परिवर्तन यात्रा चलायी। परिवर्तन नाम और परिवर्तन यात्रा का नाम सुनकर मेरे को बहुत प्रसन्नता हुई, मैंने उनके बाड़मेर आगमन पर इस बात पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की कि यह नाम खोजा गया है, बहुत अच्छा है।

बड़ी खुशी की बात है कि अभी जमाने के बाद चल रही थी चिलचिलाती धूप में, धूलभरी आंधियों में, लू की परवाह नहीं कर जनता की सुध लेने के लिए पूरे राजस्थान में जगह-जगह, गांव-गांव घूमना, यह कोई कम बात नहीं है। मैं तो अभी सुन रहा था, कह सकते हैं कि मैं पहली बार आया हूं इस सदन में, लेकिन सदन में पहली बार भले ही आया हूं, सदन बहुत देखा है। जब से सदन बनते थे, पास ले-लेकर देखता था। अभी कहा जा रहा था, प्रधानमंत्रीजी नहीं आये, वो नहीं आये, लेकिन वहां के चुने हुए विधायक, मैं किसी का नाम नहीं लेता, वो नहीं गये कहीं पर भी। मुख्य मंत्रीजी कहां गये थे? कहीं नहीं गये, केवल सोनियाजी का एक कार्यक्रम रखवाया था और जनता झांकती रही।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री तगाराम चौधरी : बस इतना ही टाइम दोगे?

श्री सभापति : बोलिये, आधा मिनट बोलिये आप।

श्री तगाराम चौधरी : नहीं, आधा मिनट नहीं।

इस राजस्थान की तकदीर सुधरने का एक मौका आया है।

श्री सभापति : संक्षेप में जो बात आप कहना चाहें, वह कह दीजिये।

श्री तगाराम चौधरी : मैंने संक्षेप का कभी नाम नहीं लिया और आप बोलने नहीं देते हो।

श्री श्रवण कुमार : सभापति महोदय, बाड़मेर से जैन साहब आते थे...(व्यवधान)

श्री सभापति : चाहे बाड़मेर हो, चाहे झुंझुनूं हो, हमारे लिए बराबर है।

श्री तगाराम चौधरी : किसी ऐसे व्यक्ति का पगफेरा हो जाता है, वहां पर सारी बातें होती हैं। बरसात हुई, वसुन्धराजी और बरसात और जमाना आया।

श्री श्रवण कुमार : सभापति महोदय, जैन साहब की जगह तो नहीं आये? वो भी ऐसे ही बोलते थे। उनकी जगह ही आये हैं क्या?

श्री सभापति : आप व्यवधान नहीं कीजिये, उनको बोलने दो आप। आप इनका दो मिनट क्यों ले रहे हो?

(15.00 बजे)

श्री तगाराम चौधरी : अब मैं उसके आगे यह कह रहा हूं, मुझे बहुत प्रसन्नता है इस बात को कहते हुए कि इस कारण से हमारे राजस्थान के भविष्य में आगे बढ़ने का समय आया है इसलिए तेल निकला है। 50 हजार गैलन एक दिन में एक कुएं में तेल निकलता है जो कि मेरी ढाणी के पास में है। मैं इसके लिए सदन को बधाई तो देता ही हूं, बल्कि वहां के लिए आमंत्रित भी करता हूं कि आप सब वहां पधारें कभी अवसर लेकर और देखें उन कुओं को जो कि मेरी ढाणियों के नजदीक हैं, मैं सबका स्वागत करूंगा। इस बारे में मैं यह भी निवेदन करूंगा कि चाहे किसी भी तरह से हो, लेकिन रिफाइनरी बाड़मेर में खुलनी चाहिए। उससे राजस्थान को बहुत लाभ होगा, यहां की जनता को भी बहुत लाभ होगा। तेल कहीं दूर से थोड़े ही लाएंगे। यहां तो वितरण होगा ही, रायल्टी और पता नहीं क्या-क्या है वह सारा राजस्थान की सरकार को मिलेगा। यह बहुत ही अच्छी बात है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, अब आप समाप्त कीजिए।

श्री तगाराम चौधरी : एक तेल की बात से ही समाप्त कर दूं? पानी के बारे में इन्होंने क्या किया, वह नहीं बोलूं?

श्री सभापति : माननीय डा. सुरेश चौधरी।

श्री तगाराम चौधरी : इतने प्रचण्ड बहुमत से जीती हुई कांग्रेस पार्टी की अशोकजी गहलोत सरकार ने पांच साल तक बाड़मेर और जैसलमेर के लिए पानी के बारे में कुछ नहीं किया। यहां पर अभी विश्नोईजी बैठे हुए थे, अभी तो पधार गये, कुछ नहीं किया। एक मोहनगढ़-बाड़मेर नहर की लिफ्ट पेयजल योजना का शिलान्यास कर दिया। (व्यवधान) इसके साथ ही मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव का पुरजोर शब्दों में समर्थन करता हूं।

श्री सभापति : श्री सुरेश चौधरी।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा) : माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा में हिस्सा लेने का वक्त दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। साथ ही राजस्थान विधान सभा की पहली महिला अध्यक्ष बनी हैं माननीय सुमित्रा सिंहजी, उनको ढेर सारी बधाई देता हूं। उनको शुभकामनाएं देता हूं कि वे सिर्फ इस राज्य में ही नहीं, इस पद पर रहते हुए पूरे देश में नये कीर्तिमान स्थापित करें। इसके साथ ही बारहवीं विधान सभा में नव निर्वाचित अपने-अपने क्षेत्र के लोकप्रिय माननीय सदस्यों को भी उनके निर्वाचन पर बधाई देता हूं तथा सत्तापक्ष के सदस्यों को पांच साल बाद सत्तासीन होने की बधाई देता हूं। इसके साथ दिल्ली प्रदेश के जनप्रिय नेता रहे माननीय मदन लालजी सुराना का भी धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने महामहिम राज्यपाल के रूप में राजस्थान की बारहवीं विधान सभा के प्रथम सत्र में हमारे बीच आकर अभिभाषण दिया।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वक्तव्य देते हुए मैं सबसे पहले सरकार का आभार प्रकट करता हूं कि सरकार ने आते ही मेरे विधान सभा क्षेत्र की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना राजीव गांधी सिद्धमुख-नोहर सिंचाई परियोजना को महत्व दिया, सरकार ने इसकी तरफ ध्यान दिया। मैं उम्मीद करता हूं कि इस परियोजना से सम्बन्धित हर कार्य को निश्चित समय सीमा में दृढ़ इच्छाशक्ति व नेकनियति से पूरा किया जाएगा।

महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी तारीफ की जानी चाहिए, लेकिन साथ ही कुछ ऐसी भी समस्याएं हैं जिनको छुआ तक नहीं गया। सभापति महोदय, जैसे सम्भागीय व जिला चिकित्सालयों में आधुनिकीरण के लिए विशेष ध्यान दिया गया, वहीं मेरा यह मानना है कि प्रत्येक विधान सभा क्षेत्र में कम से कम एक कम्प्लीट हास्पिटल होना चाहिए जिसमें कम से कम एक-एक स्त्री रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ, अस्थि-जोड़ रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ, जनरल सर्जन, जनरल फिजीशियन, एक एनेस्थीसिस्ट व एक रेडियोलाजिस्ट हो। आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एक आपरेशन थियेटर, नवजात शिशुओं के लिए नर्सरी तथा डिलीवरी के लिए आधुनिक सुविधाओं वाला लेबर रूम हो। साथ ही वहां नियुक्त चिकित्सकों के लिए सरकारी अस्पताल परिसर में ही आवास सुविधा की व्यवस्था हो। सभापति महोदय, सत्तापक्ष के सदस्यों को, माननीय मंत्रीजी बैठे हुए हैं उनको कहना चाहता हूं, बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है, यह सिर्फ प्राप्त की ही नहीं, पूरे देश की समस्या है। ग्रामीण भारत के स्वास्थ्य की रीढ़ कहे जाने वाले गांव में कार्यरत तथाकथित थैला छाप बिना डिग्री व डिप्लोमाधारी

(डा. सुरेश चौधरी)

जो लोग हैं, उन पर काबू पाना किसी भी सरकार के बूते से बाहर होता जा रहा है। जो लोग वर्षों से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, मेरी आपके माध्यम से सरकार से मांग है, उनको एक निश्चित समयावधि का प्रशिक्षण निर्धारित शुल्क लेकर दिया जाए तथा तहसील मुख्यालय तक के इलाकों में निश्चित दवाओं के साथ प्राथमिक उपचार के लिए अधिकृत किया जाए क्योंकि सरकारी स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाएं हर गांव-ढाणियों, मजरों में उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं।

माननीय सभापति महोदय, सदन की नेता और विधान सभा की अध्यक्ष दोनों महिलाएं हैं, लेकिन राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कन्या भ्रूण हत्या जो इस देश की सबसे बड़ी समस्या है, उसका जिक्र तक नहीं किया गया। यही हाल रहा तो स्त्री-पुरुष अनुपात इतना बिगड़ जाएगा कि हमारे समाज का चेहरा कुरूप हो जाएगा। समस्या इतनी विकराल हो जाएगी कि हमारा सामाजिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो जाएगा। अपराध इतने बढ़ जाएंगे कि जिन्हें नियंत्रित करना असम्भव हो जाएगा। सदन की नेता व अध्यक्ष दोनों महिला हैं, राज्य के समाज सुधारक इनसे और सरकार से उम्मीद रखते हैं कि कन्या-भ्रूण हत्या निरोधक कानून का कड़ाई से पालन कराया जाए तथा दोषियों को अभी जो सजा का प्रावधान है उससे भी कड़ी सजा दी जाए ताकि कोई भी यह दुस्साहस न कर सके।

(13.07 बजे)

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

अध्यक्ष महोदय, मेरा शिक्षा के मामले में यह कहना है कि 10+2 सीनियर हायर सैकण्डरी विद्यालय जो हैं उनमें विज्ञान संकाय खोला जाए। महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में सरकारी महाविद्यालयों खोलने का कोई उल्लेख नहीं किया। मेरा मानना है कि प्रत्येक विधान सभा क्षेत्र में कम से कम एक सरकारी महाविद्यालय होना चाहिए, क्योंकि तहसील स्तर पर सरकारी महाविद्यालय नहीं होने से गरीब किसानों के लड़के लड़कियां निजी महाविद्यालयों की भारी भरकम फीस चुकाने में असक्षम हैं और उनको हायर एजुकेशन से वंचित रहना पड़ता है। साथ ही मेरा यह मानना है कि शिक्षा आज निजी क्षेत्र में व्यवसाय का रूप ले चुकी है, व्यापार बन चुका है जिससे इसमें अन्धाधुंध अनियमितताएं हो रही हैं। चाहे स्कूल शिक्षा का मामला हो, चाहे महाविद्यालय शिंक्षा का मामला हो, चाहे विश्वविद्यालय शिक्षा का मामला हो, हर तरफ अनियमितताओं का इन दिनों बड़ा बोलबाला है। प्रेस में निजी शिक्षक संस्थाओं की अनियमितताओं का बरबान हो रहा है। मैं आपके माध्यम से सरकार

(डा. सुरेश चौधरी)

से यह मांग करता हूं कि सरकार दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कठोर कदम उठाए। मेरे विधान क्षेत्र में भी सरकारी महाविद्यालय नहीं है, मेरी आपके माध्यम से सरकार से मांग है कि मेरे विधान सभा क्षेत्र में अगले शिक्षा सत्र से सरकारी महाविद्यालय खोलने की कार्य योजना पर विचार किया जाए और उसको अमली जामा पहनाया जाए।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में बेरोजगारों को रोजगार या बेरोजगारी भत्ता देने की बात कही गयी है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप अपना भाषण दस मिनट बोल चुके हैं, अब कनक्लूड करने की कोशिश करिये।

डा. सुरेश चौधरी : अध्यक्ष महोदय, मेरे को सिर्फ चार मिनट हुए हैं, आपके आने से जस्ट पहले मैं बोलने लगा हूं।

श्री अध्यक्ष : आपने तीन बजे बोलना प्रारम्भ किया था इसलिए कनक्लूड करें।

डा. सुरेश चौधरी : नहीं, नहीं, अध्यक्ष महोदय, चार मिनट हुए हैं, आप किसी को भी पूछ सकते हैं सदन में।

श्री अध्यक्ष : किसी को, किसको पूछूं, यहां लिखा हुआ है।

डा. सुरेश चौधरी : नहीं, नहीं, अध्यक्ष महोदय, अभी दो मिनट में कर देता हूं।

मैं राज्य के पढ़े-लिखे बेरोजगार नौजवानों की तरफ से सरकार को धन्यवाद देता हूं, लेकिन साथ ही, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि गांव का जो अनपढ़ बेरोजगार नौजवान है उसके लिए महाराष्ट्र की तर्ज पर काम का अधिकार दिया जाए। Able bodies be given right to work otherwise they will be tempted to indulge in destructive activities.

अध्यक्ष महोदय, पेयजल के लिए अलग से विभाग बनाकर राजस्थान की जो सबसे बड़ी समस्या है उसकी चिन्ता सरकार ने की, उसके लिए सरकार का धन्यवाद। साथ ही मैं सरकार से मांग करता हूं कि जहां तक हो सके, अगले पांच साल में हर घर तक पीने का पानी पहुंचाने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ काम किया जाए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार का कहना है कि किसी को भूखे नहीं सोने दिया जाएगा, लेकिन मेरे विधान सभा क्षेत्र में अकाल राहत के कार्य करने वाले और करवाने वाले सैकड़ों लोग निजी आवास और कुओं के निर्माण के बाद अब धरने पर कई दिनों से भूख बैठे हैं क्योंकि उस क्षेत्र के कर्मचारियों और अधिकारियों ने अकाल राहत के कार्यों में भ्रष्टाचार किया जिससे उनके मस्टररोलों का भुगतान नहीं हो पाया। मेरी आपके माध्यम से सरकार से मांग है कि उनका तुरन्त भुगतान कराया जाए।

(डा. सुरेश चौधरी)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इंडिपेंडेंट जीत कर आया हूं और पहली बार आया हूं, आपका प्रोटेक्शन चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : आप अब समाप्त करें।

डा. सुरेश चौधरी : आधा मिनट। मेरे कुछ सिद्धान्त हैं उनके आधार पर मैं कहना चाहता हूं। कोई सही काम करे उसकी तारीफ होनी चाहिए, लेकिन अगर कोई गलत काम करे तो उसकी आलोचना में भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए, चाहे वह सत्ता पक्ष हो या प्रतिपक्ष। मैं पौने दो लाख जनता का प्रतिनिधि बनकर यहां आया हूं और भले ही वे किसी पार्टी के हों...

श्री अध्यक्ष : सब प्रतिनिधि बनकर आये हैं।

डा. सुरेश चौधरी : मैं यही मानकर यहां खड़ा हुआ हूं और मेरा मकसद रहेगा कि मैं उनकी समस्याओं को वहां से यहां तक पहुंचाऊं और उनका समाधान आप सभी माननीय सदस्यों के माध्यम से कर सकूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आखिर में मैं कहना चाहता हूं, शुरू में आया उस दिन भी मैंने कहा था, मैं यह चाहता हूं कि यहां जनहित के मुद्दों पर ज्यादा से ज्यादा चर्चा होनी चाहिए, स्वस्थ वाद-विवाद होना चाहिए। पिछले दिनों के सदन के माहौल से मुझे नहीं लगा कि यहां गरीब जनता की खून-पसीने की गाढ़ी कमाई का सदुपयोग हो रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष अपनी मांग पर अड़े, यह समझ में आता है, लेकिन सत्ता पक्ष का व्यवहार भी प्रतिपक्ष का-सा कभी नहीं होना चाहिए। सुनने की आदत सत्ता पक्ष को डालनी चाहिए, इसी में सत्ता पक्ष का बड़प्पन है। सत्ता पक्ष के कई सदस्यों ने पिछले दिनों यहां कहा...

श्री अध्यक्ष : यह उपदेश देने के लिए सदन का आसन है, आप यह उपदेश न दें, अपनी बात कहें। आपको पन्द्रह मिनट होने आये हैं, कनक्लूड कर दीजिए।

डा. सुरेश चौधरी : सिर्फ पन्द्रह सैकण्ड। पिछले दिनों मैं सत्ता पक्ष के कई सदस्यों से सुन रहा था, मैं एक बार भी नहीं उठा बीच में...

श्री अध्यक्ष : आप अपनी बात कहें।

डा. सुरेश चौधरी : उन लोगों ने कहा कि 1 दिसम्बर, 2003 से पहले आज का जो प्रतिपक्ष है वह सत्ता के नशे में मदहोश था इसीलिए 156 से 56 आ गये, मैं यह चाहता हूं, कहीं आप भी सत्ता के नशे में मदहोश नहीं हो जाएं और 120 से 20 पर नहीं आ जाएं।

श्री अध्यक्ष : आपको क्या परेशानी है 156-56 की? आप तो निर्दलीय हैं, आपको क्या बास्ता है 156 और 56 से?

डा. सुरेश चौधरी : हमें दोनों से ही वास्ता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हम बीच के हैं। मैंने कुछ सुझाव दिये हैं, मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि मेरे सुझावों को अमली जामा पहनाया जाए। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : श्री रामचन्द्र सराधना।

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): माननीय अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर इस चर्चा में मैं शामिल हो रहा हूं। आपने मुझे समय दिया इसके लिए मैं आपको आभार प्रदर्शित करता हूं। मान्यवर, राज्यपाल महोदय का अभिभाषण सत्ता पक्ष की कार्य योजना का, उनकी भावनाओं का, उनकी रीति–नीतियों का खुलासा करता है, यह समझकर हमने भी इसको पढ़ा। सुना था कि इसमें सरकार की तरफ से कोई बातें कही गयी होंगी और यहां दो–तीन दिन से जो चर्चा चल रही है इसमें इस बात पर भी विचार किया होगा। इसकी कार्य योजनाओं पर, इसके कार्यक्रमों पर ध्यान देने के बजाए ज्यादा इस पर विचार किया जा रहा है, नये माननीय सदस्य जो आये हैं वे ज्यादातर यह चर्चा करते हैं कि आप कम हो गये, हम ज्यादा में आ गये। मैं माननीय सदस्यों को, माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि हम भी उधर जब बैठते थे यूं ही करते थे, हमारी जो स्थिति हुई वह आपकी भी हो जानी है। इसमें ज्यादा गरूर करने की जरूरत नहीं है क्योंकि जनता की बात है।

मान्यवर, महामहिम राज्यपाल महोदय के द्वारा इस अभिभाषण में बहुत सारी बातें कहलवा ली गयीं जो संकीर्णता का प्रतीक है। अभिभाषण के पेज नम्बर–1 के बिन्दु संख्या दो पर कहा, राजस्थान की महान जनता द्वारा लोकतांत्रिक ढंग से सरकार के परिवर्तन की प्रशंसा की गयी है। हमेशा यहां तो सरकारों का परिवर्तन लोकतांत्रिक तरीकों से ही होता है, हमारा भी लोकतांत्रिक तरीके से ही परिवर्तन हुआ था जब हमारी सरकार बनी थी और आगे भी ऐसा ही होगा। यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी। अन्य किसी ढंग से सरकारों का परिवर्तन हो, किंचित मात्र भी यहां पर इसकी गुंजाइश नहीं है। मान्यवर, भारतीय जनता पार्टी की सरकार जब आती है तब ऐसा ही करती है। इसमें कहां अंधियारे से उजाले की ओर आये हैं? अंधियारा किया किसने था?

अनेक माननीय सदस्य : आपने।

श्री रामचन्द्र सराधना : अंधियारा यदि हमने कर दिया था तो भैरोंसिंहजी शेखावत क्यों चले गये थे? हमने तो बाद में अंधियारा किया था। मान्यवर, गौर से सुनने की बात है इसमें, केवल मात्र बहस करने की बात नहीं है।

श्री अध्यक्ष : बीच में टोका–टाकी नहीं करें। सत्ता पक्ष के माननीय सदस्य, बीच में टोका–टाकी नहीं करें।

श्री रामचन्द्र सराधना : अंधियारा करने की बात यूं थी कि पांच वर्ष तक हमारी सरकार ने जो काम किया उसमें कुछ कमियां रही हैं, कुछ खामियां रही हैं, हम उसको स्वीकार करते हैं, जनता के इस फैसले को शिरोधार्य करते हैं। उन्हीं के कारण आप लोगों को मौका मिला है। हम उन कमियों को ठीक करेंगे, हम उनको सुधारेंगे, लेकिन इससे यह तो नहीं माना जा सकता जो आप बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं कि वसुन्धराजी के आने के बाद ऐसा हो गया। पहले ऐसा भी कहा करते थे कि राजस्थान का एक ही सिंह, भैरोंसिंह, भैरोंसिंहजी 33 में सिमट गये थे। जनता का आशीर्वाद बहुत बड़ा होता है, इसको पाने के लिए आप सबको विचार रखना चाहिए और संकीर्णता को छोड़ देना चाहिए।

मैं निवेदन करना चाहता हूं, जब-जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार आती है तो वह अंधियारे से उजाले की ओर ही आती है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार चली जाती है तो राष्ट्र में भी अन्धेरा हो जाता है और प्रदेश में भी अन्धेरा हो जाता है। ऐसा है नहीं। यह संकीर्णता की बात है। केवल मात्र एक पार्टी के नाम से सरकार जो चले, उसमें तो उजाला हो जाए और बाकी अन्धेरा हो जाए, यह बात चलने वाली नहीं है। इसमें आपको थोड़ा सा विचार कर लेना चाहिए।

मान्यवर, 100 दिन की कार्य योजना दी। इसमें हमने आदि से अन्त तक देख लिया कहीं कोई कार्य-योजना का लेखा जोखा नहीं है। कार्य योजना में कोई विजन नहीं है। विजन है तो केवल मात्र अधिकारियों का है जिनको बुला-बुलाकार माननीय मुख्य मंत्री महोदय द्वारा कहा गया है कि आप अपनी कार्य-योजना बनाकर लाओ कि आप 100 दिन में क्या कर सकते हो। वे अपनी इच्छा से जो करके ला रहे हैं किसी पर कलम फेरी जा रही है, किसी को काटा लगाया जा रहा है, इधर से उधर किया जा रहा है। सरकार का विजन नहीं है इसमें। सरकार का विजन देखा जाए तो आपका मेनिफेस्टो है, उस मेनिफेस्टो के किये हुए कामों का उल्लेख इसमें है नहीं। जो आना चाहिए था, अपेक्षित था, सारे राजस्थान की जनता इस बात को देखना चाहती थी कि सौ दिन में इनकी कार्य-योजना क्या है। आपने उसमें लेखा-जोखा नहीं किया। हां, उसमें लेखा-जोखा तो नहीं है लेकिन उसमें कुछ छिपी हुई बातें जरूर हैं और वे दिख रही हैं। सौ दिन में आपको जो करना है, आपकी बहुत पुरानी आदत है, बी.जे.पी. की सरकार जब-जब आती है, नाम बदलकर ही काम चला लेती है। जनता पार्टी के नाम पर 1977 में सरकार बनी थी केन्द्र में, सबसे पहले आते ही उन्होंने काल-पात्र को खोदा था कि इन्दिरा गांधी ने कहीं अपने नाम पर, काम पर,

(श्री रामचन्द्र सराधना)

वंश पर, अपने कुटुम्ब पर तो कोई बात नहीं लिख दी है। मोरारजी देसाई जब प्रधानमंत्री थे खोदकर देखा गया था तो मिला कुछ भी नहीं। उन्होंने कहा जल्दी से...

श्री जीतमल खांट : देश की गरीब जनता ने पहली बार गेहूं की रोटी खाने का काम किया था। होली-दीपावली पर हम लोग गेहूं खाते थे। देश का इतिहास बदला है मोरारजी देसाई के कार्यकाल में आपके जमाने में माइलो खिलाया जाता था गरीब आदिवासी के घर में, यह बात आप भूल गये?

श्री रामचन्द्र सराधना : माननीय सदस्य, मेरे प्रसंग को नहीं समझ पाये। मैं प्रसंग दूसरा दे रहा था। काल पात्र को खोदा गया था। उसके बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी, सबसे पहले इन्दिरा बाजार था नाम बदला, बिहारी बाजार जयपुर। अबके फिर आये हैं तो आप अपनी आदत को नहीं भूल पाये और राजीव गांधी संकुल का नाम राधाकृष्णनजी के नाम पर कर दिया। हम उस महान व्यक्तित्व का सम्मान करते हैं, लेकिन यह नाम बदल-बदल कर सम्मान करना, केवल इधर से उधर कर देना, इससे राजस्थान की जनता खुश होने वाली नहीं है। मान्यवर, बहुत अच्छी बात है, बहुत सारे साथी नये आये हैं और यह समझ रहे हैं।

श्री जोगेश्वर गर्ग : हमने आपको यह याद दिलाया कि राजीव गांधी के...

श्री रामचन्द्र सराधना : श्री जोगेश्वरजी गर्ग बहुत पुराने हैं, मंत्री भी रह चुके हैं। आपके कामों को याद करेंगे तो, माननीय गर्ग साहब, आप और हम कहां टिक पाएंगे, इसलिए बीच में मुझे बाधा खड़ी नहीं करें, मेरी बात सुन लें। अच्छी नहीं लगेगी आपको, मैं जानता हूं। अध्यक्ष महोदय को मैं सुनाना चाहता हूं, और अध्यक्ष महोदय के माध्यम से सारे राजस्थान की जनता को सुनाना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार कुछ अच्छे मुद्दे लेकर आयी है, वह आपके सामने कुछ करना चाहती है।

मान्यवर, बिजली के मामले में बात की है। जनवरी और फरवरी का महीना है, अखबारों में रोजाना आ रहा है, कई एजीटेशन हो रहे हैं, कहीं धरने हो रहे हैं, कहीं पर लोगों में आपस में खींचा खींची हो रही है। यह बात तो सही है, हमारी कांस्टीट्युएंसी के मामले में कोई बोलना चाहता है, कोई विरोध करता है तो अच्छी बात नहीं लगती है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आप खुश होकर देखती हैं तो मुझे ताकत मिलती है, लेकिन आप यूं नजर गड़ा कर देखती हैं तो, मैं तीन दिन से देख रहा हूं, मेरी शक्ति कमजोर पड़ती जा रही है। आप थोड़ा प्रसन्न होकर देखा करें। मान्यवर, किसी भी तहसील से, किसी भी विधान सभा

(श्री रामचन्द्र सराधना)

क्षेत्र से कोई बात, बुराई आती है तो विधायक कहता है मेरी बुराई हो रही है। साथियों, ऐसा है नहीं। हमने भी बड़ा प्रोटेक्शन किया था बिजली बोर्ड के अधिकारियों का। इधर बैठने वाले जो माननीय मंत्री बन गये हैं, तब बहुत बोला करते थे। यह तो कुदरत का खेल है कि उधर बैठने वाला उनको प्रोटेक्शन देगा, असलियत को स्वीकार नहीं करेगा। इधर बैठने वाला उसकी बुराई करेगा। मैंने पहले 1998 में जब सरकार चुनकर आयी थी उस समय भी कहा था, दो-चार लाइनें कही थीं, "तुम सांपनाथ हम नागनाथ, हममें नहीं ज्यादा अन्तर। हमारे तो झूठे पड़ गये, आपके हैं ताजा मन्तर।" साथियों, यह आपको भी भोगना पड़ेगा। गलत कर्मचारियों, गलत अधिकारियों, विभाग में कोई गलत काम हो रहा है तो उसके प्रोटेक्शन के लिये नहीं, जानता को प्रोटेक्शन के लिये सरकार बनायी जाती है, चाहे बी.जे.पी. की सरकार हो, चाहे कांग्रेस की सरकार हो।

अध्यक्ष महोदय, इसमें कहा गया है कि हम राजस्थान की जनता का सम्मान लौटाएंगे, कौन लेकर गया था सम्मान? क्या काम कर गये थे ऐसा सम्मान का? हमने सम्मान खराब करने के लिये, राजस्थान का सम्मान बिगाड़ने के लिये, जनता का काम बिगाड़ने के लिये कुछ नहीं किया। हमने कोई तहलका काण्ड नहीं किया। हमने कारगिल की सम्भावनाएं नहीं बनायीं। कारगिल युद्ध क्यों हुआ...

श्री नन्दलाल बंशीवाल : बोफोर्स काण्ड किया, बोफोर्स काण्ड।

श्री रामचन्द्र सराधना : हमने कभी कारगिल के शहीदों का कफन नहीं चुराया। हमने कौनसा गलत काम कर दिया कि सम्मान चला गया? राजस्थान की जनता का सम्मान न कांग्रेस के बलबूते पर चलता है और न बी.जे.पी. के बलबूते पर चलता है। राजस्थान की जनता अपने सम्मान की रक्षा करना जानती है। सारा इतिहास जानता है, सारा देश जानता है, सारा विश्व जानता है...

श्री नन्दलाल बंशीवाल : बोफोर्स काण्ड किया...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, बीच में इंटरप्शन नहीं करेंगे।

डा. बुलाकीदास कल्ला (नेता प्रतिपक्ष) : आपके ताबूत काण्ड। पता नहीं हम लोगों का ही बोलना ठीक नहीं है।

श्री अध्यक्ष : मैं कह रही हूं...(व्यवधान) प्रतिपक्ष के नेता, जब मैं बोलती हूं तब भी आप बीच में बोलते हैं। (व्यवधान) मैं कह रही हूं उन्हें, आप बीच में खड़े हो गये।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : इसमें आई.एस.आई. का एजेंट था +++

+++नाम अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

श्री अध्यक्ष : देखिये, सत्ता पक्ष के कोई भी सदस्य, जब प्रतिपक्ष के लोग बोल रहे हों तो बीच में टोकाटोकी नहीं करें, व्यवधान पैदा नहीं करें। (व्यवधान) फिर आप बोल रहे हैं, आप पर कोई असर होता है क्या किसी बात का?

श्री नन्दलाल बंशीवाल : सीधे आरोप लगाते हैं। बड़े-बड़े घोटाले किये हैं इन्होंने। बोफोर्स घोटाला किया...(व्यवधान)

श्री रामचन्द्र सराधना : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन यह करना चाह रहा था कि हमने ऐसा कोई गलत काम नहीं किया था। सरकार का बदलना एक सतत् प्रक्रिया है। यह जनता का रूझान है, जनता की इच्छा है जिसको चाहे जिसको रखे और जिसको नहीं चाहे उसको नहीं रखे। केवल मात्र...(व्यवधान) आप घड़ी की तरफ...

श्री अध्यक्ष : आप कनक्लूड करें...

श्री रामचन्द्र सराधना : मेरा पांच मिनट का समय निकाल दिया बीच में व्यवधान करके। तो मैं निवेदन यह कर रहा था...

श्री अध्यक्ष : देखिये, दस मिनट का समय दिया गया है सभी सदस्यों को। आप अब कनक्लूड करने की कोशिश करें।

श्री रामचन्द्र सराधना : अभी तो शुरूआत हुई है। पांच मिनट तो इन्होंने लगा दी, अब दो मिनट आप लगा रही हैं।

श्री अध्यक्ष : अब क्या होगा? दस मिनट में बात कहनी है आपको पूरी। 5.00 बजे नेता प्रतिपक्ष बोलना शुरू करेंगे, एक घंटा वह बोलेंगे। 6.00 बजे सदन की नेता बोलेंगी। तो अब आप अपने भाषण को समाप्त करने की, दस-दस मिनट का समय अलाट किया है, दस मिनट में आप अपनी बात कह दें।

श्री रामचन्द्र सराधना : कह दूं पर तीन-चार मिनट ले लिये आपने।

श्री अध्यक्ष : स्वयं ने ले लिये। आपको 3.23 पर पूरे दस मिनट हो जाएंगे।

श्री रामचन्द्र सराधना : माननीय अध्यक्षजी, बड़ी कृपा है आपकी। बिलकुल बराबर गिनती रख रही हैं मेरी। माननीय सदस्यों का बहुत पुराना अनुभव है। ज्ञान इनका बढ़ा नहीं है बाद में। यदि बोफोर्स नहीं होता तो कारगिल में क्या होता, इस बात का किसी को अंदाजा नहीं है। कोई अंदाजा नहीं है इस बात का। ये तो बहुत पुरानी बातें करते हैं। बोफोर्स की इनके नेताओं ने सुना रखी है...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : आपको जूदेव काण्ड याद नहीं है? बंगारू लक्ष्मण वाला याद नहीं है? कुछ तो शर्म करो, रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़े गये हो और फिर भी बोल रहे हो। (व्यवधान)

श्री रामचन्द्र सराधना : मेरा समय जा रहा है।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : अजीत जोगी का ध्यान नहीं है क्या?

श्री बंशीलाल खटीक : हमारी भावनाओं पर आघात पहुंचाया जा रहा है, कृपया इनको थोड़ी हिदायत दे।

श्री अध्यक्ष : राजसमन्द से आने वाले माननीय सदस्य, मैं आपको कह चुकी हूं, बार-बार आपका खड़ा होना उचित नहीं है। मैं आपको कह चुकी हूं कई बार।

श्री हरिमोहन शर्मा : अध्यक्ष महोदय, यह बात तो आप सौ बार कह चुकी हैं कि बार-बार आपका खड़ा होना उचित नहीं है...

श्री अध्यक्ष : हिण्डौली से आने वाले माननीय सदस्य, आपका भी खड़ा होना उचित नहीं है। आपका भी खड़ा होना उचित नहीं है।

श्री रामचन्द्र सराधना : माननीय अध्यक्षजी, यह व्यवधान होता ही रहता है, सारे नेता हैं। मैं समझ रहा था, अब तो माननीय मदन दिलावरजी मंत्री बन गये, अब कोई नहीं होगा उधर, सब ठीक हो गया होगा। फिर दूसरा आ गया।

श्री अध्यक्ष : आप भी विषयान्तर हो रहे हैं और राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर न करके आप और बातें कर रहे हैं।

श्री रामचन्द्र सराधना : माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह कहा गया कि पांच हजार की आबादी वाले सभी गांवों में बिजली की आपूर्ति सतत् की जाएगी। यह नयी बात नहीं है। पांच हजार की आबादी वाले गांवों और शहरों में भी पहले से ही आपूर्ति चल रही है। अब तो करना यह चाहिये कि गांवों में सब जगह हमेशा रात को बिजली दी जाएगी। यह बात तो ठीक लगती। लेकिन पुरानी बातों को देखकर यह महसूस हो रहा है...

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

हमारे एक्सटेंशन, हमारे प्रोग्राम, हमारी स्कीम्स को एक्सटेंड कर रहे हैं...

श्री अध्यक्ष : एक मिनट में आप समाप्त कर दें। एक मिनट में आप अपनी बात समाप्त कर दें।

श्री रामचन्द्र सराधना : वह आपने जो बिगाड़ दिया टाइम उसको तो कम से कम कुछ निकालो।

श्री अध्यक्ष : आपने ज्यादा ले लिया है। समय आपने और अधिक ले लिया है।

श्री रामचन्द्र सराधना : अभी प्रश्नकाल के दौरान भी कुछ मुद्दे ऐसे आए थे, मैं कहना चाहता था, लेकिन आपकी कृपा नहीं हुई। एक प्रस्ताव था कि छात्र-छात्राओं की समाज कल्याण विभाग की छात्रवृत्ति को बढ़ाना चाहते हैं कि नहीं बढ़ाना चाहते हैं। माननीय मंत्री महोदय ने जवाब दे दिया कि शिक्षा विभाग को प्रक्रिया में भेजा जा चुका है। पैसा देता है समाज कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग कुछ नहीं

(श्री रामचन्द्र सराधना)

करता, केवल वितरण करता है। नीति बनाना, बढ़ाना, घटाना सारा समाज कल्याण विभाग का है, उसका जवाब नहीं आया। यह सरकार का काम था।

एक दूसरा था वृद्धावस्था पेंशन के लिये। आज ऐसे निःशक्त, बीमार और बुजुर्ग आदमी खाट पर पड़े हुए हैं जिन लोगों को ट्रैंजरी कहता है कि उसको लाकर दिखाओ, जिंदा है कि नहीं है। कैसे लेकर आएं? कम से कम इस बात पर गौर करना चाहिये। ऐसी बातों पर...

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्री अध्यक्ष : श्री राकेश मेघवाल।

श्री रामचन्द्र सराधना : एक बात और निवेदन करूं। आपके अनुशासन का मैं उल्लंघन नहीं करना चाहता हूं।

माननीय शिक्षा मंत्रीजी ने कहा था कि स्कूलों में सब जगह बिल्डिंग बनायी जाएगी। लेकिन सच्चाई यह है, राजीव गांधी पाठशालाओं में कुछ में बिल्डिंग नहीं बनी हुई है उसको भी इसमें शामिल करें।

कई सैकण्डरी और सीनियर सैकण्डरी स्कूल ऐसे हैं, भवन के नाम पर तो हैं लेकिन वहां दो-दो. तीन-तीन कमरे ही चल रहे हैं. उनको भी बढ़ाने की बात करें। नये बनाने की बात नहीं करें।

आपने मुझे समय दिया उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं और सरकार से निवेदन करता हूं कि महामहिम राज्यपाल महोदय के माध्यम से जो...(व्यवधान) गलत तरीके से आपने बातें मानी हैं मैं उनका विरोध करता हूं। धन्यवाद।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर) **:** अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा प्रथम सत्र में प्रथम अभिभाषण श्रीमुख से पढ़ा उसका मैं पुरजोर शब्दों में समर्थन करता हूं। माननीय नन्द लालजी मीणा जिन्होंने यह प्रस्ताव रखा और माननीय राजेन्द्रजी राठौड़ जिन्होंने समर्थन किया है, उनका भी मैं समर्थन करता हूं। (व्यवधान)

श्री रामनारायण चौधरी : ट्रैजरी बैंच पर मंत्री नहीं है। यह बहुत टैक्निकल...

श्री अध्यक्ष : मंत्रीजी बैठे हैं न।

श्री श्रवण कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि राजस्थान की गरिमापूर्ण सीट्स पर जो मंत्री बैठा रखे हैं, वह उपस्थित नहीं हैं। बोले तो किसको सुनाएं? आप तो समझदार हो, कम से कम एक मंत्री तो होना चाहिये।

एक माननीय सदस्य : आपकी व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री राकेश मेघवाल : माननीय अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में प्रथम मातृ शक्ति राजस्थान की मुख्य मंत्री बनी हैं और प्रथम

(श्री राकेश मेघवाल)

मातृ शक्ति इस सदन की अध्यक्ष महोदय बनीं, उनको मैं पुरजोर शब्दों में बधाई देता हूं और हार्दिक अभिनन्दन करता हूं कि राजस्थान में मातृ शक्ति...

श्री अध्यक्ष : ट्रैजरी बैंचेज पर केवल एक ही मंत्री बैठे हैं, और मंत्रियों को भी बुलाइये ताकि वे भाषण सुन सके। बुलाइये।

श्री राकेश मेघवाल : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : हां, बोलिये आप।

श्री राकेश मेघवाल : मैं राजस्थान की सरकार और राजस्थान की जनता...

श्री अध्यक्ष : संख्या बहुत कम है।

श्री राकेश मेघवाल :...का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। भारतीय जनता पार्टी ने पहले भी राजस्थान में चहुंमुखी विकास किया था। 1993 से 98 तक माननीय भैरोंसिंहजी शेखावत मुख्य मंत्री थे, उन्होंने गांव-गांव, ढाणी-ढाणी में विकास की गंगा बहायी थी। और आज राजस्थान की प्रथम मातृ शक्ति मुख्य मंत्री आदरणीय वसुंधराजी जो 50 साल में विकास नहीं हुआ वो सौ दिन में, एक साल और पांच साल में करके पचास सालों का इतिहास रचेंगी। ऐसी पहली मातृ शक्ति मुख्य मंत्री हैं...

श्री श्रवण कुमार : हां, +++ बोलो।

श्री राकेश मेघवाल : अगर आपके आंकड़े, पांच साल पहले भी मैं विधायक था...

श्री अध्यक्ष : यह +++ शब्द जो पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा है, विलोपित कर देना।

श्री श्रवण कुमार : अध्यक्ष महोदय, मैंने तो यह कहा है...(व्यवधान) काम एक हुआ नहीं, पांच साल का इतिहास कहां से रच दिया? इसलिए मुझे शर्म आती है।

श्री राकेश मेघवाल : यह पहले भी रचा है और अभी भी रचेंगे।

श्री अध्यक्ष : आपने जो कहा मैंने सुन लिया, वह विलोपित कर दिया।

श्री श्रवण कुमार : कर दिया क्या?

श्री राकेश मेघवाल : अध्यक्ष महोदय, कम से कम आप तो...(व्यवधान) सौ दिन में ऐसा इतिहास कि पूरे राजस्थान में विकास की गंगा की शुरूआत हो गयी। यह शुरूआत तो उसी दिन हो गयी थी जब राजस्थान में माननीय मुख्य मंत्रीजी का आगमन हुआ था। परिवर्तन यात्रा में अकाल के समय में एक-एक विधान सभा क्षेत्र में, प्रत्येक गांव के लोगों से, ढाणियों के लोगों से जब वह मिली, उस समय

+++ शब्द अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(श्री राकेश मेघवाल)

जनता का दु:ख-दर्द जान। मेरे विधान सभा क्षेत्र परबतसर में वीर तेजाजी का मन्दिर है, वहां उनके जन्म स्थान पर राणा बाईजी की जन्म स्थली और बाबा रामदेवजी के मन्दिर पर आपकी ऐतिहासिक परिवर्तन यात्रा की सभा हुई, उसमें 35 हजार की संख्या थी जिसमें 15 हजार मातृ शक्ति की संख्या थी। ऐतिहासिक विशाल आम सभा थी। उसमें माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा था कि मैं पुष्कर राज में पूजा-अर्चना करके आयी हूं, इन्द्रदेव भगवान की पूजा की है और तीन बार कहा था, अभी बारिश आएगी, अभी बारिश आएगी, अभी बारिश आएगी। तीन बार कहते ही इन्द्र भगवान खुश हो गये और परबतसर, राजस्थान में बारिश हुई। यह अच्छा पगफेरा हुआ। इतिहास गवाह है, यह कोई मेरी सुनी हुई या कही हुई बात नहीं है। यह सब समाचार-पत्रों में पढ़ा था। वसुंधराजी आयी, बारिश लायी। चार साल का आपका अकाल समाप्त।

श्री श्रवण कुमार : यह 53 हजार करोड़ का कर्जा है न, इस पर बरसवा दो।

श्री राकेश मेघवाल : वह कर्जा तो आपने किया है...(व्यवधान) कर्जा आपने इतना किया है जितना 50 साल में किसी ने नहीं किया। पांच साल में ही कर्जे में डुबो दिया राजस्थान की जनता को।

श्री संयम लोढ़ा : चार साल वसुंधराजी ने ही इन्द्र देवता को मना किया होगा कि मत आना? उन्होंने ही मना किया होगा कि इन्द्र देवता मत बरसना? (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल : यह भी अगर आप मानते हो कि वसुंधराजी के कहने से ही सब कुछ होता है...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, अगर आप बीच में टोका-टोकी करते रहे तो बोलने वाला अधिक समय ले लेगा। (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल : उनके आने से राजस्थान में डीजल और पैट्रोल निकला है, यह भी राजस्थान के विकास के लिए एक नया द्योतक है। उसकी भी राजस्थान की जनता भूरि-भूरि प्रशंसा करती है। अध्यक्ष महोदय, चार साल से अकाल पड़ा था और कुओं का जल स्तर इतना नीचे चला गया कि प्रत्येक गांव और ढाणी में कांग्रेस के शासन में पीने का पानी नहीं मिला, आप लोगों की वजह से। अब कम से कम थोड़ा-सा जल स्तर बढ़ा है, जब से राजस्थान की मुख्य मंत्री वसुंधराजी बनी हैं। मारवाड़ी में कहते हैं कि पगफेरो चोखो हुयो। कोई भी मातृशक्ति को घर में पगफेरो चोखो होवे जब वो घर में अमन-चैन, सुख-शांति रहे और हमेशा खुशहाली रहे। लक्ष्मीजी को पगफेरो चोखो होवे है न उसी तरह राजस्थान में वसुंधराजी को पगफेरो चोखो हुयो है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप एक मिनट में अपनी बात को समाप्त करें। (व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं नागौर जिले में परबतसर विधान सभा क्षेत्र से जीतकर आया हूं, नागौर जिले से ना हटा दीजिये, और आपके माध्यम से राजस्थान सरकार से निवेदन करता हूं कि नागौर जिले पर गौर कीजिये। इस पूरे अभिभाषण में इस पुस्तिका में नागौर जिले का नाम तक नहीं है, उसके लिए भी मैं आपके माध्यम से इस सरकार से और माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि नागौर जिले का ना हटा दीजिए और उस पर गौर कीजिये। अध्यक्ष महोदय, यह कांग्रेस शहीदों की बात करती है, राजस्थान का प्रथम शहीद...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : श्री सुरेश मीणा।

श्री राकेश मेघवाल : राजस्थान के प्रथम शहीद मंगेज सिंहजी की स्कूल इन्होंने क्रमोन्नत नहीं की, जो कारगिल युद्ध में सबसे प्रथम राजस्थान से शहीद हुए थे। उनकी स्कूल इन्होंने क्रमोन्नत नहीं की। राजस्थान में मार्बल मण्डी मंदी के दौर से गुजर रही है, टैक्स और रायल्टी कम की जाए। अध्यक्ष महोदय, तीन दिन से प्रयास कर रहा हूं, पांच मिनट में...

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें।

श्री राकेश मेघवाल : पांच मिनट में। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें।

श्री राकेश मेघवाल : सीधी बात करूंगा, पांच मिनट में सीधी बात।

श्री अध्यक्ष : स्थान पर बैठें। (व्यवधान) अपना स्थान ग्रहण करें। आपने दस मिनट बोल लिया...(व्यवधान)

श्री सुरेश मीणा (करौली) **:** अध्यक्ष महोदय, आपने राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर जो समय दिया इसके लिए मैं आपका बहुत–बहुत आभारी हूं। हम नये–नये विधायक बनकर आये हैं, हमने हाथी पर बैठकर इस विधान सभा में प्रवेश किया है, सुनते तो बहुत थे हम विधान सभा की, लेकिन अब हमने देखा भी है कि विधान सभा में क्या होता है। इधर कांग्रेस के लोग बैठे हैं, इधर बी.जे.पी. के भाई बैठे हैं। आज मैं एक बात कहना चाहता हूं...

श्री अध्यक्ष : आपका समय दस मिनट का है, आप दस मिनट में अपनी बात कहें।

श्री सुरेश मीणा : सॉरी, माननीय सदस्य बैठे हुए हैं। महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण की कापी में जो भी बातें कही गयी हैं उनमें से कुछ बातें बताना चाहता हूं। इसमें एस.सी., एस.टी. का अभी जो बैकलाग पड़ा हुआ है, उसके बारे में कोई बात नहीं कही गयी है। जब कांग्रेस की सरकार थी, हम सोच रहे थे कि ये बैकलाग को पूरा करेंगे लेकिन

(श्री सुरेश मीणा)

एक भी पद नहीं भरा गया। अभी बी.जे.पी. की नयी सरकार आयी है, हमें इस सरकार से उम्मीद है कि यह सरकार हमारे एस.सी., एस.टी. के बैकलाग को पूरा करेगी।

हम एक बात और कहना चाहते हैं। इस राजस्थान में अब तक चाहे कांग्रेस की सरकार रही हो, चाहे बी.जे.पी. की सरकार रही हो, लेकिन पश्चिमी राजस्थान को विकास का पैसा बहुत ज्यादा दिया जाता है, जबकि पूर्वी राजस्थान के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि अब जो सरकार बनी है वह ऐसा सौतेला व्यवहार नहीं करे। मैं करौली से चुनाव जीतकर आया हूं, करौली, सवाईमाधोपुर बहुत पिछड़े हुए जिले हैं, पिछली जो बी.जे.पी. की सरकार थी उसमें डांग विकास बोर्ड का गठन किया गया था, माननीय भैरोंसिंहजी शेखावत तब मुख्य मंत्री थे। लेकिन अब की बार उस डांग विकास बोर्ड का इसमें नाम तक नहीं लिया गया है जबकि डांग बहुत पिछड़ा हुआ इलाका है। मैं चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्रीजी इस बारे में सोचे और डांग के विकास की बात करें।

जब कांग्रेस की सरकार थी तो एस.सी., एस.टी. के जो अधिकारी थे उनको जहां प्रमोशन की बात थी, उनका प्रमोशन हटाकर उनका डिमोशन किया गया। हमारी बी.जे.पी. की सरकार आयी है, उससे निवेदन करना चाहता हूं कि जो कांग्रेस की सरकार ने किया था, आप वह नहीं करें। राजस्थान में एस.सी., एस.टी. के नाम से जो कागजों में अरबों रुपयों का लेखा-जोखा होता है, वह रुपया उनके नाम से सेंटर से आता है, विदेशों से आता है, राजस्थान सरकार भी देती है, लेकिन उनके पास में रुपये में से दस पैसे भी नहीं पहुंच पाता है इसलिए उनका विकास हो ही नहीं पाता है। इसलिए हम चाहते हैं कि जो भी विकास का पैसा हो उसके लिए एक कमेटी बनायी जाए, एस.सी., एस.टी. का जो पैसा है वह कमेटी उसको खर्च करे ताकि उनका विकास हो सके।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक निवेदन और करता हूं, हम बहुजन समाज पार्टी के दो सदस्य हैं, हमें भी बीच-बीच में बोलने का पूरा मौका दिया जाए। हमें आपने बोलने का मौका दिया उसके लिये आपका बहुत-बहुत आभारी हूं, धन्यवाद। जय भीम, जयभारत।

श्री अध्यक्ष : श्री मोहनलाल गुप्ता।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय से अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। समर्थन इसलिए करता हूं कि

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने राजस्थान का एक विजन तैयार किया है। राजस्थान को 21वीं सदी में ले जाने का एक विजन, एक सोच, एक विचार प्रस्तुत किया गया है राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के माध्यम से।

जैसा कि माननीय सदस्यों को मालूम है, इस पूरे अभिभाषण को और पूरे राजस्थान के तंत्र को उन्होंने पांच भागों में बांटा है। पांच सालों में अन्दर राजस्थान का जो विकास होगा उस विकास को, उस प्रशासन को उन्होंने पांच भागों में बांट कर सारे विभागों का वर्गीकरण किया है। उन्होंने पहला बांटा प्रशासनिक ढांचे का सुदृढ़ीकरण, उसके अन्तर्गत कानून और व्यवस्था, वित्त एवं नियोजन, प्रशासनिक सुधार, सूचना, संचार एवं विज्ञान प्रौद्योगिकी के विभाग यानी ई-गवर्नेंस के विभाग। दूसरा उन्होंने बांटा है आधारभूत सुविधा एवं संरचना, उसके अन्तर्गत ऊर्जा, सिंचाई एवं पेयजल, सड़क निर्माण, ये तीनों विभाग। बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण, उसके बाद रोजगार के नए अवसरों को प्रदान करना, उसके लिए रोजगार के नये अवसर कौन से विभाग प्रदान करेंगे। कृषि सहकारिता, पशुपालन, पर्यावरण, उद्योग, खनन, नगरीय विकास, पर्यटन, परिवहन। चौथा दृष्टिकोण उन्होंने प्रस्तुत किया है मानव का विकास एवं उत्थान, उसके अन्तर्गत शिक्षा, चिकित्सा, परिवार कल्याण, महिला एवं बाल विकास, युवा एवं खेल, सैनिक कल्याण, वक्फ बोर्ड, देवस्थान। कमजोर एवं असहाय लोगों की देखरेख, यह उनका पांचवां लक्ष्य है। कमजोर और असहाय लोगों की देखरेख के अन्तर्गत उन्होंने विभाग रखे हैं ग्रामीण विकास, समाज कल्याण, जनजाति क्षेत्रीय विकास, खाद्य सुरक्षा एवं नागरिक आपूर्ति, आपदा प्रबन्धन, श्रम एवं नियोजन। इस प्रकार से उन्होंने एक विजन राजस्थान का दिया है।

राजस्थान का विकास किस प्रकार से हो, यह हमारी मुख्य मंत्रीजी ने तय किया है। आज तक किसी भी व्यक्ति ने, किसी भी मंत्री ने, किसी भी मुख्य मंत्री ने इस प्रकार का विजन राजस्थान को नहीं दिया है। 21वीं सदी का राजस्थान किस प्रकार से हो, इस प्रकार का विजन इस राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के माध्यम से उन्होंने प्रस्तुत किया है।

विभागों में आपसी समन्वय न होने के कारण बहुत सारी योजनाएं समय-पार हो जाती हैं इसलिए विभागों में समन्वय हो, इस तरह से पांच विभागों का उन्होंने किया है और सारे विभागों को इन सब वर्गों में बांटा है। मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहूंगा कि इन पांचों विभागों में प्रशासनिक ढांचे का सुदृढ़ीकरण, आधारभूत सुविधाओं, रोजगार के नए अवसरों का सृजन करने वाले विभागों,

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

मानव का विकास एवं उत्थान, कमजोर एवं असहाय वर्गों की देखरेख के विभागों को किसी एक ही सैक्रेटरी के अण्डर में दें ताकि उनमें आपसी समन्वय स्थापित हो सके वो शायद देने वाले भी हैं।

मैं कहना चाहूंगा कि कानून और व्यवस्था के अन्तर्गत माननीय पहली महिला मुख्य मंत्रीजी ने पहली घोषणा यह की है कि प्रत्येक जिले में एक महिला थाना होगा, जिसकी सम्पूर्ण देखभाल महिलाओं द्वारा की जाएगी। यह एक बहुत अच्छा कदम माननीय मुख्य मंत्रीजी ने उठाया है, मैं उसके लिए उनको धन्यवाद अदा करना चाहूंगा।

दूसरा, बड़ा कदम उठाया है उन्होंने, इस वर्ष की योजना को 1248 करोड़ तक बढ़ाना, मार्च तक एडीशनल 1248 करोड़ रुपए राजस्थान की जनता को मिलेंगे। यह बहुत बड़ा कदम राजस्थान की जनता के लिए उन्होंने उठाया है। ऊर्जा के क्षेत्र में पांच साल में 1600 मेगावाट की अतिरिक्त बिजली उत्पादन का लक्ष्य उन्होंने रखा है, इस बात के लिए मैं धन्यवाद देना चाहूंगा।

सिंचाई एवं पेयजल योजनाओं के अन्तर्गत बजाज सागर और बीसलपुर और रतनपुर की पेयजल योजनाओं को उन्होंने लागू करने की घोषणा की है। सड़क निर्माण के अन्तर्गत 500 तक की आबादी तक के गांवों को उन्होंने जोड़ने की घोषणा की है। 5263 किलोमीटर सड़कों का नवीनीकरण, 7000 किलोमीटर की इंटीरियर साइड सड़कों को जोड़ना, 3500 किलोमीटर सड़कों को डबल लेन से जोड़ना, इस प्रकार की घोषणा उन्होंने की है। राज्यपाल महोदय के इसी अभिभाषण में जयपुर से किशनगढ़ तक जो राजमार्ग है वह 6 लेन का होगा और किशनगढ़, नसीराबाद, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, रतनपुर, यह चार लेन होगा।

बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करने की दृष्टि से एक लाख लोगों को रोजगार देने की घोषणा की है, एक लाख लोगों को। यह कदम ऐसा है। जिससे सारे राजस्थान के बेरोजगार लोग खुश होंगे। राजस्थान के बेरोजगार, विद्यार्थी परिषद् के हम लोग, युवा मोर्चे के लोग, ये मांग करते आ रहे थे कि बेरोजगारों को रोजगार दो और बेरोजगारों को रोजगार नहीं दे सकते हो तो उनको बेरोजगारी भत्ता दो। तो बेरोजगारी भत्ता देने की मांग उन्होंने स्वीकार की है, इस बात के लिए राजस्थान का बेरोजगार उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता है।

इस प्रकार मैं यह कहना चाहता हूं कि कांग्रेस ने जिस प्रकार से राज किया है, हमारे पूर्व मुख्य मंत्री ने जिस प्रकार से राज किया है, वह केवल नम्बर वन मुख्य मंत्री नहीं थे, वे केवल केन्द्र सरकार को पत्र लिखने में नम्बर वन थे, अपनी

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

असफलताओं को छिपाने में नम्बर वन थे। हर बात में पत्र लिखना, हर बात में केन्द्र सरकार को दोष देना, इस बात में नम्बर वन वह थे।

मैं कहना चाहता हूं कि राजस्थान में सदी का बहुत बड़ा अकाल पड़ा, अकाल प्रबन्धन में उन्होंने अपने आपको नम्बर वन कहा। आखिर उन्होंने किया क्या अकाल प्रबन्धन में? सारा पैसा केन्द्र सरकार का था। मैं यह कहना चाहता हूं कि केन्द्र सरकार ने अकाल सहायता में जिस प्रकार से राशि दी, आखिर राजस्थान सरकार ने क्या किया? केन्द्र सरकार ने कुल 7000 करोड़ रुपए की राशि दी है उसमें से राष्ट्रीय आपदा कोष 1126 करोड़ रुपए...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप अपनी बात समाप्त करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : केन्द्रीय सहायता कोष 837 करोड़ रुपए, ग्रामीण जल वितरण योजना के अन्तर्गत 15 करोड़ रुपए और रेलवे से पानी एवं चारे का मुफ्त वितरण 25 करोड़ रुपए...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, दो मिनट शेष हैं। (व्यवधान) माननीय सदस्य, आपके दो मिनट ही शेष रहे हैं, अपने भाषण को कनक्लूड करिये। 2 ही मिनट शेष हैं।

श्री मोहन लाल गुप्ता : केन्द्र सरकार ने 7000 करोड़ रुपए का राजस्थान सरकार को अनुदान दिया, राजस्थान सरकार ने अपने बजट से केवल 57 करोड़ रुपए खर्च किए हैं, 57 करोड़ रुपए। मैं अब यह कहना चाहता हूं कि राजस्थान सरकार ने केन्द्र के द्वारा जो बजट दिया गया ग्रामीण विकास योजनाओं का, वह धन भी पूरा खर्च नहीं किया। धन कितना खर्च किया? स्वर्ण जयन्ती ग्रामीण स्वरोजगार योजना के तहत 2001 में 1313 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोगी थी, 2002 में 354 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोगी थी, 2003 में 1319 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोगी थी, सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना में 2750 करोड़ रुपए की अनुपयोगी राशि थी, 2002 में 2047 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोगी थी, 2003 में 1048 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोगी थी, मरु क्षेत्र विकास योजना के तहत 634 करोड़ रुपए की राशि 2001 में अनुपयोगी थी, 2002 में 663 करोड़ रुपए की राशि अनुपयोगी थी, 2003 में यह राशि बढ़कर 1624 करोड़ रुपए हो गई। अध्यक्ष महोदय, इन्दिरा आवास योजना के अन्तर्गत 2001 में 441 करोड़ रुपये की राशि अनुपयोगी थी, 2002 में 181 करोड़ रुपये की राशि हुई, 2002 में 262 करोड़ रुपये हो गई।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपका समय बीत रहा है। आपका समय बीत गया, अब आप कनक्लूड कर दे।

(श्री अध्यक्ष)

(व्यवधान) माननीय सदस्य, यहां ऐसा होता नहीं है। (व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता : इस प्रकार से केन्द्र द्वारा जो सहायता दी गई वह सहायता भी आपने पूरी खर्च नहीं की। मैं कहना चाहता हूं, आखिर राजस्थान का विकास आपने क्या किया?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, कनक्लूड करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : राजस्थान के विकास में आपने क्या किया?

श्री अध्यक्ष : भाषण समाप्त करें। आप नहीं करेंगे तो दूसरे का नाम पुकारना पड़ेगा मुझे।

श्री मोहन लाल गुप्ता : मैं पूछना चाहता हूं, आखिर जयपुर में आपने क्या किया? जयपुर में चार पुल...

श्री अध्यक्ष : आप अभी तक जयपुर में आये ही नहीं?

श्री मोहन लाल गुप्ता : गोपालपुरा का पुल भाजपा शासन की देन है, आपने क्या किया? जयपुर शहर में न्यू सांगानेर रोड, डालडा फैक्ट्री, खातीपुरा, हसनपुरा, जगतपुरा ये सब पुल भारतीय जनता पार्टी की सरकार की देन हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपका समय समाप्त हो गया। आपका समय समाप्त हो गया। श्री श्रवण कुमार।

श्री मोहन लाल गुप्ता : अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं, जयपुर में आपरेशन पिंक चलाया, आपने फल-सब्जी वालों को, फूल वालों को, ताले वालों को मूंगफली वालों को बेरोजगार किया। आगे पुलिस, पीछे पुलिस, बीच में मंजीत सिंह। इस प्रकार की दादागीरी की आतंकी कार्यवाही की। लोगों को बेरोजगार किया। इस प्रकार से बेरोजगार करके आपने जयपुर शहर में आतंक का वातावरण पैदा किया।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं, जयपुर के साथ आपने क्या किया? (व्यवधान) कांग्रेस ने जिस प्रकार से आतंक का वातावरण किया...

श्री अध्यक्ष : मैंने दूसरे का नाम पुकार लिया, अब आप बैठ जाएं। प्लीज, स्थान ग्रहण करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : मैं यह कहना चाहता हूं कि रिक्शा वाले को, तांगे वालों को जिस प्रकार से परेशान किया, जयपुर शहर में...

श्री अध्यक्ष : मेहरबानी करके स्थान ग्रहण कर लें, मैंने नाम पुकार लिया दूसरे सदस्य का।

श्री मोहन लाल गुप्ता : इनकी एक सीट रह गई, जयपुर शहर में भारतीय

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

जनता पार्टी के प्रति विश्वास व्यक्त किया। (व्यवधान) मैं यह कहना चाहता हूं...

श्री अध्यक्ष : सत्ता पक्ष के सदस्य भी ऐसा करेंगे, कैसे काम चलेगा? (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, कंट्रोल करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : 1550 करोड़ रुपये की योजना 1750 करोड़ रुपये कैसे हो गई?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, समाप्त करें, बहुत हो गया।

श्री मोहन लाल गुप्ता : 250 करोड़ रुपये का प्राइस एस्केलेशन हो रहा है। (व्यवधान) केवल 250 करोड़ रुपये खर्च किये हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, मैं विनती करती हूं आपसे, आप ऐसा नहीं करें, आप स्थान ग्रहण करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : मैं कहना चाहता हूं, महत्वपूर्ण बात है, कांग्रेस के लोगों के लिए महत्वपूर्ण बात है, इस पूरे सदन के लिए महत्वपूर्ण बात है। 1750 करोड़ रुपये...

श्री अध्यक्ष : सबकी बातें महत्वपूर्ण हैं। आप स्थान ग्रहण करें, माननीय सदस्य।

श्री मोहन लाल गुप्ता : 1550 करोड़ रुपये में से केवल 250 करोड़ रुपये खर्च किये 5 साल में। लक्ष्य को पूरा नहीं किया। आखिर यह पैसा किसका खर्च हो रहा है?

श्री अध्यक्ष : आप स्थान ग्रहण करें। प्लीज, स्थान ग्रहण करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता : आखिर राजस्थान की जनता का पैसा है, यह पैसा क्यों नहीं खर्च हुआ। लक्ष्य को पूरा क्यों नहीं किया गया?

श्री अध्यक्ष : कृपया स्थान ग्रहण करें। माननीय सदस्य, ऐसा करने लग जाएंगे, कैसे काम चलेगा, आप स्थान ग्रहण करें। श्रवण कुमार।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले जो सदस्य हमारे साथ 1993 में थे फिर बीच में कुछ ड्राप हो गये, फिर दुबारा 2004 में चुनकर आये हैं, मैं उनको नये वर्ष की शुभकामना देता हूं और आशा करता हूं कि आप पांच वर्ष तक पांच करोड़ जनता का जो फैसला है, उस पर खरे उतरेंगे। एक बात जो मेन मुद्दा है, उस पर कोई नहीं आ रहा है, कोई पानी पर जाता है, कोई बिजली की बातें करता है, कि राजस्थान का जो 53 हजार करोड़ का कर्जा है यह 53 हजार करोड़ का कर्जा क्यों है? सबसे पहले मैं एक बात कहना चाहता हूं, 33 प्रतिशत छीजत इस

(श्री श्रवण कुमार)

पैसे की रिश्वत के रूप में जाती है। (व्यवधान) सुनने का संयम रखें। कटारिया साहब जब यहां बैठते थे और जब ये बातें कहते थे, मेरे दिल में बड़ी शांति होती थी। (व्यवधान) इसका किसी के पास थर्मामीटर तो है नहीं, पर मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि 50 साल के अन्दर चाहे आठ बार कांग्रेस आयी, चार बार जनता पार्टी आयी, किन्तु किसी मूलभूत उद्देश्य को सामने रखने की कोशिश नहीं की, आमूलचूल परिवर्तन करने की कोशिश नहीं की। अभी भाषणों पर भाषण देकर कोई कहता है कि मैं इसका समर्थन करता हूं, कोई कहता है कि मैं इसकी खिलाफत करता हूं। पर मैं कहना चाहता हूं, कटारियाजी जैसे स्वच्छ व्यक्ति के पास ऐसा डिपार्टमेंट आया है जिसमें 30 प्रतिशत छीजत को कोई रोक नहीं सकता। पी.डब्ल्यू.डी. ...(व्यवधान) रोक देना, मैं भी चाहता हूं रोक देना। चाहे पी.एच.ई.डी. हो, चाहे बिजली हो, चाहे चिकित्सा हो, चाहे शिक्षा हो।

मैं सबसे पहले खाद्य पदार्थ की बात कहना चाहता हूं, आपको बताना चाहता हूं, फतेहपुर के अन्दर आज से छह महीने पहले 6424 बोरियों का गबन किया गया एक एस.डी.आई. के द्वारा। उसका नाम आपको बताना चाहता हूं महेन्द्र सिंह खींचड़।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : माननीय सदस्य, यह गबन कौनसी तारीख को हुआ?

श्री श्रवण कुमार : मैं बता रहा हूं, 6 महीने पहले। मैं यह नहीं बता रहा हूं कि राजेन्द्रजी के आने के बाद हुआ। राजेन्द्रजी पहले जब यहां बैठते थे तब हुआ था। मैं यह नहीं कहना चाहता, मैं कोई बात को छुपाना नहीं चाहता, राजेन्द्रजी, आपको मालूम है। यह गबन कांग्रेस पार्टी के समय में हुआ, मैं इससे इंकार नहीं कर सकता। यह प्रार्थी तीन महीने की सजा जेल में काटकर 13.8.2003 से 19.11.2003 तक जेल में रहा। उसके बाद इसका ट्रांसफर डूंगरगढ़ हो गया। प्रार्थी डूंगरगढ़ में जाकर भी चूका नहीं और 93 क्विंटल का गबन फिर कर लिया। फिर उसको सस्पैंड कर दिया। हमारी आदर्श सरकार ने आते ही उसको बहाल कर दिया। पी.डी. अकाउंट कलक्टर ने बंद कर रखा था उसको चालू कर दिया और उसको फिर लूटने के लिए लगा दिया। यह गलती तो कांग्रेस सरकार ने नहीं की।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : कहां लगा दिया?

श्री श्रवण कुमार : इनको डूंगरगढ़ से लगा दिया। अभी लगाया है उनको।

श्री अध्यक्ष : आपने बताया कि डूंगरगढ़ लगा दिया।

श्री श्रवण कुमार : उसको लगाया है, 6.12.2002 को अंडर इंक्वायरी बहाल

(श्री श्रवण कुमार)

कर दिया। आडिट पैरा भी आ चुका है, सब कुछ हो चुका है और जेल के कागज भी आप चाहो तो मेरे पास हैं, ये सारे कागज मेरे पास हैं। यह महरियाजी की सिफारिश पर किया।

श्री अध्यक्ष : आडिट पैरा तो अभी कहां आएगा? (व्यवधान) अभी किया है तो आडिट पैरा इतनी जल्दी थोड़े ही आ गया होगा?

श्री श्रवण कुमार : मैं कह रहा हूं, बहाल कर दिया।

श्री अध्यक्ष : बहाल वाली बात अलग है, आप आडिट पैरा की बात कह रहे हैं।

श्री श्रवण कुमार : मैं तो कह रहा हूं कर दिया। 40 लाख रुपये का घोटाला करने वाले आदमी को पुनः ड्यूटी पर लगा दिया, इससे बड़ी कोई गलती हो नहीं सकती। मैं यह नहीं कहता, चाहे कांग्रेस करे, चाहे बी.जे.पी. करे, पर पांच करोड़ जनता के पैसे का दुरुपयोग कोई करता है उसको मैं इल्लीगल मानता हूं। मैं तो कह रहा हूं, वह जेल से अभी निकल कर आया है। इनको जेल के कागज देखने हों तो देख लो। जिला कलक्टर ने पी.डी.आर. अकाउंट बंद किया था, यह भी देख लो और उसको बहाल किया वह भी देख लो। यह बहाल का आर्डर है-निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। यह आर्डर रहा।

श्री अमराराम (धोद) : तारीख क्या है?

श्री श्रवण कुमार : यह 16.12 को किया। उसकी दो एफ.आर. हैं, एक तो बीकानेर जिले की है और एक सीकर जिले की है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, 16.12.2003 है या 16.12.2004 है?

श्री श्रवण कुमार : 16.12.2003 है, पर 16.12.2003 को यह सरकार विराजमान हो चुकी थी, कार्यवाही करना शुरू कर चुके थे। एक शायर ने एक बात कही है-

तू भला है तो बुरा हो नहीं सकता।

बुरा वो है जो तुझको बुरा कहता है,

अगर तू बुरा ही हो तो सच कहता है,

तू किसी को रोकता क्यों है।

अगर कोई बुरा है तो उसको कौन रोक सकता है?

श्री राजेन्द्र राठौड़ : अध्यक्ष महोदय, आप ही समझेंगे इस शेर का मतलब। दुबारा सुनाओ।

श्री श्रवण कुमार : तू भला है तो बुरा हो नहीं सकता।

(श्री श्रवण कुमार)

वो ही है जो तुझको बुरा जानता है,

अगर तुम बुरे हो तो सच कहता है

क्यों किसी को बुरा कहने से तू मना करता है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : किस शायर का शेर है, माननीय सदस्यं, यह भी बता दो।

श्री श्रवण कुमार : एक शायर का यह है। मैं यह कहता हूं, भाई राजेन्द्रजी, दाद देना चाहता हूं, अगर इसमें कांग्रेस दोषी है तो कांग्रेस, दोषी है और बी.जे.पी. दोषी है तो बी.जे.पी. दोषी है।

श्री अध्यक्ष : यह स्वयं का बनाया हुआ है। इनका स्वयं का ही बनाया हुआ है यह शेर।

श्री श्रवण कुमार : एक बात कहता हूं, माननीय सदस्य–"भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं, हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।" जिसमें देश के प्रति जाग्रति नहीं है...

श्री राजेन्द्र राठौड़ : अब जन-गण-मन मत गा देना।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मुझे तो आज पहली बार आपकी ख्याति का पता लगा, मैं तो और ही कुछ सुन रहा था।

(16.00 बजे)

श्री श्रवण कुमार : देखोगे और सुनोगे तब ही तो कहोगे न यह बात। शीशरामजी ओला भी कहते थे कि मुझे मालूम नहीं था। मालूम तब हुआ न जब झटका लगा। तो झटका लगता है तब ही मालूम होता है। आपको भी मालूम हो जाएगा, हम क्या हैं।

मैं कटारिया साहब की बातों की पहले भी इज्जत करता था। ये इस सीट पर बैठे रहते थे, इस पांच करोड़ जनता के साथ न्याय करो। न्याय का प्रतिफल यहां बैठा है। मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन जीतता है, कौन हारता है, पर मैं चाहता हूं कि पांच करोड़ जनता ने जो आपको चुनकर भेजा है, उसके साथ खिलवाड़ नहीं होना चाहिए। सत्यता और निष्ठा से काम करने वाला आदमी कभी मरता नहीं है, मैं यह कहना चाहता हूं। 50 साल के अन्दर चाहे कांग्रेस आई हो या चाहे बी.जे.पी. आई, पर इस भ्रष्टाचार पर किसी ने अंकुश नहीं लगाया। आज पी.एच.ई.डी. का कोई सामान, मैं देख रहा हूं कि पांच महीने से पी.एच.ई.डी. के अन्दर केबल नहीं है, मोटर नहीं है, क्यों उनकी प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है? उनका पूरा पैसा अभी कमीशन का आया नहीं इसलिए 6 महीने से लोग पानी के लिए तरस रहे हैं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : उसका नाम क्या है फतेहपुर वाले का?

श्री श्रवण कुमार : फतेहपुर, और मैं आपको लिस्ट ही दे देता हूं, पूरी ही दे दूंगा, चिंता ही मत करो आप।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : नाम क्या है अफसर का?

श्री श्रवण कुमार : महेन्द्र सिंह खींचड़, (एस.डी.आई.) शिक्षा प्रसार अधिकारी है। एक शिक्षा प्रसार अधिकारी 6 हजार बोरियों का गबन कर सकता है तो उसके ऊपर वाला क्या कर सकता है, आप देख लो। गंगा मेरी मां का नाम, बाप का नाम हिमालय, इसका फैसला आप ही कर लो कि मैं किस सूबे वाला?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : गजब कर दिया आज तो।

श्री अध्यक्ष : आप तो शेरो-शायरी में उतर गये। राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर बात करें, शेरो-शायरी में नहीं उलझें।

श्री श्रवण कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय महामहिम ने यह कहा था, जल ही जीवन है। यह बात कही थी, नहीं हो तो देख लो उसके अन्दर। मैं जल पर कहना चाहता हूं। आप देखें, जल का जहां प्रश्न आता है, जहां हैण्ड पम्प की बात करते हैं, परसों हैण्ड पम्प की बड़ी बातें हुई थीं, किशनगढ़ में हैण्ड पम्प की जरूरत होगी, जहां भी है पर पिलानी विधान सभा, सुमित्राजी जहां से जीतकर आती हैं वहां हैण्ड पम्प का उपयोग नहीं हो सकता।

श्री अध्यक्ष : अब सुमित्रा नहीं है, अध्यक्ष है यहां पर।

श्री श्रवण कुमार : सारी, सारी, माननीय अध्यक्ष महोदय, जहां से जीतकर आते है। सारी कह दिया न। पुरानी बातों को एक मिनट में भूल नहीं सकते हैं। लेकिन वहां हैण्ड पम्प आज चार महीने से कांग्रेस सरकार नहीं, डी.सी.पी. को...

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने आपको सारी कह दिया।

श्री श्रवण कुमार : यह तो, साहब, रामसिंहजी कुछ भी कह देते हैं।

कांग्रेस सरकार के समय से ही डी.सी.पी. का कार्य बन्द कर रखा है– केबल सरकार के पास है नहीं, मोटर सरकार के पास है नहीं, सामान सरकार के पास है नहीं। जब दो महीने पहले हम जीतकर आये, कांग्रेस सरकार ने बंद किया तो बी.जे.पी. सरकार आई है, नई रेल लेकर आई है तो जरूर खोल दिया होगा। चीफ इंजीनियर ने कहा, साहब, सामान ही नहीं, हमारे ऊपर तो प्रतिबंध लगा है। मैं कहना चाहता हूं, मंत्री महोदय से, सरकार ने कहा कि जल ही जीवन है तो कम से कम जल पर जो प्रतिबंध लगा रखा है उसको तो हटा दें। माननीय मंत्री महोदय, एक बात मैं बताना चाहता हूं कि बी.जे.पी. सरकार ने वेटरिनरी कम्पाउंडरों के लिए प्राइवेट स्कूलों की शुरूआत की थी। उसके बाद भैरोंसिंहजी

(श्री श्रवण कुमार)

का राज चला गया, कांग्रेस सरकार आई, कांग्रेस सरकार में पांच साल तक प्रोसेस करते रहे, करते रहे, लास्ट में उन्होंने दुनिया भर के प्राइवेट स्कूलों की स्वीकृतियां दे दीं, लड़कों से दो-दो लाख रुपये जो मालिक थे उन्होंने फीस जमा करवा ली। फिर बच्चों को परीक्षा के लिए वह क्या कहते हैं...

श्री अध्यक्ष : अब एक मिनट में अपनी बात आप कनक्लूड कर दें।

श्री श्रवण कुमार : क्या कितनी जोरदार बात कह रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : आपने काफी शेरो-शायरी कर दी, अब एक मिनट में समाप्त कीजिए।

श्री श्रवण कुमार : कहां शेरो-शायरी कर दी?

उसके बाद में सरकार ने इस बात का निर्णय ले लिया, अलाटमेंट कर दिया और काउंसिलिंग हो गई। आज उन लड़कों का एडमिशन नहीं हो रहा है और सरकार को इसमें कोई बदहजमी नहीं है। आपके डाइरेक्टर आपको बताते नहीं हैं, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि सरकार को फेल करने में अधिकारियों का बहुत बड़ा हाथ होता है। सरकार को मालूम नहीं है कि क्या स्कूलों की परीक्षाएं ले लीं, पैसे जमा करा लिये। लड़कों ने एडमिशन नहीं लिया कि हम तो वेटरिनरी करेंगे और कम से कम दो हजार लड़कों की लाइफ खराब हो गई। मैं कहना चाहता हूं सरकार से कि कम से कम इस बात पर ध्यान दें कि दो हजार लड़कों की लाइफ खराब हो गई। उनकी काउंसिलिंग हो गई, सारा काम हो गया और आज तक उन लड़कों का एडमिशन नहीं हुआ। मेरी, कटारिया साहब, आपके प्रति बड़ी सहानुभूति है, मैं कहना चाहता हूं कि सरकार में सभी एक जैसे नहीं होते हैं पर आप थोड़ा कंट्रोल करिये। यह सरकार आपको जनता ने दी है तो इसलिए नहीं दी है कि आप पांच साल तक यह कहें कि आपने क्या किया। पहले राजेन्द्रजी को हम कहते थे कि आपने क्या किया। अगर पहले आप पहले आप करते रहोगे तो ट्रेन निकल जाएगी। अगर आप ऐसे ही पहले आप पहले आप करोगे तो ट्रेन निकल जाएगी, पांच साल आ जाएंगे फिर कोई भी नहीं पूछेगा। मैं कहना चाहता हूं कि चार बार आ गये राजेन्द्रजी, यह तो बहादुर आदमी हैं, जीतकर आ गये।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्री अध्यक्ष : समाप्त करें।

श्री श्रवण कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत जोरदार बात कह रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : समाप्त करें।

श्री श्रवण कुमार : समाप्त कर रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : बातें तो बहुत जोरदार कही हैं लेकिन आप अब समाप्त करें।

श्री श्रवण कुमार : मैं, माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बात कहना चाहता हूं, हमारे स्टेटिस्टिक्स डिपार्टमेंट की एक बहुत जोरदार बात है, देखो। 32 करोड़ का घोटाला बताया जाता है। 32 करोड़ का घोटाला, ये पैरामीटर लगा रखे हैं, कम्प्यूटर्स इनके नाम पर 32 करोड़ का घोटाला हुआ। हमारे माननीय अशोकजी गहलोत ने हस्ताक्षर नहीं किये, उनको मालूम होगा। उनको सुंगध आ गई कि इसमें गड़बड़ है कोई न कोई। और आते ही वसुंधराजी को मालूम नहीं था, हम क्या बताएंगे, इनके ऊपर क्यों टिप्पणी करें, हमने देखा ही नहीं पहले, जिस आदमी का काम पड़ेगा, उनके आते ही साइन करवा लिये और 32 करोड़ के घोटाले को डकार गये। आपने परमिशन दी है, इसमें सरकार का चूना है।

श्री अध्यक्ष : श्री प्रमोद जैन भाया।

श्री श्रवण कुमार : भाया तो दो मिनट रुक सकते हैं, जाएंगे थोड़े ही।

श्री अध्यक्ष : मजाक नहीं है।

श्री श्रवण कुमार : मैं कहना चाहता हूं सरकार से कि इस तरह से डकार गये। माननीय कटारिया साहब को, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि यह 32 करोड़ के घोटाले की जांच करवाई जाए और ऐसे अधिकारियों को दोष से मुक्त नहीं किया जाए। अगर इस प्रकार आपने किया तो सरकार की सारी की सारी पद्धतियां हम आप पर भी लागू करेंगे। जो भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारी हैं, मेरा दृष्टिकोण यह नहीं है, चाहे कांग्रेस के सदस्य हों, चाहे बी.जे.पी. के सदस्य हों, चाहे किसी के सदस्य हों, भ्रष्ट आदमी के लिए कोई किसी का...

श्री अध्यक्ष : श्री नन्दलाल बंशीवाल।

श्री श्रवण कुमार : लास्ट में, माननीय अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन है, एक प्रश्न है। मैं तो एक बात कहूंगा।

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण कर लें।

श्री श्रवण कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, जंगल में पक्षी अनेक होते हैं ठिकाना एक होता है। जंगल में शिकारी अनेक होते हैं निशाना एक होता है। भाषाएं अलग अलग होती हैं, तराना एक होता है। दिल में हो प्यार तो जमाना एक होता है। धन्यवाद। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण कर लें। आप प्रारम्भ करें, नन्दलालजी बंशीवाल। (व्यवधान)

श्री नन्दलाल बंशीवाल (दौसा) : अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे समय प्रदान किया उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मुझे एक निवेदन और करना है, साहब, मुझे यह बता दे कि मुझे कितने मिनट बोलना है, उसी में मैं कनक्लूड कर लूं।

श्री अध्यक्ष : 10 मिनट।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : 10 मिनट, 4 बजकर 17 मिनट।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 1998 में जब कांग्रेस की सरकार बनी, अशोकजी गहलोत मुख्य मंत्री बने, इस सदन में आये, सदन में आते ही उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि भैरोंसिंहजी मेरा खज़ाना खाली छोड़कर गये हैं। सरकार के पास विकास कार्य करने के लिए खजाना खाली है, बिजली देने के लिए खजाना खाली है। इन्होंने पहले दिन से ही राग अलापना शुरू कर दिया कि खजाना खाली है, खजाना खाली है। भैरोंसिंहजी के टाइम पर जो बिजली मिला करती थी उधार के अन्दर, साहूकारी के अन्दर, इन्होंने अपने आते ही साहूकारी खतम कर दी और उधार बिजली मिलना बन्द हो गया।

श्री जुबेर खान : पाइंट आफ आर्डर। अध्यक्ष महोदय, इस सदन में कुछ परम्पराएं हैं, नियम बने हुए हैं और आप नवीं बार आई हैं, बहुत-से माननीय सदस्य जब कोई वक्ता बोलते हैं तो माननीय सदस्य और आप जब आसन पर होती हैं तो दोनों के बीच में अक्सर यह देखा है कि लोग गुजर कर जाते हैं जो सदन की परम्परा के खिलाफ है। इसलिए आप यह व्यवस्था दीजिए कि जो लोग आसन और वक्ता के बीच में से गुजर कर जाते हैं उनको पाबंद किया जाए।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ने जो एतराज किया है वह बिलकुल सही है। आसन और वक्ता के बीच में से किसी को भी गुजर कर नहीं जाना चाहिए। नये आने वाले माननीय सदस्य और पुराने सदस्य कृपया इस बात का पूरा ध्यान रखेंगे, ऐसा मैं विश्वास करती हूं भविष्य के लिए।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : तीन मिनट खराब हो गये, साहब। माननीय अध्यक्ष महोदय, गहलोतजी ने जब सत्ता सम्भाली, चुनावी घोषणा पत्र में उन्होंने यह वादा किया जनता से कि प्रदेश में हम 8 घंटे बिजली देंगे। इन्होंने पूरे पांच साल निकल गये, 8 घंटे बिजली कभी भी उपलब्ध नहीं करवाई। आज वसुंधराजी आई हैं, भाजपा की सरकार का गठन हुआ है। भैरोंसिंहजी 19 हजार करोड़ का कर्जा छोड़ कर गये थे तो इन्होंने छोड़ा 56 हजार करोड़ रुपये का। 56 हजार करोड़ का आपका छोड़ा हुआ कर्जा है। 56 हजार करोड़ का कर्जा होने के बावजूद भी माननीय वसुंधरा राजेजी ने एक दिन भी नहीं कहा कि मेरा खजाना खाली है। एक दिन भी यह नहीं कहा कि मैं विकास कार्य कहां से कराऊं। आप लोगों ने आते ही, आपके पास कोई मुद्दा नहीं था, सदन में पहले दिन से शोर मचाना चालू कर दिया कि किसानों को बिजली नहीं मिल रही है आप लोग अपने-अपने क्षेत्रों में जाओ। परिणाम घोषित होने के बाद आप

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

जयपुर में आकर बैठ गये और यह समीक्षा कर रहे हो कि हम हार कैसे गये। हम लोग निर्दलीय थे वहां बैठे हुए, आप लोग सत्ता में यहां बैठे हुए थे, बी.जे.पी. के लोग वहां पर बैठे हुए थे। बी.जे.पी. के लोग जब सत्ता से बाहर हुए तो इन्होंने एक साल तक तो कोई मुद्दे ही नहीं रखे आपके सामने। उसका मंथन करते रहे कि हमारी हार कैसे हो गई। और आप लोगों को भी अपनी हार बरदाश्त नहीं हुई। आप लोगों के पास कोई मुद्दे नहीं रहे तो आपने पहले ही दिन से अलापना शुरू कर दिया कि 8 घंटे बिजली गांवों में नहीं मिल रही है। आप लोगों ने परिणाम आने के बाद गांवों में जाकर देखा ही नहीं है कि वहां 12 घंटे बिजली मिल रही है। 8 घंटे किसानों को मिल रही है और सवेरे 5 से 7 तक सिंगल फेस मिल रही है। आप सुनो। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, ये +++ बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : +++ शब्द विलोपित कर दिया जाए।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आपके ऊर्जा मंत्री डाक्टर चन्द्रभानजी थे उन्होंने ऊर्जा विभाग का बिलकुल बेड़ा गर्क कर दिया। यहां रामनारायणजी अगर बैठे हों, उनको ऊर्जा मंत्री बनाया था, इस कारण से बनाया था। सत्यानाश कर दिया बिजली विभाग का। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : फलौदी से आने वाले माननीय सदस्य, अभी अभी व्यवस्था हो चुकी है और आप उस व्यवस्था का पालन नहीं करते हुए फिर वक्ता और आसन के बीच में आ गये।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : एक मिनट और गया मेरा। ऊर्जा मंत्रीजी ने 20 लाख इलैक्ट्रोनिक मीटरों की खरीद की...

श्री रामचन्द्र सराधना : यह बेड़ा गर्क ठीक कराओ। (व्यवधान) वो कह रही हैं।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आप अध्यापक हो, आपकी समझ में नहीं आएगा।

श्री रामचन्द्र सराधना : बहुत बड़ा विद्वान है।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : जबकि प्रदेश में प्रति वर्ष पांच लाख मीटरों की खपत होती है। तो आपने मीटर खरीद घोटाला बहुत भारी किया।

आप लोग कहते हैं कि हमने अकाल का खूब अच्छा सुप्रबन्धन किया है। आपने अकाल का कुप्रबन्धन किया। आपने गिरदावरी के हिसाब से यह तय किया

+++ शब्द अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

कि कहां पर अकाल राहत कार्य खोले जाने चाहिए, कहां पर नहीं खोले जाने चाहिए। आपने गिरदावरी रिपोर्ट गलत ली इस कारण से जहां असली अकाल पड़ा था, जहां असली अकाल के हकदार थे जिनको कि रोजगार मिलना चाहिए था, इस अकाल के माध्यम से, उनको नहीं मिल पाया। आप लोगों ने मजदूरी करवाई बी.पी.एल. लोगों से। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मजदूरी करने वही जाता है जो गरीब होता है, कोई सेठ-साहूकार मजदूरी करने नहीं जाता। आपने उनको मजदूरी के नाम पर कूपन दे दिये और यह कह कर दे दिये कि आपको इस कूपन का गेहूं मिलेगा। अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इनकी सरकार चली गई और वे आज तक कूपन लेकर घूम रहे थे। जब हमारी सरकार का गठन हुआ, जब कूपन हमारे सामने आये तो हम खाद्य मंत्रीजी की जानकारी में लाये कि ऐसे कूपन लेकर गरीब लोग दर-दर भटक रहे हैं तो इन्होंने उसके अनाज की व्यवस्था करवाई। आपने यह किया, आपने अनाज बेचा, आपने जो सेठ साहूकार हैं गांव के, पंचायतों के, उनके गोदाम भर दिये। अनाज बेच दिया आपने। भारत सरकार ने आपको फ्री का गेहूं दिया। सुप्रीम कोर्ट ने आपको फटकार लगाई कि आपने गेहूं नहीं उठाया। आपने गेहूं नहीं उठाया उसकी फटकार आपको खानी पड़ी, आपके मुख्य मंत्रीजी को खानी पड़ी, आपकी सरकार को खानी पड़ी मगर आपकी समझ में नहीं आया। आपकी समझ में तब आया जब आप यहां आकर बैठ गये। मैं वहां बैठा-बैठा बोलता था कि आप लोग जा रहे हो, आप लोग जा रहे हो तो आप कहते थे कि नहीं, हम नहीं जा रहे हैं; हम वापस आ रहे हैं। अब क्या हाल हुआ? अब आप चिंतन और मनन करो। गांवों में जाओ कि बिजली मिल रही है या नहीं मिल रही है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे एक और निवेदन करना है। इनके टाइम पर भ्रष्टाचार बहुत भारी हुए। ये भ्रष्टाचार के कारण यहां पर बैठे हैं। इनके कार्यकाल के अन्दर अधिकारियों ने बहुत भ्रष्टाचार किया। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, आप भी हमारे साथ थीं, आप निर्दलीय थीं, हम निर्दलीय थे, हम वहां बैठा करते थे, मैंने एक मामला उठाया था कि आपके मंत्री तो भ्रष्टाचार कर ही रहे हैं, आपकी सरकार तो भ्रष्टाचार कर ही रही है, आपके अधिकारी भी भ्रष्टाचार कर रहे हैं। भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा आपने पार कर दी, आपके अधिकारियों ने पार कर दी कि रिश्वत में मींगणी खाने लग गये थे। अध्यक्ष महोदय, यह भी आपकी जानकारी में है कि बकरी की मींगणी खाने लग गये थे। ये लोग बकरी की मींगणी खाने लग गये थे।

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

अभी यहां पर एक माननीय सदस्य बोल रहे थे कि आप हमारे स्कूल क्रमोन्नत तो करेंगे। आपने हमारे बड़े स्कूल क्रमोन्नत किये। आप लोगों ने बी.जे.पी. के 33 और 7 इंडिपेंडेंट कुल 40 और दो जनता दल के, जीतमलजी चले गये हैं, तीन जनता दल के थे, उनके किसी के भी क्षेत्र के अन्दर स्कूल क्रमोन्नत नहीं किये और अब आप हमेशा आशा करते हो कि हम आपके स्कूल को क्रमोन्नत करेंगे? अब हमारे से आशा करते हो कि हमारे स्कूल को क्रमोन्नत करेंगे? (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करता हूं कि इनके...

श्री रमेश खींची : बकरी की मींगणी किस अफसर ने खायी थी उसकी जांच करवा लें। ये +++ बोल रहे हैं। आपने नहीं खायी। (व्यवधान)

श्री नन्दलाल बंशीवाल : अभी बिजली के मामले में बोल रहे थे। अध्यक्ष महोदय, बहुत गम्भीर बात हो रही है। (व्यवधान) बिजली के मामले को लेकर बहुत गम्भीर हो रहे हैं। इनके राज के अन्दर बिजली के मामले को लेकर आपके एम.एल.ए. और मंत्री पिटे। आप नाम सुनना चाहते हो? शांति पहाड़ियाजी पिटीं बिजली के मामले को लेकर। निर्भय लाल जाटव पिटा, बिजली के मामले को लेकर पिटा। राजेन्द्रजी चौधरी पिटे, बिजली के मामले को लेकर पिटे। रूपाराम डूडी पिटे, बिजली के मामले को लेकर पिटे। और आपके तत्कालीन ऊर्जा मंत्री डाक्टर चन्द्रभानजी भी पिटे। मौलासर के अन्दर आपके मुख्य मंत्री अशोकजी गहलोत की पिटाई हुई। उनको वहां से सभा छोड़कर भागना पड़ा वो पुलिस के ट्रक में चढ़कर भागे। हरेन्द्रजी मिर्धा ने उनको ट्रक में चढ़ाने में कन्धा दिया। (व्यवधान)

श्री रमेश खींची :...ये आये दिन खुद पिटते रहते हैं। (व्यवधान) इनको पिटने का लग रहा है। (व्यवधान) इसको जरा एक्सपंज कराएं।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : माननीय अध्यक्ष महोदय, एक निवेदन और करना चाहता हूं कि इनके क्षेत्र के अन्दर इनके राज के अन्दर,...

श्री रमेश खींची : अध्यक्ष महोदय, जो शब्द बोले हैं उन्हें एक्सपंज कराएं। (व्यवधान)

श्री नन्दलाल बंशीवाल : इनके कांग्रेस के केबिनेट मंत्री के क्षेत्र में हेमराज पुत्र...

श्री अध्यक्ष : आपका समय समाप्त हो गया है।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : कनक्लूड कर रहा हूं, अध्यक्ष महोदय। हेमराज...

+++ शब्द अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित किया गया।

श्री रमेश खींची : अध्यक्ष महोदय, कार्यवाही से निकलवाएं पिटने शब्द को। (व्यवधान)

श्री नन्दलाल बंशीवाल :...निवासी दुर्जनवास राजीव गांधी पाठशाला में...

श्री अध्यक्ष : क्या कहना चाह रहे हैं आप?

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आपको बड़ा दुःख हो रहा है, राजीव गांधीजी का नाम बदल दिया...

श्री अध्यक्ष : आपका समय समाप्त हो गया है अब।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : राजीव गांधी संकुल का नाम बदल दिया, आपको बड़ा दुःख हो रहा है। वो एक आदर्श हैं, वो हमारे देश के प्रधानमंत्री रहे हैं और आप लोग उनकी कितनी किरकिरी करा रहे हो, सुनो आप। हेमराज पुत्र गेंदा मीणा निवासी दुर्जनवास राजीव गांधी पाठशाला में कार्यरत था, ने दिनांक 6.4.2002 को रामफूल उर्फ पप्पू पुत्र वरधूचन्द मीणा की हत्या कर दी। डी.जे. कोर्ट ने उसकी जमानत रद्द कर दी। माननीय, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि यह राजीव गांधी पाठशाला में कार्यरत था और अपने एक मर्डर कर दिया। (व्यवधान) जमानत भी उसकी रिजैक्ट हो गई है। (व्यवधान) मैं कनक्लूड कर रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : आप राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद करिये। आप तो व्यक्तिगत आक्षेप लगा रहे हैं।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : अध्यक्ष महोदय, यह बहुत गम्भीर मामला है, इसको रिकार्ड पर आने दे।

श्री अध्यक्ष : संगीन मामला है तो पहले उठाना था आपको। आपका 10 मिनट का समय तो बीत गया। आपका 10 मिनट का समय तो बीत गया है।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : अध्यक्ष महोदय, इसका मामला नांगला थाना राजावतान में दर्ज हुआ। एफ.आई.आर. नं. 100/02 धारा 341, 342, 365, 343, 347, 302...

श्री अध्यक्ष : अब आप स्थान ग्रहण करें।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : पोलिटिकल संरक्षण उसको मिला। परसादी लालजी मीणा ने अपना राजनीतिक दबाव देकर उसको वापस लगा दिया। उसकी गिरफ्तारी नहीं हुई है...

श्री अध्यक्ष : आप और किसी तरीके से मामले को उठाइयेगा। अब आपका समय समाप्त हो गया, आप स्थान ग्रहण कर लें।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : मैं एक और निवेदन करना चाहता हूं कि इनके राज में हमारे 10 आई.पी.एस. अधिकारियों को रिवर्ट किया गया। माननीय अध्यक्ष महोदय,

(श्री नन्दलाल बंशीवाल)

आज हमारी सरकार सत्ता में है, मैं अपनी सरकार से निवेदन करना चाहता हूं...

श्री अध्यक्ष : श्री ज्ञानचन्द पारख। समय समाप्त हो चुका है।

श्री नन्दलाल बंशीवाल :...कि हमारे जो आई.पी.एस. अधिकारी एस.सी., एस.टी. के रिवर्ट हुए हैं, उनके बारे में गम्भीरता से यह सरकार विचार करे और उनका प्रमोशन करे।

श्री अध्यक्ष : समय समाप्त हो चुका है। दौसा से आने वाले माननीय सदस्य, आपका समय समाप्त हो चुका है।

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आपने मुझे समय दिया इसके लिए मैं आपको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं। जयहिन्द, जय भारत।

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली) **:** माननीय अध्यक्ष महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में राज्य सरकार की जो भावी योजनाएं हैं और जो नीति है, उससे इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि प्रदेश में सत्ता का परिवर्तन हुआ, लेकिन हमारी सरकार व्यवस्था में भी बहुत बड़ा परिवर्तन करने जा रही है। परिवर्तन इस बार भी हुआ और परिवर्तन पिछले चुनाव में भी हुआ था, लेकिन दोनों में अन्तर बहुत स्पष्ट है। पहला परिवर्तन इसलिए नहीं हुआ था कि हमारी जो पूववर्ती सरकार थी वह जनता की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी थी। माननीय शेखावत साहब का जो शासन था, उसमें बहुत विकास हुआ था, काम बहुत हुए थे और राजस्थान विकास की दृष्टि से बहुत आगे भी बढ़ा था, फिर भी परिवर्तन हुआ क्योंकि उस समय जो कांच कांग्रेस ने जनता को दिखाया था, जो झांसा कांग्रेस ने जनता को दिया था कि हम यह करेंगे, हम वह करेंगे, उसके बहकावे में आकर जनता ने शायद यह सोच लिया कि हमसे भी अच्छे कांग्रेस वाले हो सकते हैं और एक झांसे में आकर परिवर्तन कर डाला। पर इस बार का परिवर्तन यह स्पष्ट बताता है कि पांच सालों में कांग्रेस ने जो प्रदेश की दुर्दशा की, उससे जनता बहुत ज्यादा नाराज थी। कोई क्षेत्र देख लो, इतनी बेरोजगारी प्रदेश में कभी नहीं बढ़ी, पूरा युवा वर्ग नाराज, जबकि पहले इन्होंने वादा किया था कि हम सरकारी नौकरी के अवसर प्रदान करेंगे, रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे। बिजली का संकट, पानी का संकट, स्कूलों में शिक्षा नहीं, स्कूल क्रमोन्नत कर दिये तो मास्टर नहीं और फीस इतनी बढ़ा दी कि एक गरीब आदमी का बच्चा भी सरकारी स्कूल में पढ़ नहीं सके। चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रदेश पिछड़ गया, जितने भी सरकारी अस्पताल हैं, वहां भीड़ इतनी बढ़ गई कि वे भी छोटे नजर आने लगे। जहां भी देखो, एक अव्यवस्था

(श्री ज्ञानचन्द पारख)

का माहौल पूरे राजस्थान में फैल गया था और आखिर जनता ने चुनावों में परिवर्तन किया। हमारे जो भी सदस्य हैं, वे इस बात को लेकर कहते हैं कि यह परिवर्तन तो होता आया है, हर बार होता है। यह परिवर्तन हर बार नहीं होगा। आप जनता की उम्मीदों के ऊपर खरा नहीं उतरे, जनता को झांसा दिया, धोखा दिया इसलिए इसका परिणाम है कि आप आज यहां से वहां चले गये और यह आप कभी कल्पना मत करना कि शायद पांच साल बाद में जनता वापस कोई परिवर्तन ले आएगी। जनता परिवर्तन पहले भी नहीं लाई थी, जनता को आपने झांसा दे दिया था, कांच दिखाया था आपने और हम अच्छे होते हुए भी पिछली बार विपक्ष में बैठे। आज वापस जनता ने हमको अच्छा मानक शासन सौंपा है। साफ दिखने लग रहा है यह, बिलकुल स्पष्ट देख रहे हैं कुछ ही दिन हुए हैं लेकिन जो बेरोजगार युवा हैं उनमें एक उत्साह है। नई सरकार ने आते ही भर्ती के ऊपर से पाबन्दी हटा दी। (व्यवधान) हंसने की बात नहीं है। जनता में उत्साह है, युवाओं में विशेष उत्साह है। जब कुछ दिन बाद में भर्तियां खुलेंगी, नौकरियां लगेंगी तो शायद जो आज आप टीका-टिप्पणी कर रहे हैं, टोका-टिप्पणी कर रहे हैं, आपके सारों के मुंह बन्द हो जाएंगे। बिलकुल अवसर मिलेंगे, और इसके साथ ही...(व्यवधान) उसके बावजूद भी जो बेरोजगार रह जाएंगे, उनके लिए भी नई सरकार ने आते ही व्यवस्था कर दी। बेरोजगारी भत्ता देने की जो बात है, जो वादा है, वह हमारी सरकार ने किया।

इसके साथ ही इन पांच सालों में क्या-क्या करने वाले हैं, इसकी शुरूआत भी बहुत अच्छे तरीके से की। पहले 100 दिन का प्लान बनाया, फिर एक साल का, फिर पांच साल का। कुछ क्षेत्रों में इसका परिणाम दिखने भी लग गया। हमारे माननीय पी.डब्ल्यू.डी. मंत्री हैं, पहले सरकार कहती थी कि एक दिन में एक सड़क लेकिन नई सरकार ने आते ही कह दिया कि एक दिन में सात गांवों को सड़क से जोड़ा जाएगा। यह कोई कम बात नहीं है। पांच सालों का जो इन्होंने खाका पेश किया...(व्यवधान) गांव कम पड़ेंगे। गांव और सड़कों की जो दुर्दशा है, ढाणी-ढाणी तक जाएगी...(व्यवधान) पांच सालों का जो इन्होंने प्लान बनाया है, ये सड़कें बन जायेंगी तो ही राजस्थान भारत में विकसित प्रदेशों में पहले नम्बर पर आएगा, इन सड़कों का काम पूरे होते ही। यह आप अपने कार्यकाल में देखोगे। इसके साथ ही अभी जो खनन बन्द करने का अधिकारियों ने आदेश जारी कर दिया था, हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने बहुत गम्भीरता से उसको लिया। यह मैं उनकी मानसिकता बता रहा हूं कि वे कितनी

(श्री ज्ञानचन्द पारख)

चिंतित हैं, उनका सोच कितना है। बहुत गम्भीरता से लिया उन्होंने, और जो अधिकारियों ने खनन बन्द करने का आदेश जारी किया, बैठकर बात की, जो कमी थी उस कमी को दूर किया और वापस खनन बराबर हो, खनन काम बराबर चले, इस बात के आदेश जारी करवाये। इससे हमारी मानसिकता स्पष्ट लगती है कि हम प्रदेश में क्या करने वाले हैं।

पहले शेखावत साहब के काल में बहुत काम हुए थे, राजस्थान विकसित प्रदेशों की श्रेणी में छठे नम्बर पर आ गया था। पर आपके कार्यकाल में कर्जा बहुत बढ़ा। 32,000 करोड़ का कर्जा लेने के बावजूद भी राजस्थान विकास में पिछड़ा है। पैसा बहुत लिया, लेकिन जनता को कहीं एहसास नहीं हुआ कि आपने कहीं कोई छोटा-मोटा विकास भी किया हो। कोई क्षेत्र ले लो आप, चाहे पानी का संकट हो। कोई गांव नहीं ऐसा, कोई शहर नहीं ऐसा जिसने पिछले पांच सालों में पानी का संकट नहीं भोगा हो। अकाल की वजह से हो सकता है पानी कम बरसा हो, लेकिन आपने ऐसी कोई बड़ी या महत्वाकांक्षी योजना नहीं बनाई कि यदि बरसात नहीं हो या पानी की कमी हो जाए तो उससे कैसे निपटा जाए। पर हमारी सरकार ने आते ही 4-5 जो बड़ी योजनाएं विचाराधीन थीं, उनको शीघ्र पूरा करने की अपनी मानसिकता स्पष्ट जाहिर कर दी। हो सकता है, कुछ क्षेत्र अछूते हों, मेरा क्षेत्र भी इसमें अछूता है, लेकिन जिस तरीके से काम चल रहा है, उसमें मुझे पूरा विश्वास है। पश्चिमी राजस्थान का ऐसा भू-भाग जहां पानी का बहुत बड़ा संकट रहता है, हमारे पूर्व जलदाय मंत्रीजी बैठे हैं, उनको पता है, ये हमारे पड़ोस में रहे हैं, कि हमने पिछले साल कितनी बड़ी पीड़ा भोगी थी, संकट भोगा था। उसके बाद भी उन्होंने मदद के लिए एक भी काम नहीं किया, छोटा-मोटा भी नहीं किया। एक छोटी-सी योजना थी 17.5 करोड़ की, जो राज्य सरकार के लिए बहुत मामूली योजना होती है, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने उस योजना की भी स्वीकृति नहीं दी।

श्री रामसिंह विश्नोई : आप थोड़ा सत्य बोला करो। सबसे पहले आपके रोहट क्षेत्र की योजना मैंने मंजूर की है।

श्री ज्ञानचन्द पारख : मैं पूरा सत्य बोल रहा हूं। आपने इस पवित्र सदन में वादा किया था, घोषणा की थी आपने। आपकी योजना न तो स्वीकृत हुई, न उस पर काम हुआ। (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हमने पानी की मांग की तो पानी के बदले में लाठीचार्ज किया, आंसू गैस के गोले छोड़े, हमारे पर झूठे मुकदमे बनवाये। यह पिछली सरकार के कारनामे रहे हैं।

श्री रामसिंह विश्नोई : जो सत्य नहीं बोलता है तो उसके जूते पड़ने चाहिए।

श्री ज्ञानचन्द पारख : बिलकुल पड़ेंगे, देखना आप। आपने यह किया। माननीय पूर्व मंत्रीजी खुद कह रहे हैं कि पानी मांगा था और पानी के बदले आपने अन्याय और जुल्म किया। उसका परिणाम आप जूतों के रूप में भोग रहे हैं अभी और आने वाले कई वर्षों तक भोगोगे देखना आप।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आपने स्कूलें क्रमोन्नत कर दीं...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आपका समय पूरा होने जा रहा है, आप एक मिनट में बात समाप्त कर दें।

श्री ज्ञानचन्द पारख : माननीय अध्यक्ष महोदय, शिक्षा के क्षेत्र में भी आपने भेदभाव किया। हम भा.ज.पा. के विधायक थे लेकिन एक भी विद्यालय हमारे कहने से कभी इन्होंने क्रमोन्नत नहीं किया। पांच सालों में एक भी नहीं किया। और जहां अपनी इच्छा से स्कूल क्रमोन्नत कर दिये, स्कूल बढ़ गई लेकिन एक भी अध्यापक की भर्ती इस सरकार ने नहीं की। उसके कारण कहीं 500 बच्चे हैं तो 2-3 शिक्षक हैं...

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, आपके स्कूल क्रमोन्नत नहीं हुई? आप ईमानदारी से कहिये, हुई कि नहीं हुई?

श्री ज्ञानचन्द पारख : मेरे विधान सभा क्षेत्र में मेरी अनुशंसा पर एक भी विद्यालय क्रमोन्नत नहीं हुआ। जहां आपकी अपनी मर्जी थी। एक भी नहीं हुआ।

श्री रामसिंह विश्नोई : आपकी अनुशंसा पर नहीं हुई, वैसे तो हुई?

श्री ज्ञानचन्द पारख : और पानी की जो पाइप लाइनें हैं आपने नहीं दी, हमने आपके गिरेबान को पकड़ कर ली हैं। जन आंदोलन हुआ, लाठीचार्ज हुआ, आसूं गैस के गोले छोड़े तो आपको मजबूर होकर देनी पड़ीं, अपनी इच्छा से आपने कुछ नहीं किया। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : खैर, इन्होंने किया तो किया, आप ऐसा मत करियेगा।

श्री ज्ञानचन्द पारख : नहीं, मैंने अपनी सरकार की मानसिकता को स्पष्ट बता दिया कि हमारी सरकार क्या करने वाली है।

श्री महावीर प्रसाद जैन : साहब, जैसे को तैसा।

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, मैं तो कोई शिक्षा मंत्री था नहीं, लेकिन मुझे मालूम है, आपके विधान सभा क्षेत्र में कम से कम दस स्कूलें क्रमोन्नत हुई हैं।

श्री ज्ञानचन्द पारख : जहां आपने लिख कर दी थीं, आपने जहां वादा किया था वहां भी नहीं हुई। जहां आप वादा

(श्री ज्ञानचन्द पारख)

करके आये थे, आपने लिखित में आश्वासन दिया था, वहां भी नहीं हुई।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, सब का ठेका मत लो आप। आप सब का ठेका मत लो, आपको जानकारी नहीं है।

श्री रामसिंह विश्नोई : मैंने इनका कहा है। इनका कहा है मैंने। (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : यह तो कल्लाजी ने कहा वह बोल रहे हैं, इनको कुछ पता नहीं है।

श्री रामसिंह विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, मेरे क्षेत्र से यह मिला हुआ क्षेत्र है इसलिए मैंने कहा है, मैंने आपका नहीं कहा है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : वह उनकी बात अलग है लेकिन सब का ठेका मत लो।

श्री रामसिंह विश्नोई : मेरे क्षेत्र से जुड़ा हुआ क्षेत्र है।

श्री अध्यक्ष : आप टोकाटाकी मत करो, उन्हें कहने दो बात। आपका समय समाप्त होने जा रहा है, हो चुका है, एक मिनट में बात कनक्लूड कर दें।

श्री ज्ञानचन्द पारख : माननीय अध्यक्ष महोदय, समाज का ऐसा तबका जिसको मदद की आवश्यकता है, पूर्ववर्ती सरकार ने घोषणाएं बहुत ज्यादा कीं–विधवाओं को पेंशन, विकलांगों को पेंशन, वृद्धों को पेंशन, शायद इन्होंने पेंशन जितनी स्वीकृत नहीं कीं उससे कहीं ज्यादा बंद की इन्होंने। इनके कार्यकाल में जितने विधवा, वृद्धावस्था पेंशन के प्रकरण बंद हुए हैं, अपने आप में एक कीर्तिमान है। विधवा महिलाओं की जवान बच्ची को शादी में पांच हजार रुपये की सहायता राशि जो दी जाती थी वह भी बंद कर दी। अध्यक्ष महोदय कई महिलाओं को मैं जानता हूं जिनकी शादी हो गई, बच्चे हो गये लेकिन जो विवाह पर सहायता राशि मिलती है वह अभी तक नहीं मिली है, कई बच्चियों की। एक-एक बच्चा होने के बाद भी सहायता राशि उनको जो दी जाती थी वह नहीं मिली और आज हमारी सरकार ने...

एक माननीय सदस्य : कमीशन नहीं मिला था उसमें।

श्री अध्यक्ष : समाप्त करें, अब आप समाप्त करें।

श्री ज्ञानचन्द पारख : अपने अभिभाषण में स्पष्ट कर दिया कि हम प्रदेश को क्या देने जा रहे हैं, क्या व्यवस्था करने जा रहे हैं। निश्चित रूप से प्रदेश के लिए आने वाले दिन सुखद होंगे, क्योंकि ज्यों ही वसुन्धराजी ने राजस्थान में प्रवेश किया, बहुत अच्छी बारिश हुई। ज्यों ही हमने शासन में प्रवेश किया...

श्री अध्यक्ष : धन्यवाद। श्री रघुवीर मीणा।

श्री ज्ञानचन्द पारख : रायपुर क्षेत्र में तेल का बहुत बड़ा भण्डार मिला, तो ये

(श्री ज्ञानचन्द पारख)

सारे राजस्थान की खुशहाली के एक प्रतीक के रूप में स्पष्ट चिन्ह दिख रहे हैं।

डा. जालम सिंह रावलोत : अध्यक्ष महोदय, एक मिनट मुझे दिला दें।

श्री अध्यक्ष : नहीं, ऐसा है, पहले रघुवीर मीणा बोलेंगे, उसके बाद आपका आएगा।

डा. जालम सिंह रावलोत : मुझे मौका तो देंगे।

श्री अध्यक्ष : हां, मिलेगा, मिलेगा। कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

श्री ज्ञानचन्द पारख : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी सरकार की ओर से बिलकुल इतना आश्वस्त हूं कि आने वाले दिन निश्चित रूप से प्रदेश की जनता के लिए बहुत खुशहाली के होंगे, अच्छे दिन होंगे, यही कहना है। धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : थैंक यू।

श्री रघुवीर सिंह मीणा (सराड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है, मैं अपने आपको इसमें सम्मिलित करते हुए कुछ सुझाव मेरे क्षेत्र के और कुछ सरकार के भी रखूंगा। इसमें कई माननीय सदस्यों ने हिस्सा लिया. सत्ता पक्ष के अधिकांश सदस्यों की तरफ से यह बखान किया गया कि पिछली सरकार ने, क्या किया, क्या नहीं किया। परन्तु इसमें कोई माननीय सदस्य ऐसा नहीं है जो यह बताता कि हमारी सरकार क्या करेगी–अच्छा करेगी, बुरा करेगी। परन्तु...(व्यवधान) आपने जो दिया है उसी पर मैं अपने...

श्री टीकमचन्द कान्त : बखान नहीं किया, पिछली सरकार की निंदा की, यह बोलो।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : पिछली सरकार की आपने बखान तो की, पर हम यह उम्मीद भी कर रहे हैं कि आप पिछली सरकार की तरह नहीं करके इस सरकार में बैठकर अच्छे काम करेंगे।

आपने इस पचास पेज की पुस्तिका में जो दर्ज किया है उसके संदर्भ में निवेदन करना चाहूंगा, समय के अभाव की वजह से पूरी बात तो नहीं कह पाऊंगा परन्तु मैं जिस सम्भाग से आता हूं उस सम्भाग के बारे में जरूर कहना चाहूंगा कि इस अभिभाषण में जो बात कही और घोषणा पत्र में जो बात कही, उसमें कितनी भिन्नता है और इससे इस राज की कथनी और करनी में, नीति और नीयत में अन्तर पता चलता है। अध्यक्ष महोदय, जनजाति उप योजना क्षेत्र में 16 सीटें हैं। उसमें एक प्रतापगढ़, आबू रोड और पिण्डवाड़ा भी आता है और बाकी बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर की 23 पंचायत समितियां मिलकर उप योजना क्षेत्र बनता है। वहां 35 लाख

(श्री रघुवीर सिंह मीणा)

जनसंख्या है, उसमें से करीब 24 लाख ट्राइबल हैं। उनके हित के लिए इस सरकार ने इसमें एक–दो शब्द लिखकर इतिश्री कर ली, जबकि पूर्ववर्ती सरकार ने वहां के लोगों के विकास के लिए महाराष्ट्र पैटर्न लागू किया। यह सत्य है कि अकाल की वजह से जितना आठ प्रतिशत पैसा तेरह विभागों को मिलना चाहिए था, वह पूरा नहीं मिला परन्तु एक शुरूआत की। एक वर्ष 30 करोड़ दिये, दूसरे वर्ष 40 करोड़ दिये, इस तरह से वहां के लोगों को अच्छी शिक्षा मिले, आधारभूत सुविधाओं का निर्माण हो, इसका काम किया। परन्तु इस सरकार ने महाराष्ट्र पैटर्न का नाम तक नहीं लिखा इसमें। इससे पता चलता है कि इनकी नीयत वहां के लोगों के लिए कैसी है। मैं आपसे निवेदन करूं कि जनजाति उप योजना क्षेत्र के लिए अभिभाषण में नशाबंदी या आबकारी नीति के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं लिखा है। इनके घोषणा पत्र में यह लिखा था कि जनजाति उप योजना क्षेत्र में, जब सरकार बन जाएगी उसके बाद, जिस तरह से पुराने जमाने से चला आ रहा है, वहां के लोगों के रीति–रिवाज हैं कि महुआ की शराब बनाकर कल्चरल प्रोग्राम में एक–दूसरे की सेवा करते हैं, वह योजना हम लागू करेंगे और अंग्रेजी शराब को बंद करेंगे। परन्तु बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आज वहां चाय की थड़ियों की तरह शराब की दुकानें खुली हैं। हमारे प्रतापगढ़ से आने वाले वरिष्ठ माननीय सदस्य ने यह अभिभाषण का प्रस्ताव रखा, उन्होंने भी इस पर दुःख व्यक्त नहीं किया और उलटे सरकार की तारीफ

(16.37 बजे)

(डा. एन. एस. गुर्जर, सभापति, पदासीन)

कर दी। इससे दुःखद बात हमारे लिए कुछ हो ही नहीं सकती है। न ही उन्होंने कहीं महाराष्ट्र पैटर्न के लिए...

श्री नन्दलाल मीणा : माननीय सदस्य, आपने जो बनाया था वह बचा हुआ है जो थड़ियों पर बिक रहा है।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : चलो, अच्छा है, आपकी उनके लिए यही सोच है तो बहुत बढ़िया बात है। आप भी उनके विकास के लिए, उनके उत्थान के लिए इस विभाग को सम्भाल चुके हैं, आपने भी नहीं किया। परन्तु अब भी समय है, वहां के लोगों को अब भी सहारा देने की आवश्यकता है। वहां के बच्चों की अच्छी शिक्षा देने की आवश्यकता है। पूर्ववर्ती सरकार ने बहुत अच्छे–अच्छे जो नौ आवासीय विद्यालय खोले हैं, छात्रावास बनाये हैं, इस तरह से आप भी कुछ करें। जहां सड़कें नहीं थीं वहां सड़कों का निर्माण किया, पेवर सड़कों का निर्माण किया है।

श्री जीतमल खांट : कांग्रेस के राज में एक भी आश्रम छात्रावास खोला हो तो बता दीजिये आप। पांच साल में एक भी आश्रम छात्रावास खोला हो तो बता दें।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : मेरे साथ चलना, दिखा दूंगा, भाई। (व्यवधान) सभापति महोदय, अब मैं किसी को इंटरप्ट तो करता नहीं, पर जिनकी आदत पड़ी हुई हो उसका इलाज ही क्या है।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी :...खैरवाड़ा में आपकी यह हालत हुई...

श्री रघुवीर सिंह मीणा : अभी पांच साल और आ रहे हैं, बाकी हैं। समय वापस आता है, समय परिवर्तनशील है। आपने कहा है न परिवर्तन यात्रा, यह परिवर्तन यात्रा चालू रहेगी। परिवर्तन यात्रा हर पांच साल में चालू रहेगी, चिंता मत करो। हमने इतने काम किये हैं उसके बाद भी परिवर्तन हुआ न। तो यह परिवर्तन यात्रा...

श्री महावीर प्रसाद जैन : यह सोचा कि जहां परिवर्तन कभी नहीं हुआ, अभी क्यों हुआ।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : अब मेरे को विचलित कर ही दिया...

श्री महावीर प्रसाद जैन : जहां कभी परिवर्तन हुआ नहीं. वहां परिवर्तन कैसे हो गया? (व्यवधान)

श्री रघुवीर सिंह मीणा : बिराजें। सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन कर रहा था...

एक माननीय सदस्य : परिवर्तन यात्रा का समापन कर दो, भाई।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : यह तो वैसे भी भारतीय जनता पार्टी नहीं, भारतीय यात्रा पार्टी है। घनश्यामजी अच्छी तरह से जानते हैं, कहीं कहा था इन्होंने, हमारी पार्टी तो भारतीय यात्रा पार्टी है, यात्राओं के नाम से काम चलता है।

सभापति महोदय, मैं निवेदन कर रहा था जनजाति क्षेत्र में आबकारी नीति का, मैं अभी भी सरकार को सुझाव दे रहा हूं कि आप किसी तरह विचार करें, वहां का गरीब आदमी मजदूरी करके आता है और आपने चाय की थड़ी की तरह दुकानें खोल रखी हैं। चाहे कोई भी सरकार थी, चाहे हमारी सरकार थी, चाहे आपकी सरकार थी, पर यह आबकारी नीति ट्राइबल सब प्लान इलाके में बदलो। सब मिलकर मेहरबानी करो, वहां के लोगों को बचाओ। उनका जिस तरह से आबकारी के लिए पुराना सिस्टम था, अगर आपकी मंशा हो तो ऐसा करो, नहीं तो बिलकुल ही बंद कर सको तो कर दो, बड़ी कृपा हो जाएगी। सिंचाई के क्षेत्र में मैं निवेदन करना चाहूंगा कि पहाड़ी इलाके में जब तक हम छोटे-छोटे एनीकट बांध कर बहता हुआ पानी डाइवर्ट करके सूखे तालाबों में

(श्री रघुवीर सिंह मीणा)

नहीं डालेंगे तब तक वहां के छोटी जमीन के लोगों को फायदा मिलेगा नहीं। यदि उन्नत कृषि या मैं कह सकता हूं कमर्शियल क्राप्स पैदा नहीं करेंगे, पारम्परिक खेती से आज के युग में कोई भी पेट भर नहीं सकता है, अपने बच्चों को पढ़ा नहीं सकता है। मुझे अफसोस के साथ यह कहना पड़ता है कि हमारे सम्भाग से माननीय गुलाब चन्दजी कटारिया यहां कैबिनेट स्तर के मंत्री हैं, परन्तु इस अभिभाषण में यह लिखवा देते कि जयसमन्द में किसी तरह से पानी डालेंगे तो मुझे बहुत ही खुशी होती। जयसमन्द का पानी उदयपुरवासी पी रहे हैं हमारा बड़पन है कि हम प्यासे मर रहे हैं पर फिर भी उनको पानी पीने दे रहे हैं। परन्तु आपका यह नैतिक कर्तव्य था कि आप जयसमन्द को किस तरह से भरें। यह योजना पहले से ही विचाराधीन है, मोहनलालजी सुखाड़िया के समय से विचाराधीन है। आप अगर इसमें दो शब्द लिखवाते तो मुझे निश्चित तौर पर बड़ी खुशी होती। आपने यह तो बता दिया कि देश भर की नदियों को जोड़ने के लिए हम तैयार हो रहे हैं, परन्तु हमारे नरेन्द्र मोदीजी गुजरात के मुख्य मंत्री हमें आकर भाषण देकर गये हैं कि गुजरात से इतनी बड़ी पाइप लाइन डालकर इस जयसमन्द में डाल दूंगा कि इस पाइप लाइन में सोनिया गांधी पूरे परिवार के साथ आर-पार निकल जाएं। अब पता नहीं नरेन्द्र मोदीजी को कहां ढूंढ़ेंगे हम, पर आप तो हो कम से कम, मेहरबानी करके वो पाइप लाइन गुजरात से आ जावे, चाहे कहीं से ही आए, जाखम का ओवरफ्लो पहले से ही सर्वेशुदा है उसको जयसमन्द में डाले।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : अभी तो एक बात ही कही है मैंने।

श्री धर्मपाल चौधरी : जो कहा था उसको पूरा कर देंगे।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : कर दोगे, बहुत बढ़िया, मेहरबानी होगी। आदरणीय सभापति महोदय, मैंने देखा...

श्री कनकमल कटारा : माननीय सभापति महोदय, आपने कहा पहाड़ी क्षेत्रों में सिंचाई का कुछ ऐसा हो जाए, लेकिन मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है, जनजाति विभाग मेरे पास है, जिला प्रमुख डूंगरपुर कांग्रेस की है, हमने 121 लिफ्टें चालू करने का लक्ष्य रखा था जिनमें से 46 लिफ्टें चालू कर दीं, वहां पर श्रम विकास योजना के पैसे की स्वीकृति हमने दी, लेकिन उन्होंने चैक पर साइन करने तक के लिए मना कर दिया। अभी बड़ी मुश्किल से उनसे साइन करवाये हैं। यह जो इस तरह की परिस्थिति हो रही है न, यह बड़ी तकलीफ वाली बात है।

(श्री कनकमल कटारा)

पार्टीवाद करके वहां के क्षेत्र का विकास करना और उस काम को रोकना, यह बड़ी तकलीफ की बात है। आप जैसा भाषण बोल रहे हैं, मैं भी जान रहा हूं, आप भी उस एरिये से हैं मैं भी उस एरिये से हूं, लेकिन इस तरह की स्थिति हो रही है वो भी हमको समझने की आवश्यकता है।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : सभापति महोदय, ऐसी बात है तो अपन सब बैठ करके बात कर सकते हैं, ऐसी कोई बात नहीं है। यह कोई बड़ी बात नहीं है।

श्री सभापति : आप समाप्त करें प्लीज। समाप्त करें। समय हो गया है, अब जल्दी जल्दी करें। 10 मिनट हो गये हैं।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : सभापति महोदय, राजस्थान के उस क्षेत्र में 35 लाख में से 24 लाख परिवार चयनित जनजाति के हैं, उनमें से 99%, 95% कह दो, चयनित परिवारों के लिए पिछली सरकार ने जो योजना बनायी थी मुख्य मंत्री जीवन रक्षा कोष उसे आपकी सरकार बनने के बाद 6 तारीख से बंद कर दिया गया है, उसको चालू करें। चयनित परिवारों के लोगों के जीवन का सवाल था, मुख्य मंत्री जीवन रक्षा कोष से जो हृदय रोग या बड़ी-बड़ी बीमारियों का इलाज फ्री में किया जाता था, उसे बंद कर दिया है, आप पुनः चालू करवाएं।

श्री सभापति : समाप्त करें, माननीय सदस्य, प्लीज। आपका समय हो गया, प्लीज।

श्री रघुवीर सिंह मीणा : जो आपकी इच्छा।

श्री सभापति : धन्यवाद। श्री प्रहलाद गुंजल।

डा. जालम सिंह रावलोत : सभापति महोदय, अध्यक्ष महोदया मुझे एक मिनट के लिए समय देकर गयी हैं इनके बाद में।

श्री रामनारायण मीणा : ऑन ए पाइंट आफ इंफार्मेशन, माननीय सभापति महोदय, मैं एक बहुत ही दर्दनाक घटना की तरफ सदन का ध्यान आपके माध्यम से आकर्षित करना चाहता हूं कि... (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आपने जो पर्ची दी है मैंने पढ़ ली है।

श्री रामनारायण मीणा : मेरी बात सुन लें, क्योंकि वहां लोगों के ऊपर ज्यादतियां हो रही हैं। पुलिस पूरे गांव में...(व्यवधान)

श्री सभापति : I am not going to allow you.

श्री रामनारायण मीणा : पूरी छावनी बनी हुई है 14 साल की लड़की के साथ कुकर्म करके...(व्यवधान)

श्री सभापति : मैंने पर्ची पढ़ ली है, यह पाइंट आफ इंफोर्मेशन की परिधि में

(श्री सभापति)

नहीं आती है। मैंने पर्ची पढ़ ली है, पाइंट आफ इंफोर्मेशन की परिधि में यह विषय नहीं आता है, आप कल 295 में लगा दें। यह इसमें नहीं आता। I won't allow...(interruptions)...I won't allow.

श्री रामनारायण मीणा : माननीय सभापति महोदय, कल का...(व्यवधान) इस राजस्थान के प्रांगण में...(व्यवधान)

श्री सभापति : मैं परमीशन नहीं दे रहा हूं आपको। अंकित नहीं हो अंकित नहीं हो रहा है, माननीय।

श्री रामनारायण मीणा : XXX

श्री सभापति : अंकित नहीं हो रहा है, माननीय सदस्य। अंकित नहीं हो रहा है, प्लीज बैठ जाइये।

डा. जालम सिंह रावलोत : XXX

श्री सभापति : आप बिराजिये। अभी तो बिराज जाइये।

डा. जालम सिंह रावलोत : XXX

श्री सभापति : बैठिये। आप अभी तो बैठ जाइये। मैं खड़ा हूं, आप बैठ जाइये।

श्री प्रहलाद गुंजल (रामगंजमण्डी) : माननीय सभापति महोदय, मैं सबसे पहले तो महामहिम राज्यपाल महोदय को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं कि इस पवित्र सदन में आकर उन्होंने अभिभाषण पढ़ा। मैं बधाई देना चाहता हूं सदन की नेता को और अध्यक्ष महोदया को जिन्होंने सदन की पहली नेता और पहली महिला अध्यक्ष के रूप में अपना गौरवमयी इतिहास बनाया है।

माननीय सभापतिजी, राजस्थान की जनता ने 12वीं विधान सभा के आम चुनावों में अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाया है, मैं यहां यह कहना चाहूंगा कि लोकतंत्र में जब जनता निर्णय सुनाती है तो उसके पीछे उसके निजी हितों की साधना नहीं होती, उसके मन में एक सपना, एक कल्पना, अपने प्रान्त के विकास की एक तस्वीर होती है। जब चुनाव के मैदान में राजनीतिक दल अपना घोषणा पत्र लेकर उतरते हैं तो जनता राज्य के विकास की एक तस्वीर उसमें देखकर फैसला करती है। अपनी कल्पना का राजस्थान बनाने के लिए राजस्थान की जनता ने अपनी भावना के प्रतिबिम्ब के रूप में सदन में मौजूद सदस्यों को भेजा है। जनता के विश्वास को उस समय धक्का लगता है जब उसके द्वारा चुनी हुई सरकार उसकी भावनाओं के अनुरूप काम नहीं करे, उसका चुना हुआ प्रतिनिधि उसकी भावना के अनुरूप काम नहीं करे। 1998 के आम चुनावों के बाद राजस्थान की जनता ने ऐसा ही कुछ महसूस किया। आम चुनावों में सब्जबाग दिखा कर एक बड़ा सपना

XXX अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अंकित नहीं किया गया।

(श्री प्रहलाद गुंजल)

दिखाया लेकिन सत्ता में आने के बाद जनता के सपने को तोड़ दिया। जनता ने बदला चुकाया, सब्जबाग दिखा कर सपना तोड़ने वाले लोगों को सत्ता में आने का सपना तोड़ कर विपक्ष में बैठा दिया और एक भरोसे की सरकार को चुना, विश्वास की सरकार को चुना।

जनता और सरकार की अभिव्यक्ति के रूप में माननीय महामहिम राज्यपाल महोदय ने इस सदन में अपना अभिभाषण पढ़ा है। माननीय सभापतिजी, लगभग 6 करोड़ जनता की आस्था के केन्द्र इस सदन में अपना अभिभाषण प्रारम्भ करते हुए महामहिम राज्यपाल महोदय ने सभी सदस्यों से आशा व्यक्त की है कि राजस्थान के विकास के मुद्दे को प्रभावी ढंग से रख कर प्रदेश के विकास में अपना प्रभावी सहयोग देंगे और अभिभाषण के अन्त में यह भी कहा कि दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर सदन की कार्यवाही में रचनात्मक दृष्टिकोण से भाग लेंगे। हम सब मिलकर, सुखी, समृद्ध, उन्नतिशील राजस्थान के लिए प्रयत्नशील होंगे। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं, सभापतिजी कि मैं सदन के लिए नया सदस्य हूं, विधान सभा के गठन को समय नहीं हुआ, पिछले दो दिनों से बिजली के मुद्दे पर जिस प्रकार का दृश्य सदन के भीतर मैं देख रहा हूं, जिस प्रकार का हंगामा चल रहा है मेरी समझ में नहीं आया। 37 पैसे यूनिट का वादा करके जनता के साथ वादाखिलाफी करके अकाल के तोहफे के रूप में राजस्थान की जनता को बिजली की कीमतें दोगुनी-चौगुनी करके बिजली के करंट का झटका दिया। दो दिन से सदन में जो कुछ चल रहा था, शायद वह उसी बिजली के करंट का झटका था या वह फिर सत्ता-बिछोह की तड़पन थी। मेरी समझ में यह भी नहीं आ रहा है कि ये लोग पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे या लोक सभा चुनाव का भय इनको सता रहा था। मेरी तो समझ में यह आ रहा था कि शायद यह इस दल का चरित्र है, शायद यह इस दल का शिष्टाचार है। सभापतिजी, मैंने पिछली विधान सभा के सदन की कार्यवाही के समय तत्कालीन मुख्य मंत्रीजी का बयान अखबारों में पढ़ा कि मैंने मेरे राजनीतिक जीवन में ऐसा निकम्मा विपक्ष कभी नहीं देखा। माननीय सभापतिजी तत्कालीन मुख्य मंत्री आज विपक्ष में बैठे हैं, यह बात अलग है कि उनकी पार्टी ने आज उनको विपक्ष के नेता के लायक नहीं समझा, लेकिन मैं आपके माध्यम से विपक्ष से पूछना चाहता हूं, उनके इस आचरण को किस बात की संज्ञा दी जानी चाहिये? यह सवाल पूछ रही है राजस्थान की जनता। इस प्रकार का आचरण प्रजातंत्र की पवित्र संस्था में। माननीय सभापतिजी, मैं धन्यवाद देना चाहता हूं माननीय मुख्य मंत्री महोदया

(श्री प्रहलाद गुंजल)

को जिन्होंने विद्युत सुधार का चरणबद्ध कार्यक्रम हाथ में लिया है और धन्यवाद देना चाहता हूं माननीय तिवाड़ीजी को जिन्होंने बिजली के विषय पर वक्तव्य देकर सरकार की स्थिति को स्पष्ट किया। बिजली के क्षेत्र में क्रांतिकारी सुधार की बात की। बिजली सुधार के कार्यक्रम में कृषि कनेक्शन के साथ गरीब व्यक्ति के कुटीर ज्योति कनेक्शन देने की वर्तमान निर्धारित दर को तीन गुना बढ़ाने की बात कही। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि देश में लोकतंत्र आया और गरीब के मन में यह कल्पना सदैव रही कि कोई कल्याणकारी राज आएगा तो गरीब के घर में रोशनी लेकर आएगा। लेकिन कभी उसने यह कल्पना नहीं की थी, कभी इस बात का खयाल नहीं किया था कि ऐसा राज भी आएगा जो उसके घर की रोशनी छीन कर ले आएगा। मैं कारणों में नहीं जाना चाहता लेकिन पिछले राज में हजारों गांवों के ट्रांसफारमर उतार कर गांव और गरीब को अंधेरे में जीने के लिये मजबूर कर दिया गया। सभापतिजी, ऐसा व्यवहार राजस्थान के जवान के साथ भी पिछली सरकार ने किया। सेवानिवृत्ति की उम्र तो घटा दी, सपना दिखा दिया लेकिन अपने भविष्य को लेकर आशंकित नौजवान को उस दोराहे पर ले जाकर खड़ा कर दिया जहां उसके पास आत्महत्या, आंदोलन के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता था। माननीय सभापतिजी, राजस्थान के नौजवान ने बेकारी की मार को तो झेल लिया, लेकिन बेकारी के कारणों को जन्म देने वाले लोगों को सत्ता से विमुख कर विपक्ष में बैठा दिया। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं राजस्थान की मुख्य मंत्री महोदया को, मैं धन्यवाद देना चाहता हूं शिक्षा मंत्री महोदय को जिन्होंने सत्ता में आने के तुरन्त बाद सरकारी नौकरियों पर से लगा प्रतिबंध हटाकर बेरोजगारी भत्ते के प्रावधान की बात करके...

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री प्रहलाद गुंजल : राजस्थान के नौजवान के मन में विश्वास की एक किरण पैदा की है। सभापतिजी, मैं आपका प्रोटेक्शन चाहूंगा, पहली बार सदन में आया हूं। पिछली सरकार ने शिक्षा का मजाक बनाकर रख दिया। पैराटीचर्स के नाम पर शिक्षा के आधारभूत ढांचे को खराब करके रख दिया। परसों जब नाथद्वारा से आये माननीय सदस्य सदन में चर्चा कर रहे थे, उन्होंने अपने मुखारबिंद से इस बात को स्वीकार किया था कि राजस्थान के 23,000 पैराटीचर्स में से केवल 800 प्रशिक्षित हैं। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने स्वीकार किया। लेकिन, सभापतिजी, हमारे श्रम कानूनों में अकुशल श्रमिक को भी हम 60 रुपये रोज देते हैं, जबकि इन्होंने 1200 रुपये

(श्री प्रहलाद गुंजल)

महीने में शिक्षित-प्रशिक्षित नौजवान का शोषण किया और जब राजस्थान की सरकार से नौजवान न्याय मांगने गया तो सचिवालय पर न्याय की बजाय उनके सिरों पर लाठियां पड़ीं। मैं निंदा करना चाहता हूं सरकार के इस कृत्य की। माननीय सभापतिजी, आपकी एक उपलब्धि बता रहा हूं, पिछली सरकार की एक ऐतिहासिक उपलब्धि, पिछली सरकार में पुलिस प्रमुख के बेटे के पैरों में तो कानून की बेड़ियां नहीं पड़ी लेकिन इन्होंने अगर सबसे पहले नियमों की जंजीरें डालीं तो विधवा, कमजोर, परित्यक्ता, लाचार लोगों की पेंशन पर नियमों की जंजीरें डालकर उनका बुढ़ापे का सहारा छीना। मैं निंदा करना चाहता हूं इनके कृत्य की।

श्री सभापति : प्लीज समाप्त करें।

श्री प्रहलाद गुंजल : सभापतिजी, आपराधिक आंकड़े सदन में पेश किये जा चुके हैं, मैं चर्चा नहीं करना चाहता। मैं बहुत महत्वपूर्ण बात कर रहा हूं। पिछली सरकार के राज में कानून-व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं थी। मैं सारे राजस्थान के सन्दर्भ में नहीं जाना चाहता, मेरे विधान सभा क्षेत्र के केवल एक थाने चेचक में पिछले पांच सालों में 8 मुकदमें ऐसे दर्ज हुए जिसमें आज तक हत्यारे और हत्या के कारणों का पता नहीं। पुलिस बेबस और लाचार दिखती है। ऐसा लगता है कि पिछले राज में कानून बेबस था, आपराधियों के तार सत्ता से जुड़े थे। सभापतिजी, मैं निंदा करना चाहता हूं। बदन सिंह की रूह, बदन सिंह की हत्या ने पोल खोलकर रख दी। जनता ने उसकी हत्या पर फैसला सुना दिया। आज भी उसकी रूह कानून से न्याय की उम्मीद कर रही है। मैं निंदा करना चाहता हूं। पिछले राज में भय का आवरण जनमानस महसूस कर रहा था। कानून और व्यवस्था में विश्वास रखने वाला आम व्यक्ति अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा था और उसने 12वीं विधान सभा के आम चुनाव में एक ऐतिहासिक फैसला करके भय के आवरण को दूर करके फैंक दिया।

श्री सभापति : समाप्त करें प्लीज।

श्री प्रहलाद गुंजल : सभापतिजी, कानून व्यवस्था पर एक क्रांतिकारी पहल हुई है। पुलिस आधुनीकीरण की योजना बनी है, इसके लिये भी मुख्य मंत्री महोदया धन्यवाद की पात्र हैं। संवेदनशील, पारदर्शी प्रशासन देने की बात कही है, मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि विधवा, विकलांग पेंशन के मामले में भी नियमों में सरलीकरण करके इस कमजोर वर्ग के मन में जीने का एक विश्वास पैदा किया है। मुख्य मंत्री महोदया ने एक क्रांतिकारी पहल की है।

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री घनश्याम तिवाड़ी (संसदीय कार्य मंत्री) : सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन का समय प्रतिपक्ष के नेता और माननीय मुख्य मंत्रीजी का उत्तर होने एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित होने तक बढ़ा दिया जाए।

श्री सभापति : क्या सदन की सहमति है कि जब तक माननीय नेता प्रतिपक्ष और सदन की नेता का भाषण समाप्त नहीं होता तब तक के लिये सदन का समय बढ़ाया जाए?

(स्वीकृत)

सदन का समय नेता प्रतिपक्ष और सदन की नेता के भाषण समाप्त होने एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित होने तक के लिये बढ़ाया गया।

धन्यवाद प्रस्ताव वाद-विवाद

श्री प्रहलाद गुंजल : माननीय सभापतिजी, मैं बहुत महत्वपूर्ण बात कह रहा हूं। पिछले चार साल से राजस्थान अकाल में चल रहा है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, समाप्त कीजिए।

श्री प्रहलाद गुंजल : मैं अंत में एक छोटी-सी बात कह कर अपनी बात को समाप्त करता हूं। (व्यवधान) हंगामे का भी टाइम तय कराएंगे कि आप कितना कर सकते हो।

श्री सभापति : प्लीज, समाप्त कीजिए।

श्री प्रहलाद गुंजल : चार साल से राजस्थान अकाल की मार झेल रहा है...

मोहम्मद माहिर आजाद :...क्या उनको यह बात कहनी चाहिये कि उनको नेता क्यों नहीं बनाया, उनको नहीं बनाया? यह छोटा मुंह बड़ी बात नहीं करनी चाहिये। हम कहते आपको कि कटारियाजी को या घनश्यामजी को क्यों नहीं बनाया? यह कोई कहने की बात थी क्या? पहली बार जीतकर आये हैं छोटा मुंह बड़ी बात नहीं करनी चाहिये। (व्यवधान)

श्री प्रहलाद गुंजल : मैं बारां जिले की घटना का वर्णन करना चाहता हूं (व्यवधान)

(17.00 बजे)

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : एक मिनट, एक मिनट। माहिर साहब, आपको मालूम भी है, सदन की नेता 5 बार लोक सभा की सदस्य निर्वाचित हुई हैं, वे गुलाबजी भाई साहब और घनश्यामजी भाई साहब से सीनियर हैं?

मोहम्मद माहिर आजाद : बनवारी लालजी से एम.एल.ए. का चुनाव भी हारी हैं धौलपुर में 1993 में, एम.पी. रहते हुए, वह भी नहीं भूलना चाहिए आपको। यह

(मोहम्मद माहिर आजाद)

भी याद रखना, ये बैठे हैं उनको हराने वाले।

श्री सभापति : माननीय श्री बुलाकीदासजी कल्ला। (व्यवधान)

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : कल्लाजी नहीं हारे क्या? आपके अशोकजी गहलोत नहीं हारे क्या? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : माननीय कल्ला साहब नहीं हारे क्या? (व्यवधान)

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : सारे हारे हैं, सारे एक-एक...(व्यवधान) एक से अधिक बार हारे हैं। (व्यवधान) अशोकजी गहलोत को तो बोलना नहीं आता था, उनको भी झेला है आप लोगों ने तो। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय मंत्रीजी बोल रहे हैं कुछ, माननीय सदस्य, बैठें।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : 40 घंटे भी विधान सभा में नहीं बैठे। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय मंत्रीजी बोल रहे हैं, माननीय सदस्य, बिराज जाएं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सभापति महोदय, पिलानी से आने वाले माननीय सदस्य ने एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया था, मैं आपके माध्यम से सूचित करना चाहूंगा। उन्होंने श्री महेन्द्र सिंह खीचड़, अतिरिक्त ब्लाक शिक्षा अधिकारी के बारे में कहा कि उन्होंने फतेहपुर में भी बेईमानी की, सस्पैंड हुए थे, जेल में गये, डूंगरपुर में भी की और उसके बाद में उनको बहाल कर दिया। माननीय सदस्य, आपकी जानकारी के लिये बताऊं कि उनको सस्पैंड किया था 23.9.2002 को और उनको बहाल किया गया। 16.12.2003 को। सदन की सूचना के लिये मैंने बताया है।

श्री सभापति : माननीय श्री बुलाकीदास कल्ला, प्रतिपक्ष के नेता। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : पहले आप सदन को आर्डर में तो लेकर आएं। (व्यवधान)

डा. जालम सिंह रावलोत : सभापति महोदय, जब पहले आसन से पुकारा गया था उस समय प्रतिपक्ष के नेता ने बहिर्गमन किया था। (व्यवधान) उसके बाद उनकी पार्टी के लोगों ने 28 मिनट का तो टाइम था उनकी पार्टी का और 20 मिनट खराब किये, इसके लिये ये जिम्मेदार हैं। बोर्डर की और राज्य की सुरक्षा के बारे में इन्होंने जो निर्णय किये, जो अन्याय किया हैं... (व्यवधान) मेरा 20 मिनट का समय खराब हुआ है (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : 16.12.2003 को किसका राज था? आपने 8 तारीख को शपथ ली है और 16 तारीख को बहाल किया है। (व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, अब आप बिराज जाएं। (व्यवधान)

श्री अमराराम (धोद) : केवल सूचना नहीं लेनी थी। इसमें कार्यवाही आप बताना चाहते हैं, वह बताएं। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : माननीय शिक्षा मंत्रीजी 16.12.2003 जो आप बता रहे हैं...(व्यवधान)

श्री सभापति : माननीय सदस्य, आप बिराज जाएं, आ गयी बात।

डा. जालम सिंह रावलोत : पूरे 20 मिनट खराब किये, 20 मिनट, मेरी पार्टी के।

श्री सभापति : देखिये, बिराज जाइये। (व्यवधान) एक मिनट, माननीय सदस्य, एक मिनट, सुन लीजिए। बहुत सारे माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं, मैं कई माननीय सदस्यों को मौका भी देना चाहता हूं, लेकिन समय की भी कुछ सीमा है, 5 बजे प्रतिपक्ष के माननीय नेता को बोलना है, उसके बाद सदन की माननीय नेता को जवाब देना है, इसलिये बचे हुए माननीय सदस्यों से क्षमा चाहता हूं, प्रतिपक्ष के माननीय नेता।

श्री हरिमोहन शर्मा : सभापति महोदय, अब तक यह परम्परा रही है कि जब प्रतिपक्ष के नेता बोलते हैं धन्यवाद प्रस्ताव पर...(व्यवधान)

श्री सभापति : यह डिबेट का विषय नहीं है। इन्होंने सूचना दी, आप कल इसका नोटिस दीजिए। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अब मैं कार्यवाही कर रहा हूं।

श्री अमराराम (धोद) : डिबेट नहीं है, यह सूचना तो श्रवण कुमारजी ने दे दी। सूचना की जरूरत थोड़े ही है, सूचना तो इन्होंने आर्डर नम्बर तक बता दिये, 16 तारीख को बहाल हो गया। आप उसको बहाल करना चाहते हैं या कार्यवाही करेंगे? (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मैं उस पर कार्यवाही कर रहा हूं। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार : मुझे विश्वास है, घनश्यामजी तिवाड़ी साहब इस पर जरूर एक्शन लेंगे। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : जिन्होंने बहाल किया है उन पर भी कार्यवाही कर रहे हैं और जो बहाल हैं उन पर भी कर रहा हूं। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : सभापति महोदय, राज्यपाल के अभिभाषण पर जब प्रतिपक्ष के नेता बोले तो सदन की नेता भी अगर सदन में उपस्थित रहें तो ज्यादा उपयुक्त होगा। अब तक यह परम्परा रही है कि जब प्रतिपक्ष के नेता बोले हैं तो सदन की नेता भी सदन में रही हैं।

श्री सभापति : आ रही हैं, आ रही हैं। प्रतिपक्ष के नेता। नो कमेंट्स प्लीज, नो कमेंट्स।

डा. बुलाकीदास कल्ला (नेता, प्रतिपक्ष): माननीय सभापति महोदय,

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चूरू से आने वाले माननीय सदस्य ने जो धन्यवाद का प्रस्ताव प्रस्तुत किया उसके बारे में मैं अपने विचार प्रकट कर रहा हूं।

सबसे पहले मैं सदन की नेता माननीय मुख्य मंत्रीजी को अपनी ओर से बधाई देता हूं कि वे इस चुनाव में जीतीं। जीत और हार चलती रहती है। 56 वर्षों में कई बार हम लोग सत्ता में रहे, विपक्ष में भी रहे। आप लोग भी विपक्ष में भी रहे और सत्ता में रहे। लेकिन सत्ता को कभी अहंकार और दम्भ में हम लोगों ने नहीं लिया। ऐसा एहसास हो रहा है कि...(व्यवधान)

श्री सभापति : नो, नो, नो कमेंट्स प्लीज।

डा. बुलाकीदास कल्ला : आप लोग शुरू से ही सत्तां के इतने अहंकार में आ गये हैं कि इधर से हम बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि हम कोई सत्ताधारी पक्ष के हैं और आप विपक्ष के लोग हैं। इस तरह का व्यवहार सदन में देखने को मिल रहा है जो मैं समझता हूं उचित नहीं है। राज्यपाल महोदय ने जो ऋचा "समानो मंत्रः समितिः समानी..." पढ़ी थी, मैं बताना चाहता हूं,

सहनाभवतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य करवावहै।

तेजस्विनाव्यधीतमस्तु मा वि द्विषावहै॥

अर्थात् हम भावना तो यह रखते हैं कि संग आगे बढ़े, संग चले और विद्वेष की भावना न रखे। चाहे पक्ष के हों, विपक्ष के हों, कई माननीय सदस्यों ने, पक्ष और विपक्ष के लोगों ने बहुत उपयोगी सुझाव इस सदन में रखे, लेकिन जब सदन में वातावरण अच्छा नहीं होता है, एक दूसरे पर टोकाटाकी की जाए तो अपनी बात कोई भी माननीय सदस्य ढंग से नहीं रख सकता है। इसलिये आप अब सत्ता में आ गये हैं, सत्ता का व्यवहार करें। हम लोग बोलेंगे तो आपको भी फायदा होगा। आप देखना, मेरा जब भाषण पूरा होगा तो मन में आप सोचेंगे कि जो आप अपनी बात नहीं रख सके थे वह बात हम रख सकते हैं। आप में वह माद्दा नहीं है, एक तरीके से यह कहना चाहिए, वह साहस नहीं है। मैं सबसे पहले अपनी शुरूआत में यह कहना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्री महोदया...(व्यवधान)

श्री सभापति : बैठे-बैठे कमेंट्स न करें, प्लीज। प्रतिपक्ष के माननीय नेता बोल रहे हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : आपको सबसे पहले अपने मंत्रिमण्डल का परिचय तो कराना चाहिए था। यह सदन की परम्परा रही है कि आप आते ही सदन में बताएं कि ये हमारे शिक्षा मंत्री हैं, ये सार्वजनिक निर्माण मंत्री हैं, ये हमारे

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

समाज कल्याण मंत्री हैं। इस परम्परा का उल्लंघन किया गया है, जिसको आपको सुधारना चाहिए। मैं समझता हूं कि आप अपने भाषण को शुरू करें, उससे पहले पूरे मंत्रिमण्डल का परिचय तो कराएं 60-60 विभाग मुख्य मंत्री के पास। 120 लोग चुनकर आये हैं, अभी जो एंटी डिफेक्शन बिल आया है उसमें 15 प्रतिशत का प्रावधान है तो कम से कम 30 लोगों को तो मौका मिलता, 30 लोग मंत्री बनते। लेकिन इस राज्यपाल के अभिभाषण पर कभी तो पार्लियामेंट्री अफेयर मिनिस्टर या कभी समाज कल्याण मंत्री ने अकेले इस पूरी डिबेट को सुना है, यह हमारे सदन की सैंक्टिटी है? इस पर विचार करें, सभापति महोदय...(व्यवधान) अब ये बोल रहे हैं।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : आपके मुख्य मंत्रीजी में क्षमता नहीं थी, हमारे मुख्य मंत्री में क्षमता है, 60 क्या 120 डिपार्टमेंट सम्भाल सकती हैं। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा : प्रतिपक्ष के नेता की बात अगर नहीं सुनी गयी तो हम भी इनके नेता को नहीं बोलने देंगे, यह बात सुन लें। (व्यवधान)

श्री सभापति : एक मिनट, एक मिनट, प्लीज मुझे बोलने दीजिए।

श्री सी. डी. देवल : अगर प्रतिपक्ष का नेता बोलता है और ये बीच में डिस्टर्ब करते हैं तो इनके मुख्य मंत्रीजी को भी नहीं बोलने देंगे, यह बात बहुत स्पष्ट सुन लें आप।

श्री सभापति : मुझे बोलने दीजिए। प्लीज सिटडाउन, टेक योअर सीट प्लीज।

श्री सी. डी. देवल : कानून सबके लिये एक है।

श्री सभापति : देखिये, बीच-बीच में टोकाटाकी नहीं करे, यह सीरियस डिबेट है, सीरियस वे में लें। आप बोल रहे हैं उसका जवाब सदन की माननीय नेता बहुत सक्षम हैं, वह दे देंगी, आप बीच में टोकाटाकी न करें। प्रतिपक्ष के माननीय नेता।

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह इतनी संख्या में रहना चाहते हैं तो हमें कोई एतराज नहीं है, रहे भले ही मैं तो आपके फायदे की बात कर रहा हूं।

इसके अलावा मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूं, मैंने पहला अभिभाषण पढ़ा है जहां राजनीतिक पार्टियों का उल्लेख किया गया है। कांग्रेस पार्टी, बी.जे.पी., इनका उल्लेख कभी अभिभाषण में नहीं आया है और न आना चाहिए। यह स्वस्थ परम्परा नहीं है। हमने कभी भी इस प्रकार का पहले कभी अभिभाषण नहीं पढ़ा जिसमें राजनीतिक पार्टियों का उल्लेख हो। यह क्या कोई किसी पार्टी का मुख-पत्र है? यह राज्यपाल महोदय

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

का अभिभाषण है और राज्यपाल महोदय न केवल विधायिका बल्कि कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका, तीनों के हैड हैं। वे मुख्य मंत्रीजी के काम्प्लीमेंट हो सकते हैं, वे सप्लीमेंट नहीं हो सकते हैं, यह मैं सदन को बताना चाहता हूं। इसी प्रकार यह मुख्य मंत्री महोदय के भी हित की बात है। मुख्य मंत्रीजी की रोज वहां राज-भवन में परेड हो, क्या यह अच्छी बात है? यह लोकतांत्रिक परम्पराओं के भी प्रतिकूल है, इसलिये यह बात मुझे सदन में कहनी पड़ती है।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि अकाल प्रबन्धन, सड़क और शिक्षा पद्धति, विद्युत सुधार से सम्बन्धित कार्यक्रमों की केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री, केन्द्रीय ग्रामीण मंत्री और स्वयं प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तारीफ की है। मैं समझता हूं कि आज जो योजना का आकार बढ़ा है, 1246 करोड़ रुपये जो ज्यादा मिले हैं, वे इसी बात के आधार पर मिले हैं कि हमने पिछले वर्षों में अच्छा काम किया। इसके कारण से योजना का आकार बढ़ा, योजना का आकार ऐसे ही नहीं बढ़ जाता। पिछली सरकार की परफारमेंस अच्छी रही, उसके कारण योजना का आकार बढ़ा।

इसके अतिरिक्त खास तौर से आपने सरकार में आने के बाद यह उल्लेख किया, कुछ जगह यह कहा है आपने कि 1500 करोड़ रुपये आते ही प्राप्त कर लिये। कई जगह 2200 करोड़ रुपये का उल्लेख आया है। मैं आपके माध्यम से, सभापति महोदय, सदन को यह बताना चाहता हूं कि 137 करोड़ रुपया विद्युत सुधार कार्यक्रम के लिए 2001 में हमको मिलना चाहिए था, वह आज 2004 में मिला। 237 करोड़ रुपये प्रधानमंत्री सड़क योजना के अन्तर्गत जो हमारे कार्यकाल में मिलने चाहिए थे, वे अब मिले। एक गोल्डन टोकन पहले जारी था, आज भी जारी है किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लेकिन वह पैसा उस समय नहीं दिया गया। इस प्रकार अनेक कार्यक्रमों के पैसे पिछली सरकार के बकाया रोक रखे थे, वे पैसे हमारी वर्तमान मुख्य मंत्री लेकर आई हैं। उसके लिए तो मैं आपको धन्यवाद देता हूं लेकिन साथ-साथ पूरे राजस्थान की जनता को यह बताना चाहता हूं कि किस कारण से हमारे साथ सौतेला व्यवहार हुआ, जिसके कारण हम चाहते हुए भी काम नहीं कर सकते थे। करना चाहते थे वे काम नहीं कर सके। इसी प्रकार, क्या सदन इस बात को जानता है, और मैं समझता हूं कि सारे लोग इस बात को पसन्द करेंगे, कि पिछली सरकार ने अकाल प्रबन्ध का काम अच्छा नहीं किया? ये स्वयं जानते हैं, प्रत्येक माननीय सदस्य के इलाके में काम हुआ, रोजगार मिला। एक भी व्यक्ति भूखा नहीं सोया,

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

एक भी पशु नहीं मरा। पानी का प्रबन्ध किया गया। (व्यवधान) देखिये, इस तरह से यह व्यवहार करेंगे तो फिर यह उचित नहीं है।

श्री सभापति : सिट डाउन प्लीज। प्लीज।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मुझे ऐसा लगता है कि आपको अपनी मुख्य मंत्री पर भरोसा नहीं है।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : अकाल में मौतें हुई हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : इसका वे जवाब दे देंगी।

श्री सभापति : बैठे–बैठे नहीं बोलें। प्लीज चलिये।

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह बता रहे हैं कि सदन का माहौल ठीक रखना चाहिए।

मैं यह कह रहा था कि अकाल में करीब–करीब 75 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिला, पेयजल का प्रबन्ध हुआ। अकाल प्रबन्धन की भूरि–भूरि प्रशंसा केन्द्र सरकार ने की। इसके अलावा 600 करोड़ रुपये की सड़कें राजस्थान में बनीं। 446 करोड़ रुपये की लागत के गंग कैनाल का रिनोवेशन हुआ। हमारे जितने भी पुराने बांध थे, विश्व बैंक की सहायता से उनके रिनोवेशन का काम शुरू हुआ। इसके साथ–साथ राजस्थान में पहली बार वे व्यक्ति जो गरीबी की सीमा रेखा के नीचे रहते हैं, उनको बी.पी.एल. कार्ड की सुविधा के अन्तर्गत चिकित्सा सुविधा दी गयी। अकेला राजस्थान ऐसा प्रदेश है जिसमें यह निर्णय लिया गया कि ऐसे व्यक्तियों को कोई असाध्य बीमारी हो– कैंसर की, हृदय रोग हो, किडनी का कोई रोग हो, ऐसे व्यक्ति को चाहे कितना ही खर्चा लगे, राज्य सरकार अपने खर्चे से उनका इलाज करवाएगी। ऐसे गरीबों का काम हम लोगों ने किया। इसके अलावा ए.डी.बी. प्रोजैक्ट के अन्तर्गत छह सम्भागीय मुख्यालयों के ऊपर काम शुरू हुए और हर जगह पर विकास का कोई न कोई काम हुआ।

आज राजस्थान के इस गुलाबी नगर में ज्यादा से ज्यादा टूरिस्ट आये, यकायक 40–45 दिन में करिश्मा हो गया? अक्टूबर से हमारा टूरिस्ट सीजन शुरू हो जाता है और इस टूरिस्ट सीजन में मैक्सिमम टूरिस्ट आये हैं। इस कारण से आये हैं कि हम लोगों ने काम किया है, हर जगह पर विकास का काम हुआ है। 23 हजार स्कूलें खोली गयीं राजस्थान में, गांव–गांव में और उससे राजस्थान का लिटरेसी परसेंटेज बढ़ा है। कुल मिलाकर...(व्यवधान)

श्री सभापति : बैठे–बैठे नहीं बोलें, माननीय सदस्य, इधर हों या उधर हों। बीच में से, इधर से बैठे–बैठे बोल रहे हैं आपस में। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : इसके अलावा जगह-जगह मिडल स्कूल खुले, सीनियर सैकण्डरी स्कूल खुले और सैकण्डरी स्कूल खुले। राजस्थान में छह यूनिवर्सिटीज थीं, पिछली सरकार ने छह नई यूनिवर्सिटीज बनाकर रिकार्ड तोड़ा है। इंजीनियरिंग कालेज और मेडिकल कालेज दक्षिण भारत में और अन्य प्रदेशों में खूब खुले थे लेकिन हमारे यहां राजस्थान में नहीं खुले थे, हमारे यहां एम.बी.ए. इंस्टीट्यूट और इंजीनियरिंग कालेज तो... (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अकेले मानसरोवर में 22 लॉ-कालेज खोल कर रिकार्ड तोड़ दिया। अकेले मानसरोवर में ही, मेरी कांस्टीट्युएंसी में 22 कालेज खोल कर, ला-कालेज खोल कर रिकार्ड तोड़ दिया।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मुझे ऐसा लगता है कि इनको अपने मुख्य मंत्रीजी पर भरोसा नहीं है कि वे जवाब दे पाएंगी या नहीं दे पाएंगी। उनका जवाब यह दे रहे हैं पहले। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मैं तो आपको ही जवाब दे रहा हूं, आपके कर्तव्य को बता रहा हूं। आपने जो पराक्रम किया है वह बता रहा हूं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं तो आपको चुनौती देता हूं कि मैं और मेरे दल के किसी भी व्यक्ति की आप जांच करवा लें। कर्तव्य-कर्तव्य क्या करते हो? आपमें माद्दा है, दम है तो जांच करवा लो, हम उस जांच के लिए तैयार हैं लेकिन हम ऐसा सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : नहीं, 22 हैं मानसरोवर में। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : हां, करवा लीजिए।

श्री सभापति : आप अपना भाषण जारी रखिये। प्लीज, आप माननीय सदस्य, बीच में टोकाटोकी नहीं करें। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : हम यह कह रहे हैं कि हमारे को इसका...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : आपको गुस्सा शोभा नहीं देता, जरा हंसकर। (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल : विपक्ष के नेता बोल रहे हैं, आप इनको समझा दो पहले।

डा. बुलाकीदास कल्ला : आपकी शक्ल को देखकर तो हंसी आ ही जाती है।

श्री सभापति : माननीय प्रतिपक्ष के नेता बोल रहे हैं, आप डिस्टर्ब नहीं करें। आप लोग डिस्टर्ब करते हैं तो उधर से डिस्टर्बेंस होता है। आप बोलिये।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : बोलिये, जरा मुस्करा कर बोलिये।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं, सभापति महोदय, खास तौर से कहना चाहता हूं कि इस सदन का सबसे बड़ा काम है विधायी कार्य, लैजिस्लेटिव वर्क, और जिसके लिए इस सदन के कई माननीय अध्यक्षों ने यह कहा, कई बार इस प्रकार की मंशा व्यक्त की कि इसके लिए ट्रेनिंग होनी चाहिए। मैं सबसे पहले आपको यह सुझाव देना चाहता हूं कि आप पूरे सदन के जो पुराने लोग हैं और नये लोग हैं उनको ट्रेनिंग दें। उनको कम्प्यूटर लिटरेसी के बारे में सिखाएं। इंटरनेट के बारे में बताएं ताकि हम अधुनातन जानकारी इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर इस सदन में अपने विचारों को रख सकें और विचारोत्तेजक बातें यहां पर कह सकें। इसके लिए आप ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन करें।

मैं आपकी जानकारी के लिए आपके माध्यम से सदन को यह बताना चाहता हूं कि पिछली विधान सभा में, हालांकि पक्ष और विपक्ष दोनों को वह श्रेय जाता है लेकिन इनीशियेटिव हम लोगों ने लिया था, राजस्थान लैण्ड रेवेन्यू एक्ट को पारित किया। टिनेंसी एक्ट पर सलैक्ट कमेटी की रिकमण्डेशन आ गयी, उसको आपको लाना है। ये दोनों एक्ट जब राजस्थान में पूरी तरीके से आ जाएंगे, इस प्रदेश में रहने वाले 70 परसेंट से अधिक गांवों के लोगों को उसका पूरा-पूरा लाभ मिलेगा।

इसके अलावा मैं कहना चाहता हूं कि संगठित अपराध पहले राजस्थान में नहीं होते थे, लेकिन जब से हम ब्राडगेज से जुड़े हैं, विकास के साथ अपराध भी आ जाता है इसलिए यहां पर संगठित अपराध होने लगे। इन संगठित अपराधों को रोकने के लिए यहां पर कानून बनाया गया, अधिनियम लाया गया। जैन समाज बहुत समय से यह मांग कर रहा था कि इनको...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : आपने अपराधों को बढ़ावा देने के लिए पोटा लागू नहीं किया राजस्थान में, आप दोषी हो इस बात के। इस अपराध को बढ़ाने की अगर दोषी है तो राजस्थान सरकार और उसके आप भागीदार हो, कल्ला साहब। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : पोटा जहां लागू हुआ है उसका दुरुपयोग हुआ है और पोटा जैसे कई एक्ट पहले से ही भारत सरकार ने और राज्य सरकार ने बनाये हुए हैं। मैं समझता हूं कि जहां पोटा लागू हुआ है, आप बता दीजिए कि कहां-कहां कितने मुकदमे दर्ज किये गये?

श्री घनश्याम तिवाड़ी : शांति हो गयी न अब वहां पर? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : आपने गुजरात में पोटा में कितने मुकदमें दर्ज किये?

श्री सभापति : आप भाषण जारी रखिये।

एक माननीय सदस्य : समर्थक हैं वे तमिलनाडु में बंद हैं।

श्री अमराराम (धोद) : पोटा के समर्थन करने वाले ही...(व्यवधान)

श्री सभापति : कृपया बैठ जाइये। आप बैठें। आप जारी रखिये।

डा. बुलाकीदास कल्ला : तो मैं आपसे यह कह रहा था कि...(व्यवधान)

श्री सभापति : पीछे बैठे–बैठे नहीं बोले।

डा. बुलाकीदास कल्ला : जैन समाज को अल्पसंख्यक घोषित करने का एक अध्यादेश हम लेकर आये थे, मुझे लगता है कि इस अभिभाषण में उसका उल्लेख नहीं किया है। शायद सरकार की मंशा नहीं है इनको अल्पसंख्यक बनाने की। यदि है तो वह अध्यादेश एक तरीके से लैप्स हो जाएगा, मैं चाहता हूं आपके माध्यम से सत्ता पक्ष का ध्यान आकर्षित करने के लिए कि जैन समाज की मांग के आधार पर ही उनको अल्पसंख्यक घोषित किया गया था, उसको आपको लाना चाहिए।

इसके अलावा जो छह यूनिवर्सिटीज बनी उनके एक्ट आये और अनेक विधायी कार्य पिछली विधान सभा ने किये। कुल मिलाकर जो अच्छे कार्य हुए हैं उनका उल्लेख किया जाना चाहिए, क्योंकि राज्यपाल महोदय का अभिभाषण पिछले वर्ष जो काम किये हैं उनका लेखा–जेखा होता है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, मैंने इनकी पार्टी का चुनाव घोषणा–पत्र पढ़ा, विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर में खोलने की बात। मैंने कहा कि विधि विश्वविद्यालय तो कार्यरत है, कहां से खोलेंगे आप? टैक्निकल यूनिवर्सिटी खोलने का विचार है, आप विचार कर लीजिए। निर्णय कर लो, फिर उसका उल्लेख करो। विचार तो बदल भी सकता है। इसलिये आपको यह कहना चाहिए कि टैक्निकल यूनिवर्सिटी की स्थापना की जाएगी। एक मेडिकल यूनिवर्सिटी की बात आपने अपने घोषणा पत्र में और की है, उसके बारे में भी फिलहाल घोषणा पत्र में आपने लिखा है लेकिन इसमें नहीं लिखा है।

मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि पहली बार राज्यपाल महोदय का जो अभिभाषण आया है उसमें अगले पांच वर्षों की परिकल्पना की गई है। बहुत अच्छी बात है, एक नया ट्रेडीशन आपने शुरू किया। आपने पांच साल के लिये राजस्थान की जनता से घोषणा पत्र के माध्यम से कुछ वादे किये हैं, उन वादों में मैंने देखा है। 175 करोड़ के किसान

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

कल्याण कोष की स्थापना, बीमारी के इलाज के लिये 25 करोड़ का किसान जीवन कल्याण कोष, बंद उद्योगों को पुनर्जीवित करने हेतु 50 करोड़ का तकनीकी पुनरुत्थान कोष, वृद्धजनों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा, उच्च तकनीकी उपकरणों युक्त मेडिकल सिटी की स्थापना, हर जिले में एक महिला बैंक, राज्य में ट्रेड फेयर अथोरिटी की स्थापना, न्यूनतम मजदूरी को मूल्य सूचकांक से जोड़ना, जयपुर में केन्द्रीय और एक मेडिकल विश्वविद्यालय की स्थापना, वृद्धावस्था पेंशन पुनः चालू करना–इनका उल्लेख नहीं है। इसका मतलब आपने पांच साल की योजना में इन चीजों को सम्मिलित नहीं किया है। मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्रीजी जब अपना रिप्लाई दें उस समय इसका उल्लेख करके बताएं कि इस सम्बन्ध में उनका क्या कहना है।

इसी तरीके से मैं आपको बताना चाहूंगा कि पर्यटन बिना धुएं का उद्योग है। राजस्थान में आप सब जानते हैं, except snow and sea, there is everything in our State. We have palaces, we have forts. अपने यहां सब कुछ है बर्फ और समुद्र के अलावा, लेकिन हमको अपने पर्यटन स्थलों का विकास करने की आवश्यकता है। इसमें मेवाड़ काम्प्लेक्स, डैजर्ट काम्प्लेक्स और सैंट्रल काम्प्लेक्स, इन तीनों को जब तक हम एक सुव्यवस्थित तरीके से आगे नहीं बढ़ाएंगे, मैं समझता हूं कि ईको ट्यूरिज्म से अथवा पर्यटन उद्योग से राज्य की अर्थव्यवस्था में जो सुधार आना चाहिये वह नहीं आएगा। कल माण्डलगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य जो राजस्थान के मुख्य मंत्री भी रहे हैं, उन्होंने बहुत खूबी से यह बताया था कि बहुत-से देशों की इकोनोमी टयूरिज्म पर आधारित है। राजस्थान की इकोनोमी भी ट्यूरिज्म और खनिज दोनों चीजों पर आधारित है।

श्री सांवर लाल : माननीय प्रतिपक्ष के नेता महोदय, इनकी बात तो आप पहले मान लेते तो बहुत बढ़िया थी।

डा. बुलाकीदास कल्ला : एक सैकण्ड। ऐसा है, बीच में बोलने का ऐसा कायदा नहीं है। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : आपसे मित्रता है इनकी। (व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया : नहीं, मैं आपसे जानकारी चाह रहा हूं कि 40 साल तक राज्य...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं तो सत्ता पक्ष में रहा तो रोज जानकारी देता रहा, अब आप जानकारी देने का काम करें। (व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया : मैं आपसे यह जानकारी ले रहा हूं कि पर्यटन का विकास करना चाहिये, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए, मैं समझता हूं, आठ बार सरकार आप चलाओ, 40 साल उसमें गुजारो और अब हमसे सवाल पूछ रहे हो, 10 साल वाले बच्चे को। विकास हमको 10 साल में करना था कि आपको 40 साल में करना था, इसका जवाब दो हमें? (व्यवधान) .

डा. बुलाकीदास कल्ला : सभापति महोदय, मुझे बड़ा अफसोस है कि मैंने कुछ कहा ही नहीं। ट्यूरिज्म का विकास–राजस्थान में हमने करीब–करीब 1500 लोगों को ठहरने की व्यवस्था की। बैड कैपेसिटी क्रीएट की, जगह–जगह मिड–वे बनाये, जगह–जगह राजस्थान में पर्यटन के साहित्य का प्रचार किया। अब जिसको जानकारी नहीं है उसका तो मेरे पास कोई इलाज नहीं है। (व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया : मेवाड़ काम्प्लेक्स? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मेवाड़ काम्प्लेक्स में काफी काम किये हैं हमने। गोगुन्दा में, चामुंडा में...(व्यवधान)

श्री गुलाब चन्द कटारिया : केन्द्र से आया हुआ तीन करोड़ रुपया धुल चाटता रहा, आपने लगाया नहीं क्योंकि वह महाराणा प्रताप से सम्बन्धित था, क्यों नहीं बोलते हो सब चीज इसमें?

एक माननीय सदस्य : महाराणा प्रताप के विरोधी हैं आप। महाराणा प्रताप के विरोधी हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : केन्द्र सरकार ने तो क्या पैसा दिया, इसकी पोल मैंने खोल दी। (व्यवधान) यह 1500 करोड रुपया हमारा था, वह आप को आते ही दे दिया, हमको नहीं दिया। अब इसके बावजूद भी आपके कोई कलर का चश्मा चढ़ा हुआ है तो उसका मेरे पास इलाज नहीं है।

श्री सांवर लाल : माननीय विपक्ष के नेता, केन्द्र सरकार नहीं देती तो राजस्थान की जनता आपके भरोसे मर जाती, जानवर मर जाते। सब कुछ केन्द्र सरकार के भरोसे ही चला आपका तो। (व्यवधान)

श्री सभापति : आप यील्ड कर रहे हैं? आप यील्ड कर रहे हैं?

श्री हरिमोहन शर्मा : मंत्रिमण्डल के सदस्य बिगाड़ रहे हैं व्यवस्था को। व्यवस्था को मंत्रिमण्डल के सदस्य बिगाड़ रहे हैं। (व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आपको जो पैसा मिला वह तो आपने खर्च नहीं किया। जो पैसा आपको दिया वह खर्च क्यों नहीं किया आपने?

श्री सभापति : किशनपोल से आने वाले माननीय सदस्य, बैठ जाइये। देखिये, बीच में टोकाटोकी नहीं करें। माननीय

(श्री सभापति)

सदस्य आपसे इजाजत लेकर बोले थे और आपने जवाब दिया, बाकी सदस्य बीच में टोकाटोकी नहीं करें। जब तक यह यील्ड नहीं करेंगे आप बीच में बोल नहीं सकते। प्लीज। (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल : सभापति महोदय, एक मिनट। बार-बार यह हो रहा है, यह उचित नहीं है। परम्परा अच्छी नहीं है। (व्यवधान) लेकिन यह परम्परा अच्छी नहीं है।

श्री सभापति : ठीक है। आपने इजाजत दी उनको।

डा. बुलाकीदास कल्ला : नहीं, मैं कौन इजाजत देने वाला हूं? यह तो आपको चाहिये कि आप डिबेट कराएं तो मेहरबानी करके सत्ता पक्ष को तो अनुशासन में लाएं।

श्री सभापति : नहीं नहीं, वह खड़े हुए तो आप बैठ गये, इसलिए मैंने उनको इजाजत दी वरना नहीं देता। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं क्या करता? मुझे ऐसा लगता है कि परफार्मेंस तो जो मंत्री नहीं हैं उनको दिखानी चाहिये। अब यह मंत्री परफार्मेंस दिखा रहे हैं। मुख्य मंत्रीजी दो-तीन दिन से सदन में नहीं थीं, अब मंत्री अपनी परफार्मेंस दिखा रहे हैं, ऐसा लग रहा है मुझे। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : अपनी तो बात हो चुकी थी, कल्ला साहब। (व्यवधान)

श्री सभापति : आप क्यों खड़े हो गये बाकी? आप क्यों खड़े हो रहे हो? प्लीज टोकाटोकी नहीं। नीचे बैठ जाइये। प्रतिपक्ष के नेता महोदय बोल रहे हैं। जब वह बोलते हैं तो टोकाटोकी नहीं करते प्लीज। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : प्रतिपक्ष का नेता इतना भारी पड़ रहा है इनके ऊपर, जैसे कोई...(व्यवधान)

श्री सभापति : आप फिर छेड़ रहे हो। आप अपनी बात कहें। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं कोई छेड़ने की बात नहीं कर रहा हूं। सभापति महोदय, इनकी मानसिक सोच बता रहा हूं। वह कहते हैं न–

"मचा करो महाराज, आज थारी पांचूं घी में है।

थाने पुरषो सगळो देश और थारै काइं जी म है।"

मतलब बोलने के अधिकार के ऊपर भी इनको बरदाश्त नहीं है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : बोलो, महाराज, बोलो थे।

डा. बुलाकीदास कल्ला : पूरे राजस्थान की सत्ता इनके पास आ गयी और उसके बावजूद बोलने के लिये भी देखिये, इनकी

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

सोच कितनी हिटलरशाही है। सुनने की ताकत नहीं है। हिटलरी-सोच नहीं जा सकता। सभापति महोदय, मैं राज्य की अर्थव्यवस्था के बारे में आपके माध्यम से चर्चा करना चाहूंगा। (व्यवधान)

श्री सभापति : आप बीच में टोकाटोकी नहीं करें। बैठे प्लीज।

डा. बुलाकीदास कल्ला : 1993 में राज्य के ऊपर कर्जा था 6062 करोड़ का और 1998 में यह बढ़कर हो गया 24 हजार करोड़ का और अब, मान लीजिये जो भी कर्जा हुआ है, 52 हजार करोड़ का हो गया। मैं यह कहना चाहता हूं कि राज्य की सकल आय एक वर्ष की 10 हजार करोड़ रुपये की है और उसमें करीब 6 हजार करोड़ रुपया ब्याज पेटे चला जाता है, 8 हजार करोड़ रुपया वेतन और भत्तों में चला जाता है, 14 हजार करोड़ रुपया एक वर्ष में चाहिये राज्य को। अभी "विजन 100 डेज" जो घोषणाएं की हैं, एक मोटे अनुमान के अनुसार करीब 1200 करोड़ की घोषणाएं आपने की हैं। मैं ठीक कह रहा हूं न? इस फिगर को यदि आप सुधारना चाहें तो सुधार लें, जो मेरे पास सूचना आई है उसके आधार पर मैं कह रहा हूं। इस प्रकार से करीब 5200 करोड़ रुपयों का टोटा एक साल में रहेगा और पांच वर्ष में यह करीब 28 हजार करोड़ रुपया हो गया।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : प्रतिपक्ष के नेता महोदय, मैं क्षमा चाहूंगा, मैं तो सिर्फ यही जानना चाहता हूं...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं मेरी तरफ से कोई...(व्यवधान) ऐसे तो आप फ्लो को तोड़ते रहेंगे। ऐसे थोड़े ही होगा। (व्यवधान)

श्री सभापति : He is not yielding वह बैठ गये अब। बैठा दिया। आप बीच में बार-बार क्यों बोलते हो? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : 26 हजार करोड़ रुपया आप कहां से लाएंगे, मुझे बता दें? या तो आपको कर्जा लेना पड़ेगा और यदि आप कर्जा नहीं लेंगे तो आपको टैक्स लगाने पड़ेंगे। मुझे ऐसा लगता है कि इनका कोई हिडन एजेंडा है, हिडन एजेंडे के अन्तर्गत अभी लोक सभा का चुनाव जैसे ही होगा, राज्य की जनता के ऊपर भारी करारोपण करना पड़ेगा। करारोपण नहीं करेंगे तो इनको भारी कर्जा लेना पड़ेगा तब जाकर इस राज्य की अर्थव्यवस्था आगे बढ़ सकेगी। मैं इस सम्बन्ध में एक सुझाव देना चाहता हूं–

"यावत् जीवेत् सुखम जीवेत्

ऋणम् कृत्वा घृतम् पिवेत्।"

यदि ऋण लेकर घी पीया जाए तो बुरा है, लेकिन ऋण लेकर विकास किया जाए तो उसको बुरा नहीं माना जाता। हमने

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

ऋण लिया उस ऋण का रचनात्मक उपयोग किया। (व्यवधान)

श्री सभापति : क्या बात है? बीच-बीच में क्यों बोल रहे हैं आप लोग? टोकाटोकी क्यों कर रहे हैं? क्या बात कह दी इन्होंने ऐसी? (व्यवधान)

श्री नरपत सिंह राजवी (उद्योग मंत्री): एक बात है, कम से कम हाउस के अन्दर आंकड़े सही आने चाहिये। 30 हजार करोड़ का कर्जा अभी लिया, इसके बारे में कुछ नहीं, परिसम्पत्तियों का निर्माण नहीं और अच्छा उपयोग किया, इस हाउस को गुमराह करने की बात नहीं तो क्या है? (व्यवधान) आप जवाब दें इसका।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैंने क्या गुमराह किया?

श्री सभापति : आप बाद में जवाब दे दें।

डा. बुलाकीदास कल्ला : ऐसा है, माननीय उद्योग मंत्रीजी, आप हिस्ट्री के विद्यार्थी हैं, मैंने कौनसा आंकड़ा गलत बताया, यह बता दें? (व्यवधान)

श्री सभापति : अब आप अपना भाषण जारी रखिये। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही) : सभापति महोदय, अभिभाषण में तीन दिन तो एक मंत्री दिखा नहीं, आज वसुन्धराजी आ गयीं तो लपक-लपक कर खड़े हो रहे हैं।

श्री बंशीलाल खटीक : इनको सदन की गरिमा सिखाई जाए। (व्यवधान)

श्री सभापति : प्लीज बैठिये। प्रतिपक्ष के आपके नेता बोल रहे हैं और आप बीच में खड़े हो जाते हैं। बैठिये। बैठिये।

एक माननीय सदस्य : सारे गायब थे पहले। ये महात्माजी कहां थे?

डा. बुलाकीदास कल्ला : सभापति महोदय, 5200 करोड़ का प्रति वर्ष और 5 वर्ष में 26 हजार करोड़ का प्रबन्ध कैसे करेंगे? मैं चाहूंगा कि मुख्य मंत्रीजी अपने रिप्लाई में इसको बताएं कि वह टैक्स लगाएंगी, कर्जा लेंगी, किस प्रकार से इस राज्य की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लेकर आएंगीं।

इसके अलावा इन्होंने प्रशासनिक सुधार की बात की, ई-गवर्नेंस की बात की, मैं खुद इसको वैलकम करता हूं। हमने भी ई-गवर्नेंस की दृष्टि से कुछ काम किया था। उस काम को आप कर रहे हैं, अच्छी बात है। ई-गवर्नेंस आनी चाहिए, लेकिन प्रशासनिक सुधार में मुझे ऐसा लगता है कि एक बहुत बड़ी गलती श्रीगणेश में ही हो गयी। वह गलती क्या हुई, इसको मैं आपको बताना चाहूंगा। हमारा आई.ए.एस. कैडर है, और देश के आई.ए.एस. कैडरा से सम्बन्धित रूल्स हैं "A cadre post in a State shall not be filled by a person to a cadre

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

officer except in the following case : If there is no suitable cadre officer available for filling a vacancy. Before doing it, reasons must be recorded indicating that no officer in the State is suitable to be posted to the particular cadre post. Government of India issued instructions dated 31st August, 1962 which provides that a non-cadre officer cannot be appointed to a cadre post."

The post in question is a cadre post under the regulations of 1955 and in IAS cadre rules 1954 under rule 8, every cadre post shall be filled by a cadre officer. Appointment of an officer from outside the cadre of State is not only lack of confidence in the officer allotted to the State cadre but is also illegal as per rules. It is also a serious a spersion on all the officers of the IAS allotted to Rajasthan Cadre.

सभापति महोदय, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने सबसे पहले आसाम कैडर के गोविन्द मोहन को अपने यहां लगाया। क्या राजस्थान में 250 आई.ए.एस. अफसर में कोई भी व्यक्ति इस कार्य के काबिल नहीं था? मैं समझता हूं कि एक जूनियर आफिसर जो 1989 बैच का है, वह आज सारे राजस्थान के सीनियर आफिसर्स के ऊपर हुकूमत कर रहा है, यह उचित नहीं है। मैं समझता हूं इसके ऊपर आपको पुनर्विचार करना चाहिए।

श्री सांवर लाल : हुकूमत? क्या चीफ सैक्रेटरी हो गये? प्रतिपक्ष के नेता महोदय, हुकूमत करने का क्या मतलब है आपका? चीफ सैक्रेटरी बना दिया क्या?

एक माननीय सदस्य : वह तो मैडम के ओ.एस.डी. हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैंने यह बात तो नहीं बतायी। मैंने जो रूल बताया, उसके आधार पर यह इल्लीगल है।

श्री सांवर लाल : आप कह रहे हो न, हुकूमत कर रहा है, इसका मतलब है कि चीफ सैक्रेटरी बना दिया?

डा. दिगम्बर सिंह : इतना लम्बा कोट करके सारा पानी फेर दिया आपने। सैक्रेटरी टू सी.एम. तो हमेशा जूनियर होता है।

श्री जोगेश्वर गर्ग : श्रीमत पाण्डे कौनसे सीनियर थे? वह भी तो जूनियर थे।

डा. दिगम्बर सिंह : पहाड़ियाजी मुख्य मंत्री थे तब खैरवाल को लेकर आये थे।

श्री सभापति : माननीय सदस्य।

डा. बुलाकीदास कल्ला : सभापति महोदय, सही बात को सुनने के लिए तैयार नहीं हैं, मुझे समझ में नहीं आ रहा है।

डा. दिगम्बर सिंह : पहाड़ियाजी लाये थे, उसका बता दो।

डा. बुलाकीदास कल्ला : हाउस को तो आर्डर में रखिये, सभापति महोदय।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, बैठे, बैठे नहीं।

श्री जगन्नाथ पहाड़िया : सभापति महोदय, माननीय सदस्य ने दो-तीन बार कह दिया कि पहाड़ियाजी जूनियर कैडर के अफसर को बाहर से लेकर आये थे। मैंने किसी को सैक्रेटरी नहीं बनाया था, मेरा सैक्रेटरी, उस समय मुख्य मंत्री का सैक्रेटरी असीम चटर्जी था। जिस अफसर को बाहर से लाये थे...(व्यवधान) माननीय सदस्य बार-बार कह रहे हैं, पुराने नेता की यादों को भूल जाओ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : खैरवालजी क्या थे आपके राज में? आपके राज में सर्वेसर्वा कोई था तो खैरवाल नाम का व्यक्ति था जिस पर करप्शन के चार्जेज लगे।

डा. दिगम्बर सिंह : पूरा +++ खैरवाल ने किया आपके शासन में। (व्यवधान)

श्री जगन्नाथ पहाड़िया : उस समय सैक्रेटरी असीम चटर्जी था। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : पहाड़ियाजी के वक्त असीम चटर्जी सैक्रेटरी टू सी.एम. थे, यह इन्होंने स्पष्ट कर दिया।

मैं अब आगे कुछ बातें आपके सामने सिंचाई के बारे में निवेदन करना चाहता हूं। सिंचाई का किसानों से बहुत नजदीक का सम्बन्ध है, और आबियाना जो लगता है, पिछले अकाल के वक्त में हमने पहली बार सिंचित क्षेत्र के किसानों का आबियाना माफ किया, तीन साल का स्थगित किया। मुझे बड़ा अफसोस है आपको बताते हुए कि उन किसानों के ऊपर 12 परसेंट ब्याज, आज दुनिया में कहीं नहीं रहा है, हिन्दुस्तान के किसी प्रदेश में 12 परसेंट ब्याज नहीं है, उनसे 12 परसेंट और उसके ऊपर चक्रवर्ती ब्याज लगा कर किसानों से वसूली की कार्यवाही की जा रही है। मैं चाहता हूं कि आप किसानों के आबियाना को वसूल करने से रोकें, उनको माफ करें।

घेघड़ा में नहर टूट गयी, एक माह से पानी नहीं मिला। उस क्षेत्र के किसानों को पिछले एक-सवा महीने से पानी नहीं मिला है, उनको रबी की फसल के लिए विशेष रूप से पानी देना चाहिए आपको।

+++ अभिव्यक्ति अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अपलोपित की गयी।

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

इसके अलावा इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, जिसके लिए 60 करोड़ रुपये बी.ए.डी.पी. प्रोजेक्ट के अन्तर्गत नियमित रूप से कांग्रेस की सरकारों ने दिये, और जिस समय हमारी लेट प्राइम मिनिस्टर इन्दिरा गांधी थीं उस वक्त से यह शुरू हुआ और लगातार जारी रहा, पिछले तीन वर्षों में वह पैसा केन्द्र सरकार ने बंद कर दिया। मैं चाहता हूं कि आप बाकी पैसा लेकर आइये। बहुत अच्छी बात है, यह 60 करोड़ आप शुरू करवा दो। यह पहले कभी 15 करोड़ मिला, कभी 20 और बढ़कर 60 करोड़ हो गया, अब यह कम से कम 100 करोड़ होना चाहिए था ताकि बार्डर एरिया डवलपमेंट प्रोग्राम के अन्तर्गत हमारी इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, जो लाइफ लाइन है, सुरक्षा लाइन है बार्डर की, यह राजस्थान को सेंट-परसेंट ग्रांट के रूप में मिलता था, कोई कर्जा नहीं था, सहायता थी, जिसको केन्द्र की सरकार ने राजस्थान सरकार के साथ सौतेला व्यवहार करके बंद किया था, उसको आप पुनः शुरू करवाएं ताकि राजस्थान की अच्छी तरह से नहरें बन सकें।

मैं इस अवसर पर आपसे दो-तीन बातें किसानों के बारे में और कहना चाहूंगा। किसानों का समर्थन मूल्य बढ़ता है तो उनको ताकत मिलती है। समर्थन मूल्य पर अनाज खरीदने की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार के माध्यम से राज्य सरकार की है। पैसा वो प्रोवाइड करते हैं। लेकिन पिछले वर्षों में समर्थन मूल्य जिस तरह से बढ़ना चाहिए महंगाई के साथ-साथ, वह नहीं बढ़ा है। मैं चाहता हूं कि समर्थन मूल्य पर किसानों की जितनी भी खरीफ की फसल थी वह हमारे वक्त खरीदी गयी, आपके राज में आने के बाद बंद हो गयी, उसको शुरू किया जाना चाहिए।

इसके अलावा बेरोजगारी राज्य की एक अहम समस्या है। बड़ा आश्चर्य होता है कि पहले केन्द्र की राजग सरकार और बी.जे.पी. के घोषणा पत्र में यह उल्लेख किया गया था एक करोड़ लोगों को रोजगार देंगे, आपने भी एक लाख लोगों को रोजगार देने की बात की। मुझे एक शेर याद आता है:-

"कहा था रोजगार मिलेगा हर इक घर के लिए

और कहां रोजगार मयस्सर नहीं शहर के लिए,

यहां दरख्तों के साये में धूप पड़ती है

चलो कहीं और चलें उम्रभर के लिए।" आज नौजवानों में हताशा है, पीड़ा है,

पूरे देश में सवा चार करोड़ लोगों को रोजगार मिलना चाहिए था, आज उनको कहां रोजगार मिला है? मैं समझता हूं

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

कि एक साल में 39 लाख लोगों को रोजगार के अवसर नहीं उपलब्ध हुए। आपने भी अपने घोषणा पत्र में और अभिभाषण में जो उल्लेख किया है, उसके अन्तर्गत 31 हजार कर्मचारियों की भर्ती और 26000 साथिनों को 500 रुपये में भर्ती करने का एलान किया है, एक लाख लोगों को आप रोजगार कैसे देंगे, यह मैं जानना चाहता हूं।

इसके अलावा केन्द्र सरकार की नीतियों का राज्य पर बहुत असर पड़ता है। इस अभिभाषण में, मैं खास तौर से यह कहना चाहता हूं कि आपने जो पंचवर्षीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है उसमें डीजल, पैट्रोल, कैरोसीन आदि इन चीजों की जो कीमतें बढ़ी हैं, ये हमेशा हमारे यहां इन्फ्लेशन को बढ़ाती हैं। इन्फ्लेशन एक ऐसी बीमारी है, Inflation is a state in which the value of money is falling, either prices are rising और यह इन्फ्लेशन आ रहा है डीजल, पैट्रोल की कीमतों के बढ़ने के कारण और मुद्रा के प्रसार के कारण। मुद्रा प्रसार इतना बढ़ गया है, मनी सप्लाई इतनी बढ़ गयी है कि आज देश में मुद्रा स्फीति बढ़ रही है। डीजल, पैट्रोल, इनकी कीमतें पिछले सवा चार साल में लगभग दोगुनी हो गयीं। अभी पिछले दिनों में खास तौर से डीजल की कीमत 2.20 रुपये बढ़ी, पैट्रोल की कीमत लगभग 3 रुपये बढ़ायी गयी। इससे आय प्राप्त हुई 6 गुना और केन्द्र सरकार ने जो रिलीफ दी है वह मात्र कुछ हजार और लाख लोगों को। हवाई यात्रा जो करेंगे उनको छूट, जो आदमी कम्प्यूटर खरीदेंगे उनको छूट, सैलफोन खरीदेंगे उनको छूट। किसान कहां गया? गरीब कहां गया? मजदूर कहां गया? जो गरीबी की सीमा रेखा के नीचे रहने वाला है उसकी क्या सुध ली है आपने? उसके बारे में कोई आपके पास घोषणाएं नहीं हैं, ऐसा लगता है कि "दिल्लगी और आरजू मिट्टी में मिला देती है, तंग बस्तियों में हमें जीने की सजा देती है। जीने देती है न मरने की अजा देती है, कैसी है यह आपकी हुकूमत जो हंस-हंस के सजा देती है।" आपने सजा देने के अलावा सवा चार साल में कुछ नहीं किया। मैं चाहता हूं कि आपको अपनी नीतियां ऐसी बनानी चाहिए जो किसानों के...

श्री सभापति : आप शायरी भी करते हैं क्या?

डा. बुलाकीदास कल्ला : कभी कभी कर लेता हूं।

श्री सांवर लाल : राजस्थान की जनता देख रही है कि पांच साल में राज किया, तब क्या किया और आज क्या बोल रहे हो।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सभापतिजी कविता करते हैं और आप शायरी करते हैं, यदि आपकी तुकबन्दी शुरू हो गयी तो हमारा क्या होगा? (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद : माननीय संसदीय कार्य मंत्रीजी, सभापतिजी शूटिंग कर लेंगे। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं बिलकुल विषय पर ही बोल रहा हूं। सभापति महोदय, जब मुख्य मंत्री और अध्यक्ष महोदय, दोनों महिलाएं बनीं तो ऐसा लगा कि महिला सशक्तीकरण के बारे में बहुत अच्छे कदम उठाये जाएंगे, लेकिन जो अभिभाषण पढ़ा उसमें महिला सशक्तीकरण के लिए कोई विशेष बात नहीं कही गयी। मुझे लगता है कि अब हमारी बातों से प्रेरणा लेकर कम से कम महिला सशक्तीकरण के लिए तो आप कुछ कदम उठाएं ताकि हमारी मातृ शक्ति स्वावलम्बी बने, वह अपने पैरों पर खड़ी हो, साक्षर हो, संस्कारित हो। इसलिए इन कामों को ज्यादा से ज्यादा करना चाहिए। सबसे बड़ी बात, आप तो पंचायती राज मंत्री रहे हुए हैं।

(17.42 बजे)

(श्रीमती सुमित्रा सिंह, अध्यक्ष, पदासीन)

अब आसन पर महिला शक्ति आ गयी है इसलिए महिला सशक्तीकरण के बारे में एस्पर्शन नहीं करें। अध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि महिला सशक्तीकरण के काम को जोरदार तरीके से हाथ में लेना चाहिए।

इसके साथ-साथ पंचायती राज के सशक्तीकरण के बारे में अभिभाषण बिलकुल मौन है। आप पंचायती राज को क्या ताकत देना चाहते हैं? पंचायती राज में हम लोगों ने आठवीं तक की शिक्षा दी, आप क्या दसवीं और बाहरवीं की कक्षा, जैसे महाराष्ट्र में दी हुई है, अन्य राज्यों में दी हुई है, गुजरात में भी कुछ अधिकार दिया हुआ है उनके आधार पर उनको आयुर्वेद, पशुपालन, चिकित्सा और अन्य ग्रामीण विकास के क्या-क्या काम उनको हस्तान्तरित करना चाहते हैं? हम लोगों ने पंचायती राज का जो सशक्तीकरण किया था आप उसको रखना चाहेंगे या नहीं रखना चाहेंगे? आप आगे बढ़ाना चाहेंगे तो हम वैलकम करेंगे और यदि आप उसको कम करेंगे तो निश्चित रूप से हम उसका विरोध करेंगे।

अब मैं कुछ जानकारी आंकड़ों में आपके माध्यम से देना चाहता हूं। आपने प्रधानमंत्री ग्राम स्वरोजगार योजना में 570 करोड़ रुपये, ए.आई.डी.पी. सिंचाई योजना में 310, ऊर्जा क्षेत्र सुधार प्रोत्साहन धनराशि 137, ऊर्जा वित्त निगम, 208, केन्द्रीय सड़क कोष से 101 और शिक्षा राष्ट्रीय राजमार्ग खेल 401 करोड़ रुपये, इस प्रकार से प्राप्त किये जो पुराने समय के, पुरानी सरकार के बकाया थे, जिसका मैंने उल्लेख

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

किया। अब खास तौर से आग्रहपूर्वक आपके माध्यम से मैं कहना चाहता हूं कि राज्य को केन्द्र से मिला क्या। कल हमारी पार्टी के वरिष्ठ माननीय सदस्यों ने यह बात रखी। आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, वैस्ट बंगाल इन में किसी को तो 85 प्रतिशत, किसी को 54 प्रतिशत, किसी को 56 प्रतिशत प्लस यानी इंक्रीजिंग ग्रांट मिली, जबकि हमको मायनस 13.4 प्रतिशत डिक्रीजिंग रूप में सहायता मिली। मैं समझता हूं कि यह जो हमारा फैडरल स्वरूप है उस फैडरल स्वरूप की सैंक्टिटी के ऊपर एक तरीके से प्रश्न चिन्ह, सवालिया चिन्ह लगाता है। वित्त आयोग को इस बारे में विचार करना चाहिए कि राज्यों को जो सहायता मिलती है, कोई भी मंत्री चाहे वह केन्द्र में कितना ही बड़ा हो, वह राज्य के हितों के साथ कोई कुठाराघात न करे। इसके लिए हम सब लोगों को भी मिलकर प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि राज्य का नुकसान हुआ है। उसमें किसी इस पक्ष का और उस पक्ष का नहीं, राज्य का नुकसान हुआ है इसलिए इसको हमारे हक और हकूकों को प्राप्त करने के लिए मिलकर प्रयत्न करना चाहिए।

इसके अलावा वाणिज्य कर विभाग का कम्प्यूटरीकरण करने के लिए, एक योजना बनी। हमारे कार्यकाल में बनी और उसमें दो तरह के बिड हुए, एक टैक्निकल बिड और एक फाइनेंशियल बिड। टैक्निकल क्वालिफिकेशन के लिए कम से कम 50 प्रतिशत मार्क्स होने चाहिए। सी.एन.सी. नाम की एक कम्पनी जो पहले पब्लिक लिमिटेड थी फिर प्राइवेट कम्पनी बनी, उसके 45 प्रतिशत मार्क्स आये। उनको जब एक तरीके से इंडेंट देने की बात आयी, हमारे तत्कालीन मुख्य मंत्रीजी ने उस फाइल को रोक दिया कि यह काम नहीं करना है। मैं आपको भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपको मुगालते में रखकर पहले- स्वीकृति ली गयी, उसके बाद आपको निरस्त करना पड़ा। इसके लिए तो आपको धन्यवाद देता हूं लेकिन काम इससे नहीं चलेगा। इसमें चार बिन्दु हैं, किस व्यक्ति ने आपको मुगालते में रखकर यह काम कराया? क्यों कराया? अभिभाषण में उसका उल्लेख किया गया उसके बाद उसको निरस्त किया, अभिभाषण से उसको निकाल गया। इसमें खास तौर से टैक्निकल क्वालिफिकेशन में न्यूनतम 50 प्रतिशत जो मार्क्स आने चाहिए, उसमें छूट क्यों दी गयी और किसके कहने से दी गयी? किसके माध्यम से शिकायतकर्ता आपसे मिले? क्या इसमें कोई बंगलिंग हुई है? 72 लाख रुपये की बंगलिंग के समाचार हैं, मैं चाहता हूं कि इसकी लोकायुक्त से पूरी जांच हो ताकि दूध का दूध और पानी का पानी सदन के सामने आए। क्योंकि आपसे दस्तखत करवा लिये गये, आपके स्टार अच्छे थे कि आपने

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

उसको निरस्त किया। यदि उसको निरस्त नहीं किया होता तो विधान सभा की स्थिति और तरीके की होती। तो मैं चाहता हूं कि लोकायुक्त से इसकी जांच करवायी जाए, कौन-कौनसे लोग सन्देह के दायरे में हैं। एक व्यक्ति को ए.पी.ओ. कर दिया इससे इतना बड़ा प्रकरण नहीं निपटेगा। इसमें जो-जो व्यक्ति इन्वाल्व हैं उनकी पूरी जांच कर ऐसे लोगों को सख्त से सख्त सजा लोकायुक्त की रिपोर्ट पर दी जाए।

कल माननीय शिक्षा मंत्रीजी ने अपना एक वक्तव्य दिया, उस वक्तव्य में यह कहा था कि हम बिजली की कीमत नहीं बढ़ाएंगे। यह पूरे पांच साल नहीं बढ़ाएंगे आप? ये अपने भाषण में कहते थे कि बिजली करन्ट मारती है, हम आएंगे तो बिजली की रेट कम कर देंगे, आपका कितनी रेट कम करने का विचार है? माननीय मुख्य मंत्रीजी अपनी नीतिगत बात कहे कि आप बिजली की दर नहीं बढ़ाएंगे या बिजली की दर कम करेंगे तो कितनी करेंगे। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को जानकारी देना चाहता हूं कि 16 दिसम्बर, 2003 को प्रजेंटेशन हुआ था विजन डाकूमेंट मल्टी ईयर टैरिफ रिजीम, उसमें सन् 2004-05 में कृषि कनेक्शन हेतु 1.20 रुपये से 1.26 रुपये, घरेलू कनेक्शन के लिए 12 प्रतिशत वृद्धि 2005-06 में और 1.26 से 1.60 प्रतिशत और घरेलू कनेक्शन के सम्बन्ध में इस वर्ष 6 प्रतिशत, 2006-07 में 1.26 रुपये से 1.60 रुपया और 8 प्रतिशत घरेलू बिजली की दर में वृद्धि करने का आपने प्रजेंटेशन देखा। उस वक्त कुछ लोगों ने यह कहा था कि अभी यह मत बढ़ाओ, लोक सभा का चुनाव आ रहा है। यह बिजली आपको करंट मार जाएगी इसलिए आपने इसको क्या पोस्टपोन कर दिया? हम जानना चाहते हैं कि आप सन् 2004-05, 05-06 और 06-07 में बिजली की दर बढ़ाने जा रही हैं या नहीं बढ़ाएंगी, क्योंकि आपके पहले ही ऊर्जा मंत्रीजी ने इस सदन को आश्वस्त कर दिया कि हम बिजली कर दर नहीं बढ़ाएंगे। मैं जानना चाहता हूं कि इनके वर्शन को आप राइट मानती हैं? यदि हां, तो आप राइट कह दें, और नहीं तो वैसा कहें। सदन को सही जानकारी देना चाहिए कि आने वाले समय में आप बिजली की दर बढ़ाएंगे या नहीं और घटाएंगे तो कितनी मात्रा में घटाएंगे।

एक बात और इन्होंने कही कि बिजली हमने नहीं बेची, हमारा सन्देह था। हमारी जानकारी के अनुसार बिजली की कमी है शायद इस कारण से बेची होगी। लेकिन, अध्यक्ष महोदय, एक बात निश्चित रूप से सही है कि आर.ए.पी.पी. की थर्ड यूनिट जिसकी क्षमता लगभग 230 मेगावाट की है, उससे राजस्थान को बिजली मिल रही थी, इनको एग्रीमेंट आगे के लिए करना चाहिए था। केन्द्र के दबाव में और मध्य प्रदेश जो इनका फ्रैंडली स्टेट

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

है वहां बिजली देने के लिए इन्होंने जानबूझकर एग्रीमेंट नहीं किया जिसके कारण आज राजस्थान के किसानों को बराबर आठ घंटे बिजली नहीं मिल रही है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : एक ट्यूटर लगा लो वह बिजली के बारे में आपको बता देगा।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं तो न चिकेता की तरह जिज्ञासु हूं, आप ट्यूटर भेज दोगे तो पढ़ लूंगा, लेकिन असत्य नहीं बोलूंगा।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : मैं कह रहा हूं, माथुर साहब की प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट को अगर पढ़ लेते...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं कोई परफैक्ट आदमी नहीं हूं, मैंने सदन को जानकारी दी है। आप महामना, महापण्डित हो सकते हैं, आप ट्यूटर भेज दोंगे तो मैं अपना ज्ञानवर्द्धन कर लूंगा।

श्री सांवर लाल : दूसरा कौन भेजेगा, गलत पढ़ा देगा।

एक माननीय सदस्य : यह खुद ही आ जाएंगे आपको पढ़ाने।

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह तो क्या पढ़े हुए हैं, पहले अपनी क्वालिफिकेशन बता दें फिर आप फैसला कर लेना कि मैं इनको पढ़ा सकता हूं या यह मेरे को पढ़ा सकते हैं।

श्री अध्यक्ष : यहां तो अध्यक्ष पढ़ाएगा सबको। न आप पढ़ा सकते हैं न वो पढ़ा सकते हैं, अध्यक्ष पढ़ाएगा।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष तो पढ़ा ही सकते हैं लेकिन पढ़ाते वक्त जैसे गुरू होते हैं न,

"गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुर्देवो महेश्वर:
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:।"

उस भावना से पढ़ाएं।

श्री अध्यक्ष : आप अपना भाषण जारी रखिए।

डा. बुलाकीदास कल्ला : इस सदन में अन्तरराज्यीय नदी जल विवाद और विद्युत विवाद की चर्चाएं बहुत हुई, लेकिन इस अभिभाषण में इस मामले में कहीं कोई उल्लेख नहीं हुआ। मैं चाहता हूं कि माननीय मुख्य मंत्रीजी अन्तरराज्यीय नदी जल विवाद जो रावी-ब्यास से सम्बन्धित नाथपा झाकड़ी, कोल और पार्वती से सम्बन्धित हैं, इस सम्बन्ध में कोई नीति तैयार करें कि जहां पर भी पानी और बिजली पर राजस्थान का हक है, अधिकार है, उस हक और अधिकार को दिलाने के लिए आपकी क्या नीति रहेगी। आप जब इस पक्ष में रहते हैं तो हमेशा अन्तरराज्यीय नदी जल विवाद के बारे में और विद्युत विवादों के बारे

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

में बहुत चर्चा करते आये हैं। अब आपको मौका मिला है तो इस मौके का लाभ उठाकर हम जानना चाहेंगे कि आप उन विवादों के बारे में राजस्थान की जनता को क्या करके देकर जाएंगे।

इस अवसर पर मैं आपके माध्यम से यह भी कहना चाहता हूं कि हमारे राजस्थान में विपुल भण्डार है लिग्नाइट का, कपूरड़ी में, पलाना में, गुढ़ा में। इनका दोहन करके लिग्नाइट बेस्ड बिजली पैदा करना बहुत आवश्यक है। कच्चा माल हमारे पास में है, हमारे पास लेबर अपनी है, केवल मात्र टैक्नोलोजी हमारे पास नहीं है। टैक्नोलोजी आजकल बारो की जा सकती है, टैक्नोलोजी के लिए हम किसी का सहयोग ले सकते हैं। मैं चाहता हूं कि राज्य में लिग्नाइट बेस ज्यादा से ज्यादा बिजलीघर लगे, वह सस्ती पड़ेगी। लिग्नाइट की बिजली आज सबसे सस्ती है, हम किसानों को सस्ती बिजली दे सकेंगे। आप गर्दन हिला रहे हैं। आप पता कर लें एक्सपर्ट्स से।

श्री अध्यक्ष : सबसे सस्ती हाइडल है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : सबसे सस्ती हाइडल है, लिग्नाइट नहीं है। महंगी पड़ेगी।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैंने यह कहां कहा कि हाइडल से सस्ती है? मैंने कहा वह सस्ती बिजली है। आज सूरतगढ़ में कोल बेस्ड हमारे जितने भी पावर प्रोजैक्ट्स हैं उनमें यह सबसे सस्ती है।

श्री नरपत सिंह राजवी : अध्यक्ष महोदय, इंटर-स्टेट वाटर डिस्प्यूट्स के बारे में कहा, नाथपा-झाकड़ी के बारे में कहा, वह जहां से उत्पन्न हुई, सब वहां पर विराजमान हैं वह ज्यादा जानते हैं कि कहां कहां पर लेकूना है। यह सरकार तो कसर नहीं रखेगी।

डा. एन. एम. गुर्जर : माथुर साहब ज्यादा जानते हैं, वह समझौता माथुर साहब के टाइम में हुआ था।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : नहीं, पहाड़ियाजी के टाइम पर।

श्री नरपत सिंह राजवी : 1981 का समझौता आपके टाइम में हुआ था, नाथपा झाकड़ी का।

श्री प्रद्युम्न सिंह : झाकड़ी के मामले में आप फाइल निकलवा कर देख लीजिए, मैंने नाथपा-झाकड़ी के ऊपर पूरे सदन में वक्तव्य दिया है। बैटर यह है कि उस पूरी फाइल को आप निकलवा कर देख लें, नाथपा झाकड़ी के बारे में, तो सारी स्थिति आपके सामने साफ तौर से आ जाएगी। यहां पर क्योंकि ये बोल रहे हैं इस बहस में, मैं भाग तो ले नहीं सकता हूं but kindly go throw the files and you will know the facts.

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, अभिभाषण में अंधेरे से उजियारे की ओर बढ़ने की बात की गयी है। अंधेरे से उजियारा तब आता है जब राज्य की प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति उत्पादन और राज्य की विकास की दर बढ़े। मुझे बड़ा अफसोस होता है, माननीय सदस्यों ने कहा कि बी.पी.एल. कार्ड जो इक्कीस लाख लोगों को मिले हुए थे, उसको 13.4 लाख करने जा रहे हैं। क्या हमारे यहां का अन्धेरा उजियारे की ओर जा रहा है? ये अन्धेरे से उजियारे की ओर जा रहे हैं? यह संख्या इक्कीस लाख से इकतीस लाख होनी चाहिए, तब हम मानते कि आप की केन्द्र में भी सरकार और राज्य में भी आपकी सरकार कि आपने बी.पी.एल. कार्ड धारकों की संख्या बढ़ाई और राज्य के गरीबों का कोई हित किया। लेकिन यहां तो गरीबी में आटा गीला।

यहां पर जो पहले इक्कीस लाख लोग थे उसकी जगह आपने 13.4 लाख कर दिये। बिजली का उत्पादन आपने कहा हम 1600 मेगावाट पैदा करेंगे, लेकिन कैसे करेंगे, किस-किस से करेंगे, इसकी योजना आपने प्रस्तुत नहीं की। और शार्ट लिस्टिंग की प्रक्रिया क्या होगी बी.पी.एल. कार्डों की, इसके बारे में आपने कोई बात इस अभिभाषण में नहीं बताई। शिक्षा के क्षेत्र में आपने प्राथमिक और उच्च प्राथमिक शालाओं का उल्लेख कर दिया, लेकिन आप कितने सीनियर सैकण्डरी स्कूल खोलेंगे, कितने सैकण्डरी स्कूल खोलेंगे, इसका कोई उल्लेख नहीं है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : आज कह दिया।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अभिभाषण में कहां है? मैं तो अभिभाषण पर बोल रहा हूं। बाहर आप क्या करते हैं, मुझे क्या पता? आपने पांच वर्ष की सिंचाई योजनाओं का, बिजली की योजनाओं का, शिक्षा की योजनाओं का बताया, हम तो उसी आधार पर आपको कह रहे हैं। आपने इसका उल्लेख नहीं किया, मैं चाहता हूं कि आप बताएं कि कितने सीनियर सैकण्डरी स्कूल पांच वर्ष में खोलेंगे।

श्री अध्यक्ष : आज प्रश्नोत्तर काल में बताया था उन्होंने।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के माध्यम से माननीय पूर्व सरकार से पूछना चाहता हूं,...हम क्यों नहीं पूछ सकते?

श्री अध्यक्ष : नहीं, इस समय आप कुछ नहीं पूछ सकेंगे। इस समय आप कुछ नहीं पूछ सकते, बिराजिए।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, अब विकास के काम नहीं हो रहे हैं तो फील गुड फैक्टर, फील ग्रेट फैक्टर, मुझे लगता है कि आगामी जो चुनाव आएगा उसमें फेल फैक्टर साबित होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस खुद ही गलत है, हम बोलेंगे, हम मांग कर रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बीच में ऐसे कैसे खड़े हो जाते हैं? नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं उन्हें सुनिए आप। नेता प्रतिपक्ष, एक घंटा हो गया आपको बोलते बोलते।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मेरा आधा घंटा तो व्यवधान में ही चला गया। पूछो आप सचिव महोदय से, कितना व्यवधान किया है। यह सिखा रहे हैं कि हम भी ऐसा ही करें।

श्री अध्यक्ष : दस मिनट में आप अपना भाषण समाप्त कर दें।

डा. बुलाकीदास कल्ला : आधा घंटे तो व्यवधान हो गया...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप बोलिए, कनक्लूड कीजिए।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, कानून और व्यवस्था का जिक्र इस अभिभाषण में किया गया, मैं कुछ बिन्दु आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्रीजी से कहना चाहता हूं। अखबारों में आया, यह क्या हो रहा है, एडिटोरियल आए, जब से यह सरकार आयी है अपराध बढ़े हैं राज्य में। जयपुर को लेकर, पूरे प्रदेश में जगह-जगह खून हो रहे हैं, महिलाओं का एक्सप्लायटेशन हो रहा है और दिन-दहाड़े डाके पड़ रहे हैं। चालीस-चालीस लाख की डकैती यहां पर जयपुर जैसे शहर में हो गयी, लोगों में भय व्याप्त है।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं बीच में बोलना चाह रहा हूं (व्यवधान) सदन के माध्यम से मैं सरकार के...

श्री अध्यक्ष : गुढ़ा से आने वाले माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण कर लें, नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं। जब सदन में नेता प्रतिपक्ष और सदन के नेता बोलते हों तो किसी को खड़ा नहीं होना चाहिए, बीच में व्यवधान नहीं करना चाहिए।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से मैं अनुरोध कर रहा हूं, अगर गलत बोलेंगे तो हम नहीं सुनेंगे।

श्री अध्यक्ष : आप पर कोई असर नहीं होता बात का। अब आप स्थान नहीं छोड़ेंगे, अपने स्थान पर बैठे रहेंगे।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, कानून और व्यवस्था के बारे में मैं आपको दो-तीन उदाहरण देना चाहूंगा। राधेश्यामजी भूतपूर्व मंत्री, उनके पोते गंगानगर की एक स्कूल के वार्षिक समारोह में गये, वहां पर उनके साथ मार-पिटाई हुई। उनके घर वालों को पता लगा, वे वहां पर गये तो उनके साथ मार पिटाई हुई, छह-सात टांके आये। उनकी किसी

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

ने नहीं सुनी। सारे हमारे पूर्व विधायक, पूर्व मंत्री मिलकर कलक्टर और एस.पी. के पास गये, उनकी आज तक कोई सुनवाई नहीं हुई। जो व्यक्ति पब्लिक रिप्रजेंटेटिव वर्षों रहा है और वहां पर जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पिटाई हो जाए, यह तो कितनी शर्मनाक बात है।

एक माननीय सदस्य : गलतबयानी कर रहे हैं नेता प्रतिपक्ष इस मामले में।

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं गलतबयानी कर रहा हूं तो प्रिविलेज ले आओ मेरे खिलाफ।

श्री अध्यक्ष : आप स्थान ग्रहण करें, बीच में नहीं बोले।

(18.00 बजे)

डा. बुलाकीदास कल्ला : हमारे मंत्री रहे हुए लोग आज असुरक्षित हैं इसलिये इस सदन में कहना पड़ता है, क्योंकि जनप्रतिनिधियों की सुरक्षा का काम सरकार का है। पब्लिक प्रशासन आपके खिलाफ जाएगा। गांवों में लोग बातें करेंगे कि जो पूर्व मंत्री और जन-प्रतिनिधि वर्षों से रहे हैं, वे ही सुरक्षित नहीं हैं तो आम आदमी की सुरक्षा के ऊपर सवालिया निशान लग जाएगा।

इसके अलावा हमारे खारी के एक पूर्व सरपंच और जिला परिषद् के सदस्य कानीराम खूड़िया जो कुम्हार जाति के हैं, उनका दिन-दहाड़े मर्डर हो गया। देवकरण गुर्जर जो प्रदीप तिवाड़ी हत्याकांड में गवाह थे, उनको सरेआम गोली लगायी गयी। जब यहां उनको भर्ती किया गया तो हास्पिटल से उनकी छुट्टी कर दी। यह जो राजनैतिक आधार पर बिहार और यू.पी. आप बनाना चाहते हैं, हम कभी भी इस राजस्थान को यू.पी. औ बिहार नहीं बनने देंगे।

मुख्य मंत्रीजी जो न केवल बी.जे.पी. की ही विधायक दल की नेता हैं, आप पूरे सदन की नेता हैं, आपकी यह जिम्मेदारी है कि राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति सामान्य रहे। सबको आपका प्रोटेक्शन मिलना चाहिये। नहीं तो राजनैतिक आधार पर जो ये हत्याएं हो रही हैं या लोगों के साथ मारपीट हो रही है, आप हमको कह रहे थे कि आप 56 आये हैं, आने वाले समय में मैं समझता हूं 15–20 में ही सिमट जाएंगे, इसलिये पब्लिक प्रशासन का ध्यान रखिये। एक बात मैं धौलपुर...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : 13–13 हत्याओं में लिप्त हैं वह स्वयं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, उत्तेजित नहीं हों। आप बीच में टोकाटोकी नहीं करें। आप फिर खड़े हो गये...(व्यवधान) अब क्या तकलीफ हुई आपको? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : मुख्य मंत्रीजी जवाब देने में सक्षम हैं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें। नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं, स्थान ग्रहण करिये।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी : अभी विरोधी दल के माननीय नेता ने फर्माया...

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें। छबड़ा से आने वाले माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें, आप बोलने दीजिये उन्हें।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अब यह कानून और व्यवस्था की स्थिति का नमूना...

श्री अध्यक्ष : यह बिलकुल गलत बात है, आप पर कोई असर नहीं हो रहा है आसन की व्यवस्था का।

श्री बुलाकीदास कल्ला : अब आप देखिये, कितना तानाशाही तरीका है। वह हमको कंट्रोल कर रहे हैं, जो जिम्मेदारी आपको दी गयी है सदन में। (व्यवधान)

मैं धौलपुर की एक घटना का जिक्र करना चाहूंगा। ताराचन्द खटीक 12 दिसम्बर, 2003 को जो सदर थाना धौलपुर का सी.आई. है, वहां एक डीवाई.एस.पी. पुष्पेन्द्र सिंहजी आये और उन्होंने आकर जातिसूचक गालियां दीं और उनके साथ मारपीट की थाने में। जब उन्होंने इसका प्रतिरोध किया, लोगां को बुलाया तो दूसरे लोग जो उसकी सहायता में आए थे, उनको भी उन्होंने दरांकनार किया। उसके बाद उनको पीने का पानी तक नहीं पिलाया, बड़ी मुश्किल से वह छूटकर आये। उनके खिलाफ इस्तगासा किया तो जिस सरकार में...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण सत्ता पक्ष, आप अपना-अपना स्थान ग्रहण कीजिये। उन्हें बोलने दीजिये।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : एक घंटे से सुन रहे हैं...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आप क्यों कर रहे हैं ऐसा, मेरी समझ में नहीं आ रहा है। आप बोलने दीजिये उन्हें। आप बीच में टोकाटोकी नहीं करें।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, मैं कहना यह चाहता हूं कि जिस सरकार का सी.आई. ड्यूटी पर सुरक्षित नहीं है वहां आम आदमी की हालत क्या होगी।

सर्किट हाउस सुरक्षित नहीं है, सर्किट हाउस में महिलाओं के साथ एक्सप्लायटेशन हो रहा है। उनके खिलाफ क्या कार्यवाही की? ऐसे अनेक मुद्दे राजस्थान में पहली बार हुए हैं जो कभी भी किसी भी सरकार के वक्त में नहीं हुए। इसलिये मैं चाहता हूं कि कानून और व्यवस्था की स्थिति जो बिगड़ी है उसको आप सुधारिये। और मैं तो कहता हूं, आप ज्यादातर समय राजस्थान में लगाइये। आप सदन में यदि तीन दिन उपस्थित रहतीं तो जो माननीय सदस्य बोले थे उनकी भावनाओं के बारे

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

में आपको ज्यादा जानकारी मिलती। ठीक है, आपका दिल्ली में काम हो गया, लेकिन अब आप यहां...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : अभिभाषण के समय ही तो अनुपस्थित रही हैं वह। (व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता : गहलोत साहब केवल 40 घंटे उपस्थित रहे हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, एक घंटे भी माननीय मुख्य मंत्रीजी यहां सदन में नहीं रहीं और 45 दिन का...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : गलत बात है। आप तो गलत बात...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : कोई बात नहीं। अभिभाषण के दौरान नहीं रहीं, यही मैं कह रहा हूं। सदन में जो लोग बोलते हैं उससे आपका फीड बैंक बढ़ता है। गुड्स डिलीवर करने और बैटर एडमिनिस्ट्रेशन के लिये, मैं समझता हूं यह आवश्यक है।

मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि राज्य में 45 दिन में आप कितने दिन रहीं? ज्यादातर समय तो आपका बाहर ही बाहर रहा। तो राज्य में आप वक्त दीजिये ताकि राज्य की समस्याओं का आप समाधान कर सकें।

इसके अलावा राज्यपाल महोदय का जो अभिभाषण है, यह कल्पनाओं का पुलिन्दा है। इसमें ज्यादातर प्रयास किया जाएगा, प्रयास कर रहे हैं, हम देखते हैं, देखते रहेंगे, देखते रह जाओगे, इस तर्ज पर...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : राजीव गांधी याद आ गये?

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह एक तरीके से केवल मात्र दिशाहीन, किसान विरोधी, मजदूरी विरोधी और गरीब विरोधी अभिभाषण है, फिर खास तौर से यह कहते हैं कि हम अंधेरे से उजियारे की ओर ले जाएंगे, आप इनकी स्पीच सुनें। कहीं तो लाकेट बांट रहे हैं, कहीं त्रिशूल बांटने की बात कर रहे है, क्या इससे ही राजस्थान में उजियारा आएगा? राजस्थान है सैक्यूलर स्टेट, जहां सभी धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। जिन चिरागों से तअस्सुब के धुएं उठते हों उन चिरागों को बुझाओ तो उजाला होगा। जब तक हम साम्प्रदायिकता के चिरागों को बुझाएंगे नहीं, राजस्थान में उजाला नहीं आएगा, गुजरात की तरह अंधियारा हो जाएगा। आप राजस्थान की सैक्यूलर परम्परा को बनाये रखना चाहते हैं तो जाति, मजहब, धर्म, इन सब परम्पराओं से ऊपर उठकर मैं आपका आह्वान करना चाहता हूं कि

"इल्लिजा है ये वतन की जां निसारों से,
उठो ख्वाबगाहों की जगह परवर बहारों से,
उठो एक दो से नहीं, कहता हूं सारों से,

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

उठो मंदिरों से, मस्जिदों से, गुरुद्वारों से, उठो।"

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, हमारी पूजा, इबादत और अर्चना के प्रतीक हैं, आपको पूरी धार्मिक आजादी है, जहां भी जाना चाहे जाएं आप, लेकिन किसी की धार्मिक स्वतंत्रता में यदि आप दखल करेंगे तो मैं समझता हूं कि कोई भी व्यक्ति बरदाश्त नहीं करेगा। (व्यवधान) इसलिये इस राजस्थान को सैक्यूलर स्टेट बना रहने दीजिये।

अंत में, खास तौर से मैं कहना चाहूंगा कि राजस्थान में विकास करना है तो पक्ष और विपक्ष दोनों तरफ जो भी राय बनती है, राय मौजूं लगे, अच्छी लगे, उसको ले। जैसे कहते हैं न–"सार सार को गहि रहे थोथा देई उड़ाय।" इसलिये आपको सार की बातों को ग्रहण करना चाहिये। यह दंभ और अहंकार नहीं होना चाहिये कि आप सत्ता में आ गये हैं तो सारा का सारा ज्ञान आपके पास है...(व्यवधान)

मैं आपके माध्यम से यह आग्रह करना चाहता हूं कि राजस्थान में खनिजों का दोहन हो। लेकिन केन्द्र सरकार द्वारा जहां कोई एक वनस्पति नहीं है, कहीं कोई जंगल नहीं है, वहां जंगल के नाम पर लोगों को बेरोजगार किया जा रहा है। इस सब चीजों को लेकर खनिजों का दोहन हो, उद्योगों का विकास हो। इसके लिये जो सब्सिडी आपकी पूर्ववर्ती सरकार के वक्त में 1993 से 98 के वक्त बंद कर दी गयी थी, उस सब्सिडी को शुरू करो और राज्य के उद्योगों का विकास करो। साधनों का आप्टीमम यूटिलाइजेशन करो तब जाकर राजस्थान आर्थिक प्रगति की रफ्तार पर आगे बढ़ेगा।

आपके अभिभाषण में कोई विशेष नयी बात नहीं है। कुछ हमारी योजनाएं थीं– ए.डी.बी. के प्रोजैक्ट में 60.12 करोड़ रुपया राजस्थान में अस्पतालों के विकास के लिये खर्च किया जाएगा। यह पैसा तो पहले ही रखा हुआ है, आपने इस अभिभाषण में नयी बात कहां से कह दी? इसी तरीके से अनेक ऐसे मामले हैं, मैं इस सदन का समय नहीं लेकर यह कहना चाहता हूं कि आपने जो जो बातें इस अभिभाषण में कहीं हैं उसमें गरीब का हित नहीं हुआ है। आप गरीब और गणेश को लेकर जो योजनाएं बना रहे हैं, आप मुझे माफ करना, ये गरीब और गणेश की योजनाएं नहीं हैं। ये कुछ धन्ना सेठों, पूंजीपति लोगों, इजारेदार, नम्बरदार और बड़े-बड़े लोगों के लिये योजनाएं आपकी बनी हैं। केन्द्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा जो घोषणाएं की गयीं हैं उन घोषणाओं का लाभ गरीबों को नहीं मिलेगा, उच्च मध्यम वर्ग के लोगों को मिलेगा, पूंजीपति लोगों को मिलेगा। आपको यदि वास्तव में गरीबों का भला करना है तो गरीबों

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

के लिये, किसानों के लिये, मजदूरों के लिये, बेरोजगारों के लिये कार्यक्रम बनाइये। मुझे ऐसा लगता है कि एक वक्त आएगा जब राजस्थान के बेरोजगार, देश के बेरोजगार लोग आप और हम सबको सबसे पहला निशाना बनाएंगे। इसलिए समय रहते ऐसी योजनाएं बनाएं जिससे बेरोजगारी राजस्थान की दूर हो और वह तभी होगी जब हम हमारे खनिजों और हमारी जो प्राकृतिक संपदा है, प्राकृतिक संसाधन हैं उनका सम्पूर्ण दोहन करके उनका आप्टिमम यूटिलाइजेशन करेंगे। तब जाकर राजस्थान प्रगति के पथ पर पथारूढ़ होगा। (व्यवधान) शेर तो सुना सकता हूं?

श्री अध्यक्ष : अब आप समापन कीजिये।

डा. बुलाकीदास कल्ला : देश की खातिर लहू अपना बहाना फर्ज है।

गोलियां सीने पर खाकर मुस्कराना फर्ज है।

आखिरी दम तक कदम आगे बढ़ाना फर्ज है।

गौर कर इस पर वतन का तू अगर जांबाज है,

ये मेरी आवाज गोया मुल्क की आवाज है।

आप मुल्क की आवाज को पहचाने। बात तो आप करते हो–समान रहे, साथ चले, एक साथ रहे और मन में आपकी खोट हो तो यह कथनी और करनी का अंतर नहीं चलेगा।

"एक मयखाना है और एक सनमखाना है, रिंद और शेखजी में बड़ा फर्क है, क्या मामला है दोनों में बनती नहीं, एक इधर जाएगा और एक उधर जाएगा।"

ऐसे काम नहीं चलेगा।

श्री अध्यक्ष : अब खतम करें।

डा. बुलाकीदास कल्ला : इसलिए मेहरबानी करके इस मयखाने से, सनम खाने से उठे। अंत में एक बात कहना चाहूंगा जिसको आप भी एप्रिशिएट करेंगी, इन्होंने आते ही जो बीयर बार बंद कर दिये थे उनको चालू कर दिया। गांधीजी का सपना था।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, दूसरे भी यहां पर बैठे हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : गांधीजी ने कहा था कि मुझे एक दिन का शासन मिलेगा तो मैं इस देश में शराबबंदी लागू करूंगा। इन्होंने आते ही शराब के बीयर बार शुरू कर दिये। हो सकता है उससे आपको कोई आय प्राप्त हो जाएं, लेकिन आप भारतीय संस्कृति के दुहाई देने वाले लोगों को थोड़ी भी शर्म नहीं आयी? आपने आते ही बीयर बार शुरू कर दिये। मैं समझता हूं कि इन कदमों को वापस लेना चाहिए और आपकी जो गलत नीतियां हैं,

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

गरीबों और किसानों के विरोध का यह जो अभिभाषण दिया है मैं इसका विरोध करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हालांकि सदन का वातावरण बहुत सही नहीं था, मैं उम्मीद करता हूं कि आप मेहरबानी करके इनका एक ट्रेनिंग कैम्प, मैंने सभापति महोदय के सामने भी कहा था, मैं इसको दुहराना चाहता हूं कि इन्होंने तो अपनी पार्टी का एक कैम्प कर लिया ओ.टी.एस. जैसी, मैंने जिंदगी में यह पहली बार देखा है, ओ.टी.एस. सरकारी बिल्डिंग है उसमें किसी पार्टी का प्रोग्राम हो, क्या यह अच्छा है?

एक माननीय सदस्य : आपका भी चिंतन शिविर वहां हुआ था।

डा. बुलाकीदास कल्ला : बी.जे.पी. का चिंतन शिविर...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : किराया जमा करा कर कोई भी ले सकता है। आप भी ले सकते हैं। आप कैम्प कराएं आपको भी किराये पर दिला दूंगा।

श्री कालूलाल गुर्जर : चिंतन शिविर कहां हुआ था?

डा. बुलाकीदास कल्ला : राजनीतिक पार्टियों के लिए मंत्रिमण्डल का चिंतन शिविर होता है, समझ में आता है। लेकिन राजनीतिक पार्टी का चिंतन शिविर ओ.टी.एस. में पहली बार लगा है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : आपकी चिंतन बैठक कहां हुई थी? जो आपकी चिता की बैठक बनी वह चिंतन बैठक कहां हुई थी?

डा. बुलाकीदास कल्ला : मंत्रियों की हुई थी, पार्टी की नहीं हुई थी। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : पार्टी की नहीं विधायकों की थी।

डा. बुलाकीदास कल्ला : राजनीतिक पार्टियां अपना सम्मेलन करके...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन : विपक्ष के नेता महोदय के लिए एक प्रशिक्षण शिविर लगवाएं जिससे इनके ज्ञान में वृद्धि हो सके। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : ओ.टी.एस. की बिल्डिंग को इन्होंने अपवित्र किया है जिसकी मैं निन्दा करता हूं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : ओ.टी.एस. की बिल्डिंग को आपने अपवित्र किया था, उसको हमने पवित्र किया है। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मेरा आपसे आग्रह है कि आप मेहरबानी करके पूरी विधान सभा के पक्ष और विपक्ष के सदस्यों का ट्रेनिंग कैम्प वहां पर लगवाएं–सदन में व्यवहार का, सदन में किस तरीके से

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

बोलने का, किस तरह से आएं उसका। ज्यादातर सदस्य आपको ही प्रणाम नहीं करते, नमन नहीं करते, इसलिए मुझे कई बार यहां पर खड़ा होना पड़ता है। धीरे धीरे इनके समझ में आ जाएगी। मैं सही कदम पर टोकता हूं उस पर भी इनको एतराज है।

श्री नरपत सिंह राजवी : अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के नेता खड़े हैं, अभी भाषण दे रहे हैं, अंतिम बात पूछना चाह रहा हूं। सब्सिडी के बारे में आपने जो कहा है वह संशोधन कर लें, 1998-99 की सब्सिडी आज तक नहीं दी है, यह सरकार देगी।

श्री अध्यक्ष : मंत्रीजी, आप क्यों टोक रहे हैं?

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में यह बात कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा...(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी : दस बार अंतिम कह चुके हैं। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : हमारे पक्ष के वक्तव्य के बाद मंत्रिमण्डल का विस्तार होगा, अनेक लोग इनमें मंत्री बनेंगे, यह सत्ता पक्ष के लोग नहीं कह सकते हैं कि 60-60 विभाग मुख्य मंत्री के पास हों, फाइलों के ढेर लग रहे हैं, 15 हजार से ज्यादा फाइलें पैंडिंग हैं। हमारे वक्त में रोज की फाइल प्रायः रोज निकलती थी, जो हमारे प्रमुख विभाग हैं। इसलिए इन बातों को ध्यान में रखते हुए आप सत्ता का विकेन्द्रीकरण करेंगे। और गांधीजी के सपनों को साकार करने के लिए मैं चाहता हूं कि सत्ता पक्ष के लोग अहंकार, दंभ से दूर रहकर जो कामन मामले हैं– साक्षरता है, रोजगार है और उद्योगों से सम्बन्धित मामले हैं, जनसंख्या की समस्या के बारे में, इन सबके बारे में एक साथ विचार करके अच्छा निर्णय लें तो मैं समझता हूं उचित होगा। मैं पुनः इस अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव आया है इसका विरोध करता हूं, धन्यवाद।

श्री अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्रीजी। गुढ़ा से आने वाले माननीय सदस्य, सदन की नेता खड़ी हैं और आप भी खड़े हो गये। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं एक सवाल पूछूंगा सदन के माध्यम से। एक सवाल पूछूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : नहीं, बिलकुल गलत बात है आपकी। गलत बात है आपकी, आप स्थान ग्रहण कर लें। (व्यवधान) मैं पुनः कह रही हूं कि आप स्थान ग्रहण कर लीजिये। प्रतिपक्ष के नेता के बाद केवल सदन के नेता ही बोलते हैं। प्रतिपक्ष के नेता के भाषण के बाद केवल सदन के नेता का भाषण होता है, किसी और का नहीं। अब आप स्थान ग्रहण कर लें,

(श्री अध्यक्ष)

मुझे मजबूर मत करिये। (व्यवधान) मैंने कहा कि मुझे मजबूर मत करिये।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मैं अपनी बात कहूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं आपसे पुनः कह रही हूं कि आप स्थान ग्रहण करें। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा (गुढ़ा) : मैं बोलूंगा, मेरे पर कोई फर्क नहीं पड़ता। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूं, बैठ जाइये। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : सारे के सारे नियम हमारे लिये नहीं हैं। दो मिनट का समय लूंगा, यहां पर धरना दूंगा।

श्री अध्यक्ष : आप स्थान ग्रहण करें, मैं हाथ जोड़ रही हूं। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मैं दो मिनट का समय पहले लूंगा आपसे, यह निवेदन करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, मैं नाम से पुकारूंगी। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : आपने इनको दो घंटे दे दिये, मुझे दो मिनट नहीं? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं आपको नाम से पुकारूंगी। अब आप नहीं मानेंगे तो मैं नाम से पुकारूंगी। (व्यवधान) आप नहीं बैठेंगे तो नाम से पुकारूंगी। मैंने आपसे कहा, बैठ जाएं। (व्यवधान) मैंने आपसे कहा, स्थान ग्रहण करें।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मैं यहां पर धरना दूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं नाम से पुकारुंगी। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मैं दो मिनट बोलूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं आपको नाम से पुकार दूंगी। मैं अब आपको नाम से पुकार दूंगी।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : दो मिनट बोलूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं आपको पुनः चेतावनी दे रही हूं। आप कुछ तो नियमों की जानकारी करिये। कितनी बार मैंने आपसे कहा कि आसन जब पावों पर होता है, सदन के नेता खड़े हो गये और आप फिर भी बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : अम्बेडकर की मूर्ति...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप फिर वही बात कर रहे हैं। आसन पावों पर। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मैं अपनी बात कह कर रहूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आसन पांवों पर है। अंकित नहीं हो। (व्यवधान) अंकित नहीं हो।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : XXX

श्री अध्यक्ष : अंकित नहीं होगा।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : XXX

श्री अध्यक्ष : मुझे मजबूर नहीं करें। माननीय सदस्य, मुझे मजबूर नहीं करें। (व्यवधान) माननीय सदस्य, मैं नहीं चाहती हूं आपका निष्कासन। (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : XXX

श्री अध्यक्ष : आप मुझे मजबूर कर रहे हैं। आप मुझे मजबूर कर रहे हैं। (व्यवधान) गुढ़ा से आने वाले माननीय सदस्य। (व्यवधान)

(माननीय सदस्य श्री रणवीर सिंह गुढ़ा का सदन कूप में धरना)

गुढ़ा से आने वाले माननीय सदस्य। पहली बार सदन की नेता, पहली बार राज्यपाल के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर अपना भाषण देने जा रही हैं...(व्यवधान) बैठे-बैठे नहीं बोलेंगे आप। आप बैठे-बैठे बिलकुल नहीं बोलेंगे। अंकित नहीं हो। आपको सदन के नियमों की जानकारी नहीं है। आप क्या कहना चाहते हैं? (व्यवधान) आप मुझे मजबूर कर रहे हैं। आपकी पार्टी का न तो कोई चीफ व्हिप है, न कोई नेता है जो आपको यहां से उठाएं।

एक माननीय सदस्य : पूरे सदन का माहौल खराब कर रखा है...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : चुपचाप बैठे रहिए, आप बोलेंगे नहीं। आप बोलेंगे नहीं। यदि आपको इनका भाषण सुनना है...(व्यवधान) यहां पर सब ग्रामीण प्राणी हैं, जो चुनकर आये हैं सब प्राणी हैं।

श्री धर्मपाल चौधरी (मण्डावर) : XXX

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, मैं दो तीन दिन से देख रही हूं कि न तो आपका व्यवहार शालीन है और न आपको नियमों की जानकारी है।

(माननीय सदस्य श्री रणवीर सिंह गुढ़ा का धरना समाप्त)

आप इस तरीके से विघ्न-बाधा करते हैं, आप पर न किसी का अंकुश है, न आपका कोई नेता है, आप ही नेता हो, आप ही चीफ व्हिप हो, आप ही सब कुछ हो, इसका मतलब यह नहीं हैं कि आप सदन के नियमों को तोड़ें। मैं पुनः आपको चेतावनी दे रही हूं कि आप अब न तो अपने स्थान से उठेंगे, न बोलने का प्रयत्न करेंगे। जब तक सदन की नेता का भाषण होता है, आप चुपचाप अपने स्थान पर बैठे-बैठे सुनते रहिए। आपको यह मंजूर है कि नहीं, बताएं आप मुझे पहले?

XXX अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार अंकित नहीं किया गया।

श्री रणवीर सिंह गुढ़ा : मंजूर है।

श्री अध्यक्ष : नहीं मंजूर है तो मुझे और कोई कार्यवाही करनी पड़ेगी। (व्यवधान) सदन की नेता।

श्रीमती वसुन्धरा राजे (मुख्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान के नवनियुक्त महामहिम राज्यपाल महोदय को हार्दिक बधाई देना चाहूंगी कि उनके 50 वर्ष के शानदार राजनीतिक जीवन के बाद अब उन्होंने राजस्थान के राज्यपाल का कार्यभार सम्भाला है। इसके साथ-साथ राजस्थान के इतिहास में, हमारी इस विधान सभा के अंदर, इतना बड़ा और गौरवशाली पद पहली दफा महिला ने सम्भाला है, इसलिए मैं सदन की ओर से सब माननीय सदस्यों की ओर से आपको बधाई देना चाहूंगी। माननीय-नवनिर्वाचित सदस्य जो भी हैं, उनका भी मैं हार्दिक स्वागत करना चाहूंगी। पक्ष और विपक्ष के सम्माननीय सदस्य उनका भी आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिन्होंने पिछले तीन दिन से इस डिबेट में भाग लिया है। इस अवसर पर राजनेता, उनका भी मैं धन्यवाद देना चाहूंगी और आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिन्होंने अति महत्वपूर्ण योगदान इस हाउस में दिया है। जो यहां हैं और जो नहीं भी हैं, उन सबको मैं नमन करना चाहूंगी। साथ साथ मैं इस सदन के माध्यम से राजस्थान की महान जनता का आभार व्यक्त करना चाहूंगी क्योंकि उसने भारी योगदान देकर, विश्वास और प्रेम देकर राजस्थान के विकास का भार हम सबके कंधे पर सौंपा है। उनको मैं बारम्बार धन्यवाद देना चाहूंगी।

मैं इस सदन के माध्यम से राजस्थान की पूरी जनता को यह विश्वास दिलाना चाहती हूं कि इस सदन की गरिमा को हम सब लोग बनाये रखेंगे और किसी तरीके से भी उसके ऊपर आंच नहीं आने देंगे। पक्ष और विपक्ष के अन्दर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने की हम पूरी तरह कोशिश करेंगे। वह कड़ी जो पहले से चली आ रही है, उसके अन्दर एक कड़ी और जोड़ने की हम लोग कोशिश करेंगे और राजस्थान की जनता ने हम पर जो विश्वास व्यक्त किया है, उस पर खरे उतरेंगे। लेकिन बहुमत देखकर कोई यह सोचता है कि यह पर्याप्त है हमारे लिए, तो मैं यह कहना चाहूंगी कि यह काफी नहीं है, क्योंकि विकास की जब दौड़ होती है उसके अंदर मैं यह आह्वान सबका करना चाहूंगी कि सहयोग और स्नेह उनका इसमें जारी बना रहे।

कुछ दिन पहले मैंने एक परिवर्तन यात्रा निकाली थी, और वह यात्रा सत्ता परिवर्तन करने के लिए नहीं निकाली थी। उस यात्रा के अन्दर हम लोगों को बहुत करीब से देखा। यह भी देखा कि किस कष्ट के अन्दर वे अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके दुःख को दूर करने

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

के लिए और एक नई व्यवस्था, व्यवस्था में परिवर्तन करने के लिए हमने इस परिवर्तन यात्रा को निकाला था।

माननीय अध्यक्षजी, 27 अप्रैल को हमने मेवाड़ के प्रसिद्ध तीर्थस्थल चारभुजा नाथजी के मन्दिर से अपनी यात्रा का प्रारम्भ किया था। और हमने आशीर्वाद लिया। जनता का समर्थन लेकर सत्ता परिवर्तन किया, यह पहला व्यवस्था परिवर्तन का चरण है, उसको पूरा करने के लिए आज हम इस तरह सब लोग बैठे हुए हैं।

मेवाड़ के आदिवासी क्षेत्रों के अन्दर मुझे घूमने का मौका मिला, तपती हुई धूप के अन्दर किलोमीटर के किलोमीटर सूखी और बंजर भूमि, दूर-दूर तक सब वही दिखाई दी। वहां नंगे पहाड़ थे, सूखे पोखर थे, गाएं जर्जर हालत में थीं, शरीर की पसलियां निकले हुए लोग हमें मिले थे, फटे हाल आदिवासी थे और मीलों दूर कहीं पानी का कोई इन्तजाम नहीं दिखाई दे रहा था। हमने यह भी देखा कि बहुत भीषण अकाल था। उस समय फसलें पूरी तरह से चौपट हो चुकी थीं, उस क्षेत्र में कोई उनकी सुध लेने के लिए नहीं आया था। एक ऐसा दृश्य था जिसको देखकर हमारी तो आत्मा बिलकुल बुरी तरह से झकझोर गई। और उसी दिन हमने सोचा कि राजस्थान की सरकार के नाम से कोई है कि नहीं है, राजस्थान की सरकार कुर्सी पर बैठी है कि नहीं है कि इनकी सुध लेने वाला कोई आया तक नहीं, पता करने वाला आया तक नहीं।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक जगह कुएं के पास से निकल रही थी, कुएं पर दर्जनों महिलाओं को हम पानी निकालते सुबह-शाम देखते हैं, परन्तु जब मैं वहां से निकली तो वहां एक ही महिला थी और वह पानी निकाल रही थी। उसने इशारा करके मुझे रथ से उतारा, रथ से उतरकर मैं जब उसके पास गई तो मेरे हाथ में उसने वह रस्सी थमा कर कहा कि जरा यह पानी निकाल कर देखो तो सही, तब मुझे मालूम हुआ कि क्या कष्ट उन लोगों को सहने पड़ते हैं और किन कठिनाइयों के अन्दर वे अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

थोड़ा आगे गई तो वहां देखा कि पानी की कितनी कड़ी मुसीबत थी, एक महिला अपने बच्चे की कमर पर रस्सी बांधकर कुएं के अन्दर एक फूटे मटके के टुकड़ों को लेकर डाल रही थी ताकि वह उस फूटे मटके के टुकड़ों से दूसरा मटका भरे और कुछ पानी लेकर वह बाहर आए जो अपने पीने के लिए हो। यह स्थिति मैंने देखी, और उस वक्त मैंने निश्चय किया कि यदि हमारी सरकार बन जाती है तो माता और बहनों की पेयजल की समस्या को पूरी तरह हटाने में हमारी सरकार प्रयासरत रहेगी, उसके लिए पूरी कोशिश करेगी।

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

हमने अपनी यात्रा के दौरान आदिवासियों और ग्रामीणों के बच्चों को दूर-दूर तक चलते हुए देखा। अपनी पीठ पर बस्ता थामे हुए वे बच्चे दूर-दूर तक अपनी शिक्षा लेने के लिए, अपनी प्राथमिक शिक्षा लेने के लिए अपने स्कूल की तरफ जा रहे थे। उनकी हालत देखकर मन के अन्दर यह बात उठी कि राजस्थान की जनता अगर हम लोगों को आशीर्वाद देती है और अगर सेवा करने का मौका देती है तो किसी भी बच्चे को चाहे बालक हो या बालिका हो, उसको अपने घर से एक किलोमीटर से दूर जाने की जरूरत नहीं होगी, स्कूल की व्यवस्था उस एक किलोमीटर के अन्दर हम लोग करेंगे, और इसलिए हमने उसका उल्लेख राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में किया है। हम यह व्यवस्था बनाने की पूरी-पूरी कोशिश करेंगे कि प्रदेश के किसी भी बालक और बालिका को प्राथमिक शिक्षा के लिए एक किलोमीटर से दूर जाने की जरूरत नहीं होगी।

शिक्षा हम सबके जीवन का एक मूल आधार है और शिक्षा के प्रति लोगों की जिज्ञासा भी है, आकांक्षा भी है। मेरी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र को अपनी कार्य योजना में प्राथमिकता का दर्जा दिया हुआ है। अपनी 100 दिन की कार्यकारी योजना के अन्दर लम्बे समय से जो रिक्त पड़े पद हैं, विभिन्न श्रेणियों के जो शिक्षक हैं उनके पद भरने का हम लोगों ने निश्चय किया है और निर्णय भी लिया है कि 2000 प्राथमिक विद्यालयों को आगामी शिक्षा सत्र के अन्दर हम लोग क्रमोन्नत करेंगे ताकि प्रत्येक दो प्राथमिक विद्यालयों के बीच में एक उच्च प्राथमिक विद्यालय भी बनाया जाए। इसके अलावा पहली कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक की छात्राओं और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के नवीं से लेकर बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें देने की हम लोग व्यवस्था करेंगे। प्राथमिक शिक्षा के प्रति हम सब लोग चिंतित हैं, परन्तु इसके साथ-साथ उच्च शिक्षा के लिए भी हम लोग चिंतित हैं। सरकार ने कोटा इंजीनियरिंग कालेज में 50 सीटें थीं, उनको बढ़ाकर अब 100 सीटें कर दी हैं, यह करने का निर्णय लिया है। राज्य में समस्त विश्वविद्यालय जहां लम्बे समय से रिक्त पद पड़े हैं, कुल 256 पद ऐसे हैं, उन पर भर्ती प्रक्रिया प्रारम्भ करने का निर्णय कर लिया है।

मेरी मान्यता है कि जिस प्रकार से प्रदेश के अन्दर शिक्षा के प्रति एक वातावरण बन रहा है, वो समय आ गया है कि सरकार और हम सब मिलकर यह अनिवार्य करें कि प्राथमिक शिक्षा तो निःशुल्क हो ही, परन्तु साथ में एक कानून भी बनाया जाए ताकि प्राथमिक शिक्षा की

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

शिक्षा लेने के लिए बच्चे स्कूल जाएं।

इसी तरीके से हमने बेरोजगारों की संख्या को बहुत तेजी से बढ़ते हुए देखा हुआ है और राजस्थान भी बेरोजगारों की इस समस्या से अभी तक अछूता नहीं है। हमने रोजगार देने के वायदे किये हैं। पूरी तरह से आप लोगों ने भी दिये थे और हम लोग देखते रहे कि शायद इसको मूर्त रूप दिया जाएगा, पर हमने देखा कि पिछले पांच सालों के अन्दर बेरोजगारी पर कोई अंकुश लगा नहीं और बेरोजगारों को मदद देने में या नौकरी दिलाने में सरकार कोई कदम नहीं उठाये। हमारी सरकार ने नौकरियों पर लगे जो प्रतिबंध थे, उनको हटाकर करीबन 31 हजार रिक्त पदों पर नियुक्तियां की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है और हर वर्ष एक लाख बेरोजगारों को रोजगार मिले, यह इंतजाम हम लोग करने जा रहे हैं।

किसी माननीय सदस्य ने अपने भाषण में यह पूछा कि अभी तो 31 हजार रिक्त पदों पर आपने नियुक्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ की है, तो एक लाख नौकरी कैसे पूरी की जाएंगी। मैं यह कहना चाहती हूं, ये नौकरी सिर्फ सरकारी नहीं हैं, ये प्राइवेट में भी होंगी, सैल्फ एम्प्लायमेंट भी होगा। प्राइवेट व स्टेट सैक्टर के अन्दर हम लोग किस तरह से नौकरी सृजित करेंगे, चाहे लघु उद्योग के अन्दर हो, चाहे सर्विस सैक्टर के अन्दर हो, यह सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है कि वह उन सब लोगों को मदद करेगी। प्राइवेट सैक्टर के मार्फत, जैसे इंश्योरेंस एजेंट्स हैं, और लघु उद्योग के मार्फत हम लोगों ने सेंट्रल गवर्नमेंट के अन्दर भी इसको शुरू किया है और मैं मानती हूं कि इसको हम राजस्थान के अन्दर भी शुरू करके बहुत सारे लोगों को इसके दायरे के अन्दर लाने की कोशिश करेंगे।

इसी तरीके से गर्व के साथ हम यह कह सकते हैं कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर बहुत प्रसिद्ध है। राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर पूरी दुनिया के अन्दर प्रसिद्ध है। दूसरे, हमारी जो विपुल खनिज सम्पदा है हम उसके भी बहुत धनी हैं। पूरे विश्व में राजस्थान का संगमरमर जो मकराना का संगमरमर है, या जो ग्रेनाइट है, लाइमस्टोन है, कोटा का पत्थर है, जिप्सम है और चाहे धौलपुर का रेड सैंडस्टोन हो, उसका एक विशिष्ट स्थान है। पूर्व सरकार की जो खनिज विरोधी नीति थी उसके कारण बेशकीमती खनिजों का दोहन हम लोग सही तरीके से नहीं कर पाये थे, हमारी सरकार जमीन के अन्दर दबी हुई जो खनिज सम्पदा है, उसको एक दफा फिर से बेपर्दा करके आर्थिक दृष्टि से राजस्थान को मजबूत करने के लिए पूरी तरह से प्रयासरत रहेगी।

पूर्ववर्ती सरकार ने एक खनिज नीति अपनायी थी जिसे "पहले आओ पहले

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

पाओ" के सिद्धान्त के ऊपर आधारित किया था, जिसके कारण उसमें कई खामियां निकलकर आ गईं जिसके कारण वह क्षेत्र आगे नहीं बढ़ सका। मेरी सरकार पूर्व खनिज नीति का एक दफा अध्ययन करेगी और अध्ययन करके इसमें जो कमियां हैं उनको हटाने की पूरी कोशिश करके जो केसेंज न्यायालय के अन्दर पर्यावरण की वजह से लम्बित हैं, उनके जल्दी से निष्पादन हेतु समुचित कार्यवाही करेगी और जल्दी से जल्दी करेगी।

अध्यक्ष महोदय, प्रतापगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य ने जनजाति क्षेत्र में लम्बे समय से निवास कर रहे हमारे आदिवासियों के पट्टे के सम्बन्ध में सदन का ध्यान आकर्षित किया था। यह निश्चित तौर पर समस्या बहुत पुरानी है। मुझे याद है कि हमारी सरकार के टाइम में इसके समाधान के लिए एनवायर्नमेंट मिनिस्ट्री, गवर्नमेंट आफ इण्डिया में भेज दिया गया था। उसके बाद पिछले पांच साल के अन्दर उस मामले को आगे किसी ने नहीं लिया है। मैं सदन को यह अवगत कराना चाहती हूं कि यह न्यायसंगत समस्या है। कल जब प्रधानमंत्रीजी की मीटिंग हुई थी उस मीटिंग के अन्दर हम लोगों ने माननीय प्रधानमंत्रीजी से भी चर्चा की थी और मुझे पूरी उम्मीद है कि शीघ्र ही इस समस्या का समाधान हो जाएगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : बीच में न बोले। आप बीच में न टोकें, माननीय सदस्य। (व्यवधान) सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य, आप अपने स्थान पर बैठे रहे, बीच में न टोकें।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : सदन में अपनी बात कहते हुए नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य ने टेली-मेडिसिन की बात कही। निश्चित तौर पर चिकित्सा और विज्ञान बहुत आगे बढ़ चुका है और सूचना तंत्र तो ऐसा हो गया है कि दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में मिनटों के अन्दर खबरें पहुंच जाती हैं। टेली-मेडिसिन आज के युग की एक बहुत बड़ी मांग है और मैं समझती हूं कि इसमें हम लोग पूरी तरह से प्रयास कर रहे हैं कि टेली-मेडिसिन के माध्यम से दिल्ली के बड़े अस्पताल, जैसे अपोलो हास्पिटल है या एस्कोर्ट्स हार्ट हास्पिटल हो, ऐसे प्रसिद्ध जो चिकित्सा संस्थान हैं उनसे टेली-मेडिसिन द्वारा राजस्थान के सिटी भी और राजस्थान के गांव भी जुड़ें, मैं माननीय सदस्य के बहुत ही अच्छे सुझाव से पूरी तरह से सहमत हूं।

मैं सदन को यह अवगत कराना चाहूंगी कि चिकित्सा संस्थानों के आधुनीकरण और तकनीकी रूप से उनको विकसित करने के लिए हम लोग पूरी तरह से प्रयासरत हैं। चिकित्सा क्षेत्र में एक बहुत बड़ा कदम हमने उठाया है, जोधपुर के अन्दर आल इण्डिया मेडिकल

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

इंस्टीट्यूट की एक शाखा हम लोग बहुत जल्दी स्थापित करने जाने वाले हैं। सवाई मानसिंह हास्पिटल का आधुनिकीकरण और तकनीकी रूप से उच्चीकृत उसे करना है, उसको भी हमने अपनी 100 दिन की कार्यकारी योजना के अन्दर शामिल किया है। हम इस कोशिश में हैं कि राज्य के आम व्यक्ति के पास चिकित्सा सेवा जल्दी से जल्दी पहुंचे और इसके लिए हमारी सरकार पूरी तरह से संकल्पबद्ध है।

अध्यक्ष महोदय, मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि राजस्थान के अन्दर औद्योगिक वातावरण इतना क्यों बिगड़ गया है। क्यों औद्योगिक इकाइयां बंद होकर राजस्थान को छोड़ कर बाहर जा रही हैं? राजस्थान की धरती के ऊपर जन्मे जो हमारे उद्योगपति हैं, उन्होंने जाकर अपनी धाक पूरी दुनिया में जमायी है, पूरे देश के अन्दर भी, पर किन्हीं कारणों की वजह से वे राजस्थान के अन्दर अपना उद्योग लगाने से कतराते हैं। जब हम परिवर्तन यात्रा पर थे तो उनसे भी हमने बहुत बातचीत की थी, उनको प्रेरित करने की कोशिश की थी कि वो अपनी पूंजी को राजस्थान के अन्दर लगाएं, अपनी फैक्ट्रीज को राजस्थान के अन्दर लगाएं ताकि हमारे राजस्थान में पूंजी बढ़े और लोग अपने पैर पर खड़े हो सके। मैं प्रवासी भाइयों को फिर से आमंत्रण देना चाहूंगी कि राज्य में आकर वे उद्योगों की स्थापना करें। हम इन आधारभूत संरचनाओं के लिए पूरी तरह से संकल्पबद्ध हैं और हम उनकी मदद करने में पीछे नहीं हटेंगे।

लघु उद्योग की सिकनैस हमने देखी है, 67 हजार लघु उद्योग पिछले 5 वर्ष के अन्दर बंद हो चुके हैं। उनको पुनर्जीवित करने के लिए हम लोग पूरी तरह से मदद करने के लिए कदम उठाएंगे और बहुत जल्दी ही उठाएंगे।

इतिहास इस बात का साक्षी है, राजस्थान का इतिहास वैसे भी बहुत गौरवशाली है, परन्तु मालूम नहीं कैसे हम लोग बीमारू राज्य की श्रेणी में आकर खड़े हो गए हैं। राजस्थान के बीमारू राज्य की श्रेणी में होने के लिए मैं किसी सरकार के ऊपर दोषारोपण तो नहीं करना चाहती, परन्तु यह हम सबको स्वीकारना पड़ेगा कि राजस्थान के माथे पर जो बीमारू होने का कलंक लगा हुआ है, उसको विकास की दृष्टि से और यह बहुत लम्बा रास्ता है उसको तय करके और मिलकर हटाना पड़ेगा।

हाल ही में ई.टी.सी.एम.आई., स्टेट इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट इंडेक्स, 2000 में उल्लेख है कि राजस्थान-in the index of 1999, stands at the 18th place in the list of 19 States. यानी कि हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इंफ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट की दृष्टि से आज हम 18वें स्थान के ऊपर खड़े हैं। यह

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

चिन्ता का विषय भी है और चुनौती का विषय भी है। इसका मतलब यह भी हुआ कि शिक्षा, चिकित्सा, ऊर्जा, सड़क, पेयजल, परिवहन से सब जो आधारभूत सुविधाएं हैं, आज भी राजस्थान में बहुत बड़ा वर्ग है जो इनसे वंचित है।

प्रधानमंत्री सड़क योजना का बहुत बड़ा लाभ राजस्थान को मिला है और इस योजना के अन्तर्गत जो कार्य हुआ है, मैं चाहती हूं और भी गति से हम लोगों को पैसा मिले। इस मकसद से वर्ष 2004-2005 में हम लोगों को 950 करोड़ रुपये की स्वीकृतियां केन्द्र सरकार ने भेज दी हैं जिससे 2070 गांवों को पक्की सड़क से जोड़ने की योजना को हम लोग मूर्त रूप दे सकेंगे। इस योजना में पिछले तीन वर्षों में पिछली सरकार केवल 1080 करोड़ रुपये स्वीकृत कराकर प्राप्त कर सकी। हम लोग एक साल के अन्दर 950 करोड़ रुपये लाये हैं और ये तीन साल के अन्दर हजार करोड़ रुपये लेकर आये हैं। इतना फर्क क्यों है? अगर जाते, मांगते, विश्वास दिलाते तो मैं तो विश्वास करती हूं कि वह पैसा आप लोगों को जरूर मिलता।

श्री अध्यक्ष : बीच में नहीं बोलिये।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : सिंचाई परियोजना के बारे में पूर्ववर्ती सरकार ने मूल योजना में 417 करोड़ का प्रावधान रखा था जिसको मई के महीने में संशोधित करके उन्होंने 276 करोड़ रुपये ही कर दिया। एक तरफ तो प्रधान मंत्रीजी सब नदियों को जोड़ने की बात कर रहे हैं, वहीं राजस्थान में जो पिछली सरकार थी उसने अपनी सिंचाई के लिए जो धनराशि रखी थी उसको कम कर दिया। हमारी सरकार ने 417 करोड़ की राशि को बढ़ाकर 709 करोड़ कर दिया है और सौ दिन में हमने यह लक्ष्य रखा है कि 15 हजार हैक्टेयर भूमि को हम सिंचित करेंगे।

मैं तो यह मानती थी कि प्रतिपक्ष के नेता क्योंकि खुद बीकानेर से आते हैं, घेघड़ा में इतना बड़ा काम इर्रिगेशन डिपार्टमेंट ने किया, युद्ध स्तर पर लगकर इतने बड़े ब्रिज को उन्होंने ठीक किया, वे उन लोगों की पीठ के ऊपर थोड़ी-सी थपथपी देंगे। हम भी इतना ही कहना चाहते हैं कि जो घेघड़ा का पानी था उस घेघड़ा के पानी को 15-20 दिन के अन्दर उस ब्रिज को रिपेयर करके, और इर्रिगेशन वालों ने पानी की शुरूआत फिर से कर दी तो हो सकता है कि थोड़ा-सा पानी कम आया होगा क्योंकि नई-नई बनी है इसलिए उसको सूखने की भी जरूरत थी, परन्तु अब पानी टेल तक आएगा 2000 क्यूसेक्स, और हम लोगों ने बढ़ाने की बात कर दी है। मैं समझती हूं कि इर्रिगेशन के जो अधिकारी लोग हैं और जो कामगार लोग हैं, उन लोगों को, सबको हम लोगों को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने इतने

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

युद्ध स्तर पर काम करके वहां शुभ कार्य किया है।

श्री अध्यक्ष : बीच में आप कोई बात नहीं कहेंगे, माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, बीच में कोई बात नहीं कहेंगे। आप स्थान ग्रहण कर लें। माननीय नेता।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : प्रतिपक्ष के नेता ने सिंचित क्षेत्र का मामला भाजपा के शासन में ही कहा, वह कह रहे हैं बढ़ाने की, तो हमारे शासन के अन्दर 25 प्रतिशत प्रति बीघा का था और आपकी सरकार के अन्दर 50 प्रतिशत प्रति बीघा का शुल्क करा दिया गया था।

डा. बुलाकीदास कल्ला : माफ करने का कहा था।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : इसलिए मैं तो इन चीजों के अन्दर जाना नहीं चाहती हूं। मैं मानती हूं कि सदन के अन्दर तो अपने को वह बात रखनी चाहिए जो बिलकुल सही है।

सदन के अन्दर बिजली को लेकर काफी चर्चा हुई और कई माननीय सदस्यों ने अपनी चिन्ता बिजली के बारे में प्रकट की। प्रतिपक्ष के सदन की कार्यवाही में बड़े पैमाने पर बाधा उत्पन्न करके यह दर्शाने का प्रयास किया कि प्रदेश के अन्दर बहुत बड़ा विद्युत संकट पैदा हो गया है। सच्चाई तो यह है कि इसके बिलकुल ही उलटा है, सच जो है। मैं माननीय सदस्यों और राजस्थान की जनता को सदन के माध्यम से यह कहना चाहूंगी कि सरकार किसानों को 8 घंटे बिजली देगी, हम संकल्पबद्ध हैं उसके लिए। और मैं यह भी कहना चाहती हूं, सब को आश्वस्त करना...

एक माननीय सदस्य : देगी।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : दे रही है, इसको करैक्ट करूंगी मैं। और साथ-साथ, हम सबको यह आश्वस्त भी करना चाहते हैं कि आज तक जो काम नहीं हुआ था वह हम लोग करने जा रहे हैं। क्योंकि बच्चों की परीक्षाएं हैं इसलिए 6 से 10 रात को हम बिजली देंगे और 5 बजे से लेकर सुबह 7 बजे तक हम बिजली देंगे ताकि इस टाइम में महिलाओं को भी, बच्चों को भी अपना काम करने का, पढ़ाई करने का मौका मिले। साथ-साथ विद्युत की स्थिति पर प्रतिदिन सब विद्युत कम्पनियों से मैं खुद रिपोर्ट ले रही हूं तो मुझे मालूम है, जानकारी है, यह बिजली की समस्या पूरी तरह से अब कंट्रोल में हमारे आ गई है।

अध्यक्ष महोदय, प्रदेश की बहुत ही विषय भौगोलिक परिस्थिति के कारण अकाल और सूखे का सामना प्रदेश को कई बार करना पड़ता है। मुझे इस बात का दुःख है कि इस प्रकार की प्राकृतिक आपदा का भी राजनीतिकरण करने में हम

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

लोग चूके नहीं है। तत्कालीन सरकार ने केन्द्र पर लगातार अकाल राहत सही मात्रा में, आर्थिक सहायता सही मात्रा में उपलब्ध नहीं कराने की बात आरोप लगाकर कही थी, जबकि वस्तुस्थिति बिलकुल ही अलग थी। केन्द्र सरकार ने सूख से निपटने के लिए 2002–03, 2003–04 में सी.आर.एफ. और एन.सी.सी.एफ. के द्वारा 1380 करोड़ रुपये की नकद सहायता उपलब्ध करवाई थी। प्रधानमंत्री ने अपने सहायता कोष से साढ़े चार करोड़ रुपये अतिरिक्त सहायता के हिसाब से सरकार को दिये थे। इसके अलावा 32 लाख मैट्रिक टन गेहूं, 32 हजार मैट्रिक टन पशु आहार योग्य निःशुल्क गेहूं, यह भी उपलब्ध करवाया गया। रेल के द्वारा पानी और चारा, यह भी निःशुल्क परिवहन की व्यवस्था केन्द्र ने की। केन्द्र सरकार ने जो नकद राशि और गेहूं दिया, उसका जोड़ अगर अपन करते हैं तो करीबन 6 हजार करोड़ रुपये की राजस्थान को अकाल में पूरी तरह से मदद की, और मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है कि केन्द्र सरकार ने पूरे देश में जहां-जहां अकाल हुआ वहां सबसे ज्यादा सहायता राजस्थान सरकार को, राजस्थान को दी और इसका कीर्तिमान प्राप्त किया।

माननीय अध्यक्ष, पूर्व मुख्य मंत्री श्री शिवचरणजी माथुर को मैं धन्यवाद देना चाहूंगी कि उन्होंने अपने प्रशासनिक सुधार आयोग के प्रतिवेदन में राज्य के खनिज, प्राकृतिक गैस, कोल बैड मीथेन, पैट्रोल के दोहन से हाने वाली जो सम्भावित आय है उसकी पूरी स्टडी करके तथ्यों सहित अपनी रिपोर्ट को प्रस्तुत किया है। अध्यक्ष महोदय, मैं और मेरी सरकार इस मंशा की है कि प्रदेश की प्रगति और खुशहाली में कोई भी अपने बहुमूल्य सुझाव देता है और किसी भी रूप में किसी भी माननीय सदस्य से कोई राय प्राप्त होती है तो दलगत राजनीति के ऊपर उठकर हम उसका अपनी तरफ से स्वागत करेंगे। माथुर साहब इस प्रदेश के मुख्य मंत्री रह चुके हैं, प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष के रूप में पांच वर्ष उन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की है और 13 प्रतिवेदन तत्कालीन सरकार के समक्ष प्रस्तुत किये हैं, न जाने क्यों उन प्रतिवेदनों पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। मैंने उन प्रतिवेदनों के बारे में जानकारी की है, प्रतिवेदनों की सिफारिश प्रदेश की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है यह मालूम किया है, इसलिए मैं इस सदन में घोषणा करती हूं कि प्रशासनिक सुधार आयोग के प्रतिवेदनों की समीक्षा के लिए एक उच्च स्तरीय समिति श्री अनिल वैश्य की अध्यक्षता में बनाई गई है। एक माह में प्रतिवेदनों का अध्ययन कर उनकी लागू की जाने वाली सिफारिशों से राज्य सरकार को अवगत करा दिया जाएगा ताकि इन सिफारिशों के अनुसार तत्काल कार्यवाही हो सके।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : माथुर साहब, आपको अब तो ताली बजानी चाहिए।

श्री अध्यक्ष : इसमें तो, माथुर साहब, आपको भी बजानी चाहिए।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : देखो, कितना बड़ा हृदय है हमारा। आपकी बात पांच साल तक नहीं मानी पर हमारे मुख्य मंत्रीजी ने मान ली, अब तो धन्यवाद देना चाहिए आपको।

एक माननीय सदस्य : नई बात नहीं कह रहे हो, लागू करो इसको तो बड़ी बात है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : अब तो आपको खड़े होकर धन्यवाद देना चाहिए।

एक माननीय सदस्य : सराहना नहीं कर सकते।

डा. एन. एम. गुर्जर : पांच साल तो नहीं हुआ एक महीने में मान लिया। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : आपने तो मिट्टी नहीं झाड़ी उस पर से। ऐसे विद्वान पूर्व मुख्य मंत्री की सिफारिशों पर आपने तो मिट्टी नहीं झाड़ी।

एक माननीय सदस्य : वह लागू करने के लिए किया है।

श्री महावीर प्रसाद जैन : आपने तो देखने की भी आवश्यकता महसूस नहीं की, कूड़े में डाल दिया।

श्री रामनारायण चौधरी : कहां है?

श्री महावीर प्रसाद जैन : कूड़े में।

श्री रामनारायण चौधरी : यह तो इनका अपमान है। (व्यवधान) चीफ मिनिस्टर साहब की अध्यक्षता में होती तो कोई बात होती, अधिकारी को जांच के लिए दे दिया। (व्यवधान) क्या जांच करेगा नौकर? (व्यवधान)

श्रीमती वसुन्धरा राजे : नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा कि राज्यपाल के अभिभाषण में पंचायती राज संस्थाओं का कोई जिक्र नहीं किया गया है। सदन को मैं यह अवगत करानी चाहूंगी कि पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय निकायों में अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग और महिलाओं को आरक्षण मिला, उसकी पहल प्रदेश की तत्कालीन भाजपा सरकार ने की थी। यह सभी जानते हैं कि कांग्रेस की सरकार ने अपने कार्यकाल में पंचायती राज संस्थाओं के 17-17 वर्ष तक चुनाव करवाये ही नहीं और जनता को अपने लोकतांत्रिक अधिकारों से वंचित रखा, जबकि मेरी सरकार विभिन्न स्तरों पर लिये जाने वाले निर्णय में जनता की सहभागिता के सिद्धान्त पर विश्वास रखती है।

माननीय अध्यक्ष, मैं राजस्थान की तस्वीर सदन में पेश करके यह बताना चाहती हूं कि पिछली सरकार ने हमें एक सुस्त गरीब, बदहाल व आर्थिक दृष्टि से

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

कमजोर राजस्थान सौंपा है, मगर मेरी कथनी और मेरी करनी में कोई अन्तर या फर्क नहीं होगा। मैं पिछली सरकार के मुख्य मंत्री की तरह बार-बार अपने घोषणा पत्र की प्रतियों को लेकर सरकारी अधिकारियों को नहीं सौंपूंगी, बल्कि हमने जो वायदे किये हैं उनको हम पूरा करेंगे और तभी दम लेंगे। हम लोग कोरे विज्ञापनों में भरोसा नहीं करते, हमारा शासन भी नहीं करता। हमने राजस्थान की तस्वीर और तकदीर बंदलने के लिए ही परिवर्तन यात्रा की शुरूआत की थी। उसके अनुभवों को लेकर विकास के रास्ते पर चलने की हम कोशिश कर रहे हैं और उसी दिशा में हमने यह 100 दिन की कार्य योजना जनता के सामने रखी है, उसको जल्दी से जल्दी क्रियान्वित करेंगे। 31 मार्च तक की हमने तारीख दी हुई है, उसमें आप लोगों को जरूर कुछ देखने को मिलेगा।

इस देश के संसदीय लोकतंत्र में इस सदन का भी गौरवशाली स्थान रहा है और यहां की महान परम्पराएं रही हैं। इस सदन में पिछली सरकार के तीन-तीन मुख्य मंत्री बिराजे हैं जिनके हाथ में राज्य के शासन की बागडोर किसी समय थी, मुझे प्रसन्नता होती यदि वे अपने अनुभव और ज्ञान से या सकारात्मक सोच से मेरा व मेरी सरकार का मार्गदर्शन करते। मगर मुझे खेद है कि पिछले कुछ दिनों की सदन की कार्यवाही का अधिकांश समय शोर-शराबे और हंगामें में ही निकल गया। मैं आशा करती हूं कि सत्ता और प्रतिपक्ष के सब सदस्य ये जो गौरवशाली परम्पराएं हैं उनको निभाने की पूरी कोशिश करेंगे।

हमारे प्रतिपक्ष के सदस्यों ने राज्यपाल के अभिभाषण को पार्टी के घोषणा पत्र से जोड़ने की कोशिश की है, मैं यह बताना चाहूंगी कि घोषणा पत्र पार्टी की रीति-नीतियों का पंचवर्षीय दस्तावेज है। इसको पांच वर्ष में जनता के सामने एक बार तैयार करके लाया जाता है और इस पर जनता अपना जनादेश देती है, और वह दे चुकी है। जबकि महामहिम राज्यपाल का जो अभिभाषण होता है वह सरकारी दस्तावेज है जिसमें सरकार की रीति-नीति और दर्शन दिखाई देता है। उनके अभिभाषण के द्वारा राजस्थान की जनता से जो वादे हमने किये हैं उनके पीछे हमारी सरकार की प्रतिबद्धता दिखाई देती है। प्रतिपक्ष के नेता ने यह भी कहा कि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में पार्टियों का पहली बार नाम लिया गया है, मैं इतना ही कहना चाहूंगी, याद दिलाना चाहूंगी कि राज्यपाल महोदय के जनवरी, 1999 के अभिभाषण के पेज तीन की धारा 8 को तो जरा देख लें फिर उसके बाद अपन बात करें।

डा. बुलाकीदास कल्ला : पढ़ो, बताओ।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : पार्टी की बात आप जब कर रहे हैं तो मैंने आपको दे दिया, आप उसको उठाकर पढ़ लें, आपको मालूम पड़ जाएगा कि पार्टियों का नाम लिया गया है या नहीं लिया गया है।

मैं माननीय सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहती हूं कि जिस तरह इस सदन के कई माननीय सदस्यों ने पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का जिक्र करते हुए कहा है कि यह घोषणाओं को अमलीजामा पहनाने वाली बात है, ऐसा मौका मेरी सरकार किसी को नहीं देगी। साथ में मैं, अध्यक्ष महोदय, यह भी कहना चाहूंगी कि हमारी बहुत लम्बी यात्रा विकास की है और इस चर्चा को हम करते तो हैं। पंचवर्षीय योजना और एक वर्षीय योजना के द्वारा हम यह विचार करते हैं कि क्योंकि राज्य के विकास की बुनियाद हमारी वार्षिक योजना, पंचवर्षीय योजना के ऊपर ही टिकी होती है। और इन योजनाओं के निर्माण के लिए आवश्यक आर्थिक संसाधन जुटाने के ऊपर भी हम लोगों को विचार करना पड़ता है।

अब यहां आपने यह बात उठाई थी कि 1998 में 23 हजार करोड़ का हम लोगों पर डैट था और हम लोगों ने, उस समय की सरकार ने 18 हजार करोड़ के जो असैट्स थे उनको क्रियेट किया था। मैं मानती हूं कि जब डैट कोई लेता है और डैट को लेकर उससे असैट क्रियेट करता है तो असैट क्रियेशन के लिए ही वह डैट हो तो कोई प्राब्लम नहीं होती। परन्तु आज जो 53 हजार करोड़ का डैट है, कोई असैट नहीं है। हम इधर-उधर देखें, गिनने की कोशिश करें कि कोई असैट है तो हमें वह असैट मिलता नहीं है। तो मैं यह पूछना चाहती हूं कि विदाउट असैट अगर कोई डैट ले तो सरकार को डुबोने वाली बात होती है। इसलिए मैंने यह पाइंट कहा है, वैसे मैं पाइंट आउट करने वाली नहीं थी। प्लानिंग कमीशन ने सरकार के लिए क्या कहा था यह बात यहां उठी थी, उसके बारे में मैं आपको कहना चाहूंगी, डिप्टी चेयरमैन, प्लानिंग कमीशन ने हाइलाइट किया...

"...the following deficiencies relating to Plan implementation and economic situation in the State of Rajasthan and requested the State Government to immediately take remedial measures :

(i) Rajasthan has one of the highest debt/GSDP ratio (49.5%) among larger states in the country;

(ii) interest payment account for 1/3 of the revenue receipts only. Salary, pension, etc., took care of the rest;

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

(iii) demographic health and nutritional industries of the State are much below the desired level;

(iv) incidence of urban poverty in the State is 19.85%, much higher than the rural poverty of 13%...;" ये बहुत सारी चीजें इसमें लिखी हुई हैं, अगर आप देख लेंगे तो मालूम पड़ जाएगा कि पिछली सरकार जब इनके सामने गई थी तो क्यों पैसा वापस लेकर नहीं आ सकती थी। परफार्मेंस की बात आप करते हो तो परफार्मेंस के लिए कुछ कुछ इण्डस्ट्रीज की तरफ देखने की जरूरत है। इसी तरह से योजना का जो भी आकार होता है और वह आकार अगर बढ़ता है तो उसमें मैं मानती हूं कि पुरानी सरकार का कोई क्रेडिट नहीं है। 4258 करोड़, यह 5504 करोड़ को उठाकर हम लोगों ने 11010 करोड़ और उसमें जोड़ा है और इसमें एडिशनल मार्केट बोरोइंग है, उसमें सिंचाई का पैसा है और डैट्स स्वैप का पैसा हुआ जिसकी वजह से हम इस चीज को बढ़ा सके। फाइनेंस मिनिस्टरी के अन्दर भी और प्लानिंग कमीशन के साथ भी बात करने के बाद इस प्लान साइज को बढ़ाने में हम लोग पूरी तरह से कामयाब हुए।

मैं आपको यह कहना चाहूंगी कि राजस्थान की वर्तमान वित्तीय हालत ठीक नहीं है। जो हमने इन्हैरिट किया वह बिलकुल ही ठीक नहीं है। परन्तु इसके पश्चात् भी न तो पिछली सरकार की तरह मैं कहने वाली हूं कि सरकार का खजाना खाली है तथा न ही देश में आर्थिक रूप से जर्जर राज्य के रूप में मैं राजस्थान को प्रस्तुत करने वाली हूं, क्योंकि यह हमारी सबकी इज्जत का सवाल है। इस बात को हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि यह बहुत बड़ा एक डैट है, आप लोगों ने कर्जा हमारे सिर पर, डूबते हुए हमारे राजस्थान के ऊपर छोड़ा है 52600 करोड़ का। यह कर्जा लेना जैसा मैंने कहा, कोई गुनाह नहीं है परन्तु असैट क्रियेशन करना बहुत जरूरी है। योजना का आकार अगर बढ़ता है तो कर्जा तो लेना पड़ता ही है, परन्तु कर्जा लेने से पहले हम यह भी विचार करें कि इस कर्जे का भुगतान और ब्याज का भुगतान हम किस प्रकार से और किस व्यवस्था से करें। मैं यहां आपको यह बताना चाहूंगी कि हम जो पैसा लाये हैं उसमें और आपकी ब्याज की दरों में जमीन-आसमान का अन्तर है, 3 या 4 प्रतिशत का अन्तर है। जो फाइनेंस हमने लिया है या जो डैट हमने लिया है वह एट मच बैटर रेट लेकर हम लोग आये हैं इसलिए हम ला भी सके हैं इसको।

सत्ता पक्ष के कई माननीय सदस्यों ने पंचवर्षीय योजना का यहां उल्लेख किया है। यह सत्य है कि पांच वर्षों में पहली सरकार ने वार्षिक योजना में लगभग 20

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

प्रतिशत की कटौती की थी। वार्षिक योजना की कटौती निश्चित तौर पर प्रदेश के विकास के मार्ग में एक रोड ब्लाक या अवरुद्ध बन जाता है। अध्यक्ष महोदय, नई सरकार के गठन के समय वार्षिक योजना का यह बिलकुल अंतिम पड़ाव है, खाली एक-दो महीना बाकी बचता है। निवर्तमान सरकार ने अपनी जो योजना छोड़ी थी, जो 4 हजार कुछ की छोड़ी थी, उसके बारे में मैंने अभी बताया, के.सी. पंत साहब ने इस योजना के अन्दर 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है और 12 हजार कुछ करोड़ रुपये की योजना का आकार हमको बढ़ाया है जिसके लिए हम उनको धन्यवाद देना चाहेंगे।

अध्यक्ष महोदय, लम्बे-चौड़े आंकड़ों में मैं नहीं जाना चाहूंगी परन्तु यह जरूर आपको कहूंगी कि वर्तमान में हमारी आर्थिक विकास दर अत्यन्त शोचनीय है।

(19.00 बजे)

इकोनोमिक इंडीकेटर्स अगर आप देखें तो 1997-98 में आर्थिक विकास दर थी 11.1 प्रतिशत जो 2003-2004 के अन्दर 18 प्रतिशत गिरकर मायनस 7.23 प्रतिशत रह गई है। निश्चित रूप से हमें प्रयास करना पड़ेगा, आर्थिक विकास दर को सकारात्मक कर उसको बढ़ाने की हमें कोशिश करनी पड़ेगी। सरकार भरसक इसका भी प्रयास करेगी। राज्य की विकट आर्थिक स्थिति से निपटने के लिए जो यह लीकेज है, रिसाव है राजस्व के अन्दर, इसको हमें रोकना पड़ेगा और दूसरी तरफ से नान-टैक्स रेवेन्यू बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम हमें उठाने पड़ेंगे। साथ ही सरकार में अनावश्यक रूप से जो भी खर्चे हैं, उनको रोकने की हमें पूरी कोशिश करनी होगी। इसको ध्यान में रखते हुए मैं यह घोषणा करना चाहूंगी कि सरकार ने पूर्व वित्त सचिव श्री यतीन्द्र सिंह की अध्यक्षता में एक एक्सपेंडीचर रिफार्म कमीशन बनाने के आदेश दिये है, वह राज्य सरकार में अनावश्यक व्यय को कम करने हेतु पूरा अध्ययन करके, रिपोर्ट बनाकर मय सिफारिश के जल्दी से जल्दी हम लोगों तक पहुंचाएंगे।

सभी माननीय सदस्यों से, विशेष रूप से प्रतिपक्ष के माननीय सदस्यों से मैं अपेक्षा यह करती हूं कि राजस्थान को वह प्रगति के पथ पर उतना ही बढ़ाना चाहेंगे जितना कि हम लोग और इसलिए दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सार्थक बहस भी करेंगे। मर्यादाओं में रहकर जनहित में रखी हुई प्रतिपक्ष की कुछ बातों से सत्ता पक्ष को शासन को चलाने में सहयोग लेने में कोई मुसीबत नहीं है। मैंने तो जैसा अभी कहा, माननीय माथुर साहब के जो सुझाव थे, जो उसमें अच्छे-अच्छे सुझाव हैं, उनको क्रियान्वित करने की बात कही है, वह आपके सामने है। कोई भी

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

अच्छी बात आती है तो उससे हमारी सरकार को सहयोग ही होगा, इसलिए औचित्यहीन मुद्दे और यह रुकावटें पैदा नहीं करें। मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहती हूं कि प्रदेश की उन्नति और प्रगति के लिए किसी भी माननीय सदस्य ने कोई अच्छे मुद्दे उठाये हैं तो किसी भी भेदभाव के बिना हम पूरे सम्मान के साथ उसको अपनाने की कोशिश करेंगे।

इसी तरीके से मैं कहना चाहूंगी, माननीय अध्यक्ष महोदय, आज का युग ई-गवर्नेंस और कम्प्यूटर्स का युग है। ई-गवर्नेंस और कम्प्यूटर्स से माननीय सदस्य जुड़ें, यह प्रतिपक्ष के नेता ने भी बात रखी है, ताकि उनके कार्य में प्रगति हो और उनको गति मिले। इसके लिए मैं यह घोषणा करना चाहूंगी कि सभी माननीय सदस्यों को 50,000 रुपये तक की राशि के कम्प्यूटर खरीदने की अनुमति सरकार के द्वारा आपको दी जाएगी, सबको कम्प्यूटर्स मिल जाएंगे।

श्री अध्यक्ष : अब तो ताली बजाइये। (व्यवधान)

श्रीमती वसुन्धरा राजे : पी.ए. की सुविधा की भी बात जो रखी थी, वह चुनावों की वजह से रोक दी गई है। वह पी.एज. भी सभी एम.एल.एज. को मिलें, वह सुविधा फिर से वापस कर दी जाएगी।

कल्ला साहब, प्रतिपक्ष के नेताजी बहुत दुःखी हो रहे थे, हमारे लॉ एण्ड आर्डर को ध्यान में रखते हुए और उन्होंने यह भी कहा कि यह भी कहा था यह बिहार और यू.पी. नहीं बनना चाहिए। मैं भी अपनी भावना को उनकी भावना से जोड़ना चाहती हूं। मुझे याद है, कुछ ही दिन पहले बहुत दिन पहले की बात नहीं है, कुछ ही दिनं पहले आपके उप मुख्य मंत्रीजी के ही क्षेत्र के अन्दर दलित घोड़ी पर सवार होकर अपने ब्याह में नहीं जा पाया था और इस चीज को माननीय सदस्य पहाड़ियाजी ने भी उठाया। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगी, हमारे पास जो फिगर्स हैं वे 2002-2003 दिसम्बर के फिगर्स हैं, उसमें जो इम्प्रूवमेंट हुआ है वह 10 प्रतिशत है, और मैं समझती हूं, इस तरीके से हम लोग इम्प्रूवमेंट करते जाएंगे तो आपको ज्यादा चिन्ता करने की जरूरत नहीं होगी।

मुझे तो आश्चर्य इस बात का हुआ कि प्रतिपक्ष के नेता ने कई बातें ऐसी की जो मैं समझती हूं कि सही नहीं हैं। सबसे पहले तो उन्होंने यह कहा कि मैं खुद सदन में इतने दिन से नहीं हूं। उनको तो यह मालूम होना चाहिए कि कल के दिन को छोड़ कर मैं तीनों-चारों दिन सदन में हूं। इसके बाद मुझे यह समझ में नहीं आया कि 1200 करोड़ की स्कीम अगर किसान के लिए हो तो किसान की भलाई के लिए तो आपको भी उसमें जुड़ना

(श्रीमती वसुन्धरा राजे)

चाहिए। उसमें आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमने जो भी बातें लिखी हैं, उनको हम पूरा करेंगे। उनको टोटा क्यों दिलवाना चाहते हो, वह मैं पूछना चाहती हूं? और मातृ शक्ति की तो आप चिन्ता ही मत करो क्योंकि आज यहां मुख्य मंत्री और वहां अध्यक्ष महोदया और इसी तरीके से करीबन 22 या 23 महिलाओं को हम लोगों ने आगे लाने की कोशिश की है। मैं समझती हूं कि हमारा रिकार्ड आपके सामने तो है ही और महिलाओं का तो मैंने खुद मंत्रालय अपने पास रखा हुआ है, मैं विश्वास आपको यह दिलाना चाहूंगी कि महिलाओं को आगे बढ़ाने का पूरा प्रयास रहेगा। आज मुझे "प्रयास" शब्द इस्तेमाल इसलिए करना पड़ रहा है क्योंकि हमारी सरकार तो एक महीने पुरानी भी नहीं है और इतने सपने बंध रहे हैं। आप लोग तो इस तरीके से हमसे प्रश्न पूछ रहे हैं, जवाब मांग रहे हैं जैसे हमने पांच साल सरकार चलाई हो। हमने भी इतने प्रश्न नहीं पूछे जितने आप ने प्रश्न हमसे पूछ लिये। पर मुझे इसकी बहुत खुशी है कि आप इतने सतर्क हो, क्योंकि जब प्रतिपक्ष इतना सतर्क होता है तो मैं समझती हूं कि आगे चलकर सरकार भी अपना काम सही तरीके से कर सकती है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : यह आप इनको उसी रूप में क्यों नहीं देखती हैं? आप हैं, माननीय अध्यक्ष महोदय हैं, उसी रूप में आप कल्ला साहब को क्यों नहीं देखती? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : सदन के अन्दर प्रतिपक्ष की नेता महिला हो तो ममताजी का भी भला हो जाएगा, मातृशक्ति कितनी सशक्त हो जाएगी। ऊपर महिला, सदन की नेता महिला और मेरी बहुत सारी शुभकामनाएं हैं, अगर आप वहां बिराज जाएं तो। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी : प्रधानमंत्री भी महिला हो जाए, यह भी आप मांग करो न।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : अनफार्चुनेटली मैं मानती हूं कि वहां तो एक ही महिला है, उसको मौका देने की हमने कोई...(व्यवधान)

डा. किरोड़ी लाल : बी. डी. कल्लाजी महिला से कम नहीं हैं।

श्री घनश्याम तिवाड़ी : कल्लाजी को उसी रूप में क्यों नहीं देख लेतीं आप? कल्लाजी को उसी रूप में देखो।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : संसदीय कार्य मंत्रीजी ने कहा है कि महिला के रूप में प्रतिपक्ष के नेता को देख ले। बी.डी. कल्ला साहब को ही देख ले।

अगर आप कहेंगे तो उस दृष्टि से देखने लग जाएंगे, हम तो। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मुख्य मंत्री महोदय, आप इनकी परफार्मेंस देखकर इनको मंत्री जरूर बना देना। (व्यवधान)

श्रीमती वसुन्धरा राजे : आप बिलकुल चिंता मत करना, पर मैं यह कहना चाहूंगी...

श्री प्रद्युम्न सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको...

श्रीमती वसुन्धरा राजे : सी.एम.सी. की बात आपने उठाई, I'm not yeilding, सी.एम.सी. की बात आपने उठाई पर उसके बारे में ज्यादा कुछ कहना नहीं चाहती हूं। मैं समझती हूं, अपने बीच में वह बातचीत आप लोग कर लेंगे तो मालूम पड़ जाएगा कि किस तरह से क्वालिटी का, प्राइस का डिफरेंस थोड़ा सा नीचे लाया गया है और किस वजह से वह फाइल सिग्नेचर्स में...(व्यवधान) मैं उसको आगे इसलिए नहीं ले जाना चाहती हूं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : उसकी जांच करवाइये।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : मैं नहीं मानती हूं कि ऐसी चीजों को, आप खुद ही जानते हैं कि क्या रीजन हैं, वह मैं यहां उजागर नहीं करना चाहूंगी।

आखिर में मैं यह कहना चाहूंगी, माननीय सदस्य नाथद्वारा से आने वाले, आज हैं नहीं, परन्तु उन्होंने यह कहा था कि अगर सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष के लोग, विपक्ष के लोग मिलकर राजस्थान के बारे में सोचकर प्रगति की और विकास की बात हाउस के अन्दर रखेंगे तो यह विन-विन सिचुएशन है। मैं पूरी तरह से उनके हाथ सहमत हूं। यह विन-विन सिचुएशन है इसलिए आज मैं सबसे पहले आप लोग सबको धन्यवाद देना चाहती हूं, प्रतिपक्ष के नेता को और सब माननीय सदस्यों को, और सरकार के सभी माननीय सदस्यों को धन्यवाद देना चाहती हूं कि गर्वनर के अभिभाषण के अन्दर सब लोगों ने बहस में अपना समय देकर और डिबेट के अन्दर पार्ट लेकर पिछले दो दिन-ढाई दिन के अन्दर जो किया, उसके लिए मैं सबको धन्यवाद देना चाहती हूं। आपको भी धन्यवाद। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर आपकी इजाजत हो, अगर आप इजाजत दें तो एक-दो जानकारी माननीय मुख्य मंत्री महोदया से ले सकते हैं क्या?

श्री अध्यक्ष : अगर आप कोई क्लैरीफिकेशन लेना चाहे तो ले लीजिये।

श्री प्रद्युम्न सिंह : अगर आप इजाजत दें तो, अगर आप इजाजत दें।

श्री अध्यक्ष : पैसे कोई आवश्यकता तो है नहीं लेकिन फिर भी यदि आप कोई क्लेरीफिकेशन लेना चाहे तो ले लीजिये। आप पूछ लीजिये, दे रही हूं आपको इजाजत।

श्री प्रद्युम्न सिंह : माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सदन के अन्दर लम्बे समय तक रही है। पूर्व में तो बीच-बीच में सवाल पूछ लेते थे लेकिन मैंने इंटरप्ट करना मुनासिब नहीं समझा। मैं आपसे सिर्फ तीन बातें जानकारी के लिए जानना चाहता हूं। एक आपने प्लान साइज बढ़ाने की बात की, आपका प्लान साइज बढ़ा, उसके लिए आपको बधाई और धन्यवाद। लेकिन अखबारों के अन्दर यह आया, उसमें प्लानिंग कमीशन के जो वाइस चेयरमैन हैं, पंत साहब हैं, उन्होंने यह कहा, आप मुझे करैक्ट कर दीजियेगा मैं गलत कहूं तो, आप अपने रिसोर्सेज के आधार के ऊपर प्लान बढ़ाना चाहे तो आप बढ़ा सकती हैं। यह अखबारों के अन्दर आया था। तो आपने जिस फिगर का यहां जिक्र किया, कृपया यह बता दें, उस टारगेट को अचीव करने के लिए आपको एडीशनल मार्केट बोरोइंग कितनी अलाउ की गई, नम्बर एक? डैट स्वैप जिसकी आपने बात की, उसके पेटे आपको कितना कम ब्याज देना पड़ेगा? और किन-किन केन्द्रीय योजनाओं के तहत या किस रूप में आपको असिस्टेंस प्राप्त हुई जिससे कि आप अपनी इस प्लान साइज को बढ़ा सके हैं? अगर इसमें इंफोर्मेशन है तो कृपया बता दे, और नहीं है तो आप इसको रहने दे अभी, बाद में जानकारी आ जाएगी।

श्रीमती वसुन्धरा राजे : मैं आपको यह बता दूं कि अतिरिक्त बाजार ऋण हमने 530 करोड़ रुपये, अल्प बचत योजनाओं के अन्दर डैट स्वैप था उसके अन्दर 270 करोड़ रुपये, और त्वरित सिंचाई लाभ योजना ए.आई.डी.पी. के अन्दर 310 और ऊर्जा सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत अनुदान 137 यानि 1247 किया।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, एक मिनट। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप प्रतिपक्ष के नेता, एक प्रश्न पूछ ले। पीलीबंगा से आने वाले माननीय सदस्य, आप बिराजें।

श्री रामप्रताप कासनिया : अध्यक्ष महोदय, किसानों की पीड़ा के बारे में...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्रतिपक्ष के नेता को मैंने इजाजत दी है पूछने के लिए, पूछें आप।

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो अपना वक्तव्य दिया, आपने देखा हमारे संदस्यों का आचरण कैसा रहा, पहले तो यह बताना चाहता हूं। अब मैं आपसे यह कहना चाहता हूं...

श्री अध्यक्ष : क्यों नहीं होता, आप सब से इतना सहयोग मांगा है उन्होंने, इतना सब मिल-जुल कर बात करने के लिए कहा है? (व्यवधान)

श्री बुलाकीदास कल्ला : आपने 52 हजार करोड़ का जो ऋण अब तक हुआ

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

है उसके बारे में बताया। क्या असैट्स क्रियेट नहीं हुई? आपको यह भी बताना चाहिए कि सूरतगढ़ में 6250 करोड़ रुपये की असैट्स क्रियेट हुई। गंग कैनाल बन रही है तो उसकी असैट्स, ऐसा करके हम लोगों ने भी असैट्स क्रियेट की हैं, उसको भी आपको बताना चाहिए था कि इतने असैट्स किये हैं।

डा. एन. एस. गुर्जर : कितने किये, आंकड़े बताओ? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : यह बताओ न, कितने किये हैं? (व्यवधान)

डा. एन. एस. गुर्जर : आंकड़े बताओ, कितने किये? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं बता रहा हूं न आंकड़े। (व्यवधान)

डा. एन. एस. गुर्जर : पन्द्रह हजार करोड़ रुपये, अठारह हजार करोड़ रुपये के असैट्स क्रियेट किये? आपने तीस बत्तीस हजार करोड़ का ऋण लिया और असैट्स कितने क्रियेट किये, यह बताएं। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : एक भी जवाब नहीं दिया। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है, माननीय सदस्यगण...(व्यवधान) माननीय सदस्यगण, अपना-अपना स्थान ग्रहण करें। माननीय प्रतिपक्ष के नेता, आप भी अपना स्थान ग्रहण कर लें। प्रश्न यह है कि श्री नन्दलाल मीणा...

डा. बुलाकीदास कल्ला : ऐसा है अध्यक्ष महोदय, मेरी बात ही पूरी नहीं करने दी आपने, यह क्या तरीका है? (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आसन पांवों पर, आसन पांवों पर है।

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह क्या तरीका है? यह तो डिबेट का कोई तरीका नहीं है। आप इस तरीके से करेंगे तो यह ठीक नहीं है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : क्या ठीक नहीं है? क्या दे रहे हैं, क्या चुनौती दे रहे हैं आप मुझे? आप व्यवस्था के...(व्यवधान) आप अध्यक्ष की व्यवस्था को चुनौती दे रहे हैं? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : ऐसे धन्यवाद प्रस्ताव पास कराते हैं तो हम बहिर्गमन करते हैं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : कर दीजिये आप। बहिर्गमन करना चाहे, कर सकते हैं आप बहिर्गमन यस, यस। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : यह महामहिम का अपमान है। यह सदन के अन्दर पहली बार हो रहा है, महामहिम का अपमान हो रहा है, यह पहले कभी नहीं हुआ। (व्यवधान)

डा. किरोड़ी लाल : ऐसा तो पहली बार हुआ है कि नेता जा रहे हैं और सदस्य नेता को रोक रहे हैं।

एक माननीय सदस्य : आपके मुख्य मंत्री तो कभी बने भी नहीं। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आसन पांवों पर। आसन पांवों पर है (व्यवधान) आसन पांवों पर है, सब अपना-अपना स्थान ग्रहण करें।

डा. एन. एस. गुर्जर : सबसे पहले प्रशिक्षण लीडर आफ अपोजीशन के लिए आवश्यक है।

डा. बुलाकीदास कल्ला : एक मिनट।

श्री अध्यक्ष : आसन पांवों पर है।

डा. बुलाकीदास कल्ला : कृपया। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : मैं दूंगी इजाजत। इस समय तो आसन पांवों पर है न। (व्यवधान) देखिये, धौलपुर से आने वाले माननीय सदस्य को मैंने अनुमति दी, उन्होंने पर्टिनेंट क्वेश्चन पूछा, उसका जवाब सदन की नेता ने दिया। अब आप इसे ले जाने लगे दूसरे तरीके से, कोई असैट्स की बात आपने की, असैट्स की बात के बारे में जब आएगा, वोट आन अकाउंट जब आएगा तो वह देंगी जवाब। क्यों नहीं देंगी? पर...(व्यवधान) यह कोई बात नहीं होती है, यह कोई तरीका नहीं है आपका। आपको कोई प्रश्न पूछना है तो पूछिये।

श्री महावीर प्रसाद जैन : आपके पास कोई है तो बता दें। (व्यवधान)

डा. एन. एस. गुर्जर : आपके पास है तो बताओ न। (व्यवधान) अठारह हजार करोड़ के ऋण लिये, आप बताओ कितने हजार करोड़ के ऋण लिये? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, यह कोई तरीका नहीं है...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : क्या बात की...(व्यवधान) क्या बात...(व्यवधान) देखिये, यह आपका भी कोई तरीका नहीं है। यदि आसन का तरीका नहीं है तो आपका भी कोई तरीका नहीं है। गलत बात है यह, माननीय प्रतिपक्ष के नेता। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : हम बहिर्गमन करेंगे नहीं तो...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आप कुछ भी करें, ऐसे चुनौती मत दीजिये। आप स्थान ग्रहण करिए पहले। मैं मौका दूंगी...

डा. बुलाकीदास कल्ला : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यह तरीका आपका गलत है। माननीय प्रतिपक्ष के नेता, यह आपका तरीका बिलकुल ठीक नहीं है। मैं आपको मौका दूंगी...(व्यवधान) मैं आपको मौका दूंगी लेकिन यह तरीका ठीक नहीं है आपका। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह : आप स्थान ग्रहण करें। आप बैठ जाइये, हमारी बात सुन लें आप।

श्री अध्यक्ष : नहीं, आप बैठिये। मैं दूंगी मौका। मैं सुन लूंगी बात आपकी।

श्री प्रद्युम्न सिंह : आप बात सुन लें हमारी।

श्री अध्यक्ष : मैं दूंगी आपको मौका। (व्यवधान) आप पहले स्थान ग्रहण करिये, आप स्थान ग्रहण करिये। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा : प्रश्न पूछ रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : हां, हां, प्रश्न। तो प्रश्न पूछने का मौका दे रही हूं। (व्यवधान)

श्री बाबूलाल नागर : प्रतिपक्ष के नेता के साथ आप ऐसा सलूक कर रही हैं...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : दूदू से आने वाले माननीय सदस्य, आप अपना स्थान ग्रहण कर लें।

एक माननीय सदस्य : आप भी बिराजिये, माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री अध्यक्ष : मैं बैठूंगी लेकिन आपके कहने से नहीं बैठूंगी। माननीय सदस्य स्थान ग्रहण करें। माननीय सदस्य। हां, प्रतिपक्ष के नेता, अब आपको कोई भी पर्टिनेंटेंट क्वेश्चन पूछना हो, क्लैरिफिकेशन चाहते हैं तो आप वह क्लैरिफिकेशन चाह सकते हैं लेकिन प्रश्न के जरिये, प्रश्न के जरिये।

डा. बुलाकीदास कल्ला : हां, हां। अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद ज्ञापित करता हूं कि आपने स्थितियों को समझा। मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्रीजी से यह जानना चाहता हूं कि 52 हजार करोड़ का जो कर्जा हुआ उसमें कितने असैट्स क्रियेट किये गये? दूसरी बात, क्या आप बिजली की दर...

श्रीमती वसुन्धरा राजे : यह तो आप बताएं न। आप बताएं।

डा. बुलाकीदास कल्ला : आप ही को बताना है। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ : आप सवाल करने लग रहे हैं, आप दें न जवाब। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : मैं सवाल कर रहा हूं...(व्यवधान)

श्री नरपत सिंह राजवी : अध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के नेता ने अपनी सरकार के समय में...(व्यवधान) यह तो आप बताएं।

श्री धर्मपाल चौधरी : यह अभिभाषण हो रहा है या यह हो रहा है? (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : यह क्या तरीका है...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी : आपने पूछा है, क्या आप बिजली की दर बढ़ाएंगे...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : अध्यक्ष महोदय, केवल एक प्रश्न और है। (व्यवधान) क्या आप बिजली की दर कम करेंगे? (व्यवधान) एक मिनट।

डा. एन. एस. गुर्जर : पाइंट आफ क्लैरिफिकेशन, अध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला : जो मैंने बताया था, चालीस हजार करोड़ रुपये का घाटा है, उस चालीस हजार करोड़ के घाटे को किस प्रकार से पूरा करेंगे?

डा. एन. एस. गुर्जर : अध्यक्ष महोदय, पाइंट आफ क्लैरिफिकेशन। (व्यवधान)

श्री सांवर लाल : आपको पता नहीं, आपने क्या असैट्स क्रियेट किये? (व्यवधान)

डा. एन. एस. गुर्जर : अध्यक्ष महोदय, पाइंट आफ क्लैरिफिकेशन। (व्यवधान)

श्री नन्दलाल बंशीवाल : आपको पता है तो बताओ। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, अपना-अपना स्थान ग्रहण करें। प्रतिपक्ष के नेता महोदय, कर्ज 52 हजार 600 करोड़ रुपये उन्होंने बता दिया। (व्यवधान) अब सुनिये, आप मेरी बात को सुनिये। असैट्स आपने क्रियेट कीं, यह जिम्मेदारी आपकी थी, आप अपने भाषण के जरिये बताते, आप अपने भाषण में बताते यह बात कि हमने इतने असैट्स क्रियेट किये हैं। यह आपकी जिम्मेदारी थी, आप बताते। यह इनकी जिम्मेदारी नहीं थी। (व्यवधान) बैठिये, बैठिये। बैठिये, माननीय सदस्यगण।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : अध्यक्ष महोदय, जो सवाल आपने किया, कर्जा इन्होंने लिया और...(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : बिराजें। माननीय सदस्यगण, स्थान ग्रहण करें।

श्री राजेन्द्र राठौड़ : जो सवाल, अध्यक्ष महोदय, आपने किया, इसका जवाब प्रतिपक्ष के नेता महोदय हमको दें।

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें। माननीय सदस्यगण, प्रश्न यह है कि श्री नन्दलाल मीणा...(व्यवधान) प्रश्न यह है कि श्री नन्दलाल मीणा, सदस्य...

डा. बुलाकीदास कल्ला : हमने तो बता दिया कि कर्जा ही कर्जा लिया, असैट्स आप बता दें। (व्यवधान)

धन्यवाद प्रस्ताव का पारण

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि श्री नन्दलाल मीणा, सदस्य विधान सभा द्वारा राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव स्वीकार किया जाए? (व्यवधान)

(स्वीकृत)

धन्यवाद प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

सदन की बैठक शुक्रवार दिनांक 23 जनवरी, 2004 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 19.18 बजे शुक्रवार, 23 जनवरी, 2004 के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

परिशिष्ट-1

(समयाभाव के कारण सदन में नहीं लिया जा सका तारांकित प्रश्न एवं उत्तर)

राज्य में कार्यरत शिक्षा सहयोगियों को देय मानदेय एवं सुविधाएं

38. श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) राज्य में कुल कितने शिक्षा सहयोगी कार्यरत हैं? किस-किस वर्ष में कितने-कितने शिक्षा सहयोगी नियुक्त किये गये हैं?

(2) उक्त शिक्षा सहयोगियों को क्या मानदेय व सुविधाएं दी जा रही हैं?

(3) इनको वेतनमान देने के सम्बन्ध में सरकार की क्या नीति है तथा इनका मानदेय बढ़ाने के सम्बन्ध में सरकार विचार रखती है?

उत्तर

(1) राज्य में 20,999 शिक्षा सहयोगी तथा 3817 अतिरिक्त शिक्षा सहयोगी कार्यरत है। वर्षवार नियुक्तियों का विवरण इस प्रकार से हैं:-

वर्ष	शिक्षा सहयोगी	अति. शिक्षा सहयोगी
1999-2000	11529	—
2000-2001	181	—
2001-2002	4841	1396
2002-2003	4448	2421
	20,999	3817

(2) राजकीय गांधी पाठशालाओं में कार्यरत शिक्षा सहयोगियों को दिनांक 1.7.2003 में न्यूनतम 2000/- प्रतिमाह मानदेय तथा 1.7.2003 को अथवा इस तिथि पश्चात् प्रत्येक वर्ष पूर्ण करने पर 200/- वार्षिक वृद्धि देय है। इसके अतिरिक्त इन्हें वर्ष में 10 दिनों का आकस्मिक अवकाश देय है एवं महिला शिक्षा सहयोगी को दो बच्चे होने तक 120 दिन का प्रसूति अवकाश संवैतनिक देय होगा।

(3) शिक्षा सहयोगियों को वेतनमान देने बाबत कोई नीति निर्धारित नहीं है, अपितु तृतीय श्रेणी अध्यापक पद की योग्यता रखने वाले शिक्षा सहयोगी/पैराटीचर्स जो 4 वर्ष की सेवा का अनुभव रखते है के लिये पंचायती राज नियम, 1996 में संशोधन कर तृतीय श्रेणी अध्यापक की सीधी भर्ती में 75 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है। जिस पर माननीय उच्च न्यायालय का स्थगन है। दिनांक 1.7.2003 से न्यूनतम मानदेय 2000/- रु. कर दिया गया है एवं प्रत्येक वर्ष पूर्ण करने पर 200/-रु. वार्षिक वृद्धि देय है।

परिशिष्ट-2

(अतारांकित प्रश्न संख्या-68 की सूची)

राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर

वर्ष 2004 में राजस्थान में कार्यरत मुद्रकों की सूची

क्र. सं.	मुद्रक का नाम
1	2
1.	मैसर्स शर्मा एसोसियेट, जयपुर
2.	मैसर्स शीतल प्रिंटर्स, जयपुर
3.	मैसर्स घनश्याम आर्ट प्रिंटर्स, जयपुर
4.	मैसर्स इन्द्रा एण्ड कम्पनी, जयपुर
5.	मैसर्स कोटावाला प्रिंटर एण्ड पब्लिकेशन, जयपुर
6.	मैसर्स कोटावाला प्रिंटर्स, जयपुर
7.	मैसर्स कोटावाला आफसैट, जयपुर
8.	मैसर्स मधु प्रिंटर्स, जयपुर
9.	मैसर्स मार्केटिंग सेल्स, जयपुर
10.	मैसर्स मनोहर आर्ट प्रिंटर्स, जयपुर
11.	मैसर्स प्रिमियर प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
12.	मैससे शिवा आफसैट, जयपुर
13.	मैसर्स सिंहसन आफसैट, जयपुर
14.	मैसर्स हरिहर प्रिंटर्स, जयपुर
15.	मैसर्स प्रीमियर प्रिटिंग प्रेस, जयपुर
16.	मैसर्स राजस्थान प्रिटिंग वर्क्स, जयपुर
17.	मैसर्स सन् एण्ड सन क्रियेशन, जयपुर
18.	मैसर्स डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
19.	मैसस दी अजय प्रिंटर्स, जयपुर
20.	मैसर्स वर्ल्ड ब्राइट प्रिंटर्स, जयपुर

1	2
21.	मैसर्स नीतू प्रिंटर्स, जयपुर
22.	मैसर्स नालन्दा आफसैट, जयपुर
23.	मैसर्स ट्रेड एड्स, जयपुर
24.	मैसर्स अम्बर आफसैट, जयपुर
25.	मैसर्स अरिहन्त पब्लिकेशन, जयपुर
26.	मैसर्स ओम प्रिंटर्स, जयपुर
27.	मैसर्स अग्रवाल प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
28.	मैसर्स गोयल प्रिंटिंग उद्योग, जयपुर
29.	मैसर्स गोयल प्रिन्टर्स एण्ड बुक बाइण्ड, जयपुर
30.	मैसर्स गौरब आफसैट, जयपुर
31.	मैसर्स गुन्जन ग्राफिक्स, जयपुर
32.	मैसर्स लक्ष्मी आफसैट प्रिंटर्स, जयपुर
33.	मैसर्स महिमा मल्टीकलर आफसैट प्राइवेट लिमिटेड, उदयपुर

राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर

वर्ष 2004 में राजस्थान से बाहर कार्यरत मुद्रकों की सूची

क्र. सं.	मुद्रक का नाम
1	2
1.	मैसर्स शरद पब्लिकेशन, इन्दौर
2.	मैसर्स शगुन आफसैट प्रि. क्वालिटी, दिल्ली
3.	मैसर्स शगुन आफसैट प्रेस, दिल्ली
4.	मैसर्स एम. एस. प्रिंटर्स, दिल्ली
5.	मैसर्स एस.पी.ए. प्रिंटर्स, दिल्ली
6.	मैसर्स एस.आर. आफसैट प्रेस, दिल्ली
7.	मैसर्स यूनिवर्सल प्रेस, मथुरा
8.	मैसर्स इण्डिया आफसैट प्रिंटर्स, दिल्ली
9.	मैसर्स इण्डियन प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली
10.	मैसर्स ब्राइट प्रिंटर्स, जालन्धर
11.	मैसर्स करण प्रिंटर्स, दिल्ली
12.	मैसर्स कौशिक आफसैट प्रिंटर्स, दिल्ली
13.	मैसर्स कंवीनियंट प्रिंटर्स, जालन्धर
14.	मैसर्स कल्पना प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा
15.	मैसर्स ममता प्रेस, इटावा
16.	मैसर्स महालक्ष्मी प्रिंटर्स, दिल्ली
17.	मैसर्स मोर्डेस्ट प्रि., जालन्धर
18.	मैसर्स मनूजा प्रिंटिंग वर्क्स, जालन्धर
19.	मैसस मिकार्डों आफसैट, जालन्धर
20.	मैसर्स शिक्षा ग्रन्थागार, मथुरा

1	2
21.	मैसर्स शिवम् आफसैट, दिल्ली
22.	मैसर्स सिद्धार्थ प्रिंटर्स, दिल्ली
23.	मैसर्स दिल्ली प्रिंटर्स, जालन्धर
24.	मैसर्स विमल कापी हाउस, मथुरा
25.	मैसर्स विल्सन कारपोरेशन, अहमदाबाद
26.	मैसर्स भारती प्रिंटर्स, चण्डीगढ़
27.	मैसर्स पंकज प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा
28.	मैसर्स प्रतिभा प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा
29.	मैसर्स प्रभात प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा
30.	मैसर्स रमेश प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा
31.	मैसर्स रविन्द्रा पेपर मार्ट, जालन्धर
32.	मैसर्स श्रीनाथ आफसैट प्रिंटर्स, अहमदाबाद
33.	मैसर्स राष्ट्रीय भारती प्रेस, मथुरा
34.	मैसर्स रावत प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, आगरा
35.	मैसर्स रोबिन आफसैट, जालन्धर
36.	मैसर्स रॉविन आफसैट, जालन्धर
37.	मैसर्स संगम प्रिंटरी, अहमदाबाद
38.	मैसर्स सम्प कारपोरेशन, अहमदाबाद
39.	मैसर्स सहारनपुर इलैक्ट्रिक प्रेस, सहारनपुर
40.	मैसर्स सहगल प्रिंटर्स, जालन्धर
41.	मैसर्स सरस्वती आफसैट, दिल्ली
42.	मैसर्स साधन प्रेस, मथुरा
43.	मैसर्स स्वान प्रिंटिंग प्रेस, जालन्धर

1	2
44.	मैसर्स सुप्रीम आफसैट, दिल्ली
45.	मैसर्स सैम आफसैट प्रिंटर्स, अहमदाबाद
46.	मैसर्स दीपावली प्रिंटर्स, जालन्धर
47.	मैसर्स वीरभूमि प्रिंटिंग प्रेस, जालन्धर
48.	मैसर्स जैम प्रिंटर्स, जालन्धर
49.	मैसर्स न्यू सिमरन आफसैट, जालन्धरा
50.	मैसर्स नार्दन स्टेशनर्स मार्ट, जालन्धर
51.	मैसर्स नोवा पब्लिकेशन, जालन्धर
52.	मैसर्स नेप्च्यून प्रिंटर्स, जालन्धर
53.	मैसर्स आभा आफसैट प्रिन्टर्स, जालन्धर
54.	मैसर्स आर.के. प्रिंटर्स, आगरा
55.	मैसर्स आनन्द ब्रदर्श, दिल्ली
56.	मैसर्स टैगोर प्रिंटर, जालन्धर
57.	मैसर्स अजन्ता पैकेजिंग, इन्दौर
58.	मैसर्स अनुपम प्रकाशन, मथुरा

परिशिष्ट–3

परिशिष्ट "क"

(अतारांकित प्रश्न संख्या–69 की सूची)

जिला बून्दी में प्रतिनियुक्त कर्मचारियों का विवरण

प्रारम्भिक शिक्षा

क्र.सं.	नाम कार्मिक व पद	पदस्थापन स्थान	प्रतिनियुक्ति स्थान
1.	देवी शंकर सहायक कर्म.	रा.उ.प्रा.वि., रायथल	चुनाव कार्यालय, बून्दी
2.	प्रेम शंकर गौतम अध्या.	—"— बंजारों की झोप	निर्वाचन कार्यालय, बून्दी
3.	नन्दकिशोर मेघवाल अध्या.	—"— (बा.)सुनगर	केशोरायपाटन
4.	रामस्वरूप मालव अध्या.	—"— बालिदा	—"—
5.	विजय शेखर शर्मा अध्या.	—"— बलकाशा	—"—
6.	भगवान प्रसाद शर्मा अध्या.	—"— हौलासपुरा	—"—
7.	रामप्रकाश नामा अध्या.	—"— रंगराजपुरा	—"—
			माध्यमिक शिक्षा
8.	श्यामस्वरूप व.लि.	उ.मा.वि बडानयागांव	जिला कलक्टर कार्यालय चुनाव, बून्दी
9.	सत्यानारायण मीणा क.लि.	जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.), बून्दी	जिला कलक्टर कार्यालय, बून्दी (अकाल राहत)

परिशिष्ट–4

अनुलग्नक "अ"

(अतारांकित प्रश्न संख्या–71 का विवरण)

कार्यालय जिला परियोजना समन्वयक डी.पी.ई.पी., बूंदी
2–ए–8, विकास नगर, बूंदी(राज.), ☏: 2446128 फैक्स: 2446092
e-mail : dpeplmnd@ediff.com.

क्रमांकः–जिपस/डीपीईपी/विधान सभा/बूंदी/2001 दिनांकः–17.1.2004

डी.पी.ई.पी., बूंदी द्वारा करवाये जाने वाले कार्यों का विवरण

1. निर्माण कार्य।
2. शिक्षक प्रशिक्षण व अन्य प्रशिक्षण।
3. औपचारिक प्राथमिक शिक्षा।
4. वैकल्पिक शिक्षा।
5. सामुदायिक गतिशीलता।
6. सामर्थ्य संवर्धन कार्यक्रम।
7. पूर्व प्राथमिक शिक्षा।
8. जैण्डर व बालिका शिक्षा।
9. समन्वित विकलांग शिक्षा।
10. शौध एवं मूल्यांकन कार्य।
11. दूरस्थ शिक्षा सम्बन्धित कार्यक्रम।
12. शैक्षिक नवाचार कार्यक्रम।

ह०/–
(रामअवतार गोयल)
जिला परियोजना समन्वयक
डी.पी.ई.पी., बूंदी

ACTIVITY WISH EXPENDITURE DPEP, BUNDI

अनुलग्नक अ (i)

S. No.	Head	2001-02		2002-03		2003-04 (upto Dec. 03)		Total	
		Budget	Expenditure	Budget	Expenditure	Budget	Expenditure	Budget	Expenditure
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1.	CIVIL WORKS	7553000	4503200	47374000	46291577	36324139	30365635	91251139	51160412
2.	FURNITURE	1986400	0	1521500	1053956	451000	0	3958900	1053956
3.	EQUIPMENT	2477500	7084	2315900	892350	2171029	6656	6964429	906090
4.	VEHICLE	321600	0	482400	234864	482400	218626	1286400	453490
5.	BOOKS & LIBRARIES	7415200	0	5345000	0	9792670	186334	22552870	186334
6.	CONSULTANCY	3045400	1065245	596900	226302	5633600	5175760	14648100	850407
	RESERCH &								
7.	EVALUATION	1500000	88197	40000	4565	40000	2163002	1580000	2255754
8.	TRAINING	2117200	825752	6766000	3979959	13206573	15152	22089773	4820863
9.	INNOVATION	1699300	180	100000	0	100000	10000	1899300	10180
10.	AWARENESS	3072300	141915	7154300	2365326	4714006	1961758	14940606	4468999
11.	SALARY	7442800	959794	1082880	5817095	16774800	0	25300480	6776889
12.	CONCSUMABLES	962000	329256	190050	1019484	2387784	2339292	3539334	3688032

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
13. TLM		3706200	2845000	4268200	3582300	4065290	17823128	1203990	24250428
VEHICLESOP &									
14. MAINTANANCE		400000	139928	750000	491230	750000	820766	1900000	1451924
EQUIPMENT OP &									
15. MAINTENANCE		0	0	0	0	0	0	0	377792
16. HONORARIUM		648000	91955	648000	355057	2116800	0	3412800	1604264
	TOTAL	**44346900**	**10997506**	**84007330**	**68350865**	**99010091**	**62521153**	**227364321**	**124098881**

जिला परियोजना समन्वयक
जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यालय
(डी. पी. ई. पी.)
बूंदी (राज.)

अनुलग्नक-अ (ii)

S.No.	Post	Gazetted/ Non Gazetted	Sanctioned Post	Working	Vacant	Vacant Since
1	2	3	4	5	6	7
1.	DPC	Gazetted	1	1	—	—
2.	APC	Gazetted	3	3	—	—
3.	Programme Assistant	Non Gazetted	2	1	1	Since Jul 01
4.	AAO	Gazetted	1	1	—	—
5.	Accountant	Non Gazetted	1	1	—	—
6.	A.En.	Gazetted	1	1	—	—
7.	IFN	Non Gazetted	1	1	—	—
8.	MFS Manarge (Contractual)	Non Gazetted	1	1	—	—
9.	Data Entry Operator (Contractual)	Non Gazetted	2	2	—	—
10.	Office Assistant Cum Steno (Contractual)	Non Gazetted	3	3	—	—
11.	Cashier Cum Store Keeper	Non Gazetted	1	—	1	Since Apr.03
12.	Assistant (Contractual)	Non Gazetted	4	4	—	—
	TOTAL		21	21	2	

1	2	3	4	5	6	7
	Block Resource Centre					
1.	BRCF	Gazetted	4	3	1	Since July 03
2.	Resource Person (RP)	Non Gazetted	12	5	7	31 Aug.03
3.	J.En.	Non Gazetted	4	3	1	—
4.	Typist/Office Assistant (Contractual)	Non Gazetted	4	4	—	—
5.	Clerk	Non Gazetted	—	—	—	—
6.	Assistant (Contractual)	Non Gazetted	4	4	—	—
	TOTAL		**28**	**19**	**9**	—
	Cluster Resource Centre					
1.	CRCF	Non Gazetted	67	60	7	31 Aug.03
	TOTAL		**67**	**60**	**7**	—

कार्यालय जिला परियोजना समन्वयक डी.पी.ई.पी., बूंदी

2–ए–8, विकास नगर, बूंदी(राज.), ☏: 2446128 फैक्स: 2446092

e-mail : dpeplmnd@ediff.com.

क्रमांक: जिपस/डीपीईपी/विधान सभा/बूंदी/2001 दिनांक: 17.1.2004

श्रीमान् अतिरिक्त निदेशक महोदय,

राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद्

जयपुर।

विषय : विधान सभा प्रश्न संख्या–97 द्वारा श्री बाबूलाल वर्मा।

महोदय,

श्री बाबूलाल वर्मा के प्रश्न संख्या–97 का उत्तर निम्नप्रकार है:

क्र.सं.	प्रश्न	उत्तर
1.	बूंदी जिले में डी.पी.ई.पी. योजना की संचालन तिथि।	बूंदी जिले में डी.पी.ई.पी. योजना का संचालन दिनांक 2.10.2001 से हुआ है।
2.	योजना का कार्य क्षेत्र	योजना का कार्य क्षेत्र समस्त बूंदी जिला है।
3.	कार्यों का विवरण	अनुलग्नक 1 संलग्न है।
4.	योजना का कार्यकाल	योजना का कार्यकाल 2.10.2001 से 31.12.2006 तक है।
5.	योजनावार व्यय राशि	अनुलग्नक 2 संलग्न है।
6.	कार्यरत कर्मचारियों का विवरण	अनुलग्नक 3 संलग्न है।

संलग्न : तीन प्रति।

ह०/–

(रामअवतार गोयल)

जिला परियोजना समन्वयक

डी.पी.ई.पी., बूंदी

परिशिष्ट-5

परिशिष्ट-"क"

(अतारांकित प्रश्न संख्या-73 का विवरण)

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	रिक्त पद			
		विषय	व्या.	व.अ.	अध्या.
1	2	3	4	5	6
1.	रा.उ.मा.वि., रिडमलसर	हिन्दी	02	—	—
2.	रा.उ.मा.वि., रायसिंहनगर	इतिहास	01	—	—
		अंग्रेजी	01	01	—
		इतिहास	01	—	—
		वाणिज्य	02	—	—
		सामान्य	—	01	—
3.	रा.उ.मा.वि., संगराना	पंजाबी	01	—	—
		अर्थशास्त्र	01	—	—
		इतिहास	01	—	—
4.	रा.उ.मा.वि., बींझबायला	इतिहास	01	—	—
		राज. शास्त्र	01	—	—
		सामान्य	—	01	—
5.	रा.उ.मा.वि., मुकलावा	इतिहास	01	—	—
		भूगोल	01	—	—
		राज. शास्त्र	01	—	—
		गणित	—	01	—
		अंग्रेजी	—	01	—
6.	रा.उ.मा.वि., नरसिंगपुर माझूवास	इतिहास	01	—	—
		भूगोल	01	—	—
		सामान्य	—	01	—
7.	रा.उ.मा.वि., तामकोह	भूगोल	01	—	—
		राज. शास्त्र	01	—	—

1	2	3	4	5	6
8.	रा.उ.मा.वि., समेजा	सामान्य	—	01	—
9.	रा.मा.वि., 31पी.एफ.	विज्ञान	—	01	—
		सामान्य	—	01	—
		अंग्रेजी	—	01	—
10.	1 एफ.डी.	अंग्रेजी	—	01	—
		सामान्य	—	01	—
11.	रा.मा.वि., करड़वाली	अंग्रेजी	—	01	—
		सामान्य	—	—	01
12.	रा.मा.वि., 10 के.एस.डी. (मोहकवाला)	सामान्य	—	02	—
13.	रा.मा.वि., 70 एन.एन.पी.	अंग्रेजी	—	01	—
		सामान्य	—	01	—
14.	रा.मा.वि., भीमपुरा	विज्ञान	—	01	—
		सामान्य	—	—	03
15.	रा.मा.वि., बगिया	गणित	—	01	—
		सामान्य	—	—	03
16.	रा.मा.वि., हरखेवाला	गणित	—	01	—
		अंग्रेजी	—	01	—
17.	रा.मा.वि., 16 पी. एस.	अंग्रेजी	—	01	—
18.	रा.मा.वि., सांवतसर	अंग्रेजी	—	01	—
19.	रा.मा.वि., 66 एन. पी.		—	—	03
		संस्कृत	01	—	—
		राज. शास्त्र	01	—	—
		इतिहास	01	—	—
		गृह विज्ञान	02	—	—

1	2	3	4	5	6
		गणित	01	—	—
		रसायन शास्त्र	01	—	—
		पंजाबी	—	01	—
		अंग्रेजी	—	01	—
		सामान्य	—	—	01
21.	रा.बा.मा.वि., गंगेवाला	सामान्य	—	01	—
22.	रा.बा.मा.वि., रिडमलसर	सामान्य	—	02	01
		गणित	—	01	—
23.	रा.बा.मा.वि., सांवतसर	सामान्य	—	—	04